CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Entered 25/1/79. A-1/17
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
LUCKNOW

भारत-कला-भवन

(काशी नागरीप्रचारिणी सभा)

का

सूचीपत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY
Acc. No.
Book No.

Entered
25/1/49.
A-1
17
758.9

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत-कला-भवन

(काशी नागरीप्रचारिणी-सभा)

का

सूचीपत्र

संपादक

विजयकृष्ण

(सहायक संग्रहाध्यक्ष, भारत-कला-भवन)

अर्द्धशती-प्रकाशन

प्रकाशक

काशी नागरीप्रचारिणी-सभा

संवत् २००२

प्रथम संस्करण] [मूल्य २)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुद्रक

महताबराय

ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी।

759.954

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Provincial Museum,
LUCKNOW.

निवेदन

भारत-कला-भवन के चित्रों का यह सूचीपत्र उसके संग्रह की आरंभिक दशा का द्योतक है। इस समय उसकी चित्र-संख्या कई हजार है, जिसका अ-चित्र सूचीपत्र छापना न तो ज्ञानवर्द्धक होगा, न रसप्रद।

जिस समय भारत कला-भवन की स्थापना हुई थी उस समय से इधर के पचीस वर्षों में भारतीय चित्र-विषयक ज्ञान बहुत बढ़ गया है। अब यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि रीति-कालीन हिंदी सहित्य का अध्ययन विना उस काल वाले चित्रों के अध्ययन के अधूरा और अपरिपक्व रहता है, क्योंकि कवि जो लिखता था, चित्रकार उसे अंकित करता था; इतना ही नहीं, अनेक बार चित्रकार जो अंकित करता था, उसे कवि की वाणी कविता में अनूदित करती थी। कितनी ही बार, कवि जिस बात का संकेत मात्र कर देता था, उसे चित्रकार अपनी कल्पना से आकृतियों द्वारा अधिक स्फुट करके दिखाता था। कविता के अनेक स्थल, जिनके अर्थ विवादग्रस्त हैं, इन चित्रों की सहायता से स्पष्ट होते हैं। कविता और प्रेक्ष्यकला का यह संबंध बहुत पुराना है। कालिदास आदि महाकवियों के अनेक स्थल, जहाँ बड़े बड़े टीकाकार तक गड़बड़ाए हैं, तत्कालीन कलाकृतियों से स्पष्ट हुए हैं। हिंदी में कला और काव्य के इस समन्वय पर काम होने की बहुत आवश्यकता है। हम चाहते हैं कि हमारी अगली सूचियों की यही विशेषता हो कि हमारे साहित्यप्रेमी चित्र और कविता के इस समन्वित अध्ययन से वाग्देवता के लोकोत्तर विलास का समूचा आनंद पा सकें।

इस सूची के प्रस्तुत करने में स्व० मुंशी अजमेरी जी तथा डा० मोतीचंद्र का बहुत बड़ा हाथ रहा है। इसकी प्रेसकापी तैयार करने में श्री काशीप्रसाद श्रीवास्तव तथा श्री रामनयन जी ने हाथ बटाया है तथा इसे दोहराकर संकलित करने और प्रेस से पार लगाने का काम कलाभवन के सहायक संग्रहाध्यक्ष श्री विजयकृष्ण जी ने बड़ी लगन से किया है। इसकी शब्दानुक्रमणी सभा के सहायक मंत्री श्री शंभुनाथ वाजपेयी के परिश्रम का फल है। इन सज्जनों के प्रति कलाभवन अत्यंत आभारी है।

अंत में सभा के प्राण चिर-युवा श्री रामनारायण मिश्र का किन शब्दों में साधुवाद करूँ, जिनकी निरंतर प्रेरणा के कारण ही यह संक्षिप्त सूची, संचित्र और संपूर्ण सूची की प्रतीक्षा में, अँटकी न रह पाई।

कृष्णदास
संग्रहाध्यक्ष
भारत-कला-भवन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—राधा-कृष्ण

शैली—पहाड़ी काश्मीर ; १७वीं शती ; माप—८७/८″ × ५१/२″

नदी-कूल पर एक पुष्पित वृक्ष के नीचे पीतांबर, मोर-चंद्रिका, वनमाला तथा गहने पहने हुए श्रीकृष्ण बाएँ हाथ से वृक्ष की डाल पकड़े हुए हैं। दाहिने हाथ की मुद्रा से पता चलता है कि राधिका से कुछ कह रहे हैं। राधिका लाल लहँगा, पीली कंचुकी, झीनी सफ़ेद चादर और गहने धारण किये तथा दाहिने हाथ में एक पुष्प लिये और बाएँ हाथ की कोहनी उसी पेड़ पर टेके खड़ी हैं। पृष्ठिका हिरौंजी रंग की है। चित्र अपने ढंग का एक ही है और पहाड़ी के आरंभिक काल एवं एक विशेष शैली का द्योतक है। अतएव इसमें राजपूताने की कलम की बहुत समानता है, क्योंकि उस समय पहाड़ी कला क्रमशः राजस्थानी कला से निकल रही थी।

('रूपम्' में प्रकाशित)

२—एक देवी

शैली—काश्मीरी ; १७वीं शती ; माप—५१/४″ × ७″

एक मन्दिर में कमलासन पर पद्मासन लगाये चतुर्भुजी मूर्ति देवी बैठी हैं। उनके एक हाथ में पुस्तक तथा दूसरे में शंख है और दो हाथ जोड़े हुए हैं। इधर-उधर दो सेवक खड़े हैं। मूर्त्तियाँ स्याह-क़लम हैं और बाकी सब रंगीन हैं।

इस चित्र का हाशिया नया है। पुराने हाशिए पर 'मेघ-वधू' लिखा था।

(काशी में खरीदा गया)

३—मुसलमान महिलाएँ और एक मँझोली

शैली—काश्मीरी, १७वीं शती, माप ९१/२″ × ६″

सायंकाल के समय, पहाड़ी भूमि पर, जलाशय के निकट एक मँझोली (बहली), जिसपर आसमानी अस्तर का लाल ओहार पड़ा है, खड़ी है। बैल खोल दिये गये हैं। नीला बैल बैठा है और सफ़ेद खड़ा है। उस मँझोली में से उतरकर कई स्त्रियाँ खड़ी हैं जिनमें पीला बोरका ओढ़े खड़ी स्वामिनी और शेष संगिनी एवं सेविकाएँ जान पड़ती हैं। एक सेविका दाहिने हाथ में पानी की झारी और बाएँ में रूमाल लिये है। सफ़ेद ओढ़नीवाली स्त्री उस सेविका की ओर इशारा करके उस पीले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कथा-संदर्भ—एक समय देवासुर-संग्राम में जब देवगण हार गये तो उन्होंने अपनी सहायता के लिये विष्णु का आवाहन किया। विष्णु प्रकट हुए और उन्होंने देवताओं से कहा—"हे देवो! तुम असुरों से संधि कर लो, क्योंकि यह समय तुम्हारी वृद्धि का नहीं है। तुम लोग मेल करके क्षीर-सागर में तृण-लता और ओषधि डालकर मथो। अमृत तुम्हें मिलेगा और श्रम केवल दैत्यों को। सबके पहले कालकूट निकलेगा, उससे क्षुब्ध न होना।" यह कहकर भगवान् अन्तर्धान हो गये। देवताओं और दानवों में सुलह हो गई। सुर और असुर दोनों अमृत निकालने के लिये तैयार हो गये। मन्द-राचल को मथानी बनाने के लिये लाने लगे तो वह रास्ते में गिर गया। बहुत-से सुर तथा असुर हता-हत हुए। पर भगवान् ने वहाँ पर उपस्थित होकर उनके अङ्ग पुनः अपने कृपा-कटाक्ष से ठीक कर दिये और गरुड़ ने मन्दराचल को उठाकर समुद्र के तीर पर रख दिया। तर्क-वितर्क के पश्चात् देवताओं ने रज्जु बने हुए वासुकी की पूँछ पकड़ी और दैत्यों ने मुख। भारी होने के कारण मन्दराचल भीतर धँसने लगा; तब कच्छप-रूपधारी विष्णु ने अपनी पीठ लगाकर उसे सँभाला। थकने पर वासुकी के मुख से आग निकलने लगी, जिससे असुरवर्ग जलने लगा। अमृत न निकला। तब भगवान् ने स्वयं मथना आरंभ किया। थोड़ी देर के बाद हालाहल विष निकला और प्रजापतिगण के प्रार्थना करने पर शिव ने उसे पी लिया। तदुपरान्त मथने पर कामधेनु प्रकट हुई। इसके बाद उच्चैःश्रवा नामक अश्व, फिर ऐरावत, आठ दिग्गज और उनकी अभ्रम आदि आठ हथनियाँ प्रकट हुईं। अन्त में कौस्तुभ मणि प्रकट हुआ। इसके पश्चात् क्रमशः अप्सराएँ, लक्ष्मी, अमृत-कलश लिये धन्वन्तरि तथा वारुणी मिले। अंत में कल्पवृक्ष और चन्द्रमा निकले। अमृत के लिए झगड़ा होने लगा और भगवान् ने मोहिनीरूप धारणकर छल से देवताओं को अमृत दे दिया।

८—राम-रावण-युद्ध

शैली—काश्मीरी, १८वीं शती ; माप—७३/४" × ४१/२"

इस चित्र के दाहिने ओर रावण युद्ध करते-करते गिर गया है। इसके दसों हाथ कटकर पृथ्वी पर गिरे हुए हैं और शेष हाथों में गदा, परशु, तलवार, पेशकब्ज, छुरी और धनुष हैं। अंगा, पाजामा, मुकुट और ढाल-तलवार से लैस श्रीरामचंद्र रावण पर बाण-प्रहार कर रहे हैं। उनके पीछे लक्ष्मण खड़े हैं।

पुश्त पर 'राम रावन की त०' लिखा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९—राधा-कृष्ण

शैली—काश्मीरी ?, १९ वीं शती, माप १०″×७″

एक पुष्करणी से सटे हुए एवं केला, कदम्ब, आम इत्यादि नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित कुंज में राधा-कृष्ण प्रेम-लीला कर रहे हैं। कृष्ण मोरमुकुट, बूटेदार पीताम्बर, तथा उपरना एवं चम्पाकली, हार इत्यादि गहने पहने हुए हैं। कृष्ण के हाथ से राधा फूल-छड़ी छीनकर भागना चाहती हैं, पर कृष्ण उनकी ओढ़नी पकड़े हुए हैं। मानों कह रहे हैं—'तुम धोखा देकर नहीं भाग सकतीं।'

१०—शिव-पार्वती

शैली—बसौली ; १७ वीं शती , माप—८¾″×७¼″

कत्थई सादी पृष्ठिका। एक गजचर्म बिछाकर उसपर शिव-पार्वती बैठे हुए हैं। सामने नन्दी है। शिव पञ्चमुखी और दश हाथवाले हैं। कन्धों पर चीते की खाल और कटि में बाघम्बर लिपटा हुआ है। सबसे ऊपर के दाहिने हाथ में खड्ग है। दूसरा हाथ अभय-मुद्रा में है। तीसरे में बाण है और चौथे में खप्पर। सबसे नीचेवाले हाथ में अक्षमाला है। सबसे नीचे के बाएँ हाथ में धनुष, उसके ऊपरवाले हाथ में ढाल, उसके ऊपरवाले हाथ में डमरू और सबसे ऊपर के हाथ में परशु है। शिव के पाँचों मस्तकों में त्रिनेत्र हैं तथा त्रिपुण्ड्र लगे हुए हैं तथा सर्प, जटा-जूट एवं देह भर में नाग लिपटे हुए हैं। उनके सामने उनकी वीणा पड़ी हुई है और बाईं ओर पार्वती हाथ जोड़े बैठी हैं। इनका लहँगा हरे रंग का है, जिसमें एक पीला पटुका खोंसा हुआ है। वे लाल कञ्चुकी पहने और हरी झीनी चादर ओढ़े हैं। सोनकिरवाके कटे हुए पंख चिपटाकर गहनों के नग दिखाये गये हैं। नन्दी भी गहनों से लदा हुआ है। कपड़ों के किनारों पर, कुछ गहनों में और शस्त्रास्त्रों की मूठों पर सुईकारी की हुई है। आभूषणों में हरे नगीनों के स्थान पर सोनकिरवों के पंख काटकर लगाये गये हैं।

११—गो-दोहन

शैली—बसौली, १९वीं शती, माप—६¼″×४⅝″

चित्र में श्रीकृष्ण गाय दुह रहे हैं तथा एक गोपी बछड़े को पकड़े है। गाय का रंग सफेद तथा सींग सिन्दूरी हैं। श्रीकृष्ण का रंग गहरा तीसी के फूल का है। वे पीताम्बर पहने और सिन्दूरी दुपट्टा तथा मुकुट धारण किये हुए हैं। गोपी पीली-हरी दरियाई का घाघरा पहने तथा सिन्दूरी दुपट्टा ओढ़े हुई है। चोली भी सिन्दूरी है। वर्ण गौर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र की पृष्ठिका आसमानी रंग की है। हाशिया सिन्दूरी तथा काही है।

चेहरे के कैंड़े के कारण तथा कृष्ण एवं गोपी की मूर्त्तिओं की गुलाली से खुलाई और मोतियों की सफेद बुंदियों के दिखाने से यह प्रकट है कि यह चित्र बसौली शैली का है। परन्तु उस काल का जब कि उसका अधःपतन हो रहा था।

१२—नानक शाह तथा गुरु गोविंदसिंह

शैली——बसौली, १९वीं शती, माप——९$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{8}$″

दालानदार कुटी के आगे पक्के चबूतरे पर हल्के पीले रंग का गलीचा बिछा हुआ है। इस पर दाहिनी ओर मसनद-तकिये के सहारे गुरु नानक शाह उपदेश करते हुए तथा उनके सामने गुरु गोविंदसिंह हाथ जोड़े बैठे हैं। नानक शाह केसरिया कुलह पर सफेद पगड़ी और दोहरी काली पट्टी बाँधे हुए हैं। गले में लम्बी माला है और सिर पर चंदन लगाये हुए हैं। गुरु गोविंदसिंह की पोशाक गुलाबी रंग की है तथा वे आभूषण एवं शस्त्रास्त्र से लैस हैं। नानक शाह के सामने सोने की एक रकाबी में स्वर्ण-मुद्राओं की ढेरी पर एक नारियल रखा है। सामने की ओर चबूतरे के किनारे मर्दाना लाजवर्दी पगड़ी बाँधे और केसरिया जामा पहने बैठा हुआ रवाब (एक प्रकार का बाजा) बजाकर गा रहा है। उससे हटकर एक पालतू कुत्ता बैठा है। कुटी के पीछे एक बड़ा वृक्ष, केले के पेड़ तथा एक फूला हुआ पेड़ है, जिसपर एक बुलबुल बैठी है और उसका जोड़ा उड़कर उसकी ओर आ रहा है।

इस चित्र में चित्रकार ने सिक्ख-इतिहास के दोनों पहलुओं की तुलना का बहुत सुन्दर चित्रण किया है।

(दाता—राय कृष्णदास)

१३—गोवर्धन-धारण

शैली——पहाड़ी, १८वीं शती, माप——७$\frac{3}{8}$″ × ६″

श्रीकृष्ण एक छोटी चौकी पर खड़े होकर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उँगली से गोवर्धन पर्वत उठाये हैं। अगल-बगल दो बूढ़े जामा, पगड़ी और दुपट्टा धारण किये हुए अपनी-अपनी बैसाखियों से पर्वत में टेक लगाये हैं। कृष्ण का बायाँ हाथ एक घबराये हुए बच्चे के सिर पर है, मानों वे उसको ढारस बँधा रहे हैं। अगल-बगल गोपियाँ अपने बाल-बच्चों के साथ तथा ग्वाल-बाल अपनी गायों के साथ पर्वत की छाया में खड़े हैं। आकाश में मेघ उमड़ रहे हैं। चित्र के दाहिने ओर आकाश में ऐरावत पर चढ़े हुए इन्द्र दिखलाये गये हैं। पर्वत पर मोर विचर रहे हैं।

पुश्त पर ऊपर देवनागरी लिपि में 'मजनु मूसवर ते' लिखा हुआ है और नीचे की ओर 'पुराणा मजनू' लिखा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रसिद्ध पहाड़ी-चित्रकार मोलाराम ने भी गोवर्धन-धारण का एक चित्र बनाया था ; उसकी इससे बहुत कुछ समानता है। वह चित्र इस समय मुकुन्दीलाल बार-एट-लॉ, लैंसडाउन के पास है। उक्त लेख के कुछ नीचे—"पुराना मजनू" लिखा है, जिससे विदित होता है कि मजनू नाम के दो चित्रकार थे, जिनमें से पूर्ववर्ती मजनू की यह कृति है। सम्भवतः यह चित्रकार टेहरी (गढ़वाल) से सम्बद्ध था।

(दाता—श्रीमान् कुँवर विचित्र शाह)

१४—गो-चारण

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; माप—६३/४" × ४३/४"

एक ऐसे स्थान में, जिसको एक नदी ने तीन ओर से घेर रखा है, दाहिने ओर कृष्ण और राधा एक पेड़ के नीचे एक छाता लगाये सटकर बैठे हैं। सामने गायें दौड़कर आ रही हैं और कम्बल की घोघी ओढ़े एक ग्वाला उन्हें लकड़ी से हाँक रहा है। दो गायें उसी पेड़ के नीचे बैठी भी हैं। नदी में बत्तख इत्यादि जलपक्षी खेल रहे हैं। पेड़ पर मोर बैठा है। आकाश में घटा छाई है।

१५—राम-सुग्रीव-मिलन

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; माप १२१/२" × ८"

चित्र के दो भाग किये जा सकते हैं। दाहिने ओर पर्ण-वस्त्र धारण किये हुए, धनुष, तूणीर, और तलवार से लैस राम-लक्ष्मण से विप्ररूप हनुमान परिचय प्राप्त कर रहे हैं। चित्र के दूसरे भाग में सुग्रीव का पहाड़ी निवास है। राम से परिचय प्राप्तकर हनुमान उनको वहाँ ले गये। यहाँ पेड़ की कटी शाखा पर राम-लक्ष्मण बैठे हैं। सामने अग्नि जल रही है और हाथ जोड़े बंदर सामने बैठे हैं। सीता-हरण की बात सुनकर एक बंदर सीता द्वारा फेंके गये वस्त्र श्रीराम को दे रहा है। आकाश का रंग कुछ लाली लिये हुए है और पक्षिगण उड़ रहे हैं।

१६—शुक्लाभिसारिका

शैली—पहाड़ी , १८वीं शती , माप—१०३/४" × ८१/२"

नायिका सफ़ेद पैरहन, सफ़ेद ओढ़नी, अधिकतर मोती की मालाएँ और सेल्ही पहने हुए अपने प्रिय से मिलने जा रही है। उसका वेष अभिसार के युक्त है। वनखण्ड आकाश में पूर्ण विकसित चन्द्र और ताराओं के प्रकाश से जगमगा रहा है। पृष्ठिका में वनखण्ड के पीछे दाहिनी ओर ऊपर एक महल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बना हुआ है जिसके दालान में श्रीकृष्ण सुनहला जामा, मोर-मुकुट और एक नीली चादर धारण किये हुए एक तकिये के सहारे चौकी पर बैठे नायिका के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पेड़ों के तने ऐसे गाँठ-गुल्ठे और कोटरदार बनाये गये हैं, मानों वे नायिका को डरा रहे हों।

(दाता—राय कृष्णदास)

१७—अलस छवि

शैली—पहाड़ी ; १८ वीं शती ; माप—८½"५" × ¾"

मूल चित्र का आकार बदामा है। कोनियों पर लाजवर्दी रंग पर गुलाली और हरे रंग से आलङ्कारिक पुष्प व पत्तियाँ बनी हुई हैं। एक सायबानदार दालान के आगे छत पर एक विगलित वसना रमणी अँगड़ाई ले रही है। पलँग पर छोटे-छोटे तकिये और बहुत से आभूषण छूटकर बिखरे हुए हैं। फर्श पर दोनों ओर बुझे हुए शमादान हैं। पलँग के एक ओर वस्त्र की खुली पिटारी तथा पीकदान और एक चौकी पर अंगूर की तश्तरी, इत्रदान एवं प्याले आदि हैं। पायताने की ओर गडुआ और चिलमची हैं। पृष्ठिका पर कुछ इमारतें, वाटिका तथा पर्वत-श्रेणी के दृश्य हैं। बाहरी हाशिये में छोटी और बड़ी किश्तियों में सारस और चकोरों के चित्र बने हुए हैं जो कूजन करके प्रातः-काल की सूचना दे रहे हैं। नायिका रति-श्रान्ता विदित होती है। इस चित्र के पुश्त पर निम्नलिखित सवैया अङ्कित है—

प्रात उठी अलसाति जम्हाति तिया अँगराति हिये सुख धारयो।
कंचन हार परे छुटि सेज अनूप सरूप समूह निहारयो॥
बेनीं परी कुच ऊपर आइकै "दत्त"* यही उपमान बिचारयो।
नैन मनौ धरे नाग के रूप, भो कंचन की निधि को रखवारयो॥

(दाता—राय कृष्णदास)

१८—चन्द्रमुखी और चकोर

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; चित्रकार—मोलाराम

नायिका सिर पर मोतियों का बेंदा लगाये, कान में कर्णफूल, नाक में नथ तथा गले में कई आभूषण एवं मोतियों की दुलड़ी लम्बी माला पहने है। हाथों में मोतियों की पहुँचियाँ, चूड़ियाँ और बाजूबन्द हैं। गुलाबी रंग का लम्बा पैरहन पहने, पीले अस्तर की हरी दुलाई ओढ़े और पैरों में लाल

---

* देवदत्त उपनाम "दत्त" ब्राह्मण, माढ़ि, जिला कानपुर के रहनेवाले थे और चरखारी के महाराज खुमानसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल १८२७ के लगभग है, क्योंकि महाराज खुमानसिंह का राजत्वकाल संवत् १८१८ से १८३९ वि० तक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूता पहने सब्जे पर चली जा रही है। पीछे चकोर चोंच से दुलाई पकड़कर खींच रहा है, नायिका पीछे फिरकर छुड़ा रही है। इधर-उधर पदुम-वृक्ष फूले हुए हैं।

नायिका का मुख देखकर मालूम होता है कि चकोर को चन्द्रमा का भ्रम हो गया है। इसी से वह पीछे-पीछे दौड़कर चोंच चलाना चाहता है। चन्द्रमुखी घबड़ाकर भाग रही है। दाहिने हाथ से सिर पर का वस्त्र सँभालकर, बाएँ हाथ से दुलाई का छोर पकड़कर चकोर को हटा रही है। घूमकर बायीं ओर मुँड़ने से दाहिना उरोज तन गया है और बायाँ कुछ सिकुड़ गया है। चोली में से उरोज का यह भेद दिखाई पड़ रहा है।

इस चित्र पर सामने ऊपर के हाशिए पर एक सवैया सफेदे से लिखा हुआ है। चित्र के दोनों कोने फट जाने के कारण पद्य का भी कुछ भाग नष्ट हो गया है और वह अनुमान से कोष्ठ में लिख दिया गया है। उक्त सवैया इस प्रकार है—

"(क)वितु ॥

बाग बिलोकन कौं नवला निकसी मुपचंद दिपावत हि ॥
लपि संग च (कोर) (चल्यो मुष देष)त सब्द कठोर सुनावत हि ॥
उझकी झझकी फिरकी सि फिरी चहु आसहि (पासहिँ) धावत हि ॥
(क) वि मोलाराम चली हटिकै दुपटा पट चोट बचावत हि ॥ संवत् १८५२"

इस सवैया के दूसरे चरण में, चकोर के आगे, कदाचित् 'चल्यो मुख देखत' का ही भाव-सूचक कोई अंश रहा है। अन्तिम 'त' का कुछ आभास उसमें है। तीसरे चरण का खण्डित अंश अनुमानतः यह हो सकता है—'पासहिँ धावत ही'।

इसके चित्रकार मोलाराम श्रीनगर (गढ़वाल) के राजा जयकीर्त्ति शाह के आश्रित थे। इनका जन्मकाल १७६० ई० और मरणकाल १८३३ ई० तथा जयकीर्त्ति का मरणकाल १७८६ ई० है। जयकीर्त्ति शाह के पूर्वज पृथीशाह की शरण में दाराशिकोह का पुत्र सुलैमाँ शिकोह आया था; परन्तु पृथीशाह ने उसे धोखे से आलमगीर (औरंगजेब) के सिपुर्द करके उसके धन-दौलत और परिवार को अपना लिया था। उसी परिवार में शाहज़ादे के दीवान श्यामदास और उनके पुत्र हरदास भी थे। ये तोमर अथवा परमार राजपूत थे। मोलाराम इन्हीं हरदास के प्रपौत्र थे। इनके घराने में चित्र-विद्या कब और कैसे आई, इसका पता नहीं; परन्तु मोलाराम बड़े अच्छे चित्रकार थे। इनकी निज की एक चित्रशाला भी थी, जिसमें उनके और दूसरों के भी बनाये हुए नये और पुराने अनेक चित्रों का संग्रह था। वहीं मोलाराम काम किया करते थे।

मोलाराम चित्रकार ही नहीं, कवि भी थे। जब गोरखों ने गढ़वाल का वह अंश, जो कि अब अंग्रेजों के मातहत है, फतह किया और श्रीनगर के राजा अलकनन्दा के उस पार (वर्तमान टेहरी, गढ़वाल रियासत को) भाग गये, तब तात्कालिक गोरखा-सूबा हस्तिदल ने (शासनकाल १८०३ से १८१५ ई०) मोलाराम से गढ़वाल के पूर्वशासकों का इतिहास पूछा। इसपर उन्होंने गढ़वाल के पूर्वराजाओं का हाल पद्यों में लिख डाला। इस वृत्तान्त के ४५ वें पद्य में मोलाराम कहते हैं कि आभ्यन्तरिक झगड़ों के कारण ही गढ़वाल गोरखों का शिकार हो गया, जैसे कि घरेलू झगड़ों के कारण दिल्ली की राजसत्ता फिरंगियों के हाथ आ गई। इसी काव्य में मोलाराम ने प्रसंगवश अपना वंशानुचरित भी दिया है। उसी से ये बातें ली गई हैं। इन बातों से मालूम होता है कि राजनीति से भी उनका सम्बन्ध था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब जयकीर्त्ति शाह को उसके भाई बदमान शाह ने नज़रबन्द कर लिया और—'बस्तर-भोजन बैठेइ खावइ, हुकुम चलावन कछु नहिं पावइ', तब उसने मोलाराम से कहा—'चित्रसाल लिखि तुम का पायो, हमको दुष्टन ने आय दबायो। उनको कछु उद्यम ठहराओ, अपनी हमरी जान बचाओ।' इसपर मोलाराम ने कहा कि मैं जा कर नाहन (पंजाब की एक रियासत) के राजा से सहायता माँगता हूँ। किन्तु जयकीर्त्ति शाह ने उन्हें रोका और एक योग्य दूत द्वारा सन्देश भेजने की बात कही।

अब मोलाराम ने एक दोहा, एक सवैया और एक चित्र लिखकर नाहनराज के पास भेजा। चित्र जयकीर्त्ति शाह की दुरवस्था का निदर्शक रहा होगा; क्योंकि मोलाराम की यही परिपाटी थी। वे चित्र और उसके अनुकूल कविता बनाकर चित्र पर लिख दिया करते थे, जैसी कि इस चित्र "चन्द्रमुखी" पर लिखी हुई है। इनके बनाये जितने चित्र देखे गये हैं, प्रायः सब में यह विशेषता है। पहाड़ी चित्रकारों में एकमात्र मोलाराम ही ऐसे हैं, जिनका अभी तक नाम मिला है। चित्र और चरित्र तो शायद हिन्दुस्तान भर में किसी चित्रकार का अभी तक नहीं मिला।

मोलाराम के प्रपौत्र श्री बालकरामजी अभी (सन् १९२१ ई० में) विद्यमान् हैं और गढ़वाल रियासत के जागीरदार एवं मुसाहब हैं। वे और उनके घरानेवाले मुसव्वर कहलाते हैं। उनके पास मोलाराम के बनाये और संगृहीत अनेक चित्र हैं। इसके सिवाय मोलाराम की चित्रशाला के चित्र टेहरी-राज्य के तोशकखाने एवं पदाधिकारी, सामन्त और मुसाहबों में तथा मोलाराम के घराने के मेली-मिलापी और मित्रों में फैले हुए हैं। अक्तूबर सन् १९२१ ई० के "रूपम्" से संकलित उक्त नोट के अन्तिम अंश के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि कुँवर विचित्र शाह का संग्रह मोलाराम की चित्रशाला का एक अंश है। और, यदि यह अनुमान ठीक हो तो कहना पड़ेगा कि अवश्य मोलाराम की साहित्य में अच्छी गति थी; क्योंकि कुँवर साहब के संग्रह के बहुतेरे चित्र बड़े-बड़े कवियों के भावों पर बने हैं। कला-भवन में कुँवर साह बके भेंट किये हुए कई चित्र ऐसे हैं, जिनके पीछे अथवा सरपोश पर चित्र के बिल्कुल अनुकूल पाये गये भिन्न-भिन्न कवियों के पद्य लिख दिये गये हैं।

वर्तमान चित्र पर स्वर्गीय पं० चन्द्रधरजी गुलेरी का एक नोट इसकी रंगीन प्रतिकृति के साथ, एप्रिल १९२० ई० के 'रूपम्' में निकल चुका है।

(कलकत्ता के श्री ओ० सी० गांगुली से प्राप्त)

१९—उत्का नायिका

शैली—पहाड़ी; १८ वीं शती; माप ७″×५½″

दाहिने ओर पैरहन, ओढ़नी तथा गहने पहने हुई नायिका एक शाहबलूत की डाली पकड़े और दूसरे हाथ से हुक्के की नाल पीती हुई सामने खड़े हुए पालतू हिरन की ओर सप्रेम देख रही है। पृष्ठिका में एक पहाड़ी है, जिसपर मकान बने हुए हैं। उस पहाड़ी से सटकर एक नदी बह रही है। उसमें एक नाव पर बैठा हुआ एक मनुष्य चप्पे से बड़ी सरगर्मी के साथ उसे खे रहा है। मालूम होता है कि वह नायिका से मिलने जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०—खण्डिता नायिका

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७″×५¼″

चित्र "खण्डिता नायिका" का है। नायक के अन्य स्त्री के यहाँ रात बिता देने से जिस स्त्री का हृदय खण्ड-खण्ड हो जाता है, उसे खण्डिता नायिका कहते हैं।

चित्र में नायक की अलसानी चाल, शिर की लटपटी पाग तथा ढीले कमरबन्द आदि ने कलई खोल दी है। दालान के आगे सहन में खड़ी नायिका उपालंभ देती हुई व्यंग-पूर्वक उसका स्वागत कर रही है और दाहिने हाथ से उस स्थान का निर्देश कर रही है, जहाँ नायक ने रात बिताई है। लज्जा से नायक की आँखें नीची हो गई हैं। यह लीला देखकर पास में खड़ी हुई सहेली मुँह में आँचल देकर हँस रही है। आकाश की लाली, पक्षियों का चहचहाना तथा एक दासी का ज़मीन पर झाड़ू देना, सूर्योदय के द्योतक हैं।

चित्र वदामा है, कोनियों में आलङ्कारिक पुष्प बने हुए हैं।

(दाता—श्रीमान् कुँवर विचित्र शाह, टेहरी)

२१—प्रवत्स्यत्पतिका

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६″×८½″

एक बाग में एक महल के आगे एक स्त्री और एक पुरुष आमने-सामने खड़े हैं। मालूम होता है कि पुरुष परदेश जाने के लिये विदा माँग रहा है और नायिका उसे रोकना चाहती है। इस चित्र में वसंत-काल दिखाया गया है। पृष्ठिका में नदी पार एक सवार एक आदमी के सिर पर अपना सामान रखाये अपने घर की ओर जा रहा है।

नोट—जिस नायिका का पति परदेश जानेवाला होता है, उसे प्रवत्स्यत्पतिका वा प्रवत्स्यत्प्रेयसी कहते हैं।

यह चित्र 'केशव' कवि के निम्नलिखित कवित्त के भाव पर बना है—

बन बाग लता उर सौं उर लोचन गुंज कै भौंरन जात छकै हौ।
फूले पलास चहू दिसि 'केसव' और विलोचन जात रितै हौ॥
मन्द समीर बहै अति सीतल चैत की चाँदनी कैसे हितै हौ।
और बसन्त में आवत हैं घर कन्त बसन्त में जात किते हौ॥

(दाता—श्रीमान् कुँवर विचित्र शाह)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२२—मोहिनी छबि

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६ ७/८″ × ४ १३/१६″

घर के सहन में नायिका पैरहन, ओढ़नी तथा बहुत से आभूषण पहने एक चौकी पर बैठी हुई है। उसके सामने बैठी चुड़िहारिन उसे चूड़ी पहना रही है। पास में ही चूड़ी की पिटारी भी है। चित्र के बाएँ ओर दो स्त्रियाँ बैठी नायिका का चूड़ी पहनना देख रही हैं। एक अन्य स्त्री चमर डुला रही है। बाएँ ओर एक झरोखे से नायक झाँक रहा है। पृष्ठिका में उपवन बना हुआ है।

सरपोश पर निम्नलिखित कविता है—

"कंठमाल दोति उरहारन की जोति छिन—
छिन छबि होति आँगि आचर उघारे की।
अति सुहाति छूटी लट दरसाति त्योंही,
रङ्ग सरसाति मुख चंद उजयारे की॥
नाकहिं चढ़ावै बहु बेदन बढ़ावै कटि—
तट लचकावै धुनि सीबी के उचारे की।
उत चुरहेरी कर चाप पहिरावै चूरी,
देखि इतै अँखियाँ बिकानी प्रानप्यारे की॥"

२३—शिव-पार्वती का राजस-ध्यान

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—९ ३/८″ × ५ १/४″

राजवेशधारी-मुकुट, पीताम्बर और दुपट्टा धारण किये तथा वद्धो, कङ्कण इत्यादि गहने पहने हुए शिव वामाङ्ग में स्थित पार्वती के सहित स्वर्णसिंहासन के ऊपर सहस्रदल-कमल पर बैठे हुए हैं। त्रिनेत्र शिव के मस्तक पर चन्द्र-कला है। पीछे से वटुकभैरव धोती और दुपट्टा पहने तथा सिर पर कुलही लगाये हुए चमर डुला रहे हैं। शिव के सामने खड़े ऋषि-मुनि प्रार्थना कर रहे हैं। सिंहासन के सामने एक छोटी चौकी पर पानदान, फूल, चँगेर इत्यादि रखे हुए हैं। एक फ़व्वारा भी छूट रहा है। पृष्ठिका में एक वाटिका है। उसके बाद इमारतें बनी हुई हैं। मूल चित्र बदामा में है। कोनियों पर आलंकारिक पुष्प बने हैं। हाशिए में चौकोर खानों में शिव-लिङ्ग बने हुए हैं।

(दाता—श्रीमान् कुँवर विचित्र शाह)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२४—शिव-पार्वती

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½″ × ६″

इस चित्र में पञ्चमुखी शिव व्याघ्राम्बर और गहने पहने हुए एक व्याघ्र-चर्म पर बैठे हुए हैं। उनके ऊपरी दाहिने हाथ में हिरन है। नीचे का दाहिना हाथ वरदा-मुद्रा में है। नीचे का बायाँ हाथ अभया-मुद्रा में है और ऊपर के बाएँ हाथ में एक कुल्हाड़ी है। शिव की गोद में दाहिने ओर षड़ानन कार्त्तिकेय और बाएँ ओर गणेश बैठे हैं। चित्र के दाहिने ओर हाथ जोड़कर पार्वती बैठी हैं। सामने ज़मीन पर नन्दी, मयूर और मूषक बैठे हैं, जो क्रमशः शिव, कार्त्तिकेय और गणेश के वाहन हैं।

२५—श्री-विद्या या बाला त्रिपुरसुन्दरी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—१०″ × ५½″

चित्र वदामा में है। चित्र के चारों ओर कोनियों में आलङ्कारिक पुष्प बने हुए हैं। मण्डप सुनहला और गुम्बददार है, जिस पर दो सिंहध्वजाएँ फहरा रही हैं। एक छत्रदार चौकी पर, जिसके चारों पादों में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र और महेश हैं, लेटे हुए महादेव के वक्षःस्थल पर देवी आसीन हैं। देवी चतुर्भुजी हैं। ऊपरवाले दाहिने हाथ में पुष्प के पञ्चबाण, नीचेवाले दाहिने हाथ में अंकुश, निचले बाएँ हाथ में पाश और ऊपरी बाएँ हाथ में ईख की धन्वा है, जिसकी प्रत्यञ्चा भौंरों की बनी है। फर्श पर एक पूर्ण घट रखा हुआ है। पृष्ठिका में एक नदी बह रही है। चित्र के सिरे पर यह लेख अङ्कित है—'श्री विद्याध्यान्म (ध्यानम्) ३, श्री विद्या ३'। तन्त्रशास्त्रोक्त काली प्रभृति दश महाविद्याओं में से श्री-विद्या तीसरी हैं। उनका दूसरा नाम 'बाला त्रिपुरसुन्दरी' है। उनका ध्यान यह है--नवोदित सूर्य्य की तरह अरुण तीन नयन, रक्त-वसन, चार हाथों में—ईख का धनुष, पुष्प का बाण, अंकुश और पाश लिये हुए हैं। यथा—

बालार्कयुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम्
नानालंकृति राजमानवपुषं बालोडुराट् शेखराम्
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीम्
श्री चक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगमाधारभूतां स्मरेत् ॥

इनके सिंहासन के चार पावे—ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्द्र हैं। उस सिंहासन पर लेटे हुए शिव के ऊपर इनकी स्थिति है। यथा—

विरञ्चिविष्णुरुद्रेश रूप पादचतुष्टयम्।
× × × ×
सदा शिवमयं साक्षात् तस्मिन् पर शिवात्मिकाम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६—उत्कण्ठिता

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८½″ × ५″

इस चित्र में बाएँ ओर एक बरामदे में नायिका पैरहन और गहने पहने हुए फर्श पर तकिये के सहारे उठँगकर बैठी है और ठुड्ढी पर अँगुली रखे हुए कुछ सोच रही है। बाएँ ओर पृथ्वी पर एक सखी पङ्खा लिये हुए खड़ी है। आकाश में बगुले उड़ रहे हैं।

२७—निशाऽभिसारिका

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—४¾″ × ६½″

रात में कोई स्त्री अपने प्रियतम से मिलने जा रही है। लाल पोशाक, वारीक ओढ़नी, अंगा और पाजामा तथा आभूषण पहने है। पैर में साँप लिपट गया है ; किन्तु उसे परवाह नहीं है। पास के वृक्ष पर बैठी बच्चे को दूध पिलाती हुई चुड़ैल उसे डरा रही है ; पर वह फिर भी चली ही जाती है। ऊपर काली घटा छाई हुई है, बिजली चमक रही है।

चित्र के सरपोश पर यह कवित्त है—

"उरझत उरग चपल फल चरनन,
देखत विविध निसिचर दिसि चार के।
गनत न लागत मूसरधार बरषत,
झिल्लीगन घोष निरघोष जलधार के॥
जानत न भूषन गिरत पट फाट, तन,
कंटक अटक उर उरज हजार के।
प्रेतन की पूछें नारी—कौन पैं ते सीख्यो ऐसो,
जोग कैसो सार अभिसार अभिसार के!"

२८—शबीह हीरासिंह

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८¾″ × १०$\frac{3}{10}$″

हाथी पर लाल फूलदार अम्बारी में गौर वर्ण, लम्बी काली दाढ़ीवाले हीरासिंह सवार हैं। सिर पर सफेद पगड़ी में काली कलँगी, कान में वाला और कण्ठ में भी आभूषण हैं। दाहिने हाथ में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुलाब का फूल है। पीछे मोरछल लिये सेवक बैठा है। महावत लम्बी तलवार बाँधे है। साथ में बहुत से अश्वारोही सिपाही हैं।

चित्र के सरपोश पर ये लेख अङ्कित हैं—

(हिन्दी में) 'हीरा सिग राजा' तथा (उर्दू में) 'तस्वीर हीरासिंह'

२९—अन्तःपुर की हेमन्तचर्य्या

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—५ १/५″ × ९ ७/१०″

पलँग के पास, नमदे पर, एक भद्र महिला बैठी हुई है। उसके आगे अँगीठी रखी है, जिसकी अग्नि वह टारनी से उकसा रही है और दूसरे हाथ में हुक्के की सटक लिये है। अँगीठी के पास बैठी हुई एक और स्त्री हाथ सेंक रही है। पीछे की दालान में भी एक स्त्री अँगीठी ताप रही है।

३०—शतरञ्ज का खेल

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६ १/१०″ × ८ १/२″

नदी के तट पर चबूतरे पर बैठे दो व्यक्ति शतरञ्ज खेल रहे हैं। एक व्यक्ति केशरिया पगड़ी तथा पीला जामा पहने है। दूसरा सफेद कुलह पर कारचोपी चीरा बाँधे और सफेद जामा पहने है। यह घुटनों पर रखा तकिया टेके हुक्का पीता हुआ शतरञ्ज की चाल विचार रहा है। फर्श पर, पास में एक दोने में कुछ गुलाब के फूल रखे हैं और फर्श पर भी बिखरे हैं। पृष्ठिका में पहाड़ियाँ हैं, जिनके बीच में पुल है और नीचे से नदी बहती हुई चबूतरे के नीचे तक आई है। पुल पर लोग आ-जा रहे हैं। पहाड़ियों पर घर बने हुए हैं। खिलाड़ियों के भाव देखने योग्य हैं।

३१—शृङ्गार

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८ ३/५″ × ५ ७/१०″

वस्त्राभूषणों से सज्जित एक रमणी दर्पण में मुख देख रही है। एक परिचारिका दर्पण दिखा रही है, दूसरी कंघी से केश सँवार रही है। रमणी का दाहिना हाथ कान के पास केशों पर है और बाएँ हाथ में हुक्के की सटक है। चित्र बदामा है और कोनियों पर आलंकारिक पुष्प बने हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३२—विस्रब्धनवोढ़ा नायिका

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½″ × ५½″

यह चित्र 'केशव' कवि के निम्नाङ्कित कवित्त को चित्रित करता है—

"चञ्चल न हूजै नाथ, अंचल न खैंचौ हाथ,
सोवै नेक सारिकाऊ सुक तो सुवायो जू।
मन्द करौ दीप-दुति, चन्द-मुख देखियत,
दौरि कै दुराय आऊँ द्वार तौ दिखायो जू॥
मृगज, मराल-बाल, बाहरै विडारि आऊँ,
भावै तोहि 'केसव' सो मोहू मन भायो जू।
छल के निवास ऐसे बचन विलास सुने,
सौगुनो सुरतिहूँ ते स्याम सुख पायो जू॥"

दालान में एक चौकी पर बैठे श्रीकृष्ण दाहिने हाथ से नायिका की ज़री की लाल ओढ़नी खींच रहे हैं, और बायाँ हाथ चौकी पर टेके हुए हैं। नायिका अपने दाहिने हाथ से पीछे की ओर इशारा कर रही है। वह छींट का पीला पैजामा, गुलाबी पैरहन तथा गहने पहने है और खुले अलक पीछे लटके हुए हैं। कृष्ण मोर-मुकुट, वनमाला तथा अनेक प्रकार के आभूषण पहने हैं। उनके खुले हुए पीताम्बर के कमर पर से सरक जाने से करधनी दिखाई दे रही है। दालान के दोनों खंभे सिंदूरी हैं। छत से दो पिंजड़े लटक रहे हैं, जिनमें से एक में तोता और दूसरे में बुलबुल है। फर्श पर नायिका के पीछे दीवाल के पास एक शमादान जल रहा है। उससे दूर पर दो बगुले खड़े हैं और एक हिरन का बच्चा बैठा है।

३३—वसन्तोत्सव

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—१०″ × १३″

चित्र में वसन्तोत्सव का दृश्य है। एक कमरे में बहुत से सरदार केसरिया तथा वसंती जामा, साफा और पटुका पहने हुए फर्श पर बैठे हैं। इनमें से कुछकी कटि में पेशकब्ज, एक की कटि में छुरा तथा एक के हाथ में तलवार है। मसनद से लगे हुए आदमी का घेघा बढ़ा हुआ है। महफिल में कुछ लड़के भी हैं। दरवाजे पर दो सेवक हैं। तीन सफेद पोशाक पहने हुए व्यक्ति भी हैं। महफिल में कुछ आदमी एक दूसरे पर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं और कुछ आपस में बात कर रहे हैं। सामने दो नर्तकियाँ बैठी मुजरा कर रही हैं। उनके पीछे साजिन्दे पखावज और तम्बूरे बजा रहे हैं। कमरे की दीवाल तथा फर्श का रंग भी वसंती है। फर्श पर गिरे हुए फूल बिछ से गये हैं। चित्र के पीछे भी एक स्याहकलम चित्र है, जिसमें किसी राजा की (अंबारी में) हाथीचढ़ी सवारी है। अगल-बगल घुड़सवार और आगे पैदल सिपाही हाथ में झण्डी लिये हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३४—पद्मावती तथा हीरामन तोता

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६३/४" × ४१/८"

एक स्त्री, जिसके खुले हुए बाल पीठ पर लहरा रहे हैं और जो लाल रंग का पैरहन पहने व ओढ़नी ओढ़े हुए है, बाएँ हाथ से अपनी सरकती हुई चादर को सँभाल रही है और दाहिने हाथ से एक कटोरे को पेड़ पर बैठे हुए एक सुग्गे की ओर उठाये है। जान पड़ता है, सुग्गा चबूतरे पर रखे हुए पिंजड़े से उड़ गया है और नायिका उसे चारा दिखाकर फिर से बुलाया चाहती है।

यह चित्र पद्मावती का है, जिसकी कथा निम्नलिखित है—

पद्मावती सिंहल-द्वीप के राजा की लड़की थी। वह नाम से ही नहीं ; अपितु वास्तविक पद्मिनी थी। उसके विवाह के लिये इधर-उधर बहुत खोज करने पर भी, उसकी सुन्दरता के अनुरूप कोई वर न मिलता था।

राजमहल में "हीरामन" नामक एक तोता पाला गया था। वह बड़ा ही मिष्ठभाषी और चतुर था। पद्मावती उसी से बातें करके अपना मन बहलाती थी। एक दिन हीरामन से उसने कहा—"देखो जी, मेरे मन लायक मुझे कोई वर नहीं मिल रहा है ; क्या मुझे 'कुँवारी' रहना पड़ेगा?" हीरामन ने कहा—"कहो तो मैं अभी तुम्हारे वर की खोज में देश-विदेश घूम आऊँ?" किन्तु पद्मावती को उसका एक मिनट का भी विछोह अखरता था, अतः उसने उसे कहीं जाने न दिया।

एक दिन जब पद्मावती अपनी सखियों के साथ राज्योद्यान के सरोवर में स्नान करने चली गई तो हीरामन अवसर पाकर उड़ चला। उड़ते-उड़ते अनेक द्वीप-द्वीपान्तर पार कर गया, तब थककर एक वृक्ष पर जा बैठा। वहाँ एक बहेलिये ने उसे फँसा लिया और बाजार में जाकर उसे एक ब्राह्मण के हाथ बेच दिया। ब्राह्मण ने हीरामन की वाक्पटुता देखकर उसे चित्तौर के राजा रतनसेन के हाथ एक लाख रुपये में बेच दिया।

राजमहल में रहते हुए हीरामन अपनी रसीली बातों से राजा का मनोरञ्जन करने लगा। राजा भी उसे प्राणों से बढ़कर मानने लगा। एक दिन बातों-ही-बातों में हीरामन ने राजा से पद्मावती के रूप-लावण्य की चर्चा छेड़ दी। राजा ने पद्मावती के रूप की बड़ाई सुनते ही सुध-बुध खो दी। वह योगी बनकर पद्मावती के दर्शनों के लिये, हीरामन के साथ सिंहल-द्वीप को चला। वहाँ पहुँचने पर राजा नगर के राजमन्दिर में बैठकर पद्मावती का चिन्तन करने लगा। इधर हीरामन उड़कर फिर राजोद्यान में एक तरु-शाखा पर जा बैठा। पद्मावती उसे देखते ही आनन्द-मग्न हो उसके पास पहुँची। उसी दृश्य का यह चित्र है।

हीरामन ने पद्मावती से राजा रतनसेन के रूप और गुण की प्रशंसा की, तब उसने पूजा के बहाने मन्दिर में जाकर राजा को देखा। देखते ही वह मोहित हो गई। निदान बड़ी-बड़ी कठिनाइयों के बाद, एक शुभ मूहूर्त्त में, दोनों का विवाह हुआ। राजा रतनसेन पद्मावती को लेकर अपनी राजधानी चित्तौर को लौटा। इन लोगों के कुछ दिन सुख से बीते, फिर पद्मिनी के कारण अनेक लड़ाइयाँ हुईं। अन्त में पद्मावती ने "जौहर" किया।

इसी कथानक का विस्तृत वर्णन मलिक मुहम्मद जायसी ने "पद्मावत" नामक ग्रंथ में किया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३५—एक पहाड़ी राजा

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—१० १/१०″ × ६ २/५″

एक महल के बारजे पर एक पहाड़ी राजा जामा-पगड़ी पहने हुए और कमर में कटार खोंसे हुए एक सिंहासन पर तकिये के सहारे बैठा फ़र्शी पी रहा है। राजा की पगड़ी में कलँगी तथा माथे पर तिलक लगा है और कानों में बड़े-बड़े मोती के कुण्डल पहने है। उसके पास एक तलवार भी रखी है। पीछे दो सेवक खड़े हैं, जिनमें से एक के हाथ में फ़र्शी और दूसरे के हाथ में मोरछल एवं एक साफ़ी (अँगोछा) है। सामने एक लड़का नाच रहा है और समाजी डमरू, ढोलक और मजीरा बजा रहे हैं।

ऐसा ही एक चित्र 'बड़ौदा म्युज़ियम' के निरीक्षक श्री एस्० गांगुली के संग्रह में है, जिस पर राजा का नाम "रूपचन्द" लिखा है।

३६—चकडोरी का खेल

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—५ ४/५″ × ८ ३/५″

हरी पोशाक तथा मोती की मालाएँ और सेल्ही इत्यादि आभूषणों को पहने हुए नायिका सायवानदार छत पर खड़ी चकडोरी खेल रही है। दाहिने ओर एक सखी पानदान हाथ में लिये खड़ी है। नीचे जमीन पर एक पेड़ के सहारे खड़े हुए श्रीकृष्ण बड़े चाव से उसका खेल देख रहे हैं। एक दूसरी खिड़की से दो स्त्रियाँ आपस में उस लीला के सम्बन्ध में बातें कर रही हैं।

३७—पूजा करते हुए एक व्यक्ति की शबीह

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—६ ७/१०″ × ९ १/१०″

घर की दालान में एक गौरवर्ण-स्थूलकाय सुन्दर पुरुष गरुड़-मूर्त्ति से लगी हुई थाली पर विराजमान बालमुकुन्दजी की पूजा करके दाहिने हाथ से माला जप रहे हैं। उनके सामने जमीन पर पूजा के उपकरण घण्टा, शंख, अरघ, पत्तों पर पुष्प, नैवेद्य, गड़ुआ, घड़े आदि रखे हुए हैं। पुरुष के कान में बाला तथा दोनों हाथों में सोने का कड़ा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३८—प्रतीक्षा (उत्का नायिका)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप ५ ७/१०″ × ८ १/२″

नदी के किनारे शाहबलूत के पेड़ के नीचे उसकी एक शाखा पकड़े एक स्त्री चिन्तितावस्था में खड़ी किसी की बाट जोह रही है। वह पाजामा, पैरहन, ओढ़नी व आभूषणों से लैस है। नदी में कमल खिले हैं।

(दाता—श्री ओ० सी० गाँगुली, कलकत्ता)

३९—विरह-ताप

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७ १/४″ × ४ ७/८″

लाल पाजामा, हल्के पीले रंग का पैरहन व ओढ़नी धारण किये, बाएँ हाथ में एक पंखा लिये तथा दाहिने हाथ से फले आम के पेड़ पर चढ़ी पुष्पित बेल की टहनी पकड़े एक नायिका नदी के तीर पर बने एक चबूतरे पर, खड़ी है। चबूतरे पर खिले कमल से पूर्ण एक पुष्करिणी बनी हुई है। पृष्ठिका में आम्र तथा अन्य वृक्षों पर चढ़ी हुई लताओं में फूल खिले हैं एवं उनपर मोर और कोकिल किलोल कर रहे हैं। आकाश मेघाच्छन्न है। बीच-बीच में बिजली की कौंध हो रही है। नदी-तट पर सारस विचर रहे हैं। दूर पर एक घर भी दिखाई पड़ रहा है। सरपोश पर निम्नलिखित कविता अङ्कित है—

"मुहें प्रीतम जाय बिदेस रम्यो निसबासर चैन नहीं मनमें।
नभ छाय घटा चपला चमकी घन गाजत मैन जग्यो तन में॥
कर बीजन ले तनबारन को बिरहानल बाढ़ गई छिन में।
अति ब्याकुल होय चली घर तें उठ आय परी सरतीरन में॥"

४०—मेघ-दर्शन (आषाढ़)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७ ३/४″ × ४ ७/८″

चित्र बदामें में है, कोनियों में आलंकारिक बेल बनी है।

नायक और नायिका छत पर खड़े होकर उमड़ते हुए बादलों का दृश्य देख रहे हैं। नायिका का दाहिना हाथ आसमान की ओर है और बायाँ नायक के हाथ में। नायिका की पोशाक केसरिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नायक श्याम वर्ण (संभवतः श्रीकृष्ण) है। सिर पर पीली पगड़ी, सफेद झीना जामा पहने तथा पीला पटका बाँधे है। छींट का लाल रंग का पाजामा जामा के नीचे से झलक रहा है। पृष्ठिका में वाटिका और सुन्दर छोटे-छोटे गृह बने हुए हैं। चित्र कुछ अधबना-सा है।

सरपोश पर कवि 'कालिदास' का यह कवित्त दिया है—

"कुहकत मोर, बन पवन झकोर सोर
"कालिदास" गाढ़े ये असाढ़ गुन लेखिए।
सीतल कदम्ब छाँह, गोरी गरे धरे बाँह,
इन्दु को नगर बन बगर बिसेखिए॥
वारो अवसेस पुरी रसिक नटेस कान्ह
ऐसो देस दूसरो न सुख अवरेखिए।
नीके नए छप्पर अटान खट छप्पर,
घटान में घमण्ड ब्रिज मण्डल में देखिए॥"

४१—गणेशजी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६ ९/१०″ × ८ ३/५″

एकदन्त लम्बोदर गजानन मुकुट धारण किये सुनहले सिंहासन पर एक बड़ा तकिया लगाये शाहनशीन के नीचे बैठे हैं। आगे चरणों के समीप एक भक्तजन प्रणत है। गणेशजी के चारों हाथ खाली हैं। किसी में कोई वस्तु नहीं है। पृष्ठिका में पेड़-पालो हैं।

(कलकत्ता में क्रीत)

४२—विनोद (प्रेम-परिरंभ)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—९ ११/१६″ × ८″

एक मणि-जटित बारहदरी के भीतर माणिक-खचित छपरखट पर पीताम्बर व मोर-मुकुट-धारी श्रीकृष्ण, लहँगा, चोली और ओढ़नी धारण किये नायिका के साथ केलि कर रहे हैं। लज्जा से नायिका ने आँख फेर ली है। फर्श पर तीन कोने में मृदङ्गियाँ रखी हुई हैं तथा दो अँगीठियों पर पानी गर्म हो रहा है। आगे एक फव्वारा और फूल की क्यारियाँ हैं। पृष्ठिका में एक सुन्दर पुष्प-वाटिका खचित है, जिसमें दो स्त्रियाँ आपस में बातें करती हुई घूम रही हैं। आकाश में पूर्ण चंद्र तथा तारे खिले हैं। चित्र में सिरे पर निम्नांकित कविता गुरुमुखी में है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"भूषन भेद सँवारि सबै अँग औरहि भाँति किये कछु बाना ।
चंदन की कँचुकी कुच ऊपर केसर बन्द तेऊ रँग नाना ॥
श्री घनस्याम सुजान पिया रस के चसके कछु भेद न जाना ।
ह्वै तिरछी विहँसी ललना तब कंचुकी खोलत लाल लजाना ॥"

४३--कुरुक्षेत्र में सूर्य-ग्रहण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—१०" × ६½"

इस चित्र में नगर और तालाब का दृश्य है। नगर सुन्दर परकोटे से घिरा हुआ है। भीतर के धवल धाम और सुन्दर उद्यान दिखाई दे रहे हैं। परकोटे के बड़े-बड़े दरवाजों में से स्त्री-पुरुषों का आवागमन हो रहा है। तालाब के तट पर मेला लग रहा है। हाथी, घोड़े, भैंसें, गायें, रथ, मझोली, डेरे और छौलदारियाँ सभी हैं। तालाब में स्नान का दृश्य बड़ा विचित्र है। कहीं साधु बैठे हैं, कहीं गोदान हो रहा है, कहीं कोई मुँह पर कपड़ा डाल कर राहु-ग्रस्त सूर्य्य को देख रहा है। सूर्य्य-बिम्ब अर्द्ध-ग्रसित दिखाई दे रहा है। कहीं कोई दीक्षा-गुरु शिष्य का कान फूँक रहा है। कहीं स्वर्ण-मुद्रा दान हो रहा है। कहीं कोई पुस्तक लिये पाठ कर रहा है। एक ओर कपड़े की कनात की ओट में पर्देवाली स्त्रियाँ स्नान कर रही हैं। कोई-कोई जल में तैर रहे हैं। तट पर एक ओर तुलादान हो रहा है। इस प्रकार की अनेक बातें चित्र में दिखाई गई हैं।

(दाता--कुँवर विचित्र शाह)

४४--प्रच्छिन्न विप्रलब्धा

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप ७¾" × ५½"

एक नदी के किनारे, जिसमें चन्द्र-बिम्ब प्रतिफलित हो रहा है, हरा पाजामा, पैरहन और आभूषण धारण किये हुए एक नायिका एक-एक आभूषण उतार-उतारकर पत्ते पर रख रही है। पृष्ठिका में कुछ पेड़ और सफ़ेदा तथा रूपे से चन्द्रमा एवं तारे चित्रित किये गये हैं।

सरपोश पर निम्नलिखित सवैया अङ्कित है--

"सूल से फूल सुवास को वास सी भापसि से भए भौन से भागे ।
केशव वागु महावन सो जु रसी चढ़ी ज्यौ हू खवै अंग दागे ॥
नेह लग्यो उर नाहर से निसि हू चरी कु कहूं अनुरागे ।
गारी से गीत विरिचि सुसी सिगरेई सिंगार अंगार से लागे ॥"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४५--लीला-हाव (मृग-मोहन)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७¾″ × ४¾″

छोंकर (शाहबलूत) के एक पेड़ के नीचे, जिसपर एक पक्षी बैठा है, एक नायिका पैरहन, चोली और गहने पहने हुए तथा मर्दानी पाग बाँधे हुए खड़ी तानपूरा छेड़ रही है। चित्र के दाहिने ओर एक कृष्ण सार (एक प्रकार का काला मृग), जिसके गले में एक कठुला और सींगों में फुलिया जड़ी हुई हैं, बड़े चाव से संगीत सुन रहा है। नायिका भी उसकी ओर सस्नेह देख रही है। चित्र लीला-हाव का है।

प्रेम-विवश होकर जब नायिका नायक की वेष-भूषा धारण करती है, तब उसकी इस चेष्टा को लीला-हाव कहते हैं।

४६--वासन्ती

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—५⅞″ × ६⅞″

महल के आगे नदी-तीर पर उपवन में एक रमणी वसन्ती पोशाक पहने धानी रंग की घास पर बैठी है। चारों ओर फूल फूले हुए हैं। सरपोश पर यह कवित्त है—

"बरन-बरन तरु फूले उपबन-बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।
बन्दीजन बोलत बिरुद वीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गुन-गान गहियतु है॥
आवै आस पास पुहपन की सुबास सोई,
सोंधे की सुगंध माहिं सने रहियतु है।
सोभा को समाज 'सेनापति' सुख-साज आज
आवत बसंत ऋतुराज कहियतु है॥"

(दाता—कुँवर विचित्र शाह)

४७--अंढूआ मल्ल कपूर और अष्टभुजा-दुर्गा

शैली--पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप--७½″ × ५″

एक दालान के सामने खुले सहन में अष्टभुजा-देवी सिंहासन पर बैठी हैं। देवी के सिर पर छत्र है और आसन कमल का है। सबसे ऊपरी दाहिने हाथ में तलवार, उससे नीचेवाले हाथ में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कमल, उससे नीचेवाले हाथ में पाश है और सबसे नीचेवाला हाथ अभया-मुद्रा में है। सबसे नीचे-वाले बाएँ हाथ में चक्र, उससे ऊपरवाले हाथ में गदा और उससे ऊपरवाला हाथ वरदा-मुद्रा में है। सबसे ऊँचेवाले हाथ में शंख है। देवी के शीर्ष पर मुकुट और अर्द्धचन्द्र है और वे सुनहला लहँगा, छींटदार ओढ़नी और पीली कञ्चुकी एवं आभूषण पहने हुए हैं। चित्र के दाहिने ओर, देवी के ठीक सामने हाथ जोड़े हुए सिक्ख-इतिहास-प्रसिद्ध राजा तेजसिंह के कोषाध्यक्ष लाला अंढूआ मल्ल कपूर छकलिया अंगा, धारीदार पाजामा, दुपट्टा और पगड़ी पहने हुए हाथ जोड़कर खड़े हैं।

(दाता—श्री० गुरादित्ताँ खन्ना, चौक लोहगढ़, अमृतसर)

४८——अन्यमनस्का

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप——८$\frac{1}{4}$″ × ५$\frac{1}{8}$″

नायिका लाल पाजामा, आसमानी पैरहन और झीनी आसमानी ओढ़नी ओढ़े हुए चबूतरे पर एक केले के पेड़ के सहारे खड़ी है। उसके बाएँ हाथ में हुक्के का पेचकश है। केले का पेड़ चित्र के बीचोबीच बना है। उसके दोनों ओर चबूतरे के नीचे फूलों से लदे एक-एक वृक्ष हैं।

(दाता—राय कृष्णदास)

४९——शिव-परिवार

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप——५$\frac{5}{6}$″ × ३$\frac{7}{8}$″

चित्र का आकार बदामा है और कोनियों पर आलङ्कारिक पुष्प बने हुए हैं। हिमालय-प्रदेश की हरियाली में जटा-जूटधारी गंगाधर शिव बाघम्बर धारण किये हुए, पार्वती एवं षडानन और गणेश के साथ एक बाघम्बर पर आसीन हैं। शिव का बायाँ हाथ गणेश के मस्तक पर है और दाहिने हाथ से वे धतूरा भक्षण करना चाहते हैं। गणेश अपनी सूँड से पार्वती से खेल रहे हैं। बालक षडानन पार्वती की बाईं जाँघ पर बैठे हैं। पार्वती बाएँ हाथ में एक सोने की रकाबी में कुछ धतूरा लिये हुए हैं।

५०——विरह-पाती

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप——५$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{4}$

पैरहन और गुलाबी रंग की झीनी ओढ़नी ओढ़े हुए, खिड़की में मसनद के सहारे बैठी एक नायिका कागज़ पर कुछ लिखने का प्रयास कर रही है। उसके सामने एक बच्चा, जो सम्भवतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका पुत्र है, झिंगुली पहने हुआ बैठा है। चित्र अधूरा जान पड़ता है ; क्योंकि आभूषणों को चित्रकार ने स्याहकलम कर दिया है, पर उनमें रंग नहीं भरा है।

सरपोश पर एक केले का पत्ता बनाकर उसपर निम्नलिखित दोहा लिखा है—

"बिरह-बिकल बिनहीं लिषी, पाती दई पठाइ।
आँक बिहूनी यौं सुचित, सूनै बाचत जाइ॥
—बिहारी"

५१—सिखावन (मानिनी नायिका)

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—८″ × ५″

एक बरामदे के सामने आँगन में नायिका एक षट्कोण सुनहली चौकी पर सफ़ेद किमखाव का पैरहन, लाल ओढ़नी और आभूषण धारण किये तकिये के सहारे मुँह लटकाये बैठी है। सामने जमीन पर चिलमची और गडुआ रखा हुआ है। चित्र के दाएँ ओर, नीले रंग का लहँगा और पीले रंग की ओढ़नी ओढ़े एक वृद्धा, एक हाथ मुँह पर रखकर उसे मान छोड़ने को कह रही है और दूसरे हाथ से नायक के पास चलने का इशारा कर रही है। पृष्ठिका में, एक मकान की दालान में, सिर लटकाये हुए नायक बैठा है, मानों नायिका के मान-भङ्ग की आशा में कुछ सोच रहा है। आकाश में बादल छाये हुए हैं। चित्र के सरपोश पर निम्नलिखित दोहा अंकित है--

"कुढँगु कोप तजि रँग-रली, करतिं जुवति जग, जोइ।
पावस गूढ़ न बात यह, बूढ़नु हूँ रँग होइ॥"

भारत कला परिषद् संग्रह। (दाता--राय कृष्णदास)

५२—सद्यःस्नाता

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$६\frac{३}{८}$″ × $४\frac{१}{४}$″

चित्र बदामा है। कोनियों पर आलङ्कारिक पुष्प बने हुए हैं। एक नदी के किनारे वृक्ष की छाया में एक मीने की चौकी पर विगलितवसना नायिका अपना दोनों हाथ उठाकर बाल फटकार रही है। इस अवस्था में, जो अङ्ग उठ वा दब जाते हैं उनका इस चित्र में बहुत ही सुन्दर चित्रण हुआ है। चौकी के सामने एक गड़वा, कलश, दो छोटे लोटे और चिलमची रखे हैं। एक तश्तरी में दो सुगंधित तेल की शीशियाँ और शृङ्गारदान हैं तथा वस्त्र की पिटारी में नायिका के चौपते हुए वस्त्र रखे हैं। पृष्ठिका में नदी के उस पार बाएँ ओर एक सुन्दर महल चित्रित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५३—वर-प्राप्ति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—९¼″ × ६¼″

हिमालय पर्वत पर असुर-राज वाणासुर शिव तथा पार्वती के चरणों पर नतमस्तक होकर वर-प्राप्ति करता है। शिव और पार्वती गलबहियाँ डालकर और दूसरा हाथ उठाकर 'एवमस्तु' बोल रही हैं। पार्वती के दाहिने ओर षडानन अपने मयूर-वाहन के साथ खड़े हैं। चित्र के दाहिने ओर सिंह और नन्दी बैठे हैं और धूनी जल रही है। उसी ओर कुछ पीछे गणेश अपने वाहन चूहे का तकिया लगाकर एक बाघम्बर पर सो रहे हैं। पहाड़ में से होकर एक नदी वह रही है, जिसमें कमल खिले हैं।

असुर-राज बलि का ज्येष्ठ पुत्र वाणासुर था। उसने कठिन तपस्या के बाद शिव का वरदान प्राप्त किया। इसी वाणासुर की लड़की उषा से आगे चलकर श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का विवाह हुआ था।

५४—राम-वनगमन का एक दृश्य

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७¾″ × ५½″

वन में श्रीरामचन्द्र पर्ण-वस्त्र पहने हुए एक मृग-चर्म पर बैठकर दाहिने हाथ से कुछ खा रहे हैं। सामने बैठी सीता रसोई बना रही हैं। नीचे की ओर कुछ हटकर पर्ण-वस्त्रधारी लक्ष्मण मृग का मांस काट रहे हैं। उनकी कटि में एक कुल्हाड़ी और तूणीर है। दाहिने ओर एक पेड़ से लगकर दो तलवारें, एक तूणीर और ढाल रखे हुए हैं। बाएँ ओर एक पुष्करिणी है, जिसमें कमल खिले हुए हैं।

५५—भगवान् वासुदेव

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८¾″ × ६⅝″

यह चित्र बदामा में है। कोनियों में आलङ्कारिक चित्र बने हैं। बादामा सूर्य्य-मण्डल के भीतर सुनहली सादी पृष्ठिका पर खिले हुए सफेद कमल के कमलगट्टे पर पीताम्बर, उपरना, मुकुट तथा वनमाला धारण किये वासुदेव बैठे हैं। ऊपर के दाहिने हाथ में शंख तथा नीचे के दाहिने हाथ में पद्म और नीचे के बाएँ हाथ में चक्र एवं ऊपर के बाएँ हाथ में गदा है।

कृष्णोपासक वैष्णव परमात्मा को (जिनसे सारी सत्ताएँ प्रतिभासित हैं) "वासुदेव" नाम से स्मरण करते हैं। उपासना के लिये इस चित्र में उन्हीं की मूर्त्ति की कल्पना की गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र के सरपोश पर ये श्लोक दिये हैं—

"एकामूर्त्तिरनिर्देश्या शुक्लां पश्यन्ति तां बुधाः ।
ज्वालामाला वरुद्धांगां निष्ठा या योगिनां परा ॥
दूरस्था चांतिकस्था च विज्ञे या सा गुणातिगा ।
वासुदेवाभिधानोऽसौ निर्मलत्वेन दृश्यते ॥
रूपवर्णादयस्तस्यनभावाः कल्पनामयाः ।
अस्त्येव सा सदा शुद्धा सुप्रतिष्ठैकरूपिणी ॥

महाभारतेऽपि—

नित्यं हिनास्ति जयति भूतं स्थावर जंगमम् ।
ऋते तमेकं पुरुषं वासुदेवं सनातनम् ॥
यंत्र विश्य भवन्तीह मुक्ता वै द्विजसत्तमाः ।
सवासुदेवः विज्ञेयः परमात्मा सनातनः ॥

श्रीभागवते च—

ज्ञानं विशुद्धं परमार्थमेकमनन्तरं त्व वहिर्ब्रह्मसत्यम् ।
प्रत्यक् प्रशान्तं भगवच्छब्दसंज्ञं यद्वासुदेवं कवयो वदंति ॥"

५६—बलदेव द्वारा रुक्मी-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—६$\frac{?}{?}$" × ४$\frac{1}{?}$"

इस चित्र के दो खण्ड हैं । पहले खाने में दाहिने ओर जूए में बेईमानी करनेवाले राजा रुक्म का बलदेव मूसल से संहार कर रहे हैं । पृष्ठिका में कलिङ्ग-नरेश चित्रित हैं जिनके दाँत बलराम ने, उनके द्वारा अपनी हँसी होने के कारण, तोड़ दिये हैं ।

दूसरे खाने में बलदेव, कृष्ण आदि यादवों की उपस्थिति में अनिरुद्ध का विवाह रुक्मी की पोती रोचना से हो रहा है । मड़वे में काठ के सुग्गे और मोर लगे हुए हैं । कन्यापक्ष की ओर राजा-रानी हैं । वरपक्ष की ओर कृष्ण-बलदेव खड़े हैं और एक यादव बैठा है ।

विशेष परिचय—

इस घटना का विवरण भागवत के दशम स्कंध के एकसठवें अध्याय में दिया हुआ है । अनिरुद्ध के विवाह के उपलक्ष्य में कृष्ण-बलराम आदि भोजन कर नगर को गये । विवाहोपरान्त कलिंग-नरेश आदि के उभाड़ने से रुक्मी ने बलराम को जुआ खेलने के लिये निमन्त्रित किया और बेईमानी से उनकी करोड़ों मुहरें जीत लीं । उनकी हार देखकर बीच में कलिङ्ग-नरेश ठठाकर हँस पड़ा था । जब बलदेव दश कोटि का दाँव हारे तो आकाशवाणी द्वारा रुक्मी की बेईमानी खुली । फिर भी वह बलराम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का मज़ाक करता रहा। इससे क्रुद्ध होकर बलराम ने परिघ से उसे मार डाला। यह देख कलिङ्ग-राज भागने को उद्यत हुआ, पर बलराम ने दौड़कर उसके दाँत तोड़ डाले और उसके ठठाकर हँसने का बदला ले लिया। तदुपरान्त सबकी उपस्थिति में रोचना और अनिरुद्ध का विवाह हुआ।

चित्र किसी चित्रित ग्रन्थ का छिन्न-पत्र है। पुश्त पर लेख हैं।

५७—पार्वती का त्रास

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; माप—५$\frac{1}{2}$″ × ४″

पर्वत की एक निकली चट्टान पर जटाजूटधारी और बाघम्बर पहने, हाथ में त्रिशूल लिये शिव सभीता पार्वती के गले में हाथ डाले हुए एक बड़े बाघम्बर पर बैठे हैं। शिव गंगाधर हैं। इनके सामने भाँग घोंटने की कुंडी व सोंटा रखा हुआ है।

जिन दिनों अपनी कठिन तपस्या से शिवजी को प्रसन्न कर रावण वर ले रहा था, उन्हीं दिनों उसे अपने बल के गर्व से एक बार कैलास उठा लेने की सूझी और उसने कैलास को जड़ से उखाड़कर अपनी बीसों भुजाओं से ऊपर तान दिया। इससे वह पर्वत डगमगाने लगा, उसपर के वृक्ष हिलने लगे और शिवजी के अंग से लिपटे हुए नाग फुफकारते हुए इधर-उधर लहराने लगे। उनका तूँबा उलट गया। हाथ त्रिशूल को सँभाल न सका, अतः उसे कंधे पर टेकना पड़ा। इतना ही नहीं, पार्वतीजी भयभीत होकर उनसे लिपट गईं। इसपर माघ कवि ने कहा है कि शिवजी को, डरी हुई पार्वती के लिपट जाने का सुख देकर, रावण ने कैलास उठाने के बहाने उनके सारे वरदानों का मोल चुका दिया।

समुत्क्षिपन्यः पृथिवीभृतांवरं वरप्रदानस्य चकार शालिनः।
त्रसत्तुषाराद्रिसुता स-संभ्रम-स्वयं-ग्रहाश्लेष सुखेन निष्क्रयम्॥

—(माघ० १)

यह चित्र नीचे की ओर से कटा हुआ मिला है, अतः बेड़े बल में है। इसके निचले अंश में पर्वत उठाता हुआ रावण रहा होगा। अन्य संग्रहों में इसकी समूची प्रतिकृतियाँ हैं।

५८—नयन-मिलन

(हेतु-लक्षिता)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७$\frac{3}{4}$″ × ५$\frac{3}{4}$″

चहारदीवारी के भीतर एक खिड़की से एक नवयुवक, जो सफेद जामा और गुलाबी व सुनहली पगड़ी पहने है, सामने आती हुई अवगुण्ठनवती युवती को देख रहा है। युवती हलके पीले रंग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का पैरहन पहने तथा नीले रंग की झीनी ओढ़नी ओढ़े हुई है और घूँघट की ओट से नीची आँखें करती हुई कुछ मुस्कुराकर नायक को देख रही है। पृष्ठिका में कुछ वृक्ष, एक कोठा तथा आसमानी, लाल और पीले आकाश बने हुए हैं।

सरपोश पर निम्नलिखित दोहा लिखा है—

"जुरे दुहुँन के दृग झमकि, रुके न झीने चीर।
हलकी फौज हरौल ज्यौं, परत गोल पर भीर॥

—बिहारी"

(दाता—राय कृष्णदास)

५९—गीतगोविन्द चित्रावली का एक पृष्ठ

शैली—पहाड़ी गढ़वाल ; १९वीं शती ; माप—१०″ × ५⅞″

यमुना के कूल पर, जहाँ नाना रंग के पुष्प खिले हुए हैं और हरे-भरे वृक्ष लहलहा रहे हैं, पीत-वसन वनमाली बैठे हुए हाथ से मुद्राएँ बताते हुए एक सखी को कुछ आदेश कर रहे हैं। सखी उनकी ओर देखती हुई मुड़कर उनके आदेश का पालन करने जा रही है। वह गहने तथा गुलाबी धारीदार घाघरा, केसरिया चोली पहने और सफेद रंग की झीनी चादर ओढ़े हुए है। आसमान में सिंदूरी, फाख़तई आदि रंग के बादल हैं। कला की दृष्टि से चित्र बड़ा ही सुन्दर है। कृष्ण का अंग-सञ्चालन तथा सखी का कृष्ण के आज्ञापालन में उत्सुकता का सुन्दर चित्रण हुआ है।

चित्र के पुश्त पर निम्नलिखित पंक्तियाँ अंकित हैं—

संस्कृत—"अहमिह निवसामि याहि राधा मनुनय मद्वचनेन चानयेथाः।
इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता स्वयमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम्॥ ?"

पहाड़ी—"हुण कृष्णे वला विदा होई करी दूती राधा की बोल दी है। मैं इथूँ बेठा हां तू राधा की मेरें वचने करीं वोली लई आं इस गला गलाई करी कृष्णे दी भेजी होई सखी भीरी राधा कनैं पह अगले या वचनां की गलां दी होई।"

(दाता—श्री एन. सी. मेहता)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६०—कृष्ण और गोपियों का घाट पर मिलन

(वंशी-चोरी)

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$7\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$

चित्र का आकार बदामा है। कोनियों की जमीन लाजवर्ती है और उसपर सोने से आलङ्कारिक पुष्प बने हुए हैं। श्रीकृष्ण यमुना के तीर पर वृक्ष की छाया में बैठे हुए हैं और सामने खड़ी लाल रंग का लहँगा, नीले रंग की झीनी ओढ़नी और गुलाबी रंग की चोली पहने हुई गोपी कृष्ण से आँखें मटकाकर कह रही है कि मैंने तुम्हारी चीज़ नहीं ली है। इस भाव का प्रदर्शन चित्रकार ने बड़ी ही सुन्दरता से किया है। उसके वर्जित करते हुए हाथ और तनी हुई भौंहें उसकी नकली 'नहीं-नहीं' को साफ प्रकट कर रही हैं। यमुना के किनारे एक लम्बे खजूर के पेड़ के पास एक कञ्चुकीहीना सद्यः-स्नाता गोपिका अपना जूड़ा बाँध रही है और घूमकर श्रीकृष्ण और उस गोपी का संवाद भी सुनती जा रही है। एक दूसरी गोपी एक गागर में यमुना-जल भर रही है। पृष्ठिका में नदी के बाद पहाड़ हैं।

चित्र के सरपोश पर बिहारी के निम्नलिखित दोहे अङ्कित हैं—

"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी दुराइ।
सौंह करै भौंहे हँसै, दैन कहै नटि जाइ॥
ढोरी लाई सुनन कहि गोरी मुसकात।
थोरी थोरी सकुच सौं, भोरी भोरी बात॥"

(दाता—श्री एन. सी. मेहता)

६१—आया पानी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$7'' \times 4\frac{3}{4}''$

नायिका, जिसके सफेद लहँगा और केसरिया ओढ़नी हवा के झोंके से अस्त-व्यस्त हैं, दोनों हाथों से ओढ़नी सँभालती हुई छत पर से घर की ओर जा रही है। आकाश में काले बादल छाये हुए हैं। इस चित्र की एक प्रतिकृति लखनऊ के आर्टस्-स्कूल में है और एक बम्बई के।

(दाता—राय कृष्णदास)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६२—चिन्तातुरा

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—९ ५/८″ × ५ १/४″

यह तसवीर अधबनी है। बदामा आकार है। महल के आगे सायबानदार चबूतरे पर पलँग पर गावतकिए के सहारे लेटी हुई नायिका चिबुक पर बाएँ हाथ की उँगलियाँ रखे हुए चिन्ता कर रही है। उसकी पोशाक पीले रंग की है। फ़र्श पर शराब की कुछ शीशियाँ, चिलमची और पीकदान हैं। समय रात्रि का है। चाँद तथा तारे उगे हुए हैं। पृष्ठिका में हरी घास लगे हुए आँगन में हौज़, चहार-दीवारी, फाटक, मकान आदि हैं।

(दाता—राय कृष्णदास)

६३—गुलाम मुहम्मद का मदरसा

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८ १/२″ × ७″

यह एक मदरसे का स्याह कलम चित्र है। बाएँ ओर एक मौलवी साहब पगड़ी, चादर और कपड़े पहने हुए मसनद-तकिए के सहारे दो जानूँ बैठे हैं। उनके सामने ज़मीन पर बहुत से लड़के किताब खोले बैठे हुए हैं। पृष्ठिका में बाएँ ओर एक आदमी दरवाज़े के पास बैठा हुआ है। सिरे पर "गुलाम मुहम्मद" लिखा हुआ है।

६४—गो-दोहन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—९ ३/८″ × ६ १/८″

चित्र में बाएँ ओर लाल चादर ओढ़े तथा पीली पगड़ी बाँधे गोप-वेष में श्रीकृष्ण एक मोटी-ताज़ी गाय को दुह रहे हैं। गाय अपने गुलाबी रंग के बछड़े को चाट रही है। दूध दुहते हुए चित्र के दाहिने ओर खड़ी स्त्रियों से दूध दुहते हुए श्रीकृष्ण मानों कह रहे हैं—'लाओ, मटका दो ; दूध भर दें।' आगे खड़ी स्त्री, मानों कह रही है—'मटका मेरे पीछे खड़ी मेरी सहेली के हाथ में है।' पृष्ठिका में बहुत से घर हैं। कुछ में से स्त्रियाँ ताक रही हैं। एक गोशाला में गोप लोग गायों को हाँककर भर रहे हैं। उसके पास में ही बैठी एक स्त्री एक गाय को सानी खिला रही है। चित्र अभी अधूरा है।

(दाता—श्री मैथिलीशरणजी गुप्त)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६५—वैश्रवण

शैली—नैपाली ; १९वीं शती ; माप—६$\frac{3}{4}$″ × ४″

नील वर्ण, घुँघराले वाल वाले वैश्रवण कमलासन पर ज्वाला से घिरे हुए खड़े हैं। कटि में व्याघ्र-चर्म, गले में मुण्ड-माल और मोती की मालाएँ, कानों में सर्पों का कुण्डल तथा पैरों में सर्पों का छागल है। हाथों में सर्प के कड़े और वाहुओं में सर्प के अनन्त पहने हुए हैं। कटि-सूत्र मोती का बना हुआ है। वाएँ हाथ में वज्र और दाएँ हाथ में खप्पर है। मस्तक पर एक मुण्ड और चन्द्र तथा ललाट पर त्रिनेत्र हैं।

६६—पंजाबी हलवाई

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७$\frac{1}{4}$″ × ६$\frac{1}{2}$″

हलवाई की दूकान का स्याह कलम चित्र है। वीच में एक हलवाई कुछ मिठाइयाँ तौल रहा है। दाहिने ओर ग्राहक वैठा है। एक आदमी कड़ाही उठाये हुए है। वहुत-सी खाद्य सामग्रियाँ थाली में सजी हुई हैं।

रुक्मिणी-हरण-संबंधी तेरह चित्र

ये चित्र सं० १९२३ वि० के फाल्गुन (प्रविष्ठा = सौर) २० को महाराज भवानीसिंह बहादुर के लिये तैयार हुए थे। किन्तु जान पड़ता है कि ये किसी पुरानी चित्रावली की नकल मात्र हैं, क्योंकि इनमें के चित्र नं० १० के पीछे लिखा है—"चेतए ते घरे दे" अर्थात् "चेतू के घर से।" चेतू पहाड़ी चित्रकारों की अन्तिम पीढ़ी में हुआ है, उसी के घर से यह चित्र प्राप्त हुआ होगा और सम्भवतः उसी के किसी पूर्वज का बनाया होगा।

इन चित्रों में उक्त चित्र की प्रतिकृति (नं० ११) भी है, जो अन्य चित्रों की भाँति पिछले कलम की है। जान पड़ता है कि इसी तरह अन्य चित्र भी उसी चेतू के घर की चित्रावली की प्रतिकृतियाँ हैं। चित्रों की समाप्ति की तिथि चित्र नं० १३ के पीछे दी हुई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुक्मिणी-हरण चित्र (१)

६७—गणेशजी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½″ × ११½″

एक नदी के किनारे चबूतरे पर शाहनशीन के नीचे छत्र लगे हुए सिंहासन पर चतुर्भुज गणेश बैठे हैं। दाहिने ऊपरी हाथ में लड्डू, निचले में अक्षमाल, बाएँ ऊपरी हाथ में परशु तथा नीचे के बाएँ हाथ में गजदंत है। गणेशजी सूँड़ बढ़ाकर, चित्र के बाएँ ओर खड़ी सेविका के थाल से, लड्डू खा रहे हैं। सेविका के दूसरे हाथ में ताम्बूल-पात्र है। चित्र के दाहिने ओर की सेविका एक हाथ से चमर डुला रही है और दूसरे में एक माला लिये है। सिंहासन के सामने चूहा लड्डू खा रहा है। जमीन पर चिलमची, गड़वा, दो गगरे और पादुकायें हैं।

यह चित्र रुक्मिणी-मंगल-चित्रावली का मंगलाचरण है।

रुक्मिणी-हरण चित्र (२)

६८—शुक-परीक्षित-संवाद

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½″ × ११½″

नदी के किनारे एक बैठक बनी हुई है, जिसमें बाएँ ओर राजा परीक्षित जामा, पट्का और मुकुट धारण कर हाथ जोड़े हुए शुकदेवजी से, जो धोती-दुपट्टा पहने हुए सामने बैठे हैं, कथा सुन रहे हैं। बैठक के अगल-बगल वृक्ष हैं।

भागवत में शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को कृष्णचरित के प्रसंग में यह कथा भी सुनाई थी, उसी का यह चित्र है।

रुक्मिणी-हरण चित्र (३)

६९—पत्र-प्रेषण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप ७½″ × ११½″

एक बरामदे में से पैरहन, ओढ़नी और गहने पहने हुए रुक्मिणी, कृष्ण को देने के लिये ब्राह्मण को पत्र दे रही हैं। बरामदे में तीन सखियाँ थाली, अँगोछा, माला, लोटा और चौरी लिये हुए खड़ी हैं। मुड़ेरे पर एक मोर बैठा हुआ है।

पृष्ठिका में वृक्ष के नीचे एक ब्राह्मण सोया हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विदर्भ देश के "भीष्मक" नामक राजा थे। उन्हें रुक्मी आदि पाँच पुत्र और रुक्मिणी नाम की कन्या थी। उसका विवाह उसके घरवाले कृष्ण से करना चाहते थे; किन्तु रुक्मी को कृष्ण से द्वेष था। अतएव उसने शिशुपाल से रुक्मिणी का संवन्ध निश्चित किया। जब यह समाचार रुक्मिणी को विदित हुआ, तब ब्राह्मणद्वारा उसने कृष्ण को लिख भेजा कि आप मेरा उद्धार कीजिए।

रुक्मिणी-हरण चित्र (४)

७०—शीघ्र प्रयाण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$७\frac{1}{2}'' \times ११\frac{1}{2}''$

एक पटनहियाँ छतरीदार एक्कानुमा रथ, जिसमें चार घोड़े जुते हुए हैं, सरपट दौड़ा चला जा रहा है। सारथी एक हाथ से चावुक, दूसरे हाथ से रास पकड़कर झुककर रथ को दौड़ा रहा है। रथ में पीला जामा और गहने पहने हुए श्रीकृष्ण रुक्मिणी का पत्र बाँच रहे हैं और उनके सामने बैठा ब्राह्मण बड़ी उत्सुकता से उनकी ओर देख रहा है।

उस ब्राह्मण द्वारा रुक्मिणी का पत्र पाकर द्वारका से श्रीकृष्ण चटपट विदर्भ को चल पड़े। रुक्मिणी के पत्र ने उनको ऐसा आकर्षित कर लिया कि वे उसे रास्ते भर बाँचते ही गये।

रुक्मिणी-हरण चित्र (५)

७१—प्रतिद्वन्द्वी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$७\frac{1}{2}'' \times ११\frac{1}{2}''$

चित्र बारात की अगवानी का है। रुक्मी ने शिशुपाल को रुक्मिणी के विवाह के लिये बुलाया। चित्र के बाएँ ओर बारात का दृश्य है। बहुत से योद्धागण घोड़ों पर जिरह-बख़्तर पहने हुए सवार हैं। अधिक लोगों के पास ढाल, तलवार, पेशकब्ज इत्यादि हैं और कुछ चमर, मोरछल, निशान इत्यादि लिये हुए हैं। कुछ बजनियें कोट, पाजामा और कुलह पहने हुए, नरसिंहा, बाँसुरी और तासा बजा रहे हैं। कुछ के हाथों में झण्डे हैं। एक घुड़सवार दोनों हाथों में दो छोटे डंडे लेकर संगीत का संचालन कर रहा है। बारात के आगे-आगे जिरह-बख़्तर, कलँगी और गहने पहने हुए एक कुम्मैत घोड़े पर सवार शिशुपाल का पिता दमघोष है। उसके ठीक बगल में जामा, जोड़ा, मुकुट और सेहरा पहने हुए शिशुपाल है। बारात के आगे-आगे एक घुड़सवार हाथ में आसा लेकर पूरी बारात का संचालन कर रहा है। बाएँ ओर राजा भीष्मक अपने महल के द्वार पर हाथ जोड़े हुए बारात का स्वागत कर रहे हैं। उनके बहुत से पार्षद उनके पीछे खड़े हैं।

इधर रुक्मिणी के भाई रुक्मी ने शिशुपाल को विवाह के लिये बुला भेजा। वह बारात लेकर विदर्भ की राजधानी कुण्डिनपुर पहुँचा। बारात में जरासन्ध आदि अनेक कृष्ण के विरोधी राजागण दल-बल से आये, क्योंकि उन्हें श्रीकृष्ण से आशंका थी। रुक्मी ने बारात का स्वागत किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुक्मिणी-हरण चित्र (६)

७२—दौड़ादौड़

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप ७½" × ११½"

इस चित्र में बलराम श्रीकृष्ण की सहायता के लिये सेना-सहित कुण्डिनपुर को जा रहे हैं। बलराम एक अम्बारीदार हाथी पर बैठे हैं। हाथी दौड़कर एक नाला पार कर रहा है। आगे-आगे बहुत से घुड़सवार सरदार शस्त्रास्त्र से सुसज्जित चले जा रहे हैं। कुछ पैदल सिपाहियों के हाथ में झण्डे हैं। घुड़सवारों के एक दस्ते के आगे निशान बज रहा है। हाथी के पीछे भी घुड़सवारों का दस्ता दौड़ा चला जा रहा है।

कथा-संदर्भ—श्रीकृष्ण रातोरात कुण्डिनपुर पहुँचे। द्वारका में बलराम ने जब सुना कि श्रीकृष्ण रुक्मिणी-हरण को गये हैं तो वे भी सहायतार्थ चतुरंगिणी सेना लेकर दौड़ादौड़ कुंडिनपुर पहुँचे।

रुक्मिणी-हरण चित्र (७)

७३—परामर्श

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½" × ११½"

एक बगीचे में, जहाँ नाना रंग के पुष्पों की क्यारियाँ बनी हुई हैं और एक वापी में सारस तैर रहे हैं, एक शाहनशीन के नीचे श्रीकृष्ण और बलराम आमने-सामने बैठकर सलाह कर रहे हैं। फर्श पर कुछ सरदार बैठे हुए हैं। कुछ परिचारक इधर-उधर खड़े हैं। दरवाजे के पास एक हाथी खड़ा है तथा महावत झुककर सलाम कर रहा है। दरवाजे के अन्दर से एक ऊँट, जिसपर तम्बू लदा हुआ है, निकल रहा है। वाटिका के एक ओर छोलदारी गाड़ी जा रही है। एक ओर रथ खड़ा है, जिसके केवल चार घोड़े दिखाई पड़ रहे हैं।

कथा-संदर्भ—दोनों भाइयों ने एक जगह बैठकर अपना कर्तव्य निश्चित किया।

रुक्मिणी-हरण चित्र (८)

७४—बलराम-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½" × ११½"

रुक्मिणी-हरण होने पर शत्रुओं ने श्रीकृष्ण का पीछा किया। इस धावे को बलराम ने रोका। चित्र में बाएँ ओर हाथी पर एक खुले हुए हौदे में कवच-मुकुट से सुसज्जित बलराम, जिनके दाहिने हाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में हल है, युद्ध कर रहे हैं। उनके घुड़सवार सैनिक धनुष, बाण और खड्गों से शत्रु-सेना को काट-काट-कर पृथ्वी पर गिरा रहे हैं।

कथा-संदर्भ--उस समय वहाँ पर सभी राजा ससैन्य उपस्थित थे। जब श्रीकृष्ण का रथ आगे बढ़ा, तब उन्हें ज्ञान हुआ कि क्या हो गया? उन्होंने श्रीकृष्ण का पीछा करना चाहा; किन्तु बलराम पहले से ही अपनी चतुरंगिणी सेना लेकर मार्ग रोके खड़े थे। उन्होंने सबको मार भगाया।

रुक्मिणी-हरण चित्र (९)

७५--रुक्मी-पराजय

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—७½" × ११½"

राजाओं के हार जाने पर रुक्मी अपनी बहन के हरण किये जाने के अपमान का बदला लेने के लिये श्रीकृष्ण से रथ पर युद्ध कर रहा है। इस चित्र में बाएँ ओर रुक्मी तथा दाएँ ओर श्रीकृष्ण का रथ है। रुक्मी जिरह-बख़्तर, मुकुट आदि से सुसज्जित है। श्रीकृष्ण ने अर्द्धचन्द्र बाण मारकर उसका धनुष काट दिया है। बाणों से बिधा हुआ उसका सारथी भी पृथ्वी पर लोट रहा है। अपने छतरीदार रथ पर बैठकर श्रीकृष्ण बाण चला रहे हैं और उनके पीछे रुक्मिणी मुँह फेरकर बैठी है, मानों भाई और पति का युद्ध उसे नहीं भाता है।

कथा-संदर्भ—रुक्मी इस अपमान को न सह सका। अपने रथ पर चढ़कर उसने श्रीकृष्ण का पीछा किया। चलते-चलते उसने प्रतिज्ञा की कि यदि मैं श्रीकृष्ण को मारकर अपनी बहन को न लौटा लाया तो फिर कभी विदर्भ को मुँह न दिखाऊँगा। कुछ दूर जाने पर उसे श्रीकृष्ण का रथ दिखाई पड़ा। उसने श्रीकृष्ण को ललकारा, फिर उनमें खूब युद्ध हुआ। श्रीकृष्ण के तीरों से रुक्मी का सारथी मारा गया और उसका धनुष भी कट गया।

रुक्मिणी-हरण चित्र (१०)

७६—श्रीकृष्ण का द्वारका-प्रवेश

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; माप ७½" × ११½"

श्रीकृष्ण और बलराम हाथी पर चढ़कर राजद्वार में प्रवेश कर रहे हैं। सामने कुछ सिपाही झण्डे लिये खड़े हैं और बाजे बज रहे हैं। हाथी के अगल-बगल भी सिपाही हैं। आगे-आगे रुक्मिणी का ओहारदार डोला है, जिसे कहार राजद्वार के अन्दर उठाये लिये जा रहे हैं।

कथा-संदर्भ—अन्त में रुक्मी को विरथ होकर बुरी तरह हारना पड़ा। श्रीकृष्ण को उसकी हरकतों से बड़ा रोष हुआ था, अतएव उन्होंने उसके बाल काटकर, उसे विरूप कर, रथ में बाँध दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि रुक्मिणी बीच में न पड़ी होती तो वे उसे समाप्त कर देते। इसी समय बलराम कटक-सहित वहाँ आ पहुँचे। उन्हें अधमरे रुक्मी की हालत देखकर ऐसी दया आई कि उसे बन्धन-मुक्त ही नहीं कर दिया; वल्कि श्रीकृष्ण को दो-चार खरी-खोटी भी सुनाई।

आगे की मंजिलें निर्विघ्न समाप्त हुईं। रुक्मी का डोला यथासमय द्वारका के राजमहल में प्रविष्ट हुआ।

(उधर रुक्मी अपनी प्रतिज्ञा के कारण राह में "भोजकट" नामक नगर बसाकर रहने लगा।)

रुक्मिणी-हरण चित्र (११)

७७—द्वारका-गमन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—$७\frac{१}{२}'' \times ११\frac{१}{२}''$

विवरण के लिये देखिये नं० १० का चित्र।

यह चित्र सं० १० के चित्र की नकल है। यह पीछे का, एवं इस चित्रावली के अन्य चित्रों के संग का बना है। इसकी रेखाएँ उतनी कैंड़े से और दमदार नहीं हैं और रंगा-मेज़ी भी भिन्न है, जो इस चित्रावली के अन्य चित्रों के अनुसार है।

रुक्मिणी-हरण चित्र (१२)

७८—श्रीकृष्ण का रुक्मिणी से विवाह

शैली—पहाड़ी ; १८वीं शती ; माप—$७\frac{१}{२}'' \times ११\frac{१}{२}''$

घर के आँगन में चार वासों तथा वन्दनवारों से बना एक मँड़वा एक कनात द्वारा घिरा हुआ है। बाएँ ओर श्रीकृष्ण और घूँघट काढ़े रुक्मिणी आसन पर, पीढ़े पर पैर रखकर, बैठे हुए हैं। श्रीकृष्ण बाएँ हाथ से सेहरा सँभाले हुए हैं और दाहिने हाथ से स्रुवा लेकर हवन कर रहे हैं। उनके पीछे बहुत-सी स्त्रियाँ मंगल-वस्तुएँ लिये हुए आपस में बातचीत कर रही हैं। दो स्त्रियाँ वधू को कहकर पूजा करा रही हैं। दो स्त्रियाँ खिड़की से देख रही हैं। दाहिने ओर श्रीकृष्ण के सामने दो पण्डित विवाह-कर्म करा रहे हैं। उनके पीछे घड़ा लिये हुए एक आदमी खड़ा है। सबसे पीछे तीन स्त्रियाँ हैं जिनमें से एक मशाल और कुप्पी लिये हुए है, दूसरी तानपूरा छेड़ रही है और तीसरी गा रही है। कनात के बाहर, चित्र के बाएँ ओर कोषाध्यक्ष सामने रुपयों की थैली रखे बैठे हैं। एक दूसरा वृद्ध पुरुष उनके कंधे पर हाथ रखकर कुछ माँग रहा है। एक आसावरदार भी खड़ा है। मण्डप में पृथ्वी पर पुष्प-मालाएँ, थाल इत्यादि पड़े हैं। हवन हो रहा है। अगल-बगल दो मशाल जल रहे हैं। समय रात्रि का है। तारे छिटक रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुक्मिणी-हरण चित्र (१३)

७९—परिछन

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती ; माप—७½″ × ११½″

विवाहोपरान्त स्त्रियाँ श्रीकृष्ण और रुक्मिणी की आरती कर रही हैं। बाएँ ओर घर के सामने वाले चबूतरे पर स्त्रियों का झुण्ड जमा है। कुछ के हाथ में चिलमची, गड्डआ, इत्रदान, पानदान इत्यादि हैं। कुछ न्योछावर में अशर्फियाँ लुटा रही हैं। एक स्त्री एक पीढ़े पर खड़े श्रीकृष्ण और रुक्मिणी की आरती उतार रही है। इनके पीछे कुछ स्त्रियाँ हाथ में मोरछल, चमर और पूर्ण घट लिये हुए हैं और कुछ ढोलक और तानपूरे के साथ-साथ गा रही हैं। दो स्त्रियाँ खिड़की से यह सब देख रही हैं। दाहिने ओर महल का फाटक है। दरवाजे पर एक द्वारपाल आसा लिये बैठा है। उसके सामने कुछ अवगुण्ठनवती स्त्रियाँ खड़ी हैं। दरवाजे के भीतर से घूँघट काढ़े एक दूसरी स्त्री इन्हें भीतर बुला रही है। फाटक के ऊपर नौबतखाने में रोशनचौकी बज रही है। बाजों में नरसिंहा, नफ़ीरी, नगाड़े इत्यादि हैं।

इस चित्र के पीछे निम्नलिखित लेख अङ्कित हैं—

"सम्वत १९२३ फलगुण प्र० २० समात श्री माहाराज भवानीसीह वहादुर जी की आग्यां से पुस्तक वणी"

"मंगलं मंगलं मंगलं लेखकानाच पाठकानाच मंगलं मंगलं सर्वलोकानाम भूमौ भूपति मंगलम् सूभ शुभ सौंण ५२८ आ ऐ फाल्गुन प्र० २० समात।"

दुर्गापाठ चित्र सं० (१)

८०—व्यास-शिष्य जैमिनि और मार्कण्डेय संवाद

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती

पर्वत-खण्ड में सुरम्य एवं पावन तपस्थली में हरित शाद्वल के ऊपर एक पर्ण-निर्मित छत्र के नीचे वृत्ताकार आसन पर श्री मार्कण्डेय मुनि विराजमान् हैं। उनके सामने छत्र के बाहर एक आसन पर धोती और उपरना धारण किये हुए, हाथ जोड़कर क्रोष्टु ऋषि बैठे हुए हैं। पास में फूले हुए वृक्षों की स्निग्ध छटा है। चित्र की पृष्ठिका को नारंगी रंग से बनाकर चित्रकार ने तपोवन का दिव्य तेज अङ्कित किया है। आकाश में यत्र-तत्र स्थित शुभ्र मेघ शान्ति और सात्विकता की अभिव्यञ्जना कर रहे हैं। नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"सावर्णिः सूर्य तनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥ ॐ नमः चंडिकाये ॥१॥"

पुश्त पर निम्नलिखित लेख अङ्कित है—

'श्रीशंकर विजय सेना गाधीश सुपूजित'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'मार्कण्डेय-पुराण' मार्कण्डेय मुनि और क्रोष्टु ऋषि के संवाद के रूप में है। कथा-प्रसङ्ग में क्रोष्टु ने मार्कण्डेय मुनि से सूर्य-पुत्र अष्टम मनु सावर्णि की उत्पत्ति पूँछी। मार्कण्डेय ने कहा कि सावर्णि की उत्पत्ति कैसे हुई और वे किस प्रकार महामाया की कृपा से मन्वन्तर के अधिपति हुए, यह मैं विस्तार के साथ कहता हूँ सुनो!

इस चित्र में मार्कण्डेय मुनि और क्रोष्टु ऋषि उक्त वार्तालाप करते हुए दिखाये गये हैं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२)

८१—मेधा मुनि का आश्रम

शैली—पहाड़ी; १९वीं शती

इस चित्र में सुमेधा मुनि का आश्रम दिखाया गया है। दाहिने ओर पास-पास उगे दो वृक्षों के नीचे मुनि की अर्द्ध-बदामाकार कुटिया बनी हुई है। कुटिया के द्वार पर ऋषि एक आसन पर बैठे हुए हैं। उनके पीछे की ओर दो बैठे हुए शिष्य कुछ पढ़ रहे हैं। मुनि के सामने जामा और पाग धारण किये हुए राज़ा सुरथ बैठे हैं। राजा के हाथ जोड़े हुए होने तथा मुनि की हस्तमुद्रा से जान पड़ता है कि मुनि राजा से कुशल-प्रश्न पूछ रहे हैं। चित्र के बाएँ ओर भी घोड़े पर चढ़े हुए राजा सुरथ दिखाये गये हैं। इस प्रकार चित्र दो भागों में बँट जाता है। प्रथम वह भाग जिसमें राजा दूर घोड़े पर से मुनि का आश्रम देख रहे हैं, दूसरा वह जिसमें मुनि राजा का स्वागत कर रहे हैं। कुटी के पार्श्व में एक मृग और एक व्याघ्र का प्रदर्शन तपोवन का सात्विक प्रभाव व्यक्त कर रहा है।

चित्र के नीचे हाशिए पर निम्नलिखित लेख अंकित है—

"आद्य ॥ महामायानुभावेन ॥ अन्त ॥ मुनिशिष्योपशोभितः ॥ २ ॥"

चैत्रवंशी राजा सुरथ बड़े प्रजा-पालक नरेश थे। एक बार वे कोल-विध्वंसकारी भूपालगण से पराजित होकर जब अपने नगर में आये, तो प्रबल मंत्रिगण ने उनके साथ विश्वासघात कर सारा राजत्व अपने स्वयं अधिकार में कर लिया। इस व्यवहार से राजा सुरथ अतीव दुःखित हुए और गहन वन में प्रस्थान किया। घोड़े पर सवार इधर-उधर भटकते-भटकते राजा एक मुनि-आश्रम के निकट जा पहुँचे। यह पवित्र और सात्विक वातावरण-संयुक्त मेधा मुनि का आश्रम था। वहाँ अन्य मुनि और शिष्य भी उपस्थित थे। यत्र-तत्र वन्य पशु विचर रहे थे।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३)

८२—छोह

शैली—पहाड़ी; १९वीं शती

चित्र में सुमेधा मुनि का आश्रम प्रदर्शित किया गया है। दाहिने ओर मुनि की कुटिया है। कुटी-द्वार पर मुनि एक आसन पर बैठकर एक शिष्य को उपदेश दे रहे हैं। मुनि के एक हाथ में माला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा पार्श्व में कमण्डलु है। पास ही एक बन्दर, एक सारस पक्षी और दो व्याघ्र निर्द्वन्द्व-भाव से स्थित हैं। बाएँ ओर राजा सुरथ बैठे हुए, समाधि नामा वैश्य से, जिसने अपने बन्धु-वर्ग के फेर में सर्वस्व खो दिया है, बातचीत कर रहे हैं। समाधि खड़ा है। पृष्टिका में पहाड़ियाँ और बाग अङ्कित हैं। सम्पूर्ण चित्र से एक अत्यन्त सुखद शान्ति का अनुभव हो रहा है। नीचे की ओर हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ तस्थौ कंचित्सकालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
॥ अन्त ॥ करोमि किं यन्नमनस्तैष्वप्रीतिषु निष्ठुरं ॥ श्लोक २६ ॥३॥"

मुनि ने सादर राजा को आश्रम में स्थान दिया। वन में रहते हुए राजा के चित्त में राजपाट विषयक चिन्ता होने लगी। वे मन-ही-मन सोचने लगे कि मेरी संचित राजश्री अब दूसरों के वशीभूत होकर न जाने कौन-कौन-सा अनर्थ कराती होगी और न जाने मेरी प्रजा कौन-कौन-से संकट झेलती होगी।

इस प्रकार चिन्तित राजा को आश्रम के निकट एक वैश्य दिखाई दिया। राजा ने उसे उस वन में देख उसके समाचार पूछे। वैश्य ने कहा—'मैं धनीकुल में समुत्पन्न समाधि नाम का एक वैश्य हूँ। मेरे दुष्ट पुत्र-पत्नी-बन्धुवर्ग ने मेरे धन का अपहरणकर मुझे परित्याग दिया है। अतएव मैं वन-वन फिरता हूँ। यद्यपि मैं यहाँ घर से दुःखी होकर आया हूँ, फिर भी न जाने क्यों अपने पुत्रों और बन्धु-बान्धवों आदि को यादकर मेरा चित्त विह्वल हो उठता है।'

राजा ने कहा—'मेरा भी वही हाल है। चलो, हम दोनों ही मुनि के चरणों के निकट उपस्थित हो इसका रहस्य जानें।' ऐसा निश्चयकर दोनों मुनि के समीप वाञ्छित रहस्य जानने को गये।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४)

८३—माया-लीला

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

राजा सुरथ और समाधि वैश्य मोह का कारण जानने के लिये ऋषि के पास आये हुए हैं। चित्र में कुटिया के सामने मृगछाला पर बैठे हुए मुनि सामने बैठे हुए राजा और वैश्य को उपदेश दे रहे हैं। सामने अग्निकुण्ड बना है और बाएँ ओर एक शिष्य स्थित है। सारस, हरिण और चीते घूम-फिर रहे हैं। पृष्ठिका में प्रदर्शित किये गये वृक्षों पर पक्षियों का कलरव हो रहा है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तम् मुनिम् समुपस्थितौ ॥
अन्त ॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥ श्लोक ४८ ॥ ४ ॥"

राजा ने सारी कथा कहते हुए मुनि से कहा—हे मुनिश्रेष्ठ, मेरे मंत्रिगण ने मेरे राज पर अनधिकार प्रभुत्व कर लिया है और इससे विरक्ति लेकर जब मैं वन में आकर समय बिता रहा हूँ, फिर भी मुझे क्यों राजपाट की चिन्ता हो रही है और क्यों इस वैश्य का चित्त अपमान कर घर से निकाल देनेवाले अपने पुत्र-दारा आदि के प्रति क्षुभित हो रहा है? इस अकारण मोह का क्या कारण है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुनि ने कहा—यह सब महामाया का प्रभाव है। वे ही नाना प्रकार के माया-बन्धन में फाँस-कर सारी सृष्टि को नाच नचाया करती हैं।

राजा ने फिर पूछा—वे महामाया कौन हैं, कैसे उत्पन्न हुईं और उनका क्या प्रभाव है? सब कृपया बतलाइये।

मुनि ने कहा—वे जगन्मूर्त्ति महामाया सर्वव्यापक और सनातन हैं। जब-जब देवों पर संकट आता है, वे देवों की रक्षा करती हैं। सुनो, मैं उनकी उत्पत्ति बतलाता हूँ। जब सृष्टि का अंत हो चुका था और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जलप्लावित हो रहा था, उस समय कल्पान्त में भगवान् विष्णु जब अनन्तशय्या का आश्रय लेते हुए योग-निद्रावलम्बन करते थे तब विष्णु के कर्णमल से दो असुर मधु और कैटभ नामवाले, उत्पन्न हुए और अपने समक्ष विष्णु की नाभि से निकले हुए कमल पर आसीन ब्रह्मा को देखकर उन्हें हनन करने पर कृतोद्यम हुए। इस आकस्मिक संकट को आते देख कमलासन ब्रह्मा ने विष्णु-नेत्र में अवस्थित निद्रास्वरूपा जगद्धात्री योगनिद्रा का स्तवन कर स्मरण किया। स्तुति से प्रसन्न होकर, देवी ने विष्णु की आँखों से प्रयाण किया। तब भगवान् उठ बैठे। सामने ही उन दुष्टों को यम की तरह आते हुए देख भगवान् उनसे बाहु-युद्ध करने लगे। युद्ध करते-करते पाँच हजार वर्ष बीत गये। तब माया से विमुग्ध हो उस असुरद्वय ने प्रसन्न होकर भगवान् से कहा—हम तुम्हारे युद्ध-कौशल से संतुष्ट हुए। माँगो, क्या वर चाहते हो?

भगवान् ने कहा—यदि आप संतुष्ट हैं तो अपना वध मेरे हाथों होने दीजिए।

राक्षसों ने चतुर्दिक् अपार जलराशि को देख भगवान् से कहा—अच्छा, किन्तु शर्त यह है कि जहाँ जल न हो, वहीं हमारा वध करो।

तब भगवान् ने चट अपनी जाँघ पर रखकर उन दोनों के शिर काट डाले।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५)

८४—देवी की उत्पत्ति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में सहस्र फण वाले शेषनाग की शय्या पर विष्णु शयन कर रहे हैं। निद्रावस्था में उनके आयुध चक्र, शङ्ख, गदा और पद्म उनकी शेष-शय्या पर पड़े हुए हैं। नाभि-प्ररूढ़ कमल के आसन पर ब्रह्मा बैठे हुए हैं। विष्णु के कर्णमल से उत्पन्न मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य नाभि-कमलस्थ ब्रह्मा को मारने के लिये झपट रहे हैं। शेष-शय्या के चारों ओर अपार जल-राशि दिखाई गई है, जिसमें यत्र-तत्र मछलियाँ और नक्रादि दिखाये गये हैं। नीचे की ओर हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थ आविर्भवति सा यदा ॥
अन्त ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हेतुमेतौ महासुरौ ॥५॥"

कथा-संदर्भ के लिये देखिये चित्र सं० ४ पर दिया गया संदर्भ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (६)

८५—विष्णु और मधु-कैटभ का युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में भगवान् विष्णु दो रूपों में दिखाये गये हैं। पहले में वे निद्रा-मुक्त होकर शेष-शैय्या पर बैठे हुए दोनों दैत्यों को देख रहे हैं। दूसरे रूप में मधु-कैटभ से बाहु-युद्ध करते दिखाये गये हैं। प्रलय के पश्चात् की विक्षुब्ध जल-राशि चारों ओर दिखाई पड़ रही है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ एवंस्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥
अंत ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ श्लोक ७३ ॥ ६ ॥"

कथा-संदर्भ के लिये देखिये चित्र संख्या ४ पर दिया गया संदर्भ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (७)

८६—मधु-कैटभ-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में भी घटना-क्रम के अनुसार भगवान् दो रूपों में दिखाये गये हैं। पहली अवस्था में मधु-कैटभ भगवान् को वर देते हुए दिखाये गये हैं। फिर दूसरी अवस्था में भगवान् मधु-कैटभ का वध कर रहे हैं। नीचे हाशिए पर अधोलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ पंचवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥
अंत ॥ भूयः श्रृणु वदामि ते ॥ श्लोक ७९ ॥७॥"

कथा-संदर्भ के लिये देखिये चित्र सं० ४ पर दिया गया संदर्भ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (८)

८७—असुरों की विजय

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवासुर-संग्राम दिखाया गया है। चित्र में दाहिने ओर नाना प्रकार के आयुधों से सुसज्जित असुर-दल देवों पर प्रहार कर रहा है। उनके प्रहार से पीड़ित एवं विचलित होकर देवता—ऐरावत पर इन्द्र, महिष पर यम, हिरण पर वायु तथा अश्व पर नैर्ऋत—भागे जा रहे हैं। कुछ ऊपर की ओर घोड़े पर चढ़ा हुआ असुर-दल, मेष पर चढ़े हुए अग्नि और अन्यान्य देवों को भगाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ बढ़ रहा है। गर्दभमुखवाले तुम्बरु अपना ढोल और तानपूरा सँभाले भागे जा रहे हैं। मेघ-मण्डल के मध्य में महिषासुर सिंहासन पर बैठा है।

सामने एक असुर-बाला नृत्य कर रही है। तीन असुर समाजी ढोल, सारङ्गी और मजीरा बजा रहे हैं। वे विजय में खुशी मना रहे हैं; क्योंकि इन्द्र के हार जाने पर महिष राजा हुआ। नीचे हाशिए में निम्नलिखित लेख अङ्कित है—

"आद्य ॥ देवासुरमभूद्युद्धं ॥ अंत ॥ जित्वा च सकलान्देवान्निंद्रोभून्महिषासुरः ॥ श्लोक ॥ २ ॥ ८ ॥"

कथा-संदर्भ—एक बार देवों और दानवों में घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में देवताओं के अधिपति "पुरन्दर" नामक इन्द्र थे और आसुरों का अधिपति "महिष" नामक असुर था। लगातार १०० वर्षों तक युद्ध होने के उपरान्त देवों की हार हुई। देवताओं को पराजित करके महिषासुर स्वयं इन्द्र बन बैठा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (९)

८८—पराजित देवता

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में दशों दिग्पालों का प्रदर्शन है।

सं०	नाम	रंग	दिशा	वाहन	स्थान
१.	शिव	गौर	ईशान	वृषभ	प्रथम
२.	ब्रह्मा	गौर	आकाश	हंस	द्वितीय
३.	अग्नि	लाल	अग्नि कोण	मेष	तृतीय
४.	नैर्ऋत	लाल	नैर्ऋत्य कोण	घोड़ा	चतुर्थ
५.	इन्द्र	गौर	पूर्व	ऐरावत	पञ्चम
६.	यम	श्याम	दक्षिण	महिष	षष्ठ
७.	अनन्त	गौर	अधोदिशा	×	सप्तम
८.	वायु (मरुत)	हलका पीला	वायव्य कोण	हरिण	अष्टम
९.	कुबेर	पीला	उत्तर	नर (दिखाया नहीं गया)	नवम
१०.	वरुण	हरित	पश्चिम	मकर	दशम

पृष्ठिका में एक वृक्ष-कुञ्ज दिखाया गया है। एक विशाल वृक्ष के नीचे नील वर्ण चतुर्भुज विष्णु तथा जटाधारी गौर वर्ण शङ्कर विराजमान् हैं। इनके दाहिने ओर इनके वाहन गरुड़ और नन्दी बैठे हैं। सामने खड़े हुए चतुर्भुज ब्रह्मा तथा इन्द्र, अग्नि, यम इत्यादि उन्हें अपने पराजय का वृत्त सुना रहे हैं। इनके पीछे, कुछ दूर पर इनके वाहन शान्त भाव से खड़े हैं, यथा—हंस, ऐरावत, मेष, मृग, महिष, अश्व आदि। चित्र के हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिं ॥
अंत ॥ शरणं च प्रपन्नास्मो वधस्तस्य विचिन्त्यतां ॥ ९ ॥"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब पराजित देव-समूह ब्रह्मा को आगे करके विष्णु और शङ्कर के पास गया। देवों ने महिषासुर कृत सम्पूर्ण अत्याचार सुना डाला और यह भी निवेदन किया कि आप लोग कृपा करके देवों के इस निरङ्कुश शत्रु महिषासुर के वध का कोई उपाय सोचें।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१०)

८९--शिवा देवी की उत्पत्ति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

देवताओं की हार का समाचार सुनकर शिव तथा विष्णु ने अपने क्रोध से देवी को उत्पन्न किया। इस चित्र में जलती हुई अग्नि के अन्दर अठारह भुजावाली देवी खड़ी दिखाई गई हैं और उनके दोनों ओर वृत्ताकार खड़े हुए देवगण उनकी प्रार्थना करके अपने-अपने आयुध प्रदान कर रहे हैं। उन्हें शिव अपना शूल, विष्णु अपना चक्र, एक हरित वर्ण देवता (वायु) अपने धनुष और तूणीर दे रहे हैं। इसी प्रकार वरुण शंख और पाश, दक्ष प्रजापति अक्षमाला, ब्रह्मा कमण्डलु, काल अपनी तलवार और चक्र, हिमालय सिंह, कुवेर सुरा-परिपूर्ण पान-पात्र, सर्वनागेश अनन्त नागहार दे रहे हैं। इस प्रकार देवगण नाना प्रकार के साधनों से उन्हें विभूषित कर रहे हैं।

हाशिए में निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ॥ इन्वति शम्य देवानां वचांसि मधुसूदन।
अंत ॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममराय: ॥ १० ॥"

यह सुनकर विष्णु और शिव असुरों के ऊपर बड़े क्रुद्ध हुए और उनके मुखों से महत्तेज निकलने लगा। अन्य देवताओं के शरीर से भी तेज निकलने लगा और शिव तथा विष्णु के मुख-निर्गत तेज में जा मिला। अन्त में वह तेजोराशि नारी-रूप में परिवर्त्तित हो गई, जिसकी प्रखर कान्ति त्रिलोक में फैल गई। एवंभूता उस शिवा देवी को देवताओं ने नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र दे अलंकृत किया। देवी को देवों ने नाना प्रकार के आभूषण भी दिये। नाना शस्त्रालंकार-भूषिता वह अठारह भुजावाली देवी अट्टहास करती हुई गर्जन करने लगी, जिसके कठोर रव से समस्त लोक संक्षुब्ध हो उठे और देवगण प्रसन्न होकर उस सिंहवाहिनी देवी का जय-जयकार करने लगा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (११)

९०--रण-प्राङ्गण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवी और असुरों का युद्ध दिखाया गया है। देवी लाल लहँगा और कवच पहिने हुए एवं शिर पर शीर्षत्राण और कलँगी धारण किये हुए हैं। देवी की अठारहों भुजाओं में कुछ-न-कुछ विद्यमान् है। वे ये हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दाहिने नीचे से पहले हाथ में प्याला,

दूसरे	,,	शक्ति,
तीसरे	,,	अक्षमाला,
चौथे	,,	शूल,
पाँचवें	,,	पाश,
छठें	,,	अर्द्धचन्द्रबाण,
सातवें	,,	शङ्ख,
आठवें	,,	खड्ग,
और नवें	,,	घण्टी है।

दूसरी और तीसरी नीचे की दाहिनी भुजाओं में देवी ढाल दबाये हुए हैं। सब से नीचे के वाएँ हाथ में, जो स्वाभाविक है, देवी अमृत-कलश लिये हुए हैं।

दूसरे वाएँ हाथ से भी देवी, सब से नीचे के दूसरे दाहिने हाथ से पकड़ी हुई शक्ति को दूसरे स्थान पर पकड़े हुए हैं।

तीसरे वाएँ हाथ में पुष्पमाला,

चौथे	,,	,,	गदा,
पाँचवें	,,	,,	मुशल,
छठें	,,	,,	धनुष,
सातवें	,,	,,	चक्र,
आठवें	,,	,,	परशु,
और नवें	,,	,,	वज्र है।

देवी त्रिनेत्रा हैं। शीश पर चन्द्र है। देवी के ठीक सामने घोड़ा, हाथी, रथ इत्यादि वाहनों पर शस्त्रास्त्र से सुसज्जित असुर-दल देवी से युद्ध करने को उपस्थित है। उनके मध्य में महिषासुर ढाल-तलवार लिये हुए रथ में बैठा है। नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ सन्नधा खिल सैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥ श्लोक ४६॥ ११ ।।"

देवी के गर्जन से त्रिलोक को संक्षुब्ध देखकर असुरगण अपनी नाना प्रकार की सेनाओं को सुसज्जित करके युद्ध-स्थल में उतर आये। महिषासुर स्वयं क्रुद्ध होकर अपनी असंख्य आसुरी चतुरङ्गिणी सेना के साथ दौड़ा। उसने देखा कि देवी की कान्ति से त्रिलोक व्याप्त हो रहा है, उनके मुकुट से आकाश में प्रकाश फैल रहा है और उनकी भुजाएँ प्रत्येक दिशा में फैली हुई हैं तथा उनके धनुषटङ्कार से संसार गूँज रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (१२)

९१--युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

युद्ध जोरों से हो रहा है। देवी अपने शस्त्रास्त्रों से असुरों का संहार कर रही हैं। छलाँगें मारकर आक्रमण करता हुआ सिंह असुरों का रक्त-पान कर रहा है। देवी के गणों में कुछ बाजे बजा रहे हैं और कुछ युद्ध में लीन हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ।। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥४६॥
अंत ॥ मृदंगाश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्ध महोत्सवे ।।१२॥"

असुरगण ने तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, खड्ग, परशु इत्यादि शस्त्रास्त्रों से देवी अम्बिका पर प्रखर प्रहार करना आरम्भ कर दिया ; किन्तु देवी ने सहज ही में अपने आयुधों से उनके प्रयत्नों को विफल करना आरम्भ किया। देवी के निश्वासों से अगणित गण उत्पन्न होकर असुरों का हनन करने तथा शंख, पटह आदि वाद्य बजाने लगे। देवी का सिंह भी झपटकर असुरों पर चोट करने लगा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१३)

९२--युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

देवी का असुर-दल के साथ घोर युद्ध होता दिखाया गया है। देवी अपने शस्त्रास्त्रों से असुरों का संहार कर रही हैं। छलाँगें भरता हुआ सिंह मुँह बाए आगे बढ़ रहा है। देवी-दल के भी कुछ देव लड़ रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक दिया हुआ है—

"आद्य ।। ततो देवि त्रिशूलेन गदया शक्ति वृष्टिभिः ।।
अंत ।। यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचोदिवि। । श्लोक १४ ।। द्वितीयोध्याय ।।"

असुरगण आहत हो-होकर गिरने लगे। देवी के गणों ने खूब युद्ध किया। देवी के सिंह ने भी कितने ही असुरों का रक्त-पान किया। थोड़ी ही देर में देवी ने समस्त दुष्ट-दल का संहार कर डाला। आकाश से प्रसन्न देव-मण्डली पुष्प-वर्षा करने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (१४)

१३—चिक्षुर-देवी-संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में सिंहवाहिनी देवी दो घोड़ोंवाले रथ पर बैठे हुए महिषासुर के सेनाध्यक्ष चिक्षुर से युद्ध कर रही हैं। बहुत से असुर कटकर पृथ्वी पर गिरे हुए हैं। केवल चिक्षुर और एक असुर बच गया है। देवी के गण हाथ में असि, गदा, शक्ति, तलवार इत्यादि शस्त्रों को लिये हुए युद्ध कर रहे हैं। एक गण के हाथ में पत्थर की चट्टान और पेड़ का तना है।

चित्र के नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ निहन्यमानं तत्सैन्यं ॥
अंत ॥ तेन तच्छतधानीतं शूलं सच महासुरं ॥ श्लोक १४ ॥"

असुर-सैन्य का इस प्रकार संहार होते देख महिषासुर का सेनापति चिक्षुर देवी से लड़ने को आगे आया। रथारूढ़ चिक्षुर ने देवी के ऊपर बाण-वर्षा करनी आरम्भ की। देवी ने सहज ही में उसके सभी बाणों को काट गिराया और उसके सारथी और घोड़ों को भी आहत किया। तब चिक्षुर ने खडग से देवी के सिंह के मस्तक पर चोट करके, उनकी वाम भुजा पर प्रहार किया। खड्ग के टूट जाने पर उसने क्रुद्ध होकर शूल फेंका। यह देख देवी ने भी शूल फेंका और फलतः अपने शूल के सहित चिक्षुर शत-खण्ड होकर यमलोक को सिधारा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१५)

१४—चामरासुर-देवी-संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चिक्षुर के मारे जाने के पश्चात् देवी से युद्ध करने के लिये क्रुद्ध हो चामरासुर आया। उसने अपनी शक्ति और शूल को देवी के ऊपर निक्षेप किया; परन्तु देवी ने अपने हुङ्कार और बाण द्वारा उसके शक्ति और शूल का क्रमशः छेदन किया। इसके पश्चात् देवी का सिंह चामरासुर से लड़ता हुआ दिखाया गया है, जिसने युद्ध करते-करते चामरासुर का सिर काट डाला है।

हाशिए के नीचे निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ॥ हतेतस्मिन्महावीर्य्ये महिषस्य चमूपतौ ।
अंत ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतं ॥ १५ ॥"

उस महाबली सेनापति चिक्षुर के वध हो जाने पर चामरासुर गजारूढ़ होकर युद्ध के लिये आया। उसने पहले तो शक्ति छोड़ी जिसे देवी ने अपने हुंकार से विफल कर दिया। फिर शूल फेंका, उसे भी देवी ने बाण से काट दिया। तब देवी का सिंह चामर के हाथी के मस्तक पर चढ़कर उससे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लड़ने लगा। लड़ते-लड़ते चामरासुर नीचे उतर आया और बहुत देर तक बाहु-युद्ध होने के पश्चात् सिंह ने उछलकर अपने पञ्जे से चामरासुर का शिर अलग कर दिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१६)

९५—उदग्रासुर-देवी-संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में सिंहवाहिनी देवी ने राक्षसों को काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया है और उदग्रासुर का प्रस्तर और वृक्ष-वृष्टि द्वारा हनन किया है। पृष्ठिका में पहाड़ियों पर दुर्ग बने हुए हैं तथा समीप-वर्त्ती प्रदेश में सुन्दर वृक्षावली दिखाई गई है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक है—

" आद्य ॥ उदग्रश्चरणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ।
अंत ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चौभौ शरैर्निन्येयमक्षयं ॥ श्लोक ४ ॥ १६ ॥"

भगवती ने उदग्र नाम के असुर को भी युद्ध में वृक्ष-शिला आदि के द्वारा आहत किया। तद-नन्तर गदा, त्रिशूल, खड्ग, बाण आदि से उद्धत, उग्रास्य, महाहनु, बिडाल, दुर्द्धर, दुर्मुख आदि असुरों को मारा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१७)

९६—महिषासुर-देवी-संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र में सिंहवाहिनी देवी नाना प्रकार के आयुधों से सुसज्जित हो, भयङ्कर महिष का रूप धारण किये महिषासुर से युद्ध कर रही हैं। महिषासुर अपने शृङ्गद्वय द्वारा पर्वत-शिखरों को विदीर्ण कर रहा है एवं उसके श्वास-निक्षेप से मेघगण इधर-उधर उड़ते हुए दिखाये गये हैं। उसके लाङ्गूल-ताड़न से समुद्र उथल-पुथल होकर पृथ्वी को प्लावित कर रहा है। इस भाँति भयङ्कर महिषासुर अपने खुर और सींगों द्वारा देवी के गणों के ऊपर प्रहार कर रहा है। पृष्ठिका में दाएँ ओर काले बादल, जिनके बीच में बिजली चमक रही है, दिखाये गये हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ॥ एवं संक्षीयमाणेतु स्वसैन्ये महिषासुरः ।
अंत ॥ दृष्ट्वा सा चंडिकाकोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥ श्लोक ८ ॥ १७ ॥"

इस प्रकार अपनी सेना का क्षय होता देखकर महिषासुर अपने महिष-रूप में आया और देवी के गणों को डराने लगा। बड़े ही क्रोध से पैंतरे बदलकर किसी को सींगों से मारकर, किसी को खुरों से कुचलकर और किसी को फुंकार से ही धरती पर गिराकर वह उपद्रव करने लगा। वह पूँछ फटकारकर खुरों से धरती खोदने और सींगों से पर्वत की चट्टानों को तोड़-तोड़कर उछालने लगा। उसके इस प्रकार किये गये उपद्रवों को देखकर देवी ने, उसके हनन करने के लिये, क्रोध किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (१८)

१७—नाना रूपधारी महिषासुर और देवी का संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवी का महिषासुर से, जिसने महिष, पुरुष, सिंह तथा गज का क्रमशः रूप धारण किया है, युद्ध दिखाया गया है। गजरूपधारी महिषासुर ने उछलकर देवी के वाहन सिंह की गर्दन पकड़ ली है। देवी उसे मुक्त करने के लिये अपने त्रिशूल और खड्ग से हाथी की सूँड़ काट रही हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ॥ सा क्षिप्तातस्य वै पाशं तं बबंध महासुरं ।
अंत ॥ कर्षतस्तुकरं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ श्लोक ४॥१८। ।"

देवी ने पाश फेंककर महिषासुर को बाँध लिया ; परन्तु उसने तुरन्त महिष का रूप छोड़कर सिंह का रूप धारण कर लिया। ज्यों ही देवी ने उसका मस्तक छेदन किया, वह पुरुष-रूप में दिखाई दिया। तब देवी ने बाण-समूह द्वारा खड्ग और चर्म के साथ उस पुरुष का छेदन किया। तब वह प्रकाण्ड हाथी का रूप धारणकर शुण्ड द्वारा देवी के वाहन महासिंह को आकर्षित करने लगा। देवी ने खड्ग द्वारा उस आकर्षणकारी हस्ति का शुण्ड काट डाला। तब उसने फिर महिष का रूप धारण कर लिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (१९)

१८—महिषासुर और देवी का एकाकी युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवी का महिषासुर के साथ द्वन्द्व-युद्ध हो रहा है। महिषासुर अपने सींगों से पर्वत-खण्डों को उछाल-उछाल देवी के ऊपर प्रहार कर रहा है। किन्तु देवी उन फेंके हुए पर्वत-खण्डों को शर द्वारा खण्ड-खण्ड करती हुई दिखाई गई हैं। पृष्ठिका में दाहिने ओर उठते हुए बादलों में बिजली की कौंध दिखाई गई है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ।
अंत ॥ मयात्वयि हतेत्रैव गर्जिष्यंत्याशुदेवताः ॥ श्लोक ५ ॥ १९ ॥"

इस प्रकार पुनः महिष का रूप धारणकर महिषासुर त्रैलोक्य को संक्षुब्ध करने लगा। तब क्रुद्ध होकर रक्तवर्णवदना जगन्माता चण्डिका उत्तम मधुपान करती हुई हास्य करने लगी। वह मदोन्मत्त महिष देवी के ऊपर शिखर-खण्ड निक्षेप करने लगा। देवी ने उसके फेंके पर्व्वतांशों को बाण द्वारा चूर-चूरकर उसे इस प्रकार संबुद्ध किया—'मूढ़, जब तक मैं मधुपान करती हूँ तब तक तूँ गर्जन कर ले। अभी-अभी मैं तुझे मार डालूँगी, तब यहीं देवगण गर्जन करेंगे।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (२०)

९९—महिषासुर-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवी ने महिषासुर की पीठ पर सवारी कसकर गर्दन काट डाली है। देवी द्वारा आक्रान्त होते ही महिषासुर दूसरा शरीर धारण करने लगा ; पर देवी ने उस अर्द्ध-निष्क्रान्त शरीर को निकलते हुए रोककर उसका शिर काट लिया। चित्र में दाहिने ओर असुर-दल भागा जा रहा है। आकाश में मेघचारी और पृथ्वी पर बाएँ ओर देवगण देवी की प्रार्थना कर रहे हैं तथा आकाश-स्थित देवगण देवी पर पुष्प-वर्षा भी कर रहे हैं। आकाश में अप्सराओं और गन्धर्वों का हर्ष-सूचक नृत्य-गान भी हो रहा है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ एवमुक्तासमुत्पत्य सारूढा तं महासुरं ॥
अंत ॥ जगुर्गंधर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरो गणः ॥ श्लोक ५ ॥ २० ॥"

ऐसा कहकर देवी उछलकर उस महिषासुर पर चढ़ बैठीं और पैरों द्वारा आक्रमणकर शूल द्वारा उस असुर की ताड़ना करने लगीं। इसपर उस असुर के शरीर से एक दूसरा ही शरीर निकलने लगा ; पर उस अर्द्धनिष्क्रान्त शरीर को देवी ने तुरंत कर्तित कर दिया। इस प्रकार देवी ने सहज ही में महिषासुर का अन्त कर दिया। उसके मरते ही असुरगण भागने लगे। देवता और देवर्षिगण प्रसन्न होकर देवी की स्तुति करने लगे तथा आकाश में अप्सराओं और गन्धर्वों का नाच-गान होने लगा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२१)

१००—देवी-वन्दना

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में एक अठपहल चौकी के ऊपर मध्य में लाल साड़ी, मुकुट तथा आभूषण से युक्त अष्टभुजी देवी बैठी हैं। उनके शिर के ऊपर एक दण्ड पर छत्र प्रसरित है। देवी के शीश पर अर्द्धचन्द्र और मस्तक पर त्रिनेत्र हैं। उनके दोनों हाथ, स्वभावतः एक के ऊपर एक होकर, सामने गोद में स्थित हैं। दाहिना दूसरा हाथ कमल लिये हुए ऊपर उठा है, उसके नीचे के हाथ में चक्र है तथा चौथा हाथ वरदा-मुद्रा में है। बाएँ ओर का दूसरा हाथ अभया-मुद्रा में है तथा तीसरे और चौथे हाथ में क्रमशः धनुष और घण्टा हैं। देवी के सामने चौकी पर खड्ग और ढाल है। सामने भूमि पर सिंह बैठा हुआ है। दोनों ओर हाथ जोड़े देवगण देवी की वन्दना कर रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ शक्रादयः सुरगणानिहितेतिवीर्ये ॥
अन्त ॥ तच्छृणुष्व मया ख्यातं यथावत् कथयामि ते ॥२१॥"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवताओं ने नाना प्रकार से देवी का स्तव किया और नन्दन-वन-समुद्भूत कुसुम, दिव्य गन्धानुलेपन और दिव्य धूप द्वारा भक्ति के साथ उनकी पूजा की। तब प्रणत देवगण से देवी ने कहा—'तुम लोग अभिलषित वर की मुझसे प्रार्थना करो। मैं तुम लोगों के स्तव से अति प्रसन्न हूँ।'

देवों ने कहा—'हे भगवति देवी! महिषासुर का निधनकर आपने हम लोगों का सभी कार्य-सम्पादन किया और यदि आप वर देना ही चाहती हैं तो हे अमलानने, जब-जब हम लोगों पर विपत्ति पड़े और हम लोग आपका स्मरण करें, तब-तब आप प्रकट हो हम लोगों का संकट हरण करें और जो लोग आपके इस वृत्तान्त का स्तव करें, आप उन्हें ज्ञान और ऐश्वर्य्य प्रदान करें।'

देवी ने 'एवमस्तु' कहा और फिर अन्तर्हित हो गईं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२२)

१०१—स्तुति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में शुम्भ और निशुम्भ के अत्याचारों से दुखी होकर इन्द्र, वरुण, कुवेर आदि देवतागण हिमालय पर्वत पर एक कासार (झील) के सामने हाथ जोड़कर महामाया की स्तुति कर रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ॥
अन्त ॥ सर्वापदो भक्ति विनम्रमूर्तिभिः ॥२२॥"

कथा-संदर्भ—एक बार शुम्भ और निशुम्भ नाम के राक्षस, इन्द्र का त्रैलोक्य जीतकर, देवताओं को नाना प्रकार के कष्ट देने लगे। तब देवगण हिमालय पर जाकर उसी महामाया देवी की स्तुति करने लगे।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२३)

१०२—शिवा-अवतरण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में दाहिने ओर बीच से एक नदी वह रही है। नदी के तट पर पार्वती स्नान के लिये खड़ी हुई हैं और देवताओं का कष्ट जानकर उनसे ही उत्पन्न शिवा देवी पार्वती से देवताओं पर शुम्भ-निशुम्भ के अत्याचार की कथा कह रही हैं। बाएँ ओर कर-बाँधे देवगण देवी की प्रार्थना कर रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक है—

"आद्य ।। एवंस्तवादियुक्तानां तत्र पार्वती ।।
अंत ।। कालिकेतिसमाख्याताहिमाचलकृताश्रया ।। २३ ।।"

देवगण स्तुति कर ही रहे थे कि उसी समय पार्वती देवी जाह्नवी-जल में स्नान करने के लिये नदी-तट पर आईं। पार्वती देवी ने देवगण से कहा—'आप लोग किसका स्तव करते हैं?' इसी समय पार्वती देवी के शरीर-कोष से शिवा देवी ने उत्पन्न हो कहा—'समर में निशुम्भ द्वारा पराजित और फिर शुम्भ द्वारा निराकृत देवगण एकत्र हो मेरा ही स्तव करते हैं।' अम्बिका ने पार्वती देवी के शरीर-कोष से उत्पत्ति लाभ की, अतएव समस्त भुवन में वे "कौषिकी" नाम से कीर्त्तित हुईं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२४)

१०३--दिव्यरूप-दर्शन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में पर्वत-शिखर पर दिव्याभरण तथा वस्त्र धारण किये हुए देवी बैठी हुई हैं। देवी के अलौकिक सौन्दर्य से प्रभावित होकर चण्ड-मुण्ड विस्फारित नेत्रों से उनकी ओर देख रहे हैं। यत्र-तत्र शिखरान्तराल में बहुत से वृक्ष उगे हुए हैं। पृष्ठिका में दाहिने ओर मृग तथा बाएँ ओर सिंह विचर रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ।। ततोंबिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरं ।।
अंत ।। ददर्श चंडोमुण्डश्च भृत्यौ शुंभनिशुंभयोः ।। २४ ।।"

अपने शरीर से उन कौषिकी देवी के निकलने पर पार्वती देवी ने कृष्ण वर्ण धारण किया, तब से उन्होंने 'कालिका' नाम से कीर्त्तित हो हिमालय में अवस्थिति की। तदुपरान्त अम्बिका ने उत्कृष्ट रूप धारण किया। शुम्भ और निशुम्भ के भृत्य चण्ड और मुण्ड नामक असुरद्वय ने उनके मनोहर रूप का दर्शन किया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२५)

१०४--रूप-वर्णन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

बाग में एक चबूतरे पर, जिस पर एक चन्द्रातप (चँदोवा) तना हुआ है और जिसके सामने क्यारियों के बीच में फव्वारा छूट रहा है, शुम्भासुर मसनद के सहारे एक चौकी पर बैठा हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसके पीछे एक भृत्य उसकी ढाल-तलवार लिये हुए है और एक अन्य भृत्य एक हाथ से चमर डुला रहा है और दूसरे में एक अँगोछा लिये हुए है। उनके पीछे एक छड़ीबरदार खड़ा है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ।। ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता ।।
अन्त ।। स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी तथास्माकं न गृह्यते ।।२५।।"

इसके पश्चात् वे दोनों (चण्ड और मुण्ड) शुम्भासुर के पास पहुँचकर कहने लगे—'महाराज ! एक महामोहिनी रमणी हिमालय पर दिखाई पड़ी है। वैसी रूपवती सुन्दरी आज तक किसी ने नहीं देखी होगी। अतएव आप उसे अपनाने का प्रयत्न कीजिये। प्रभो ! त्रैलोक्य में श्रेष्ठ मणि-गजाश्वादि जितने रत्न हैं, वे सभी आप के महल में सुशोभित हैं। फिर उस दिव्यरूपा रमणी की सौन्दर्य्य-प्रभा से ही आपका महल क्यों वञ्चित रहे !'

दुर्गापाठ चित्र सं० (२६)

१०५——संदेश-वाहन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

शुम्भासुर महल के कमरे में बैठा हुआ सुग्रीव नामक दूत को देवी के पास सन्देश लेकर जाने को कह रहा है। कमरे के बाहर द्वारपाल खड़ा है। बाएँ ओर ढाल-तलवार से सुसज्जित सुग्रीव, देवी को संदेश देने, जा रहा है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ निशम्येति वचः शुम्भः ॥
अन्त ।। तथा कार्यं त्वया लघु ।।२६।।"

तब चण्ड और मुण्ड की ऐसी बात सुनकर महासुर शुम्भ ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के पास भेजा और उससे कहा—'तुम जाकर मेरे वाक्यानुसार ऐसा-ऐसा कहना और तुम ऐसा भी करना जिससे वह अति प्रसन्न हो शीघ्र यहाँ आवे।'

दुर्गापाठ चित्र सं० (२७)

१०६——सन्देश

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में हिमालय-प्रदेश में एक पर्वत-शिला पर वृक्ष के नीचे बैठी हुई देवी सुग्रीव से बातें कर रही हैं। चित्र के दाहिने ओर देवी से बातचीत करके सुग्रीव लौटा जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलदेशे तु शोभने ॥
अंत ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ श्लोक २१॥ २७ ॥"

सुग्रीव ने देवी के पास पहुँच कर कहा—'देवि ! दैत्येश्वर शुम्भ त्रैलोक्य के परमेश्वर हैं। उन्होंने सन्देश भेजा है कि संसार के रत्नादि उत्तम पदार्थ मेरे महल की शोभा बढ़ा रहे हैं। तुम भी आकर अपने रूप-रत्न से मेरे अन्तःपुर को दीप्तिमान् करो।'

देवी ने कहा—'हे दूत ! शुम्भासुर निःसन्देह त्रैलोक्याधिपति हैं। परन्तु इससे क्या ! मैंने तो प्रतिज्ञा की है कि जो मनुष्य मुझे युद्ध में जीत लेगा, वही मेरा भर्त्ता होगा। अतएव शुम्भ-निशुम्भ से कह दो कि वे युद्ध में अपना पराक्रम दिखाकर मुझसे विवाह कर लें।'

दुर्गापाठ चित्र सं० (२८)

१०७—शुम्भासुर का क्रोध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में शुम्भासुर महल के सहन में एक दालान के आगे चौकी पर बैठा हुआ धूम्रलोचन को देवी के खींच लाने का आदेश कर रहा है। कुछ दूर हटकर दो राक्षस तानपूरे और डफ पर गा रहे हैं। द्वार पर द्वारपाल खड़े हैं और बाहर हाथीसवार हैं। एक पीतवर्ण असुर शुम्भासुर के ऊपर चमर डुला रहा है। पृष्ठिका में पर्वत-शिखर पर दुर्ग बने हुए हैं—

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः सदूतो मर्षपूरितः ॥
अन्त ॥ वृतः षष्ठ्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ श्लोक ५ ॥ २८ ॥"

दूत ने शुम्भासुर के पास पहुँचकर देवी की प्रतिज्ञा सुना दी। शुम्भासुर ने क्रोध में आकर दैत्याधिपति धूम्रलोचन को आज्ञा दी कि तुम दलबल के साथ जाकर उस स्त्री को केश खींचते हुए ले आओ। उसकी रक्षा के लिये गन्धर्व या यक्ष ही क्यों न आवें, तुम किसी की परवाह न करना।

दुर्गापाठ चित्र सं० (२९)

१०८——धूम्रासुर-देवी-संग्राम

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में धूम्रासुर देवी से चलने को कह रहा है। देवी के अस्वीकार करने पर असुर-दल नाना प्रकार के शस्त्रास्त्रों से देवी पर प्रहार करने लगा। क्रुद्ध होकर देवी-वाहन असुर-दल पर टूट पड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है और असुरगण को चीर-फाड़ रहा है। सिंह से भयभीत होकर असुर-दल पीछे भागा जा रहा है। पृष्ठिका में कुछ वृक्ष भी अंकित हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचल संस्थितां ॥
अंत ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणाततः ॥ श्लोक ११ ॥ २९ ॥"

इस प्रकार शुम्भासुर से आज्ञा पाकर धूम्रलोचन सकटक देवी के पास पहुँचा। उसके निवेदन करने पर शुम्भासुर के पास चलने के लिये देवी किसी प्रकार भी उद्यत न हुईं। निदान धूम्रलोचन ने युद्ध का आयोजन किया। देवी पर प्रहार करने के लिये असुरगण टूट पड़ा। इसी समय देवी का वाहन सिंह भीषण हुँकार करता हुआ असुर-सेना में घुस गया। देखते-ही-देखते उसने असुरों की सेना को चीर-फाड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३०)

१०९—चण्ड-मुण्ड का युद्ध के लिये प्रयाण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

महल के अहाते के दाहिने ओर एक सायवानदार दालान के चबूतरे पर शुम्भासुर चौकी पर बैठा हुआ सामने खड़े हुए शुम्भ-निशुम्भ को युद्ध करने की आज्ञा दे रहा है। बाएँ ओर पृथ्वी पर राक्षस-सेना के सैनिक एक-एक बार शुम्भासुर को सलाम करते हुए पंक्ति-बद्ध होकर महल के फाटक से निकल रहे हैं। एक नील वर्ण असुर शुम्भासुर के ऊपर चमर डुला रहा है। पृष्ठिका में कुछ वृक्ष दिखाये गये हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ चुकोपदैत्याधिपतिः शुंभः प्रस्फुरिताधरः ॥
अन्त ॥ गृहीत्वा तामथांबिकां ॥ श्लोक ५ ॥ ३० ॥"

अपनी सेना के नाश का समाचार सुनकर शुम्भासुर बड़ा कुपित हुआ। उसने चण्ड और मुण्ड को आज्ञा दी—'जाओ, अपनी सेना लेकर उस अद्वितीय सुन्दरी रमणी को यहाँ घसीट ले आओ और उसके वाहन सिंह को भी अधमरा कर हमारे सामने उपस्थित करो।'

दुर्गापाठ चित्र सं० (३१)

११०—खट्वाङ्गधारिणी

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

बाएँ ओर वस्त्राभूषणभूषिता त्रिशूल धारण किये हुए देवी खड़ी हैं। उनकी बगल में उन्हीं के रोष से उत्पन्न चामुण्डा देवी, जो अस्थिशेषा मात्र हैं, भयङ्कर कृष्ण रूप धरे खड़ी हैं। उनकी चार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भुजाओं में से दो में खट्वाङ्ग और पाश हैं। दाहिने ओर असुरों की शस्त्रास्त्र-सुसज्जित सेना देवी पर प्रहार करने को बढ़ रही है। बाएँ ओर चित्र के नीचे के भाग में कुछ वृक्षादि हैं।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चंडमुण्डपुरोगमाः ॥
अंत ॥ निमग्ना रक्तनयनानादापूरितदिङ्मुखाः ॥ श्लोक ३१ ॥"

चण्ड और मुण्ड अपनी असुर-सेना लेकर देवी के निकट पहुँचे। वहाँ देखा कि वह हिमाचल-शिखर पर सिंहारूढ़ा हो हँस रही हैं। देखते ही असुरों ने धनुष और तलवारें निकालकर उनके वध की तैयारी की। तब देवी अत्यन्त कोपाभिभूता हो शेफालिका-वृन्त की-सी रक्तवर्णा हो गईं। उस समय उनके कुञ्चित ललाट से एक खट्वाङ्गधारिणी, नरमुण्डमालिनी, असिपाशायुधा, करालवदना, कृष्ण-वर्णा देवी प्रकट हुईं। वे व्याघ्रचर्म से अपना मध्यभाग आवृत किये हुए थीं, एवं अत्यन्त क्षीणकाया अस्थिशेषामात्र थीं। उनकी लम्बी जिह्वा लपलप निकल रही थी और आँखें रक्त वर्ण हो रही थीं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३२)

१११—असुर-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में सिंहवाहिनी देवी के बगल में दौड़ती हुई करालवदना और कृष्णवर्णा देवी एक हाथ से असुरों को काट रही है और दूसरे से असुर-सेना का भक्षण कर रही है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयंती महासुरान् ॥
अन्त ॥ काली कराल वक्त्रांतदुर्दर्शदशनोज्वला ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥"

देवी घोर गर्जन करती हुई असुर-सेना पर टूट पड़ीं। वे अपने लम्बे-लम्बे हाथों में असुरों को रथ-सहित दबोचकर भक्षण करने लगीं। असुरों ने जिन-जिन शस्त्रास्त्रों का देवी के ऊपर प्रहार किया, देवी उन्हें भी लील गईं। हाथी और घोड़ों के झुण्ड को भी देवी निगल गईं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३३)

११२—मुण्ड-भेंट

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में चामुण्डा देवी अश्वारूढ़ चण्ड और मुण्ड का शिर काट रही हैं। देवी का वाहन सिंह भी टूटकर असुरों का वध कर रहा है। यह देखकर असुर-सेना भागी जा रही है। बाएँ ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टभुजी देवी, जिनके स्वाभाविक दाहिने प्रथम हाथ में त्रिशूल; उससे दूसरे में खड्ग, तीसरे में माला और चौथे में शंख है तथा स्वाभाविक बाएँ प्रथम हाथ में घट, उससे दूसरा वितर्क-मुद्रा में, तीसरा त्रिशूल को सहारा दिये हुए और चौथा हाथ भी वितर्क-मुद्रा में है, खड़ी हैं। व्याघ्रचर्मावृता, खट्वाङ्ग, पाश और खड्ग धारण किये हुए चामुण्डा देवी चण्ड और मुण्ड के शिर देवी को भेंट कर रही हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चंडमधावत ॥

अन्त ॥ चामुंडेतिततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ ३३ ॥"

अन्ततः सिंहासीन देवी चण्डासुर की ओर दौड़ीं। बालों को खींचकर देवी ने उसका सिर काट डाला। चण्डासुर का विनाश होते देख मुण्ड देवी की ओर दौड़ा। देवी ने खड्गाघात से इसे भी भू-लुण्ठित किया। यह देखकर शेष असुर-सेना भाग चली। तब देवी ने चण्डासुर और मुण्डासुर के शिरों को कौषिकी देवी को भेंट किया।

कौषिकी देवी ने कहा—'हे देवि ! चण्ड और मुण्ड का संहार करने के कारण संसार तुम्हें "चामुण्डा" नाम से कीर्त्तित करेगा।'

दुर्गापाठ चित्र सं० (३४)

११३—शुम्भ-देवी-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में दाहिने ओर कवच-वस्त्र-शस्त्रादि से युक्त अष्टभुजी देवी सिंहारूढ़ खड़ी हैं। उनके आगे खट्वाङ्गखड्गधारिणी कराल वदना काली खड़ी हैं। बाएँ ओर क्रुद्ध होकर शुम्भासुर देवी पर ससैन्य धावा बोलने को प्रस्तुत है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।

अंत ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननना ॥ ३४ ॥"

चण्डासुर, मुण्डासुर और आसुरी सेना के निपातित होने का समाचार पाकर असुरेश्वर शुम्भ ने सम्पूर्ण असुर-सैन्य को आक्रमण करने का आदेश दिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३५)

११४—युद्ध-देवियाँ

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवी के सहायतार्थ आई हुई देवियों का प्रदर्शन है। ऊपर की ओर हंस-युक्त विमान के ऊपर चतुर्भुजी देवी के रूप में, हाथ में अक्षमाला और कमण्डलु लेकर जो शक्ति आई, वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा की शक्ति है और 'ब्रह्माणी' नाम से विख्यात है। उनके आगे हाथ में शक्ति लिये हुए गुहरूपिणी कौमारी शक्ति मयूर-वाहन पर चढ़कर युद्ध करने आई। गरुड़ पर वैष्णवी शक्ति शङ्ख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग और खड्ग धारणकर आई, पर दुर्गापाठ से भिन्न चित्र में केवल शंख, चक्र और गदा धारण किये हुए ही वैष्णवी शक्ति का प्रदर्शन किया गया है। दूसरी पंक्ति में आगे ऐरावत पर चढ़ी हुई, हाथ में वज्र लिये हुए इन्द्र की शक्ति इन्द्राणी हैं। उसके बाद बैल पर चढ़ी हुई -माहेश्वरी देवी हैं। माहेश्वरी का शस्त्र त्रिशूल है। उसके पीछे हाथ में खड्ग लिये हुए यज्ञवाराहरूपधारी भगवान् विष्णु की जो शक्ति है, वह भी वाराह-रूप धरकर खड़ी है। नारसिंही शक्ति भी नरसिंह-रूप धारणकर देवी के पीछे खड़ी है। सब के आगे शिवदूती नाम की देवी खड़ी है। उनके भी आगे देवी के आज्ञानुसार शिव उनका संदेश असुरों से कह रहे हैं। बाएँ ओर असुर-सेना खड़ी है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ तन्निनादमुपश्रुत्य सैन्यैश्चतुर्दिशं ।

अंतं ॥ दूतत्वं गच्छ भगवान् पार्श्वं शुंभनिशुंभयोः ॥३५॥"

उस अति भीषण आसुरी महासैन्य को देखकर चण्डिका ने ज्या-शब्द से पृथ्वी और आकाश का मध्यदेश परिपूरित किया। देवी के वाहन सिंह ने भी भयङ्कर नाद किया। अम्बिका ने अपने घण्टा शब्द से उस सिंह-ध्वनि को द्विगुणित किया। उस समय काली देवी का आनन अति विस्तृत हुआ। उस घोर शब्द को सुनकर दैत्य-सैन्य ने रोष के साथ चण्डिका देवी, काली देवी और सिंह को घेर लिया। इस अवसर पर असुरों के विनाश के लिये ब्रह्मा, शङ्कर, कार्त्तिकेय और विष्णु के शरीर से अलग-अलग बल-युक्त शक्तियाँ निकलकर, उन्हीं देवताओं का क्रमशः रूप धारण करके, चण्डिका के पास उपस्थित हुईं। जिस देवता का जैसा रूप, भूषण और वाहन था, ठीक वैसा ही रूपादि धारणकर शक्तियाँ भी युद्ध करने को आईं। विष्णु के भिन्न-भिन्न वाराह, नृसिंह आदि रूपों में वाराही, नारसिंही और वैष्णवी शक्तियाँ आईं। गजराज पर आरूढ़ ऐन्द्री शक्ति भी आई। फिर उन सब देव-शक्तियों द्वारा वेष्ठित माहेश्वरी ने चण्डिका से कहा—' इन सब असुरों को मेरी प्रसन्नता के लिये शीघ्र हनन करो।' तब देवी के शरीर से अत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी चण्डिका-शक्ति निकली। उस अपराजिता चण्डिका देवी ने धूम्रवर्ण, जटाशाली महेश्वर से कहा—'हे भगवन्! तुम शुम्भ और निशुम्भ के पास दूत बनकर जाओ। जाकर अति गर्वित शुम्भ और निशुम्भ से तथा युद्ध-हेतु उपस्थित दानवों से कहो कि इन्द्र त्रैलोक्य पावें, देवगण फिर हविर्भोजन करें और तुम लोग यदि जीवन की इच्छा करते हो तो पाताल में चले जाओ। अथवा यदि युद्धाकांक्षी हो तो आओ, मेरी शिवागण तुम्हारे शोणित से तृप्ति पावें। 'देवी ने स्वयं शिव को दूतत्व के लिये नियुक्त किया इसीलिये जगत् में लोगों से' शिवदूती, की विख्याति पाई। महेश्वर द्वारा देवी की ऐसी बात सुनकर असुरगण क्रुद्ध हो कात्यायनी के पास गये।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३६)

११५—असुरों और देवियों का युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवियों और असुरों में भयङ्कर युद्ध होता हुआ दिखाया गया है। बहुतेरे असुर देवियों द्वारा हताहत होकर धराशायी हो गये हैं। कुछ असुर तो युद्ध कर रहे हैं और कुछ भाग रहे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। शस्त्रास्त्र से सुसज्जित देवियाँ असुरों का संहार कर रही हैं। दाहिने ओर खड़े महादेव युद्ध की प्रगति देख रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ ब्रूहि शुंभंनिशुंभं च दानवावतिगर्वितौ ॥
अंतं ॥ दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नैशुर्देवारि सैनिकाः ॥ ३६ ॥"

देवियों और असुरों में फिर देखते-ही-देखते युद्ध छिड़ गया। चण्डिका ने असुरों के शस्त्रास्त्र वाणों से काट डाले। काली खट्वाङ्ग से संहार करने लगीं। ब्रह्माणी ऊपर से कमण्डलु का जल बरसा-कर उन्हें हततेज करने लगीं। माहेश्वरी शक्ति त्रिशूल द्वारा और वैष्णवी शक्ति चक्र द्वारा उनका संहार करने लगीं। कौमारी अपनी शक्ति से और ऐन्द्री वज्र-प्रहार से शत्रुओं का संहार करने लगीं। वाराही के मुख-प्रहार से विध्वस्त, चक्र-प्रहार से विदारित और द्रंष्ट्राघात से छाती फट जाने के कारण दैत्यगण गिरने लगे।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३७)

११६——रक्तवीज-चण्डिका-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में बाएँ ओर रक्तवीज अपनी असुर-सेना के साथ देवियों से युद्ध कर रहा है। असुरों का वर्ण लाल है और उनके सिर पर सींगें भी हैं। रक्तवीज पर ब्रह्माणी कमण्डलु से आमंत्रित जल फेंक रही हैं। इन्द्राणी शक्ति उसपर वज्र-प्रहार कर रही हैं। वैष्णवी उसे गदा से घायल कर रही हैं और माहेश्वरी ने उसके शरीर में त्रिशूल भोंक दिया है एवं वाराही तथा काली शत्रु-संहार कर रही हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ।
अंतं ॥ उवाच काली चामुण्डे विस्तरं वदनं कुरु ॥३७॥"

अपने पक्ष का विनाश होते देखकर रक्तवीज नामक असुर सम्मुख आया। इस असुर के रक्तपात से जितने बूँद पृथ्वी पर गिरते थे, उनसे फिर उतने ही राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

चण्डिका ने काली से कहा—'हे चामुण्डे ! मैं रक्तवीजासुर को शस्त्राघात से घायल करती हूँ, तुम इसका रुधिर पीने के लिये अपने मुख को खूब फैला दो। इसी प्रकार यह दैत्य मारा जा सकता है।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (३८)

११७——रक्तबीज-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र में बाएँ ओर चण्डिका देवी ने रक्तबीज के शरीर को त्रिशूल से वेध-वेधकर जर्जरित कर दिया है। चामुण्डा ने अपनी जिह्वा फैलाकर रक्तबीज के शस्त्राहत-शरीर-भाग से रक्त-स्राव को भूमि पर न गिरने देने के लिये अपनी जिह्वा पसारकर उसके रक्त-विन्दु का पान करना आरंभ किया है। शेष शक्तियाँ दाहिने ओर खड़ी-खड़ी युद्ध-प्रगति का अवलोकन कर रही हैं। अंत में चण्डिका द्वारा रक्तबीज का वध प्रदर्शित किया गया है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ मच्छस्त्रपातसंभूतान् रक्तविन्दून्महासुरान् ॥
अंतं ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्त्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ३८ ॥"

इतना कहकर चण्डिका ने अपने शूल से रक्तबीजासुर को मर्म्माहत किया। काली ने अपना मुँह खोलकर अपनी जीभ फैला दी। इस प्रकार काली ने उसके शरीर का एक बूँद भी रुधिर गिरने से रोक दिया। अन्ततः वह रक्तवीज इस प्रकार निपातित हुआ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (३९)

११८——शुम्भ-निशुम्भ का देवियों से युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र में बाएँ ओर रथ पर चढ़े हुए शुम्भ और निशुम्भ देवियों से युद्ध कर रहे हैं। ब्रह्माणी स्रुवा से अभिमन्त्रित जल छोड़ रही हैं। वैष्णवी ने चक्र-प्रहार किया है। ऐन्द्री वज्र चला रही हैं। माहेश्वरी शूल ताने हुए हैं। वाराही ढाल ऊपर को उठाये हुए हैं। चामुण्डा तलवार चला रही हैं, कौमारी शक्ति फेंक रही हैं और चण्डिका देवी असुरों के बाल काट रही हैं। बहुत से हताहत असुरों से पृथ्वी पट गई है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम ।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितं ॥
अंतं ॥ शरवर्षमतीवोग्रमेघयोरिववर्षतोः ॥ ३९ ॥"

इसके पश्चात् शुम्भ और निशुम्भ का देवियों से युद्ध प्रारम्भ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (४०)

११९—निशुम्भ-मूर्च्छा

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में सिंहवाहिनी देवी से निशुम्भासुर का घोर युद्ध हो रहा है। देवी ने त्रिशूल से उसकी गदा काट दी है, तलवार तोड़ दी है, ढाल टुकड़े-टुकड़े कर दी है तथा शरजर्जरित कर निशुम्भासुर को मूर्च्छित भी कर दिया है। इस चित्र में निशुम्भासुर की दो मूर्त्तियाँ अंकित हैं। पहली वह, जिस रूप में वह लड़ रहा है, और दूसरी वह, जिसमें वह मूर्च्छित दिखाया गया है।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ ताडयामास चांगेषु शस्त्रौघैरसुरेस्वरौ ॥
अंतं ॥ आहत्य देवी बाणौघैरपातयतभूतले ॥ ४० ॥"

निशुम्भासुर ने बड़े क्रोध के आवेश में चण्डिका देवी पर अपना शूल चलाया। देवी ने अपने हाथों से शूल को मसलकर चूर्ण कर दिया। तब वह बड़े जोरों से गदा घुमाकर देवी की ओर दौड़ा। देवी के त्रिशूल-घात से गदा भी नष्ट-भ्रष्ट हो गई। निशुम्भासुर को सन्निकट पहुँचा देखकर देवी ने बाण-वर्षण से उसे पृथ्वी पर सुला दिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४१)

१२०—शुम्भासुर-देवी-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में रथारूढ़ शुम्भासुर असुर-सेना के साथ देवी से युद्ध कर रहा है। गर्जन करती हुई चामुण्डा देवी अपने हाथों और खड्ग को पृथ्वी पर टेककर बैठी हुई है। शिवदूती भी हाथ उठाकर अमङ्गल संकेत कर रही है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ भ्रातर्य्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमंबिकां ॥
अंतं ॥ तदाजयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ ४१ ॥"

अपने प्रिय बन्धु निशुम्भ को इस भाँति देवी द्वारा आहत होकर पृथ्वी पर गिरते देख शुम्भासुर देवी को मारने को झपटा। उसको आते देखकर देवी ने घण्टे के शब्द से सम्पूर्ण दिशाओं को आपूरित कर दिया। सिंह ने भी अपने गर्जन से, काली ने अपने हाथ भूमि पर पटककर और शिवा देवी ने अपने हाथ उठाकर हास्य करके अमङ्गल-सूचक संकेत किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (४२)

१२१—शुम्भासुर-देवी-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में रथारूढ़ शुम्भासुर देवी पर शस्त्र-वर्षण कर रहा है। देवी के वाम पार्श्व में शस्त्र-खट्वाङ्गहस्ता चामुण्डा हैं। रथ के दाहिने पार्श्व में, अन्य रूप में, कुछ काल के लिये शुम्भासुर मूर्छित पड़ा है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ आयान्तीवह्निकूटाभासानिरस्तामहोल्कया ॥
अंतं ॥ स तदाभिहतो भूमौ मूर्छितो निपपातह ॥ ४२ ॥"

शुम्भासुर ने देवी पर उग्रदीप्ति अति भीषण शक्ति फेंकी, जिसे देवी ने महोल्का नामक शक्ति से काटकर फेंक दिया और उसके वाणों को भी काटती हुई शक्ति से शुम्भासुर को घायल कर दिया। वह तत्काल मूर्च्छित हो गया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४३)

१२२—शुम्भासुर-देवी-युद्ध

शैली—पदाड़ी ; १९ वीं शती

इस चित्र में रथारूढ़ दश भुजाओंवाला शुम्भासुर तलवार, चक्र, गदा, परशु, धनुष और नाग-पाश से सुसज्जित होकर देवी के ऊपर चक्रों और वाणों की वर्षा कर रहा है। देवी भी अपने वाणों से उसके शस्त्रों को काट रही हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ आजघान शरैर्देवीं कालीं केशरिणं तथा ॥
अंतं ॥ विच्छेदतानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्चतान् ॥ ४३ ॥"

कथा-संदर्भ के लिये देखिये चित्र सं० ४२ पर दिया हुआ संदर्भ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४४)

१२३—निशुम्भ-वध

शैली—पहाड़ी; १७वीं शती

इस चित्र में सिंहवाहिनी चण्डिका देवी निशुम्भ दैत्य को त्रिशूल से मार रही हैं। उसकी देह से जो एक पुरुष निकला, उसे भी उन्होंने मार डाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ अभ्यधावत वै हंतुं दैत्यसेनासमावृतः ॥
अंतं ॥ शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततो सावपतद्भुवि ॥ ४४ ॥"

शुम्भासुर के मूर्च्छित हो जाने पर निशुम्भ ने चैतन्य-लाभ कर देवियों पर आक्रमण किया। फिर दनुजपति निशुम्भ ने अयुत बाहु विस्तारकर चक्र और आयुध द्वारा चण्डिका देवी को आच्छादित कर डाला। देवी ने उन्हें शीघ्र खण्डित किया। निशुम्भ ने फिर गदा-प्रहार किया। देवी ने उसे खड्ग से शत-खण्ड किया। फिर निशुम्भ ने शूल-ग्रहण किया। उसे शूल-प्रक्षिप्त करते देख देवी ने अपने शूल से उसका हृदय-प्रदेश विद्ध किया। फिर शूल द्वारा भेदित उस असुर के हृदय से एक अन्य महाबल असुर उत्पन्न हो, देवी को "ठहर" कहता हुआ सामने आया। देवी ने हास्यपूर्वक उस निकले हुए असुर का मस्तक-छेदन किया। तब वह असुर भूमि पर गिर पड़ा।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४५)

१२४—असुर-भक्षण

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवियों और असुरों का घोर युद्ध दिखाया गया है। मर कर बहुत से असुर पृथ्वी पर पड़े हैं। कुछ असुर-सेना चित्र के बाएँ ओर भागती हुई भी प्रदर्शित की गई है। काला, नरसिंही और वाराही देवियाँ असुरों का भक्षण कर रही हैं। चण्डिका ने निशुम्भ के शरीर के आहत-भाग से निकले हुए असुर को भी मार डाला है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥
अंतं ॥ भक्षिताश्चापरे काली शिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ४५ ॥"

फिर दाँतों द्वारा ग्रीवा-देश चर्वण करता हुआ देवी-वाहन सिंह असुरगण को भक्षण करने लगा। शिवदूती और काली दूसरे राक्षसों का भक्षण करने लगीं। कोई-कोई असुर कौमारी शक्ति के आघातों से विच्छिन्न हुआ। ब्रह्माणी के मन्त्र-पूत जलस्पर्श से कितने ही असुर दूरीकृत किये गये। अन्य अनेक असुर माहेश्वरी के त्रिशूलाघात से निहत हुए। इसी भाँति वाराही और वैष्णवी ने भी अनेक असुरों को हत-निहत किया। जो शेष बचे, उन्हें काली, शिवदूती और सिंह ने भक्षण कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (४६)

१२५—शुम्भासुर की देवी को ललकार

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में पताकायुक्त एक खुले रथ पर बैठा हुआ शुम्भासुर दाहिने ओर खड़ी सिंहवाहिनी को अकेले युद्ध के लिये ललकार रहा है। देवी ने उसकी ललकार स्वीकार कर ली और फलतः देवी के शरीर में दूसरी देवियाँ समाती हुई दिखाई गई हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ हन्यमानं बलञ्चैव शुंभः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥
अंतं ॥ तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ४६ ॥"

अब शुम्भासुर बच रहा। उसने देवी को ललकारकर कहा—'दुर्गे ! इस युद्ध में तुम्हारा कोई बड़प्पन नहीं है ; क्योंकि तुम अन्यान्य देवियों की सहायता से लड़ रही हो।'

देवी अम्बिका ने कहा—'दुष्ट ! ये अनेक देवियाँ मेरी ही अभिन्न शक्तियाँ हैं। ये मुझसे उत्पन्न हुई हैं और मुझमें ही विलीन हो जायँगी।'

इतना कहने के साथ ही अन्यान्य देवियाँ अम्बिका के शरीर में विलीन हो गईं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४७)

१२६—शुम्भासुर-देवी-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९ वीं शती

इस चित्र में शुम्भासुर का देवी से कई प्रकार से युद्ध दिखाया गया है। पहले शुम्भासुर रथ से युद्ध कर रहा है और देवी ने उसके धनुष को काट दिया है। फिर शुम्भासुर रथ से कूदकर ढाल-तलवार से लड़ रहा है। देवी ने बाणों से उसकी ढाल-तलवार भी काट दी है। तब शुम्भासुर घूसा तानकर देवी के ऊपर टूट रहा है। देवी ने उसे थप्पड़ मारकर भूमि पर गिरा दिया है और फिर होश आने पर वह आकाश में स्थित हो गया है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ पश्यतां सर्व देवानामसुराणांच दारुणां ॥
अंतं ॥ अभ्यधावत्तदादेवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ ४७ ॥"

फिर देखनेवाले देवगण और असुरों के सामने शुम्भासुर और देवी युद्ध में उपस्थित हुए। देवी और असुर के शर-वृष्टि, शोणित और दारुण अस्त्र-समूह के परस्पर संघटित होने से सर्वलोकभयजनक युद्ध का समारम्भ हुआ। देवी के सभी दिव्यास्त्रों को शुम्भ ने उसके प्रतीघातक्षम शस्त्रों द्वारा भग्न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर डाला, तथैव शुम्भ के शस्त्रास्त्रों को देवी ने हुंकारोच्चारणादि से नष्ट किया। विविध भाँति युद्धकर देवी ने उसे हताश्व, हतसारथि और छिन्नधन्वा किया। फिर उसने मुद्गर धारण किया। देवी ने उसे शर-निकर से छिन्न किया। फिर उसने मुष्टि से देवी के हृदय में आघात किया। उत्तर-स्वरूप देवी ने उसके वक्षस्थल में ताड़ना की। करतल-प्रहार से वह भूमि पर गिर पड़ा, फिर उठा। तब देवी को ग्रहणकर उछलकर शुम्भ आकाश में अवस्थित हुआ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४८)

१२७—शुम्भासुर और देवी का आकाश-युद्ध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में निरावलम्ब देवी और शुम्भासुर आकाश में युद्ध कर रहे हैं। देवी ने उसे ऊपर से घुमाकर पृथ्वी पर पटक दिया है। पृथ्वी पर देवी का वाहन सिंह खड़ा पीछे की ओर देख रहा है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्मचार्ककरामलं ।
अंतं ॥ उत्पाव्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ ४८ ॥"

देवी भी निरवलम्बना हो उससे युद्ध करने लगीं। उस असुर के साथ बहुत देर तक युद्धकर देवी उसे ऊपर उठाकर घुमाने लगीं और फिर धरातल पर निक्षिप्त कर दिया।

दुर्गापाठ चित्र सं० (४९)

१२८—शुम्भासुर-वध

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में शुम्भासुर देवी को मारने की इच्छा से दौड़ रहा है और देवी ने उसका हृदय त्रिशूल से बेध दिया है। आकाश से सुरवर्ग पुष्प-वर्षा कर रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चंडिकानिधनेच्छया ॥
अंतं ॥ जज्वलुश्चाग्नयः शांता शांतदिग्जनितस्वनाः ॥ ४९ ॥"

तब दुष्टात्मा असुर धरणीतल पर निपतित हो बड़े वेग से देवी की निधनेच्छा से मुष्टि-प्रहार करने को कृतोद्यम हुआ। उस सर्वदैत्येश्वर को आता देख देवी ने अपने शूल द्वारा उसका हृदय-वेधन कर उसे भूमि पर गिराया। देवी के शूलाग्र द्वारा हृदय-विक्षत होने पर वह गतप्राण हो भूमि पर शान्त गिर गया। उस समय समुद्र, द्वीप और पर्वतों के साथ समस्त पृथ्वी विचलित हो उठी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (५०)

१२९—स्तुति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र के मध्य में निराधार पद्मासनस्था त्रिनेत्रा वस्त्राभूषणभूषिता देवी बैठी हैं। देवी अष्टभुजी हैं। सबसे ऊपरी दाहिने हाथ में ढाल, उससे नीचेवाले हाथ में त्रिशूल, उससे नीचेवाले हाथ में चक्र है और सबसे नीचेवाला हाथ अभया-मुद्रा में है। सबसे नीचेवाले बाएँ हाथ में पद्म, उससे ऊपरवाले हाथ में अर्द्धचन्द्रबाण, उससे ऊपरवाले हाथ में गदा और सबसे ऊपरवाले हाथ में खड्ग है। धनुष आसन पर पड़ा हुआ है। आसन के नीचे सिंह बैठा हुआ है। देवता लोग दोनों ओर प्रार्थना कर रहे हैं।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ।

अंतं ॥ शरणागतदीनार्त्त परित्राणपरायणे सर्वस्यार्त्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥"

उस महाबल असुर के प्राणान्त होने पर देवताओं का हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। वे देवी की प्रार्थना करने लगे।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५१)

१३०—स्तुति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में देवगण नव दुर्गा देवियों की स्तुति कर रहे हैं। ऐरावत पर चढ़ी हुई वज्र लिये हुए इन्द्राणी और गरुड़ के स्कन्ध-देश पर आरूढ़ षट्भुजी वैष्णवी हैं, जिनके ऊपर के दाहिने हाथ में गदा, दूसरे में धनुष और तीसरे में शंख है तथा नीचे के बाएँ हाथ में चक्र, उसके ऊपरवाले हाथ में पद्म है और सबसे ऊपरवाला हाथ वरदा-मुद्रा में है। हंसवाहिनी चतुर्मुखी एवं चतुर्भुजी ब्रह्माणी देवी के हाथ में वेद, घट और स्त्रुवा हैं। चतुर्भुजी काली के हाथ में वज्र, तलवार और पाश हैं। मयूरस्था षड्मुखी और षड्भुजी कौमारी देवी के हाथों में शक्ति और ढाल हैं। वृषभारूढ़ा माहेश्वरी देवी के हाथ में त्रिशूल है। नारसिंही, वाराही और शिवा देवी भी खड़ी हैं। बाएँ ओर देवतागण उन्हें प्रणाम कर रहे हैं।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिकौ ।

कौशांभःक्षरिके देवि नारायणि नमोस्तुते ॥

अंतं ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ ५१ ॥"

देवी द्वारा उस महासुर के विनष्ट होने पर सभी देवगण देवी की स्तुति करने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र सं० (५२)

१३१—कात्यायिनी-वन्दना

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में बाएँ ओर सिंह के ऊपर कमलासना, वस्त्रालंकारभूषिता चतुर्भुजी कात्यायिनी देवी निरावलम्ब स्थित हैं। देवी के ऊपर के दाहिने हाथ में जाज्वल्यमान् अग्रभागवाला त्रिशूल, दूसरे हाथ में चक्र, नीचे के बाएँ हाथ में शंख और ऊपर के बाएँ हाथ में खड्ग हैं। दाएँ ओर करबद्ध देवगण स्तुति कर रहे हैं।

नीचे हाशिए पर निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितं ॥
अंतं ॥ पातनुः सर्वभूतस्यः कात्यायनिनमोस्तुते ॥ ५२ ॥"

इन्द्र और वह्नि के साथ सभी देवगण इष्ट-लाभ से सफलमनोरथ हो प्रफुल्ल वदन से उस कात्यायिनी देवी का स्तव करने लगे। उस समय देवगण ने कहा—"हे शरणागतदुःखहारिणि देवि! प्रसन्न हो। हे अतिवल जगज्जननि! प्रसन्न हो। तुम विश्व की रक्षा करो। हे देवि! तुम्हीं चराचर विश्व की ईश्वरी हो। हे देवि! तुम जगत् की अद्वितीया आधारस्वरूपा हो।" इत्यादि नाना प्रकार से देवताओं ने स्तुति की।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५३)

१३२—स्तुति

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र के बाएँ ओर कमलासनस्था चतुर्भुजी देवी, सामने हाथ जोड़े देवताओं से बातचीत कर रही हैं। देवी के पार्श्व में उनका वाहन सिंह बैठा हुआ है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ एभिस्तवैश्चमांनित्यंस्तोष्यते यः समाहितः ॥
अंतं ॥ तस्याहं सकलां वाधां शमयिष्याम्यसंशयं ॥
दूरादेव पलायंते स्मरतश्चरितं मम ॥ ५३ ॥"

देवी ने उनकी प्रार्थना से प्रसन्न हो कहा—'हे सुरगण! मैं वरदा हूँ। तुम लोग त्रिजगत् के उपकारी जिस वर की इच्छा करते हो, वह मुझसे माँगो।' देवों ने कहा—'हे अखिलेश्वरी! त्रैलोक्य के सब प्रकार के विघ्नों को प्रशान्त करो। यही हम लोगों का वर है कि इसी तरह हमारे शत्रुओं का आप विनाश करें।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवी ने कहा—'सप्तम मन्वन्तर के अष्टाविंशति संख्यक युग में दूसरे शुम्भ-निशुम्भ होंगे, जिन्हें मैं नन्दगोप के घर उत्पन्न हो वध करूँगी। फिर वैप्रचित्त दानवों का नाश करूँगी। उस समय मेरे दाँत दाड़िम-कुसुम सदृश रक्त वर्ण होंगे, तब मेरा नाम "रक्तदन्तिका" होगा। फिर शतवार्षिकी अनावृष्टि के समय मैं "शताक्षी" के नाम से अवतार लूँगी। उस समय शाक द्वारा ही सब लोगों का पालन करने के कारण "शाकम्भरी" कहलाऊँगी और उसी समय दुर्गम नामक महासुर का वध करने से "दुर्गा देवी" कहलाऊँगी। फिर राक्षसों से मुनियों की रक्षा करने के लिये हिमालय पर भीम रूप धारणकर अवतार लूँगी तो उस समय मेरा नाम "भीमा देवी" होगा। और अन्त में अरुण नामक दैत्य का संहार करने के लिये असंख्य षट्पदसमन्वित भ्रमर का रूप धारणकर मैं त्रैलोक्य के मंगल के लिये उस असुर का वध करूँगी, उस समय सब लोग चारों ओर से मेरा "भ्रामरी" के नाम से स्तव करेंगे। जो लोग इन सब स्तवों द्वारा समाहितचित्त से मेरा स्तव करेंगे, मैं निश्चय ही उनकी सब प्रकार की बाधाओं को नष्ट करूँगी।' इत्यादि कहकर देवी अन्तर्द्धान हो गईं।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५४)

१३३—अन्तर्द्धान

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र के बाएँ ओर देवी-विहीन कमलासन पड़ा हुआ है। देवी अन्तर्द्धान हो गई हैं। पाँच देवता हाथ जोड़े हुए प्रार्थना कर रहे हैं और चार देवता देवी की महिमा गाते हुए अपने स्थान को चले जा रहे हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ इत्युक्त्वा सा भगवति चंडिका चंडविक्रमा ॥
अंतं ॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवांन्तरधीयत ॥ ५४ ॥"

इस प्रकार वर देकर देवी अन्तर्द्धान हो गईं। देवगण भी निहतवैरी हो निर्भय यज्ञ-भाग भोजन करते हुए अपने-अपने कार्य में लीन हुए। शुम्भ-निशुम्भ हत हो चुके थे, शेष दैत्य पाताल में चले गये।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५५)

१३४—असुरों का पाताल-गमन

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

चित्र के ऊपरी भाग में आकाश-मण्डल में दो पङ्खोंवाली अप्सराएँ इन्द्र-सभा में नृत्य कर रही हैं। सामने तुम्बुरु आदि बाजा बजा रहे हैं। पार्श्व में खड़े देवगण नृत्य का आनन्द ले रहे हैं। नीचे दाहिने ओर अन्यमनस्क असुरगण पाताल को प्रयाण कर रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ तेपिदेवानिरातंकाः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥
अंतं ॥ निशुंभे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ ५५ ॥

कथा-संदर्भ के लिये देखिये चित्र सं० ५४ पर का संदर्भ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५६)

१३५—कथा का अन्त

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

इस चित्र में दाहिने ओर आश्रम के सामने मेधा मुनि, सामने बैठे हुए राजा सुरथ और समाधि नामा वैश्य को, कथा का अन्त सुना रहे हैं। चित्र के अग्रभाग में सिंहजातीय एक पशु बैठा हुआ अपना वदन चाट रहा है। आश्रम के अति निकट दो मृग और एक मयूर भी अंकित हैं। चित्र के दाएँ और बाएँ दोनों पार्श्वों में सुन्दर वृक्ष हैं। पृष्ठिका में एक पहाड़ी से सटी नदी बहती हुई दिखाई गई है।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ एवं भगवतीदेवी सा नित्यापि पुनः पुनः ॥
संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनं ॥
अंतं ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभां ॥"

इस प्रकार देवी महामाया की सारी कथा सुनाकर मेधा मुनि ने राजा सुरथ से कहा—'हे राजन्! आपसे मैंने देवी का माहात्म्य कहा। उनका प्रभाव ऐसा ही है। यही देवी तत्वज्ञान प्रदान करती हैं। वही आपको और इन वैश्य को और अन्यान्य विवेकी मनुष्य को भी मोहित करती और कर चुकी हैं। उन्हीं के आप लोग शरणापन्न होइये। वही भोग, स्वर्ग और मुक्ति प्रदान करती हैं।'

दुर्गापाठ चित्र सं० (५७)

१३६—सुरथ-समाधि-प्रस्थान

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

आश्रम के सामने मुनि मृगछाला पर बैठे हुए हैं। उनके सामने राजा सुरथ और समाधि वैश्य हाथ जोड़कर उनसे विदा माँग रहे हैं। आश्रम के सामने तीन हिरन और एक सारस अंकित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठिका में पहाड़ी के निकट एक नदी वह रही है। एक खड़ा हिरन एक सुराही में मुँह डाले हुए है। उस सुराही से लगी हुई एक दूसरी सुराही भी पड़ी है। दाएँ-बाएँ दोनों ओर सुन्दर वृक्ष हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अंकित है—

"आद्य ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमं ॥
अंतं ॥ एवं प्रभावा सादेवी ययेदं धार्य्यते जगत् ॥
अंतं ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चंडिका ॥ ५७ ॥"

इस प्रकार देवी का माहात्म्य सुनकर महाभाग मेधा मुनि को प्रणाम कर राजा सुरथ तपस्या करने चले गये और वह समाधि नामा वैश्य नदी के किनारे रह, देवी के दर्शनार्थ उत्कृष्ट 'देवीसूक्त' का जप करते हुए, तपस्या में रत हुआ।

दुर्गापाठ चित्र सं० (५८)

१३७—देवी का सुरथ और समाधि को वरदान

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती

एक नदी के किनारे पद्मासन पर त्रिनेत्रा, चतुर्भुजी, वस्त्राभूषणालंकृता देवी बैठी हैं। सामने हाथ जोड़कर राजा सुरथ और समाधि वैश्य खड़े हैं। सामने हवन की अग्नि जल रही है। आगे नदी वह रही है, जिसमें मछलियाँ तैर रही हैं। चित्र के दाहिने ओर सुन्दर वृक्ष हैं।

नीचे हाशिए में निम्नलिखित श्लोक अङ्कित है—

"आद्य ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनंदन ॥
अंतं ॥ एवं देव्यावरं लब्धा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ ५८ ॥"

इसके पश्चात् तपश्चर्य्या में लीन राजा और वैश्य ने उस पुलिन-प्रदेश में देवी की मृण्मयी मूर्त्ति गठनकर पुष्प, धूप और होमादि द्वारा देवी की पूजा की। उन्होंने कभी निराहार, कभी नियमिताहार रहकर अपनी देह का रक्त-युक्त बलि-प्रदान किया। इस प्रकार तीन वर्ष तक तपस्या करने पर जगद्धात्री चण्डिका ने प्रसन्नहो उन्हें दर्शन दिया और कहा—'हे राजन् ! तुम जो प्रार्थना करते हो, और हे कुलनन्दन वैश्य ! तुम भी जो प्रार्थना करते हो, वह तुम्हें प्राप्त हो। तुम वह सब प्राप्त करो। मैं परितोष के साथ उन्हें प्रदान करती हूँ।' देवी ने राजा को वर दिया कि तुम दूसरे जन्म में अपना राज्य और इस जन्म में बल-प्रकाश कर शत्रु-वध कर, जैसे अपना राज्य मिले उसमें समर्थ हो। इसके पश्चात् फिर तुम्हें राज्य-भ्रष्ट न होना पड़ेगा। वैश्य को देवी ने "यह मेरा और यह मैं" ऐसे अभिमान-मूलक संगविच्युत-कारी ज्ञान के लिये प्रार्थना करने पर उसे वैसा ही ज्ञान देते हुए 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्द्धान हो गईं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३८—गोपीकृष्ण

शैली—राजस्थानी; माप—९″ × ५¾″

प्रारम्भिक राजस्थनी कलम। कृष्ण की पोशाक जामे, पाजामे की है। उनकी चेहरई लाजवर्ती है। गोपी कृष्ण को व्यंग्यपूर्वक प्रणाम कर रही है।

१३९—बंगाली रागिनी

शैली—राजस्थानी; १६वीं-१७वीं शती; माप—८¾″ × ५″

एक कमल-सरोवर में, जिसमें सारस, चक्रवाक तथा मछलियाँ क्रीड़ा कर रही हैं, एक गुम्बजदार मण्डप बना हुआ है, उसके अन्दर एक दुबला-पतला संन्यासी अधारी लगाये, पद्मासन मारे हुए, व्याघ्र-चर्म पर बैठकर माला जप रहा है। उसके सामने एक ओर कमण्डलु और दूसरी ओर पुस्तक रखने की कैंची रखी हुई है। वृक्षों और मण्डप के गुम्बज पर मोर कल-रव कर रहे हैं और हंसावलियाँ उड़ रही हैं।

निम्नलिखित लेख ऊपर हाशिए में अंकित है—

“ ॥ बंगालो रागणी ॥ श्लोक ॥ मुनोक्ष मुजी गुणं गुफिताम् गा स्वछन्द ॥ धा ॥
ना धरणी सहायस्य प्रास्तु क्रमारक मयादि भुन्ति सुचिता मगामा ॥ १ ॥

दुहो ॥ बैस कुमार पुत्र कटि धरे।
कर गुछा आछा कर करै ॥
मुरति ॥ काम श्याम गुर गान ॥
वह बंगालो अनन्त बषान ॥ २ ॥”

वर्तमान चित्र बंगाली का है, जो किसी के मत से रागिनी और किसी के मत से रागपुत्र का है। जो हो, “संगीत-दर्पण” से लेकर ‘देव’ के “राग-रत्नाकर” या और भी ग्रंथों में, इसके ध्यान में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। ‘देव’ ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है—

लीला हाव स्वभाव ही, धरि भैरव को वेष।
सरद द्योस दुपहर बनी, बंगाली अवरेष ॥

मंजुल पुहुप माल मूजी मंजु मेखला गरे पै उपवीत गुन तंतुन तनायो है।
चंदन कपूर रज भसम असमनैन इन्दु-भाल मृगमद बिन्दु दै गनायो है ॥
पीरे चीर सीस जटा सरद मध्याह्न दिन संपूरन सुरगम प्योधनी जनायो है।
“देव” रस भाव लीला हाव के सुभाव भैरो बालम को वेष बाल बंगाली बनायो है ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह चित्र आरंभिक राजस्थानी कलम का है और चित्रण, अंकन शैली तथा रंग चौदहवीं और पन्द्रहवीं शती के अपभ्रंश जैन-ग्रंथों एवं लौकिक काव्यों में पाये जानेवाले चित्रों की परम्परा के निकट हैं।

(दाता—श्री० राय कृष्णदास)

१४०—विहागड़ा रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १६वीं शती का अन्त वा आरम्भिक १७ वीं शती ; माप—७″×५१/८″

इस चित्र में दाहिने ओर एक कुटिया के सामने एक नील वर्ण ऋषि व्याघ्र-चर्म पर बैठे हुए हैं। उनके बाएँ हाथ के नीचे एक बैसाखी है। वे लाल धोती और आभूषण पहने हैं और शरीर पर चन्दन के छापे लगे हुए हैं। उनके पीछे उनका शिष्य योगपट्ट से पैरों को बाँधे हुए अक्षमाला लेकर जप कर रहा है। बाएँ ओर ऋषि के सामने एक स्त्री पैरहन और गहने पहने हुए वीणा बजा रही है। पृष्ठिका में एक बरगद का वृक्ष बना हुआ है। चन्द्रमा उगा हुआ है। सामने एक पुष्करिणी है, जिसमें कमल खिले हुए हैं। चित्र के ऊपर पीले हाशिए में निम्नलिखित दोहा अङ्कित है—

"राग विहांगड़ो रागणी ॥ दुहो ॥ सोभा से पब रोजत कांन। चन्द कमोदनी बरन समांन ॥
तन कोपीन फीरत ही गावै। तापस राग बहंग सुनावै ॥ १ ॥"

१४१—श्री राग

शैली—राजस्थानी ; १७ वीं शती ; माप—१५″×१०३/८″

महल के आगे, एक चबूतरे पर पलँग बिछी हुई है। उसपर दम्पति केलि कर रहे हैं। दो दरवाजों पर मोरछल, चँवरी, पान इत्यादि लिये हुए दासियाँ लज्जा से मुख मोड़े खड़ी हैं। चित्र के बाएँ ओर एक दरवाजे से फूल लिये हुए एक दासी निकल रही है। पंखा लिये हुए एक दूसरी दासी उससे वहीं खड़े रहने के लिये कह रही है। कुछ नीचे चबूतरे पर पाँच गाने-बजानेवालियों का दल बैठा है। उनमें से एक मृदङ्ग बजा रही है, दूसरी ताल दे रही है, तीसरी तानपूरा छेड़ रही है, चौथी वीणा बजा रही है और सबके आगे जामा, पाजामा और पगड़ी पहने हुए एक गायिका गा रही है। उसके सामने शराब के बोतल तथा प्याले रखे हुए हैं। चित्र के दाहिने किनारे पर एक दासी हाथ में शराब की बोतल लिये खड़ी है। फर्श पर फलों की रकाबी, पानदान, पीकदान इत्यादि पड़े हुए हैं। चित्र के निम्नभाग में एक वाटिका बनी हुई है, जिसके मध्य में एक बावली है।

पुश्त पर निम्नलिखित लेख अङ्कित है—

"चौथौ राग श्री रागु ॥ दोहा ॥ रितु ग्रीषम श्री राग की गन्ध्रब करै विचारु ॥
अस्ट सिधि नवनिधि सदा बसै राजदरबार ॥ १ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छप्पयु ॥ गौरी कहै सुहागु भागु ताही कौ जानौं ॥
मार ओप तै अधिक भवन भामिनि सो मानौ ॥
वँग लागे नहिं वात गात गुन करि जे मोहै ॥
देव गंधार जल है कहै सब या सम की है ॥
ग्रीषम मैं गावन कह्यौ रिषि भै तै उपज्यौ धरनि ॥
श्री रागु चतुर्थक सप्त सुर सुमौ करि कै वरन्यौ गुरनि ॥२॥
संध्या समै गाइजै ॥"

१४२—पटमञ्जरी रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १७ वीं शती ; माप—१५½" × ११½"

इस चित्र में एक चबूतरे के ऊपर फर्श बिछा हुआ है। बीच में पैरहन और सफेद झीनी ओढ़नी ओढ़े हुए नायिका मसनद के सहारे मुँह लटकाकर बैठी हुई है। उसके सामने बैठी हुई एक सखी उसे पीने के लिये एक प्याला दे रही है। एक सखी पास ही हाथ बाँधकर बैठी है। दो और सखियाँ मोरछल और बस्ता लिये खड़ी हैं।

चित्र के दाहिने ओर एक सखी एक हाथ में मोरछल और दूसरे में कमल लिये हुए नायिका के पीछे खड़ी है। फर्श पर आम, गुलाब के फूल, अंगूर, पानदान, पीकदान इत्यादि रखे हुए हैं।

चित्र के निम्नभाग में बाएँ ओर एक स्त्री चन्दन रगड़ रही है और दाहिने ओर एक स्त्री तम्बूरा बजा रही है तथा एक दूसरी ताल दे रही है।

इस चित्र के पुश्त पर एक बड़ा भारी लेख है, जिससे पता चलता है कि महताब खाँ द्वारा लिखित 'राग-सागर' नामक ग्रन्थ का यह चित्र एक पृष्ठ मात्र है। लेख ये हैं—

"पटमंजरी रागिनी चौथी दीपक की ॥ दोहा ॥

रागु करावति भूल कौ अरु मय पीवति काहि ।
विरह चोट हियरा लगी सैंकु कहति त्रिय ताहि ॥ ५ ॥
सव सुगंध आगै धरे काहू तन चितवैन ।
उलटि कमलु कमलवै धर्यो मुप तैं कहै न वैन ॥ ६ ॥

तीसरे पहर गाइजे ॥ वीरहनी नाइका ॥"

"॥ लिषतं रागसागर ॥ दया अपने भई खन कौ राति मधु जीवत है नि भैंरवी तजि वरारी सुछवि भासे सो मै भरि ॥ राम करी सप छति गूजरी मति होइ आंमानुरी मिलनि की मन धरि ॥ कुमति वषार सिंधूर दै स्याम सौ आड नव करन कत सीषी रहिजौ जटासंकर आभरन दै सापि हौ कहति हौ मारू कौ डरि करि ॥१॥ माल कौ सुमेरु लालु हिये लाइ सुनि हे मालसिरी ज्यौ पुहप मालती वन ॥ का कुच कहि आवैगौ यातै तेषं भावतु तोहि कौसिक गुन मन तै हरि जिनि बातिनी सूंरे वीधन ॥ दुगमन कान रौ भरमि रही वर मै सुंनि वारि बेऊ भीम पलसिर कहाइत पैसाची कहियै सौति गन माझ तेरौई मुप अरी चंद सौधेइ सोहै वागेसुरी वीरा वनैं तन ॥ २ ॥ हिंदोला झूलत है पंचम सुर गाइ गाइ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ललित सहेलिनि अब दे सकल सुष वाम ॥ जैत श्री बोलि हे सव अनहितुनि कौ कहति हमीर पादै तौ जानैं धनासिरी ॥ वंग लगै न न मणि। पूरी या सुहाग करिहो सुद्ध व होली जै पीय कौ मन तव तोटकी लागिहै हौ तो उभै कल्यान वांछिति पर जरै जे न तेरौ सुषु चाहौ चलि मिलि······मनसा कलप तनु पूरन काम ॥ ३ ॥ वे सुषदाइक मेघ सम सुष वरसा है जैसै इंद्र सभा मलार होत ही वरसत यामै······गो डरै और तीसो रठ लाइ पिय की ॥ सारंग मिलि चलियैरी पीतमौ छ्वैहै देवगिरि सम तेरौ जस और मधि मही सै सुष की नाठिन कडिरी यह सिषही की ॥ पिय पुर वातै रोई होति है मिलि अैस मर सावंथ सौ अवघरी कामोदय होतु है सुनि हे सावरी जां जुवती अव करि सिगारु कै दारौ कही मै तो सौ वात नीकी ॥४॥ हे श्री रागु भोगु की जै मिलि अै पति सौ तव गीरी मनाइ तीर मन मानि जे अपूरवी जानै। अनेग गुन करि देव गंध पिक भरी सगुन लै सजियै सीगार टंकु नग हस कीजे आन ॥ तव षटरागनि पति सुमिरि जे अलपहारी चलि अैस वेरी तव न वसत सजे तजि बहानै ॥५॥ घरि दीप कु कंचन थार सु देसी बातै उच्चारि नई···चौंप जीवन कौलाहली जैकव ॥ सजि गति वउ हंसनि तैं चरत आरक्त हँसि धारे पूछति भई वीर वार नेक हा करिहै आ प्रसुभ जोवन फव। हमहूँ चले भषी नैकु रंग देखन दै हेरी सुघराई तेरी करनटी कौं सवारि मिली भूपालिक पति सौ मिलत ही घूँघट पट मंजरी नैननि···पारि आई जव ।। ६ ।। दोऊउर सुख वंधौ विहाग रौ रूप दयौ कर ॥ प्रफुलित भऐ मन अस्तुति करत सव सहस वदन ह्वै सहस्र रसना धर ॥ सरसती दयौ वर भूयौ जस उजागर महताव दराव गायौ राग सागर। सुनौ हो दयाल मागौ जस जग नामा वढ़ै मिटै न हिदै तरै सनातू वनां मरर ।। ७ ॥ इति राग सागर महतावखां कृत संपूर्ण ॥''

१४३—मधु-माधवी रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १७वीं शतीं ; माप—७″ × ५″

इस चित्र में एक स्त्री चोली, लहँगा और गहने पहने हुए, एक दालान के बाएँ ओर एक आम्र के वृक्ष पर बैठे हुए मोर को अपने दाहिने हाथ के एक पात्र से दाना चुगा रही है। उसके सामने एक सेविका खड़ी है। दालान की छत पर एक मोर बैठा है। आसमान में बादल उमड़ रहे हैं।

ऊपर हाशिए में निम्नलिखित लेख अंकित है—

''मधु माधवी रागणीं ।। श्लोक ।।
नीलं निचोलं वपुषा वहन्ति। छन्नः प्रभालं विति मार्ग भाङ्गी ।।
तमाल तीरे तिमरे चरन्ती। प्रीयानुरागा मधु माधवीयम् ।। १ ।।
दुहो ॥ निल वसन तन धरे सुरंग। दे अ गह अंगज मोरत अंग ।।
सेनत माल दषी राति बाढ़ी। रागणीं मधु माधवी ठाढ़ी ।। २ ।।''

१४४—राग सारंग

शैली—राजस्थानी ; १७ वीं शती ; माप—१५½″ × ११½″

इस चित्र के मध्य में एक तालाब है, जिसमें कमल फूले हुए हैं और हंस कलरव कर रहे हैं। उसके किनारे एक मुतकेदार चबूतरे पर हरा पाजामा, जामा, पगड़ी और गहने पहने हुए नायक तकिये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के सहारे बैठा है। उसके दाहिने हाथ में एक फूल और बाएँ हाथ में एक वीणा है। उसके सामने कुछ गुलाब के फूल पड़े हैं और एक तश्तरी में अंगूर और सरदा रखे हुए हैं। इस तकियेदार चबूतरे से सटा हुआ एक दूसरा चबूतरा है। इसके बाएँ ओर एक जटाजूटधारी ऋषि वीणा बजा रहे हैं और एक दूसरे ताल दे रहे हैं। उनसे कुछ नीचे गहने-कपड़े से सुसज्जित दो गवैये बैठे हैं। एक तानपूरा छेड़ रहा है और दूसरा ताल दे रहा है। चबूतरे के दाहिने ओर चार सखियाँ नायक की सेवा कर रही हैं। एक पंखा झल रही है; दूसरी के हाथ में मोरछल है; तीसरी फल की डाली लिये है और चौथी के हाथ में शराब का कंटर है। उनसे कुछ दूर हटकर एक सखी होरसे पर चन्दन रगड़ रही है। चित्र के निम्नभाग में एक वाटिका है, जिसके मध्य में एक फव्वारा बना हुआ है। दाहिने ओर एक पेड़ के नीचे खड़ी हुई एक स्त्री एक हिरन के बच्चे को कुछ खिला रही है। चित्र का यह भाग मरम्मत किया हुआ है।

चित्र की पृष्ठिका में एक वन चित्रित है। एक गड़्ही के पास बकुले बैठे हैं; कुछ दूर पर बन्दूक से एक शिकारी हिरनों को मार रहा है। दो स्त्रियाँ पानी के घड़े सिर पर रखे घर जा रही हैं।

पुश्त पर यह लेख है—

"सारंग रागिनी दूसरी दीपक राग की ॥
दोहा ॥ गन्ध्रप सारंग गाँवई कर साँरग सारंग
ग्रह नुसीर क्रत्तम पवन वह साँरग सारंग ॥ ४ ॥
दुपहर कै गाइजै ॥ वीरहनी नाइका ॥"

१४५—श्रृङ्गार

शैली—राजस्थानी ; १७वीं शती ; माप—९¾″ × ६¾″

इस चित्र में दाहिने ओर एक पुष्करिणी तट से लगे हुए कमरे में नायिका लाल लहँगा और चाली पहने तथा झीना दुपट्टा ओढ़े एवं श्याम रंग के फूँदने लगे हुए गहने पहने हुए कंघी से अपने बाल सँवार रही है। उसके बाएँ ओर एक श्यामा स्त्री गोल आइना दिखा रही है। एक दूसरी स्त्री उसके दाहिने ओर खड़ी है। चित्र के बाएँ ओर पुष्करिणी से पानी भरकर, अपने सिर पर घड़ा रखे हुए, एक स्त्री वृक्षों के नीचे बैठने जा रही है। पृष्ठिका में एक दालान है, जिसके सामने चँदोवा खिंचा हुआ है।

पुश्त पर यह लेख अंकित है—"तसविर सीसा देषै वाली की।"

१४६—कोई रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १७वीं–१८वीं शती ; माप—१२″ × ९½″

चित्र में बाएँ ओर वृक्ष के नीचे पीताम्बर व गहने पहने हुए श्रीकृष्ण चौकी पर बैठे हैं। सामने खड़ी हुई एक स्त्री उनसे वार्तालाप कर रही है। चित्र के बाएँ ओर एक गोल मण्डप के नीचे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो घड़े रखे हुए हैं। उस मण्डप पर एक मोर बैठा हुआ है। पृष्ठिका में एक कमरे के अन्दर दो स्त्रियाँ कुछ बातचीत कर रही हैं। आकाश में राहु चन्द्रमा को ग्रस रहा है।

वृक्षों की लिखावट इस प्रकार है—पहले पूरे पेड़ का गुच्छा काले रंग से बाँध लिया है। उसी पर गुलाली से पेड़ों की डालें खोल दी गई हैं तथा पीला, हरा व लाल की सहायता से पत्तियाँ बना दी गई हैं। वृक्षों का यह अंकन आलंकारिक है।

तसवीर के चारों ओर लाल हाशिया है।

१४७—रामकली रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—७$\frac{१}{२}$″ × ४$\frac{७}{१०}$″

यह चित्र कपड़े पर बना हुआ है। घर के बरामदे में दालान के सामने नायिका फूलदार घाघरा, पीली चोली, झीनी ओढ़नी और गहने धारणकर मुँह फेरकर एक पीठदार मंच पर बैठी हुई है। उसके सामने जामा, पाग और एक चादर धारण किये नायक उसका एक पैर पकड़कर मना रहा है। पृष्ठिका में तकियों से घिरी हुई एक सुन्दर पुष्पवाटिका है।

पुश्त पर मुण्डा व देवनागरी में लिखा हुआ है—'राग राम कली'

१४८—दो स्त्रियाँ (गुनकली रागिनी)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—४″ × ७$\frac{३}{४}$″

एक मकान के सामने बड़े चौक में चौकी पर बड़े तकिये के सहारे एक स्त्री बैठी है। उसके सामने एक दूसरी स्त्री बैठी है तथा एक स्त्री खड़ी है, जिसके दोनों हाथों में अरुण कमल के दो सनाल पुष्प हैं। खड़ी स्त्री अपना दाहिना हाथ उस स्त्री को फूल देने के लिये बढ़ाये है। वह बैठी हुई स्त्री भी फूल लेने को अपना बायाँ हाथ बढ़ाये है। दाहिने हाथ में वैसा ही कमल-पुष्प लिये है।

इस चित्र पर 'गुनकली' लिखा था। वह अंश मरम्मत करने में निकल गया है। गुनकली एक रागिनी का नाम है।

(काशी में क्रीत)

१४९—एक रागिनी (सम्भवतः सारंग)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—६$\frac{३}{५}$″ × ९$\frac{३}{१०}$″

रसाल-वृक्ष के नीचे एक स्त्री दाहिने हाथ में कमल का फूल लिये खड़ी अपने बाएँ हाथ से वृक्ष की एक शाखा पकड़े है। चीर कंधों पर पड़ा है। दृष्टि फूल पर है। उसके सामने खड़ी एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्री तम्बूरा बजाकर कुछ गा रही है। पास ही नदी बह रही है। नदी के उस पार हिरन चर रहे हैं। आकाश में सूर्य्य दिखाई दे रहा है।

(काशी में क्रीत)

१५०—नट रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—३$\frac{९}{१०}$" × ७$\frac{३}{८}$"

हनुमत्-मत से यह दीपक राग की रागिनी है। इस रागिनी का वर्णन 'देव' कवि ने इस प्रकार किया है—

> ऊपर सुहाग राग भूपहिं रिझायबे को,
> डोले रन-भूपर अनूप रस रारी है।
> वसन सुरंग अंग तरल तुरंग चढ़ि,
> संग में सुभट अंग सखी सहचारी है॥
> ग्रीषम के चौथे याम पूरन सकोप काम,
> वेधि संख धुनी सुनी कैधौं प्रेमगारी है।
> लागै ना निमेष दृग अरुन विसेष महा-,
> वीर भट वेष धरे देखी नट नारी है॥

इस कवित्त में चित्र से कुछ भिन्नता है ; परन्तु डाह्याभाई शिवराम (भावनगर के राजगायक) रचित गुजराती भाषा के ग्रन्थ 'सङ्गीत-कलाधर' में दिया हुआ नट रागिनी का वर्णन इस चित्र से पूरा मिलता है।

प्रस्तुत चित्र में पहाड़ी घाटी का दृश्य है। बीच में, कीमती वस्त्राभूषण एवं वीरवेशधारिणी तथा घोड़े पर सवार एक स्त्री ने दाहिने हाथ से तलवार के एक प्रहार से एक पुरुष के मस्तक का आधे-आध दो भाग कर दिया है। एक दूसरा आहत व्यक्ति सामनेवाले जलाशय के किनारे पेट के बल पड़ा है। पृष्ठिका में दोनों पहाड़ों पर पेड़-पालो हैं। सामने जमीन पर घास तथा जलाशय में कमल हैं। नीले आसमान में सुनहरी किरणों से युक्त लाल रंग का सूरज है।

(काशी में क्रीत)

१५१—बरारी रागिनी

शैली—राजस्थानी (दकनी कलम ?) १८वीं शती ; माप—१४$\frac{३}{४}$" × १०$\frac{५}{८}$" ;

एक महल के दो भागों का दृश्य। चित्र के दाहिने ओर घर के बाहर चबूतरे पर एक कालीन बिछी हुई है, जिस पर मसनद के सहारे तकियों पर पाँव फैलाये हुए सफ़ेद जामा, हरा धारीदार पाजामा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और पाग पहने हुए नायक अपनी गोद में नायिका को बैठाकर शराब पिला रहा है। नायिका सुनहला लहँगा, झीनी ओढ़नी और चम्पाकली इत्यादि गहने पहने हुए है। उसके बाएँ हाथ में एक चमर है। दम्पति के पीछे दो दासियाँ हैं, जिनमें से एक के हाथ में मोरछल है। दम्पति के सामने फर्श पर पानदान, एक तश्तरी में शराब के कंटर तथा अन्य तश्तरियों में फल हैं। दो दासियाँ शराब के कंटर तश्तरियों में लेकर हाज़िर हैं। तसवीर के मध्य में तीन स्त्रियाँ वीन और तानपूरे पर ताल देकर गा-बजा रही हैं। चित्र के बाएँ ओर एक फव्वारे के सामने ऊपर कमरे में दासियाँ हैं। इनमें से एक दूसरी को, जो उसकी गोद में लेटी हुई है, शराब पिला रही है। चित्र के निचले भाग में महल का दरवाजा बना हुआ है।

चित्र के पुश्त पर यह लेख अंकित है—

"वरारी रागिनी भैर की दूसरी ।। दोहा ।।
जे प्यारी है रावरी तिन्हैं मनावो जाइ ।
मगन रहे सब निसि हमे प्रात पियावत आइ ।।१।।
प्रात समये ते पहर दिन चढ़े लौ गाइजै ।। षण्डिता नायिका ।।"

१५२——वीणावादिनी

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप——८″ × ४″

इस चित्र में दाहिने ओर एक घर के बरामदे में बैठी हुई एक सुन्दरी वीणा बजा रही है। चोली, ओढ़नी और ढीला पाजामा पहने है। उसके बाल पीठ पर छिटके हुए हैं। सामने हौज़ में फव्वारे छूट रहे हैं और दो चकोर बड़े ध्यान से संगीत सुन रहे हैं। आकाश में तारे और चन्द्रमा उगे हुए हैं। कदाचित् यह इमन रागिनी है। यही नाम चित्र के पीछे दिया हुआ था जो नई वस्ली जमाने में दब गया। इसकी वेशभूषा मुसलमानी है और इमन यवनी है।

१५३——फागुन मास

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप ९$\frac{1}{2}$″ × ६$\frac{3}{4}$″

इस चित्र में एक अमराई में होली हो रही है। दाहिने ओर पीले घाघरे, लाल चोली और झीनी ओढ़नी को धारण किये चार सखियाँ पिचकारी लिये खड़ी हैं। उनके आगे नायक पीला जामा, लाल पाजामा और पीली पाग धारण किये पिचकारी लिये खड़ा है। चित्र के बाएँ ओर नाच-गान हो रहा है। एक स्त्री डफ बजा रही है और दूसरी ताल। एक समाजी मृदङ्ग बजा रहा है। एक स्त्री नृत्य कर रही है। सभी लोग रंग से शराबोर हैं। दाहिने ओर पृष्ठिका में, एक दालान में, नायक-नायिका खड़े हैं। तलवार लिये हुए नायक को बाहर जाने के लिये उद्यत देखकर नायिका तलवार पकड़कर उसको विदेश जाने से रोक रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर हाशिए में यह लेख है—

"॥ सवैया ॥

बाजत मृदङ्ग मुरचङ्ग चङ्ग कासीराम बेले एक संग सब फिरे राग रंग मैं ॥
गवहि धमारि गारि रुप की उजियारी नारी लियैं पिचकारी नर रस के प्रसङ्ग मैं ॥
केसरि गुलालु सौंधौ मृगमद देखियत मगजै लागै अरगजा लायौ अंग मैं ॥
सुरन को निवास ऐसो फागुन को मासु पिय तामैं क्यों अवासु तजि जैये वनषण्ड मैं ॥"

पुश्त पर केवल लिखा है—"फागुन १०"।

१५४—चैत मास

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—१०$\frac{3}{4}$"×६$\frac{3}{8}$"

एक वाटिका में नाना प्रकार के पुष्प खिल रहे हैं और उससे सटकर फुल्ल कमलों से युक्त एक पुष्करिणी है। उसके बाएँ ओर दरवाजे पर एक स्त्री खड़ी हुई इशारे से, सामने खड़े हुए नायक को, विदेश-गमन से रोक रही है। नायक सफेद जामा, सुनहरी पगड़ी और परतला धारण किये तथा तलवार बाँधे हुए, दोनों हाँथ बाँधकर, नायिका की बातें सुन रहा है।

ऊपर हाशिए में यह लेख है—

"॥ सवैया ॥

अंवनि गंवनि ख नीक लागै कासीराम सीतल सुगंध मंद वहै वाउ भलि ऐ।
को कौ पति झार नई पात नई डार अरु आई ठार ठार चिकनाई झलम लिऐ ॥
फिरत भंवर भुले बन उपवन फुले कइं कइं कल फुले कहूँ कहूँ कलियै ॥
मंद मंद बात कहै चंद्रमुषी समुझायै चतुर रुचिर पति चैत मैं न चलियै ॥ ७ ॥"

सरपोश पर का लेख है—'महिना चैत्र का ८'।

१५५—आषाढ़ मास

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—१०$\frac{3}{4}$"×६$\frac{7}{16}$"

उपवन में एक सायेदार चबूतरे पर गावदार तकिये के सहारे सफेद जामा, सुनहरी पगड़ी, लाल पाजामा तथा गहने पहने हुए एक पुरुष बैठा है। उसके सामने गहने-कपड़े से सुसज्जित एक स्त्री बैठी है। फर्श पर एक छोटी पेटी, चार प्याले, गडुआ, पीकदान और कुछ शराब के कटोरे पड़े हुए हैं। चित्र के बाएँ ओर पेड़ों के नीचे दो सायेदार कुटियाँ हैं, जिनके नीचे दो योगी तप कर रहे हैं। पृष्ठिका में बाएँ ओर एक मण्डप के नीचे पद्मासनस्थ योगी हाथ उठाकर तप कर रहे हैं। उनके सामने एक स्त्री ढासना लगाकर बैठी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र के ऊपर निम्नलिखित लेख अंकित है—

"।। सवैया ।।

कारे पीरे नीले धौरे धूमरे रँगीले वर बादर छबीले ठौर ठौर उठि आये हैं ।।

कासीराम कवि जे विदसगामी नर घर करि करि कै तहाँ ते तेउ धाये हैं ।।

जोगी जती जङ्गम सन्यासी गछिवेतैं रहे बैठे हैं पकरि कुंज जहां तहां छाये हैं ।।

ऐसी कहा गाढ़ पति कीजियै असाढ़ गौन इहिं पछीनहुं भवन वनाये हैं ।। १० ।।"

पुश्त पर "अषाढ़" लिखा हुआ है और सरपोश पर "वारामसा की तसविर असाढ़" लिखा हुआ है।

१५६—कृष्ण-राधा-मिलन

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—$९'' \times ६\frac{1}{2}''$

इस चित्र में उपवन बना हुआ है। वाएँ कोने में पुष्करिणी भी है, जिसके तीर पर एक हाथी खड़ा है। कुछ दूर हटकर वाएँ ओर एक सायेदार ओसारे में पाजामा, अङ्गा, पाग, गहने और जूते पहने हुए श्रीकृष्ण सामने खड़ी हुई राधा से बातें कर रहे हैं, जो हाथ उठाकर पानी का बरसना दिखला रही हैं। आकाश में बिजली चमक रही है और वगुलों की पंक्तियाँ उड़ रही हैं।

ऊपर हाशिए में यह लेख अंकित है—

"निसिवासर को मिलन अवइया एक समै अव देषन गोकल गोपी गोपाल समुह सुधाये

राति भइ जु चले घर कुन्द चहूँ दिसि मेह महा मझि आये

दूसरो बोल हातै समुझै जग कै सब ज्युं छित मैं तम छाये

ऐसे मैं स्याम सुजान वियोग विदा कै दियो रुकिये मन भाये"

१५७—उत्का नायिका

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—$८\frac{3}{4}'' \times ५\frac{1}{8}''$;

नदी के तीर पर लाल लँहगा, चोली, झीनी ओढ़नी और गहने पहने हुए नायिका एक आम्र-वृक्ष के नीचे, दाहिने हाथ से उसकी टहनी पकड़े हुए और बाएँ हाथ में फूलछड़ी लिये हुए, खड़ी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५८—प्रवत्स्यत्पतिका

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—५ ४/५″ × ७″

स्याह कलम। ढाल, तलवार और तूण-कमान बाँधे, कमर में कटार खोंसे एक युवक युवती के सामने खड़ा परदेस जाने की बिदा माँग रहा है। वह भी कुछ कह रही है। पास ही जलाशय में कमल फूल रहे हैं और जलचर-पक्षी कल्लोल कर रहे हैं। समय शरद-ऋतु का है।

(मूलचन्द चित्रकार के पुश्तैनी संग्रह का)

१५९—क्रीड़ामृग

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—३ १/२″ × ५ १/५″

हरीयाली में खड़ी एक स्त्री अपने क्रीड़ामृग को घास खिला रही है। उसके बाएँ हाथ में मोरछल है, जिसे वह कन्धे पर रखे है। उसके दाहिने हाथ पर रखी हुई घास को वह कृष्णमृग उछलकर ले रहा है। यह चित्र दकन की कलम का है।

(काशी में क्रीत)

१६०—शाहज़ादी

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—३ ६/१०″ × २ १/५″

एक स्त्री गहने-कपड़े पहने हुए और एक हाथ में सिन्दूरदान लिये हुए बाहर झाँक रही है।

१६१—स्त्री की शबीह

शैली—राजस्थानी , १८वीं शती ; माप—४ ३/५″ × ३″

किसी राजपूत-रमणी की बाईं एकचश्मी शबीह। रमणी का चेहरा भरा हुआ और आँखें बड़ी हैं। सिर के खुले बाल झीनी ओढ़नी से ढँके हैं। सिर पर बंदी-बेना, नाक में छोटी नथ, कान में कर्णफूल और गले में मोतियों के हार हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६२—वार्त्तालाप करती हुई दो स्त्रियाँ

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—४ ३/८" × ५ १/२

कुछ फासले से बैठी हुई दो स्त्रियाँ परस्पर वार्त्तालाप-सा कर रही हैं। एक युवती और दूसरी स्त्री प्रौढ़ा मालूम होती है।

(गोस्वामी माधवलाल जहानाबादी प्रयागवाले से प्राप्त)

१६३—वट-सावित्री-पूजा

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—१० ९/१०" × ७"

इस चित्र में पुष्करिणी के तट पर एक बरगद का वृक्ष है, जिसमें गोदे फले हुए हैं और बरोहें लटक रही हैं। इसके चारों ओर एक सीढ़ीदार चबूतरा बना हुआ है। वस्त्राभूषण से सुसज्जित स्त्रियों का समूह बरगद की पूजा करके उसकी फेरी दे रहा है। इनमें से बहुतों के हाथ में पूजा की थाली है। चबूतरे पर थालियों और कटोरों में धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि हैं। चित्र में बाएँ ओर काछनी काछे, आभरण और वनमाला से सुसज्जित कृष्णचन्द्र खड़े हैं। उनके ठीक सामने एक स्त्री सीढ़ी पर शिर उठाये हुए खड़ी हुई श्रीकृष्ण का ध्यान अपनी उस सखी के ओर आकर्षित कर रही है, जिसके पैर में काँटा चुभ गया है और जो उस पैर को उठाकर काँटा देख रही है। बरगद पर तथा चबूतरे के नीचे बन्दर कुलेलें कर रहे हैं। कला की दृष्टि से यह चित्र बहुत ही सुन्दर है। पेड़ की बनावट में दिल्ली-कलम की छाया साफ दीख पड़ती है। पूजा करती हुई स्त्रियों की आपस में बातचीत और भावभंगी का बहुत ही सुंदर चित्रण हुआ है।

१६४—सीता का मार्गश्रम

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—११ १/८" + ७ ५/८"

इस चित्र में, मार्गश्रम से थककर अपना पैर पकड़े हुए वृक्ष की छाया में सीताजी बैठी हैं। उनके पीछे लक्ष्मण धनुष-बाण तथा तलवार से सुसज्जित खड़े हैं। आगे श्रीरामचन्द्र धोती पहने हुए घूमकर सीता की ओर देख रहे हैं। चित्र के दाहिने ओर पर्वतखण्ड पर वृक्ष उगे हैं और नीचे नदी बह रही है।

लाल हाशिए में ऊपर की ओर निम्नलिखित लेख अङ्कित है—

"सीता का मार्गश्रम से बैठ जाना और श्रीरामचन्द्र का फिर से देखना"।

(दाता-स्वर्गीय बाबू गोविन्ददास साह, दुर्गाकुण्ड, काशी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६५——मार्कण्डेय की रक्षा

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप——७" × ११"

इस चित्र में हाथ जोड़े हुए मार्कण्डेय मुनि घुटने टेककर शिव की आराधना कर रहे हैं। बाएँ ओर खड़ा एक यमदूत मुनि को मार डालने के लिये एक रस्सी से उनका गला कस रहा है। दाहिने ओर एक नदी के किनारे एक शिवलिङ्ग स्थित है। मुनि की विपत्ति देखकर गङ्गाधर शिव लिङ्ग से स्वयं प्रकट हुए हैं। शिव के शरीर में सर्प लिपटे हुए हैं। गले में मुण्डमाल है ; कमर में एक काला गजचर्म बँधा हुआ है। ऐसे शिव अपने त्रिशूल से उस यमदूत पर आघात कर रहे हैं। पृष्ठिका में और अगल-बगल कश्मीरी कलम के पहाड़ बने हुए हैं।

पुश्त पर यह लेख है—'तसवीर शिव मन्दिर चोर'।

१६६——नरसी महता और उनकी कुमारी कन्या

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप——६¾" × १०$\frac{१}{१०}$"

एक जलाशय के किनारे साधु-वेश में नरसी महता पीताम्बर पहने खड़े है। उनके शिर पर लाल टोपी है और कन्धे पर एक दुपट्टा। बगल में हरे रंग की कोई चीज़ है। मालूम होता है, वही चीज़ लड़की को देना चाहते हैं। लड़की दोनों हाथ फैलाये है।

पृष्ठिका में थोड़ी दूर पर एक पहाड़ी है। पहाड़ी के उस पार कोई बहुत बड़ा शहर मालूम होता है।

नरसी महता जूनागढ़ के नागर ब्राह्मण थे। वे बड़े भगवद्भक्त थे। दिन-रात साधुसंतों की संगति में रहते थे और घर की कोई चिन्ता न करते थे। इनकी कन्या विवाह के योग्य हो गई ; परन्तु उसका सम्बन्ध कहीं निश्चित न हुआ। जब घरवालों ने इन्हें बहुत तंग किया तो इन्होंने विवाह-व्यय के लिये एक हुण्डी द्वारिका के साँवलिया साह पर कर दी ; जिसे स्वयं द्वारिकानाथ ने महाजन का रूप धारण करके सकार दिया और कन्या का विवाह हो गया।

इनका समय सन् १४९३ ई० से १५९३ ई० के भीतर होना चाहिए ; क्योंकि इन्होंने अपने एक पद में कबीर और नामदेव की चर्चा की है। इधर नाभाजी ने अपने "भक्त-माल" में इनका चरित लिखा है। इतने ही समय के भीतर इनका प्रादुर्भाव हुआ।

(दतिया में क्रीत)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६७—वीरसिंह बुँदेला

शैली—राजस्थानी (बुन्देलखण्ड) ; १८वीं शती ; माप—७½"×४¾"

पगड़ी, जामा और पाजामा पहने, ढाल-तलवार बाँधे, कमर में कटार खोंसे राजा वीरसिंह कहीं चले जा रहे हैं—ऐसा मालूम होता है। रंग साँवला है। मूँछ छोटी है। दाढ़ी नहीं है। बालों की मोटी कलम कान के नीचे तक चली आई है। बुन्देलखंड में आजकल भी बहुत आदमी ऐसी कलम रखाते हैं। कान के बाले में दो बड़े मोती और एक छोटा-सा लाल है। माथे में चन्दन का तिलक और कान के पास छाप है। गले में मोतियों की दुलड़ी माला पहने हैं और दोनों हाथों में पहुँचियाँ हैं। बायाँ हाथ ढाल पर है और दाहिने हाथ में दुपट्टे का एक छोर है।

ओरछे का राजा वीरसिंह बुँदेला, जिसे बुन्देलखंड में बृसंगदेव कहते हैं, बड़ा वीर और प्रतापी राजा हुआ है। उसी का यह चित्र है। इस चित्र के पीछे इसका नाम लिखा हुआ है।

बुँदेलों की पुरानी राजधानी ओरछा, बुन्देलखण्ड में, झाँसी से तीन कोस पर, बेतवा नदी के तट पर है। अकबर के जमाने में ओरछा का राजा मधुकर शाह बुँदेला था। वह सच्चा वीर और वैष्णव था। कहा जाता है कि बादशाह ने एक दिन हुक्म दिया कि कोई राजा दरबार में तिलक लगाकर न आवे, आवेगा तो तिलक की जगह पर गरम लोहे का दाग लगा दिया जायगा। दूसरे दिन सभी राजा बिना तिलक लगाये ही पहुँचे ; परन्तु मधुकर शाह ने उस दिन और भी लम्बा टीका, नाक से ललाट तक, लगाया (उस टीके को बुन्देलखण्ड में मधुकरशाही टीका कहते हैं), जिसे देखकर बादशाह ने कहा कि तुमने मेरे हुक्म की तामील नहीं की, क्या तुम मुझे कुछ नहीं समझते ? मधुकर शाह ने कहा कि हुजूर को हम इतना समझते हैं कि हुजूर के हुक्म से प्राण दे सकते हैं; पर धर्म नहीं छोड़ सकते। यह सुनकर बादशाह बहुत खुश हुआ और उसने कहा कि मुझे तिलकों से कोई नफ़रत नहीं। मैं सिर्फ यही देखना चाहता था कि इन राजाओं में कोई सच्चा तिलकधारी भी है, या नहीं। बादशाह ने मधुकर शाह को ख़िलत बख्शी। उससे कवि ने यह कवित्त पढ़ा था—

"हुकुम दियो है बादशाह ने महीपन कों,
राजा राव राना सो प्रमान लेखियतु है।
चन्दन चढ़ायो कहीं देवपद बन्दन को,
दैहौं सिर दाग जहाँ रेखा देखियतु है॥
सूनो कर गयो भाल, छोड़-छोड़ कंठमाल,
दूसरो दिनेस और कौन देखियतु है।
सोहत टिकैत मधुसाह अनियारो इम,
नागन के बीच मनियारो पेखियतु है॥"

इन्हीं मधुकर शाह के पुत्र वीरसिंह थे। इसने जहाँगीर की आज्ञा से ग्वालियर के पास आँतरी के मुकाम पर अब्बल फजल को मारा था।

कहते हैं कि पहले वीरसिंह के एक ही पुत्र था। वह बड़ा क्रूर और उच्छृङ्खल था। प्रजा पर बड़ा अत्याचार करता था। पर राजा का एकलौता पुत्र समझकर लोग सहन करते थे। एक दिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक कुएँ पर सन्ध्या करते हुए एक ब्राह्मण को कुमार ने हुक्म दिया कि मेरे शिकारी कुत्तों को पानी पिला दे। ब्राह्मण न बोला। तब उसने शिकारी कुत्ते छोड़ दिये। कुत्तों ने चींथकर उसे मार डाला। यह समाचार सुनकर राजा ने कुमार पर शिकारी कुत्ते छुड़वाकर उसे मरवा डाला। प्रजा त्राहि-त्राहि करती रह गई। तदनन्तर वीरसिंह के बारह पुत्र हुए, जिनके नाम इस प्रकार कहे जाते हैं— १. जुझारसिंह, २. पहारसिंह, ३. उदयभानु, ४. माधवसिंह, ५. हरदौल, ६. भीमसिंह, ७. भूपतिसिंह, ८. भगवानराय, ९. नरहरिदास, १०. परमानन्द, ११. बेनीदास और १२. बाघराज। इन्हीं बारह पुत्रों का वंश बढ़ा। इन्हीं के वंशज टीकमगढ़, दतिया, चरखारी, और पन्ना आदि रियासतों के अधिपति हैं। ओरछे के स्थान पर अब टीकमगढ़ राजधानी है।

महाराज वीरसिंह ने मथुरा में सोने की तुला की थी। आचार्य केशवदास इन्हीं के आश्रित थे।

(दतिया में क्रीत)

१६८—काशी के ग्वालदास साव

शैली—राजस्थानी (काशी); १८वीं शती; माप—११$\frac{3}{8}$" × ८$\frac{5}{8}$"

एक कमरे में कालीन पर मसनद के सहारे साहु ग्वालदास बैठे हैं। इनकी आँखें रसीली, नाक सीधी और चेहरा गलगुच्छेदार तथा भरा हुआ है। आप सफेद पाग और जामा पहने हुए हैं। कानों में बाला भी है। बाएँ हाथ में एक टिकरा और दाहिने हाथ में कमल का फूल है। ताखों पर तश्तरियों में अनार रखे हुए हैं। पहले हाशिए में वरधमुतान बेल लिखी हुई है।

पुश्त पर फारसी में लिखा हुआ है—"ग्वालदास साव"।

ग्वालदास साव गुजराती वैश्य थे और अपने समय के काशी के नगरसेठ थे।

१६९—अज्ञात पुरुष की शबीह

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—७$\frac{1}{2}$" × ५"

किसी अधेड़ मनुष्य की एकचश्मी शबीह। इस व्यक्ति के कुछ बाल पक गये हैं। इसको ठेका और मूँछें भी हैं। शिर पर सुनहली पाग, शरीर पर बूटेदार जामा, कमर में पेशकब्ज, तलवार और ढाल, पैरों में सुनहला पाजामा और हाथों में दोधारी तलवार है। देखने से यह कोई बड़ा सरदार ज्ञात होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७०—मुहम्मद शाह (?)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—६″×४″

दो छोटे हाशियों में वरधमुतान वेल तथा बूटे वने हुए हैं। बड़े हाशिए में पीली ज़मीन पर बूटे वने हुए हैं, जिनके अन्तरालों में पक्षी चहक रहे हैं।

यह मुहम्मद शाह (?) की दाहिनी एकचश्मी शबीह है। अवस्था जवानी की है। रेख और दाढ़ी भीन रही है। आँखें कटारदार, नोकदार नाक तथा पतले ओष्ठ बतलाते हैं कि मुहम्मद शाह सुन्दर युवक था। कलँगी और सरपेंचदार पाग, केसरिया रंग का बूटीदार जामा और सुनहले रंग का पाजामा पहने हुए हैं। मोती की दुलड़ी कंठी और एक छोटा कंठा गले में है। हाथों में एक तलवार है। शिर के चारों ओर ज्योति बनी हुई है। पुश्त पर फारसी में "मुहम्मदशाह" लिखा हुआ है ; किन्तु, यह चित्र सम्भवतः किसी हिन्दू-राजा का है।

१७१—संन्यासी

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—६½″×५″

चित्र के बाएँ ओर एक कुटिया के सामने चबूतरे पर एक नील वर्ण संन्यासी एक लाल कोपीन धारण किये हुए बैठे हैं। उनके सामने तीर, धनुष और गड्आ पड़े हुए हैं और एक दीपक जल रहा है। संन्यासी के बाएँ ओर एक दूसरा संन्यासी पालथी मारे बैठा है। चित्र के बाएँ ओर एक वीणा-वादक संन्यासी को वीणा सुना रहा है। पृष्ठिका में एक नदी बनी हुई है, जिसके किनारे कई मसजिदें दिखाई पड़ रही हैं।

पुश्त पर यह लेख है—'सन्नासी की २४'।

१७२—विष्णु भगवान्

शैली—राजस्थानी ; १८वीं–१९वीं शती ; माप—९¾″×६″

भगवान् का रंग तीसी के फूल का है। वे जड़ाऊ सिंहासन पर विराजमान् हैं। आगे फलों की दो रकाबियाँ रखी हैं। शिर पर तीन शिखर का मुकुट, हाथों में दक्षिणावर्त्त क्रम से शंख, चक्र, दण्डे की सी सीधी गदा और कमल हैं। चित्र की पृष्ठिका मटीले पीले रंग की है, जो देखने में सोने की जान पड़ती है। वह सफेद, बैंगनी और गुलाबी काल्पनिक बादलों में समा गई है एवं उसके बाद नीला आकाश है।

हाशिए की पट्टी सिन्दूरिया रंग की है।

(क्रीत)

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

१७३—गणेश-पार्वती

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—४ १/२″ × ४″

दाहिने ओर एक अठपहली चौकी पर मसनद के सहारे बैठी हुई पार्वती बालक गणेश को स्तन पिला रही हैं।

पुश्त पर यह लेख है—'पार्वती जी गनेस कों पैं पान करावै'।

१७४—शिव-पार्वती का अधूरा चित्र

शैली—पहाड़ी ; १९वीं शती ; माप—८ ५/८″ × ६ १/४″

चित्र के बाएँ ओर जटाजूट, व्याघ्रचर्म और मुण्डमाल धारण किये गङ्गाधर शिव बैठे हुए दाहिने हाथ से डमरू बजा रहे हैं। उनके बाएँ हाथ में भाँग का पात्र है, जिसमें से उनके गले में पड़ा हुआ सर्प पी रहा है। उनके वामाङ्ग में बैठी हुई पार्वती अपने दाहिने हाथ से, भाँग की कूँड़ी से उस भङ्ग-पात्र में, भाँग उलट रही हैं और बाएँ हाथ में एक थाली में धतूरा लिये हुए हैं। जिस व्याघ्रचर्म पर वे लोग बैठे हुए हैं, उसपर कूँड़ी, भंगघोटना और प्याले आदि पड़े हुए हैं।

(दाता—राय कृष्णदास)

१७५—राम-पंचायतन

शैली—राजस्थानी (सम्भवतः जयपुर) ; १९वीं शती ; माप—१० १/८″ × ७ १/८″

राम तथा सीता सिंहासन पर विराजमान् हैं। रामचन्द्र के दाहिने ओर क्रम से लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न हैं। हनुमान् नीचे बैठे उनका चरण चाँप रहे हैं। सीता के बाएँ ओर विभीषण तथा कागभुशुण्डी खड़े हैं। राम का रंग गहरा नीला, सीता, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का पीला दिखाया हुआ गौर वर्ण और भरत का हलका नीला है। हनुमान् का चेहरा लाल तथा वर्ण मटमैला है। विभीषण का गहरा फाखताई तथा कागभुशुण्डी का हरा है। पृष्ठिका में पेड़ों की कतार, सरयू नदी तथा राजमहल हैं। हाशिया लाजवर्दी रंग का है और उसपर सफेद वरधमुतान बेल है।

हाशिए में जिस लाजवर्दी रंग का व्यवहार किया गया है, वह असली लाजवर्दी नहीं है, बल्कि कृत्रिम विलायती लाजवर्दी है, जो सन् १८७३ ईसवी से बनने लगा था।

(मूलचंद चित्रकार के संग्रह से क्रीत)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७६—वैष्णवी पूजा

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—६$\frac{३}{४}$″ × ४$\frac{३}{४}$″

इस चित्र में बाएँ ओर एक नदी के किनारे एक आम्र-वृक्ष के नीचे कमलासन पर श्याम वर्ण वैष्णवी बैठी हैं। आप एक लहँगा पहने एवं ओढ़नी ओढ़े हैं। ऊपर के दाहिने हाथ में माला, नीचे के दाहिने हाथ में शंख, नीचे के बाएँ हाथ में चक्र और ऊपर के बाएँ हाथ में पद्म है। शिर पर मोरमुकुट है। एक सद्यःस्नाता स्त्री, जिसके बाल पीठ पर बिखर रहे हैं, हाथ में पुष्प-माला लिये हुए देवी की पूजा कर रही है।

१७७—राम और हनुमान् द्वारा अयोध्या की सैर

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—८$\frac{९}{१०}$″ × ६″

गहनों से लदे हुए एक हाथी पर, खुले हौदे में, राम और उनके पीछे लक्ष्मण बैठे हैं। हनुमान् फीलवान बने हुए हैं। आगे-आगे एक अन्य हनुमान् झण्डा लिये हुए चल रहे हैं।

पुश्त पर यह लेख है— 'श्री रामचन्द्र जी की बाग देषन की'।

१७८—श्रीनाथजी

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—१३$\frac{१}{२}$″ × ९$\frac{१}{२}$″

वस्त्राभूषण, मुकुट तथा श्याम फूँदना और वनमाला से सुसज्जित श्रीनाथजी मण्डप में विराज रहे हैं। दोनों ओर एक-एक पुजारी हाथ में आरती और पंखा लिये हुए खड़े हैं। सामने झारी व पानदान हैं।

१७९—गोस्वामी तुलसीदास

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—६″ × ४$\frac{९}{१०}$″

यह गोस्वामी तुलसीदासजी की वृद्धावस्था की दाहिनी एकचश्मी शबीह है। गोस्वामीजी पालथी मारकर एक कालीन पर मसनद के सहारे बैठे हुए जप कर रहे हैं। आपका उन्नत ललाट,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लम्बी नाक जो नोक पर कुछ मुड़ गई है, बड़ी आँखें तथा सुदृढ़ मुख आपकी महानता के परिचायक हैं। वृद्धावस्था के कारण पेट पर की मांसपेशियाँ कुछ झूल-सी गई हैं।

ऐसा ही एक चित्र गायघाट, बनारस के रणछोड़लाल व्यास के पास है, जिसकी प्रतिलिपि नागरी-प्रचारिणी-सभा के 'राय कृष्णजी-हॉल' में लगी हुई है।

१८०—अज्ञात शबीह

शैली—राजस्थानी ; १९ वीं शती ; माप—$८\frac{1}{2}'' \times ६\frac{1}{2}''$

किसी हृष्टपुष्ट पुरुष की दाहिनी एकचश्मी शबीह। उसका ललाट उन्नत, आँखें कटावदार, लम्बी नाक और छोटा मुँह है। मूँछें छोटी और ठेका बड़ा है। इसके शिर पर एक ऊँचे कुलह के आकार की पीली पगड़ी बँधी हुई है। जामा सफेद है, कानों में बाला और गले में रुद्राक्ष एवं मोती की मालाएँ हैं। कटि में पीला पटका बँधा हुआ है। यह मसनद के सहारे दोजानू बैठा है और इसके बाएँ हाथ में एक फूल है।

१८१—मानसिंह की शबीह

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—$१०'' \times ६\frac{3}{4}''$

यह बाईं एकचश्मी शबीह जोधपुर के महाराज मानसिंह की जवानी की है। इनकी आँखें कटीली, नाक लम्बी, हौंठ पतले और चेहरा भरा हुआ है। इनकी मूँछ पतली और गलगुच्छा घना है। शिर पर लाल बुँदकीवाला पाग है, जिसका एक छोर सींग की तरह लिपटा हुआ ऊपर उठा हुआ है। ऊपर से एक माला लगी है, जिसके बीच में सोने का टिकरा है। सफेद जामा, बैंगनी पाजामा, जूते और पटके पहने हुए हैं। शिर पर सरपेंच, कानों में बाले, गले में मोती-मालाएँ, हाथ में कड़े, भुजाओं पर भुज और उँगलियों में अँगूठी इनके आभरण हैं। बाएँ कन्धे से ढाल लटक रही है। दाहिने हाथ में सुनहली मूँठवाली तलवार है और फेंटे में पेशकब्ज खोंसा हुआ है।

चित्र के ऊपरी हाशिए में यह लेख अंकित है—'श्री म्हाराजा मान सीध जी जोधपुर को राजा'।

१८२—नूरजहाँ की खयाली तसवीर

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—$८\frac{6}{10}'' \times ५\frac{9}{10}''$

यह एक स्त्री की दाहिनी एकचश्मी शबीह है। स्त्री एक झरोखे में बैठी हुई है। स्त्री लाल ओढ़नी, हरा पैरहन और गहने पहने हुए है। इसके बाल कंधों पर छिटके हुए हैं। दाहिने हाथ में एक डिबिया है।

पुश्त पर यह लेख है—'तसविर नुरजहां बेगम की'।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८३—चौपड़ का खेल

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—४ ३/५″ × ५ ७/१०″

पैरहन, ओढ़नी और गहने पहने हुए दो स्त्रियाँ भूमि पर बैठी हुई चौपड़ खेल रही हैं। एक स्त्री गोंटी चल रही है और दूसरी पाँसे फेंक रही है।

पुश्त पर यह लेख है—'तसविर चउपड़ षैलै की'।

१८४—उद्दीपन

शैली—राजस्थानी (बुन्देलखण्ड) ; १९वीं शती ; माप १० ३/४″ × ७″

इस चित्र में दाहिने ओर नटवर श्रीकृष्ण जमुना के तीर पर कुंज में बाँसुरी बजा रहे हैं। एक वृक्ष पर चढ़ा हुआ कामदेव अपने पुष्प-धन्वासे बाण छोड़ रहा है। बाएँ तथा दाहिने ओर गोपों के घर बने हुए हैं, जिनमें से गोपियाँ वंशी की ध्वनि से आकृष्ट एवं तन्मय होकर, अपने हाथों को श्रीकृष्ण के मुख के पास ले जाकर वंशी पकड़ने का अभिनय करती हुई, कृष्ण के निकट चली आ रही हैं। गोपगण अपनी पत्नियों का यह हाल देखकर आश्चर्य कर रहे हैं। एक गोप तो अपने घर से उतरकर मानों उनको लौटाने जा रहा है।

ऊपर हाशिए में यह लेख अंकित है—

"इती आलंबन अथ उदीपन ॥
चंद कमल चन्दन अगर रित वन वाग विहार ॥
उद्दीपन श्रृङ्गार के जे उज्जल संभार ॥२८०॥
उकत कवली नु ॥
पूरन चंद उदोत कियौ वन फूल रही वन जाति सुहाई ॥
भौरनि की अवली कलि कैरव कैरव पुञ्जनि मैं मृदु गाई ॥
वासुरीताननि काम के वाननि लौ मतिराम सबै अकुलाई ॥
गोपिनी गोप कछू न गनै अपनै अपनै घरतै उठ धाई ॥२८१॥"

१८५—हिण्डोल राग

शैली—राजस्थानी; १९वीं शती ; माप—६ ७/१०″ × ५ ३/५″

नदी के किनारे हिंडोला पड़ा हुआ है, जिसमें वस्त्राभूषणसे सुसज्जित राधाकृष्ण बैठे हैं। अगल-बगल से दो सखियाँ उन्हें झुला रही हैं तथा अन्य दो स्त्रियाँ तानपूरा और रबाब बजा रही हैं। आकाश में बादल छाये हुए हैं।

पुश्तपर लिखा है—"रा० हिंडोले की"।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८६—सारंग रागिनी

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शतीं ; माप—८½″ × ५$\frac{9}{10}$″

चित्र के दाहिने ओर एक घर के सामने चबूतरे पर एक श्याम वर्ण पुरुष पीताम्बर, उपरना और त्रिकोण मुकुट पहने हुए चौकी पर बैठा वीणा बजाकर गा रहा है। उसके सामने जटाजूटधारी एवं रुद्राक्ष की माला पहने दो कनफटे योगी वीणा और ताल बजा रहे हैं। पृष्ठिका में चबूतरे से सटा एक वृक्ष है।

नीचे हाशिए पर फारसी में 'सारंग' लिखा हुआ है।

१८७—एक योगिनी

शैली—राजस्थानी ; १९वीं शती ; माप—६″ × ९″

गिरि-गुहा के द्वार पर बैठी हुई एक योगिनी। पास में, नीचे उसकी कोई चेली वा परिचारिका बैठी है। दोनों भगवे वस्त्र धारण किये हैं। सामने दोजानूँ बैठी हुई एक गायिका वीणा बजा रही है। यह किसी रागिनी का चित्र जान पड़ता है।

चित्र के चारों ओर नीली पट्टी में चौफुलिया बेल है तथा ईंगुर की चौड़ी पट्टी पर सोने की फूलकारी है।

(काशी के चित्रकार मूलचन्द के संग्रह में का)

दुर्गापाठ के चित्र

आरंभिक राजस्थानी शैली ; काल—१७वीं शती

ये चित्र एक हस्तलिखित पोथी में बने हैं। पत्रों का आकार ९$\frac{5}{8}$″ × ४$\frac{3}{8}$″ है। इस सचित्र हस्तलिखित पोथी में आरम्भ के सात पत्र नहीं हैं। प्रति पृष्ठ पर दश पंक्तियाँ सुन्दर, पुष्ट काली स्याही से लिखी हुई हैं। विराम-चिन्ह, श्लोकाङ्क, उवाच तथा अध्याय-समाप्ति सिंगरिफी से लिखी गई हैं। आयु पर दोनों ओर दोहरे लाल खत हैं। लिखावट जैन-प्रणाली की है; पर मात्रा का व्यवहार हुआ है।

इस प्रति में भिन्न-भिन्न आकार के कुल ५० चित्र हैं। कला की दृष्टि से चित्र उच्च श्रेणी के नहीं कहे जा सकते; पर इन चित्रों का ठीक समय ज्ञात होने के कारण इनका भारतीय चित्र-शास्त्र के इतिहास में विशेष स्थान है। उस समय राजस्थानी शैली की क्या अवस्था थी, इसपर इन चित्रों से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रों के पृष्ठ का व्योरा इस प्रकार है:—

(१) ६/२ , (२) ९/१ , (३) १०/१ , (४) ११/१ , (५) १२/१ , (६) १३/१ , (७) १४/१ , (८) १४/२ , (९) १५/१ , (१०) १६/१ , (११) १७/१ , (१२) १७/२ , (१३) १८/१ , (१४) १९/१ , (१५) २०/१, (१६) २१/१ , (१७) २२/१ , (१८) २३/१ , (१९) २४/१ , (२०) २५/१ , (२१) २६/१ , (२२) २७/१, (२३) २९/२ , (२४) ३०/१ , (२५) ३१/२ , (२६) ३२/२ , (२७) ३३/१ , (२८) ३४/१ , (२९) ३४/२, (३०) ३५/२ , (३१) ३६/१ , (३२) ३७/१ , (३३) ३८/१ , (३४) ३९/२ , (३५) ४०/२ , (३६) ४१/२. (३७) ४२/२ , (३८) ४३/१ , (३९, ४४/२ , (४०) ४५/२ , (४१) ४६/२ , (४२) ४७/२ , (४३) ४८/२, (४४) ४९/२ , (४५) ५०/२ , (४६) ५१/१ , (४७) ५२/२ , (४८) ५३/२ , (४९) ५४/२ और (५०) ५८/२ ।

इस पुस्तक का लिपि-काल आदि इसके अन्तिम पृष्ठ ५९/२ पर इस प्रकार दिया है—

"संवत १७३९ वर्षे मृगशिर वदि तृतीआ दिने भौमवासरे परिपुर्णा कृता समाप्ता ॥ सकल पण्डित शिरोमणि भालस्थल तिलकायमान पण्डित श्री १०८ श्री श्री विजयसागर गणि शिष्य पण्डितशिरोरत्न पण्डित श्री श्री श्री श्री श्री हेतुसागर गणि शिष्य पं० रूपसागरेण लपि कृतं ॥ उझा श्री श्री श्री श्री श्री॰ संकर जी तत् पुत्ररत्न उझा श्री श्री श्री हरदेव जी तत् पुत्ररत्न चिरंजीवि श्री आणन्दा जी पठन कृते ॥ लषीतं श्री आसोयनगरे । यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा ॥ तादृशं लषीतं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा । मम दोषो न दीयते ॥ श्रीरस्तु ॥"...अर्थात् संवत् १७३९ वि० (= १६८२ ई०) में अगहन बदी ३ मंगल-वार को यह प्रतिलिपि पूरी हुई । श्री विजयसागर गणि (गणि जैन-साधुओं की उपाधि है) के शिष्य हेतुसागर गणि, उनके शिष्य रूपसागर ने इसे उझा शंकरजी के पौत्र उझा हरदेवजी के पुत्र आणन्दाजी के पढ़ने के लिये आसोयनगरमें, जो अहमदाबाद के निकट एक कस्बा है, लिखा ।

दुर्गापाठ चित्र (१)

१८८—सुरथ का गृह-त्याग

(पत्र ६/२ के दाहिने ओर) ; माप—४" × ३¾"

राजा सुरथ अपना राज्य छोड़कर मृगया-व्याज से वन को जा रहे हैं। पत्र पर बाएँ ओर पाठ है। पृष्ठिका पीले रंग का है। शिर पर लाल पगड़ी, तन पर सफेद बूटेदार लाल जामा, कमर में हरा कमरबंद, पैर में लाल पाजामा, जो एँड़ी तक पहुँच रहा है, तथा जूता, कान में बाला, गले में मोती का दोलड़ा हार, हाथ में कङ्कन, बाएँ कंधे पर कमान, पीछे लटकती हुई तरकस, जाँघ पर ढाल और दोनों हाथों में बन्दूक धारणकर राजा घोड़े पर सवार हैं। घोड़े का रंग नीला सब्जा है। उसके पैर तथा पूँछ मेंहदी से रँगे हैं। चित्र में बाएँ ओर पहाड़ी है। चित्र में तीन वृक्ष हैं। पर्वत की तली में एक काला मृग है। बीच में पेड़ पर एक बन्दर है। गिरि-शिखर पर एक चिड़िया उड़ रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र (२)

१८९--मेधा मुनि का आश्रम

(पत्र ९ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ४″

मेधा मुनि अपने आश्रम में बैठे हैं। पृष्ठिका लाल रंग से बनी है। ऊपर-नीचे हरी पट्टी है। पृष्ठिका उनके निवास की द्योतक है। उसके बीच में एक द्वार तथा एक गवाक्ष प्रदर्शित है। मुनि एक चन्द्रातप के नीचे चौकी पर दोजानूँ बैठे हैं। चन्द्रातप का हौद लाजवर्दी रंग का तथा झालर पीले रंग की है। चौकी का ऊपरी अंश नीले रंग का है। सफेद फूलकारी है। पावे हाथीपाँव हैं। शिर पर जटा का उठा हुआ जूड़ा गुलाबी कुलाह से ढँका है। कटि में पीताम्बर है। दाहिने हाथ में एक पत्र है, जिसपर "श्री भगवती सत्य" लिखा हुआ है। मुनि के कान, गले तथा भुजा में श्वेत आभूषण हैं। मुनि के पीछे एक श्याम वर्ण शिष्य मोरछल लिये खड़ा है। उसकी वेषभूषा प्रायः मुनि की-सी ही है। अन्तर केवल इतना ही है कि उसकी कटि में गुलाबी परिधान है। मुनि के सामने एक सिंह तथा कृष्णसार बैठे हैं, जो तपस्थली का पुण्य-प्रभाव दिखला रहे हैं।

दुर्गापाठ चित्र (३)

१९०--समाधि वैश्य

(पत्र १० के दाहिने ओर) ; माप—४¼″ × ३″

यह चित्र समाधि नामा वैश्य का है, जिसको उसके स्वजनवर्ग ने त्याग दिया था। समाधि वैश्य गावतकिये के सहारे दोजानूँ होकर फर्श पर बैठा है। इसके शिर पर पाग, देह पर एक पतला जामा, जिसके ऊपर से लाल पाजामा दिखाई दे रहा है, कमर में कमरबन्द, जिसमें से एक तलवार लटक रही है, तथा दाहिने ओर ढाल हैं। कान में बाला और गले में मोती की मालायें हैं। दाहिने हाथ में शराब का प्याला है।

दुर्गापाठ चित्र (४)

१९१--राजा सुरथ और समाधि वैश्य की भेंट

(पत्र ११ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३½″

एक ओसारे के भीतर फर्श पर दाहिने ओर राजा और सामने वैश्य, बातचीत में संलग्न हैं। राजा गुलाबी जामा और नीले आभूषण पहने हुए हैं। इनके दाहिने हाथ में एक माला और बाएँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथ में एक गाँसी है। पास ही में एक ढाल पड़ी है। वैश्य एक लाल पाग, पीला दुपट्टा, लाल अधोवस्त्र और नीले आभूषण पहने हुए हैं। उसके दाहिने हाथ में एक छोटा प्याला और दूसरे में माला है ।

दुर्गापाठ चित्र (५)

१९२--राजा और वैश्य की मुनि से भेंट

(पत्र १२/१ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ ५/८″

मेधा मुनि मैदान में एक गावतकिये के सहारे दरी पर बैठे हुए हैं। इनके दाहिने हाथ में सुराही और बाएँ हाथ में प्याला है। जटाजूट में एक माला बँधी है। कानों में बाला और गले में मोती की मालायें हैं। अधोवस्त्र लाल रंग का है। उनके सामने राजा सुरथ हैं। उनके सिर पर पाग, शरीर पर बूटीदार जामा, कमर में कमरबन्द, पैरों में धारीदार पाजामा और पैर में लाल रंग के जूते हैं। उनके बाएँ हाथ में छड़ी है। उनके पीछे समाधि वैश्य खड़ा है। उसके शिर पर फूलदार पाग, कानों में बाला, गले में मोती की मालाएँ और एक नीले रंग का दुपट्टा है । अधोवस्त्र लाल रंग का है। पृष्ठिका में बाएँ ओर दो मिहराबदार दरवाजे हैं।

दुर्गापाठ चित्र (६)

१९३--विष्णु-शयन

(पत्र १३/१ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ १/४″

शेषनाग पर, जिनके फण यहाँ तीन ही दिखाये गये हैं और जो समुद्र पर फैले हुए हैं, विष्णु भगवान् शयन कर रहे हैं। इनके बाएँ हाथ में शंख तथा दूसरे हाथ में गदा है और दोनों दाहिने हाथ खाली हैं। ऊपर एक छत्र वर्तमान है। शिर पर मुकुट तथा कटि में पीताम्बर है। मोती के सुन्दर आभूषण शरीर पर सर्वत्र देख पड़ते हैं। चित्र के ऊपरी भाग में बादलों से घिरा हुआ आकाश चित्रित है। वर्षा की बूँदें सफेद रेखाओं द्वारा प्रदर्शित की गई हैं। पृष्ठिका रक्त वर्ण है।

दुर्गापाठ चित्र (७)

१९४--मधु-कैटभ का ब्रह्मा पर आक्रमण

(पत्र १४/१ के दाहिने ओर) ; माप—३ ५/८″ × ३ ५/८″

यह चित्र वृत्ताकार है और बाहर चारों कोनों पर सीढ़ी के आकार के अलङ्करण बने हुए हैं। नील वर्ण समुद्र में फुल्ल कमल पर चतुर्भुज ब्रह्मा पीताम्बर, मुकुट और गहने पहने हुए बैठे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनके दोनों ओर दो राक्षस मधु और कैटभ जाँघिया और टोपी पहने हुए पेशकब्ज और तलवार से ब्रह्मा पर आक्रमण कर रहे हैं।

दुर्गापाठ चित्र (८)

१९५—ब्रह्मा का योगमाया का ध्यान

(पत्र $\frac{१४}{२}$ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ४″

इस चित्र में बाएँ ओर शेषनाग पर विष्णु शयन कर रहे हैं। उनकी आँखें खुली हुई हैं। दाहिने ओर ब्रह्मा हाथ जोड़कर विष्णु की प्रार्थना कर रहे हैं। विष्णु के शीश पर योगमाया अवस्थित हैं। उन्होंने त्रिशूल द्वारा विष्णु की निद्रा हरणकर उन्हें जागृत कर दिया है।

दुर्गापाठ चित्र (९)

१९६—विष्णु का मधु-कैटभ से युद्ध

(पत्र $\frac{१५}{१}$ के बाएँ ओर) ; माप—४″ × ३$\frac{१}{२}$″

इस चित्र में समुद्र में, गदा लेकर लाल धोती, दुपट्टा और आभूषण धारण किये हुए विष्णु मधु-कैटभ से युद्ध कर रहे हैं। एक दैत्य का हाथ विष्णु के गले में है और विष्णु भी उसे अपने हाथ से खींच रहे हैं। बाएँ ओर दूसरा दैत्य उनके हाथों को खींच रहा है।

पीले रंग की पृष्ठिका पर बूटे बने हैं।

दुर्गापाठ चित्र (१०)

१९७—मधु-कैटभ-वध

(पत्र $\frac{१६}{१}$ के दाहिने ओर) ; माप—४$\frac{१}{४}$″ × ३$\frac{१}{८}$″

समुद्र में, जहाँ कमल खिले हुए हैं, विष्णु एक फुल्ल कमल पर बैठे हैं। उनकी दोनों जंघाओं पर मधु और कैटभ बैठे हुए हैं, जिनके बाल वे अपने दोनों हाथों से पकड़े हुए हैं। पृष्ठिका में दीवाल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र (११)

१९८—देवासुर-युद्ध

(पत्र १७/१ के दाहिने ओर) ; माप—४३/८″ × ४१/४″

इस चित्र में देवासुर-संग्राम दिखलाया गया है। बीच में जामा, पाजामा और मुकुट पहने हुए इन्द्र एक असुर से लड़ रहे हैं। बाएँ ओर एक घोड़ा खड़ा है। दाहिने ओर इन्द्र का अंग-रक्षक झण्डी लिये हुए खड़ा है। पृथ्वी पर टूटे हुए शस्त्र और मनुष्य का कटा हुआ शव, पड़े हैं।

दुर्गापाठ चित्र (१२)

१९९—विष्णु-प्रार्थना

(पत्र १७/२ के बाएँ ओर) ; माप—४१/४″ × ४″

बाएँ ओर चबूतरे पर तकिया लगाये हुए विष्णु भगवान् बैठे हैं। सामने त्रिशूल लिये हुए शिव, वज्र और ढाल लिये हुए इन्द्र और ब्रह्मा बैठे हुए हैं। फर्श पर पानदान व चौघड़ा है।

दुर्गापाठ चित्र (१३)

२००—देवी-प्रादुर्भाव

(पत्र १८/१ के दाहिने ओर) ; माप—५″ × ४१/४″

इस चित्र में दुर्गापाठ-सम्बन्धी दो दृश्य दिखाये गये हैं—(१) बाएँ ओर देवताओं के तेज से प्राकट्य और (२) दाहिने ओर देवताओं द्वारा देवी को अस्त्र-समर्पण। पहले दृश्य में एक पावेदार अँगीठी में, जिसमें आग जल रही है, वस्त्राभूषण धारण किये एक चतुर्भुजी मूर्ति बैठी है। दूसरे दृश्य में बीस भुजाओंवाली देवी हाथों में खप्पर, पानपात्र, धनुष, नागपाश, शक्ति, त्रिशूल और ढाल लिये हुए तथा गहने-कपड़े पहने हुए सिंह पर बैठी है। सामने एक देवता उसे कुछ दे रहे हैं।

दुर्गापाठ चित्र (१४)

२०१—देवी और असुरों का युद्ध

(पत्र १९/१ के दाहिने ओर) ; माप—६″ × ४″

चित्र के दाहिने ओर, अपने चारों हाथों में त्रिशूल, पाश, खड्ग और अक्षमाला लिये हुए सिंह पर आसीन देवी आसुरों से युद्ध कर रही है। बाएँ ओर जिरह-बख़्तर और कुलह पहने हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो सिपाही हाथी पर से युद्ध कर रहे हैं। एक बन्दूकची भी पीछे खड़ा है और भालाबरदार दूसरी तरफ से लड़ रहा है। पृथ्वी पर दो लाशें गिरी हुई हैं। आकाश में एक चिड़िया नर-मुण्ड लिये हुए उड़ी जा रही है।

दुर्गापाठ चित्र (१५)

२०२—चिक्षुर-वध

(पत्र २०/१ के दाहिने ओर) ; माप—५ ३/८″ × ३ ७/८″

बाएँ ओर सिंह पर बैठी हुई देवी वाण-वर्षण कर रही है। दाहिने ओर रथ पर बैठा चिक्षुर युद्ध कर रहा है। वाण से आहत होकर सारथी गिर रहा है और चिक्षुर का शरीर भी भिद गया है। जमीन पर वाण और कटे हुए अस्त्र पड़े हैं।

दुर्गापाठ चित्र (१६)

२०३—महिष-वध

(पत्र २१/१ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ ७/८″

चित्र के दाहिने ओर सिंह पर बैठी हुई देवी ने महिषासुर की गर्दन काट डाली है तथा महिषासुर की कटी हुई गर्दन से निकला हुआ पुरुष देवी से युद्ध कर रहा है।

चित्र का ऊपरी अंश कुछ फट गया है।

दुर्गापाठ चित्र (१७)

२०४—देवी का चामर से युद्ध

(पत्र २३/१ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ ७/८″

इस चित्र में बाएँ ओर हाथी पर, जिसके पैर में सिकड़ बँधा हुआ है, बैठा हुआ चामरासुर सामने सिंहवाहिनी देवी से युद्ध कर रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र १८)

२०५—चामर-वध

(पत्र २३/१ के दाहिने ओर) ; माप—५ १/२″ × ४″

इस चित्र में देवी का सिंह हाथी पर चढ़कर उसे फाड़ रहा है और देवी अपने त्रिशूल से चामर को मार रही है।

दुर्गापाठ (चित्र १९)

२०६—देवी द्वारा उदग्र, कराल, बाष्कल, अंधक, उग्रास्य, उग्रवीर्य, विडाल, दुर्धर, दुर्मुख, काल, उग्रदर्शन और असिलोमा का वध

(पत्र ३४/१ के दाहिने ओर) ; माप—५ १/४″ × ४″

इस चित्र के ऊपरी भाग में उदग्र नाम का दैत्य शिलाखण्ड में दबा पड़ा है। दाहिने ओर शिलाखण्ड पर बैठी देवी उद्धत दैत्य को मार रही है। बाएँ ओर अस्त्र-शस्त्र से बेधे हुए अन्य बहुत से शत्रु पड़े हुए हैं। सामने नदी बह रही है, जिसमें मछलियाँ तैर रही हैं।

दुर्गापाठ (चित्र २०)

२०७—बहुरूपधारी महिषासुर का देवी से युद्ध

(पत्र ३५/१ के दाहिने ओर) ; माप—६ १/४″ × ३ ७/८″

इस चित्र में क्रमशः सिंह, महिष और गज का रूप धारण किये हुए महिषासुर सिंह पर बैठी देवी से युद्ध कर रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र २१)

२०८—महिषासुर-वध

(पत्र ३६/१ के दाहिने ओर) ; माप—३ ५/८″ × ४″

इस चित्र में देवी ने महिषासुर का शीश काट दिया है, जो पृथ्वी पर पड़ा है। आकाश से पुष्प-वृष्टि हो रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र २२)

२०९—देवी-स्तुति

(पत्र ३९/१ दाहिने ओर); माप—४¼″ × ४″

एक उपवन में, जहाँ बहुत से वृक्ष हैं, त्रिशूल, असि और अक्षमाला धारण किये हुए देवी सिंह पर बैठी हुई हैं। सामने पुष्पाञ्जलि लिये हुए इन्द्र उनकी प्रार्थना कर रहे हैं।

दुर्गापाठ (चित्र २३)

२१०—शुम्भ-निशुम्भ और देवताओं का युद्ध

(पत्र ३१/२ के दाहिने ओर) ; माप—५½″ × ३⅞″

चित्र में बाएँ ओर जाँघिया, कुलह और गहने पहने हुए शुम्भ-निशुम्भ गदा से इन्द्र के साथ युद्ध कर रहे हैं। इन्द्र हरा पाजामा, सफेद जामा, तिकोना मुकुट, ढाल, तलवार, अंकुश और पेशकब्ज से सुसज्जित हैं। उनके पीछे एक देवता एक हाथ में एक फूल और दूसरे में तलवार लिये हुए खड़ा है।

दुर्गापाठ (चित्र २४)

२११—प्रार्थना

(पत्र ३०/१ के दाहिने ओर) ; माप—३¾″ × ३⅞″

इस चित्र में दाहिने ओर एक शिलाखण्ड पर, जिसके आसपास और बगल में केले और आम के पेड़ हैं, वस्त्राभूषणभूषिता देवी हाथ में गदा और खड्ग लिये हुए बैठी हैं। सामने हाथ जोड़े हुए इन्द्र उनकी प्रार्थना कर रहे हैं।

दुर्गापाठ (चित्र २५)

२१२—पार्वती द्वारा शिव की प्रार्थना

(पत्र ३१/२ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ४″

एक पर्वतखण्ड पर, जिसके बीच से होकर एक नदी बह रही है और जिसपर आम्र इत्यादि के वृक्ष लगे हुए हैं, बाएँ ओर एक शिव-मन्दिर है। दाहिने ओर नदी के किनारे चतुर्भुजी पार्वती वस्त्राभूषण धारण किये हुए पद्मासन पर बैठी हुई शिव की पूजा कर रही हैं। उनके पीछे उनका वाहन सिंह भी बैठा हुआ है।

शत्रुओं से हारकर देवतागण पार्वती की, जो शिव की पूजा कर रही थीं, स्तुति करने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र २६)

२१३—शिवादेवी की उत्पत्ति

(पत्र ३२/२ के दाहिने ओर) ; माप—२¾″ × ३⅞″

एक घर के ऊपरी भाग में बाएँ ओर दोजानूँ होकर पार्वती बैठी हैं। उनके तेज से उत्पन्न शिवा देवी वस्त्र, आभूषण और मुकुट पहने हुए नीचे तकिये के सहारे बैठी हैं।

दुर्गापाठ (चित्र २७)

२१४—रूप-वर्णन

(पत्र ३३/१ के दाहिने ओर) ; माप—३½″ × ४″

इस चित्र में दाहिने ओर एक शैल-खण्ड पर देवी बैठी हैं। सामने एक दैत्य उनके रूप-लावण्य को देखकर निशुम्भ को उसकी सूचना देने जा रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र २८)

२१५—दूत-गमन

(पत्र ३४/१ के बाएँ ओर) ; माप—३¼″ × ३⅞″

इस चित्र के दाहिने ओर गद्दी पर बैठी हुई देवी फूल सूँघ रही हैं। उनके सामने निशुम्भ द्वारा प्रेषित सुग्रीव असुर देवी से कुछ कह रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र २९)

२१६—संवाद-कथन

(पत्र ३४/२ के दाहिने ओर) ; माप—३⅞″ × ३¾″

इस चित्र के दाहिने ओर शुम्भ और निशुम्भ गहने, कपड़े और कुलह पहने हुए मसनद के सहारे शराब पीते हुए बैठे हैं। दाहिने ओर हाथ जोड़कर सुग्रीव दूत उनसे देवी का सन्देश कह रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र ३०)

२१७—धूम्रलोचन

(पत्र ३५/२ के दाहिने ओर) ; माप—३¾″ × ४″

इस चित्र में, धनुष-टङ्कार करता हुआ अपने असुर साथियों के सहित धूम्रलोचन देवी को पकड़ने जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र ३१)

२१८—धूम्रलोचन-वध

(पत्र ३६/१ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ ७/८″

इस चित्र के दाहिने ओर सिंहवाहिनी देवी लड़ते हुए धूम्रलोचन के शरीर में शक्ति भोंक रही हैं। उनके तेज से धूम्रलोचन जल रहा है और उसके शिर से लपटें निकल रही हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ३२)

२१९—देवी-असुर-युद्ध

(पत्र ३७/१ के दाहिने ओर) ; माप ४ १/२″ × ३ ३/४″

इस चित्र में दाहिने ओर सिंहवाहिनी देवी हैं, जो अपनी शक्ति से एक असुर के शरीर को छिन्न-भिन्न कर रहीं हैं। ऊपर आकाश में एक गृद्ध उड़ रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र ३३)

२२०—चण्ड-मुण्ड के साथ देवी का युद्ध

(पत्र ३८/१ के दादिने ओर) ; माप—४ १/२″ × ४″

इस चित्र के दाहिने ओर सिंह पर बैठी हुई देवी एक हाथ से एक असुर के बाल पकड़कर तलवार से उसका सिर काट रही हैं और दूसरे हाथ से भिन्दिपाल द्वारा एक असुर का सिर तोड़ रही हैं। जमीन पर टूटे हुए शस्त्रास्त्र और टोपी पड़े हैं।

दुर्गापाठ(चित्र ३४)

२२१—काली का चण्ड-मुण्ड से युद्ध

(पत्र ३९/२ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७ ७/८″ × ४ १/२″

इस चित्र में युद्ध प्रदर्शित किया गया है। बाएँ ओर, दो घोड़े जुते हुए एक रथ में बन्दूक और शस्त्रास्त्र से सुसज्जित तीन योद्धा बैठे हैं। दो पैदल और एक घुड़सवार भी युद्ध कर रहे हैं। बाएँ ओर अम्बिका बाण और शस्त्रों से शत्रुओं को मार रही हैं। जमीन पर कटी हुई लाशें हैं और एक कुत्ता दौड़ रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र ३५)

२२२—शुम्भ की तैयारी

(पत्र ४०/२ के दाहिने ओर) ; माप—६ १/४″ × ४″

इस चित्र के दो खण्ड हैं। बाएँवाले खण्ड में ढाल और तलवार लिये हुए असुर-सेना के दो सिपाही युद्ध के लिये जा रहे हैं। दाहिनेवाले खण्ड में ब्रह्माणी देवी वस्त्राभूषण धारण किये हुए एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में अमृत-पात्र और तीसरे में वीणा लिये हुए एक कुक्कुट (हंस ?) पर बैठी हैं। उनके पीछे एक भक्त खड़ा है।

दुर्गापाठ (चित्र ३६)

२२३—शुम्भ-युद्ध

(पत्र ४१/२ का पूरा पृष्ठ) ; माप—५ ७/८″ × ३ ७/८″

इस चित्र के दो भाग हैं। बाएँ भाग में एक सेनापति गहने और कपड़ों एवं ढाल, तलवार और भाले से सुसज्जित, घोड़े पर सवार है। उसके आगे-आगे दो सेवक हैं। एक के एक हाथ में भौंरी है, दूसरे हाथ पर एक शिकारी बाज बैठा है। दूसरा झण्डा लिये हुए है।

दूसरे भाग में माहेश्वरी देवी बैल पर सवार खड़ी हैं। इनके तीन हाथों में नागपाश, शंख और खेटक हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ३७)

२२४—काली और चण्डिका

(पत्र ४२/२ के दाहिने ओर) ; माप—४″ × ३ ३/४″

इस चित्र में दाहिने ओर चण्डिका देवी अपने हाथों में पान-पात्र और गदा लिये हुए एक मसनद के सहारे बैठी हैं। पास ही में उनका वाहन सिंह बैठा है। बाएँ ओर काली देवी गदा, खड्ग और एक मुण्ड लिये हुए खड़ी हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ३८)

२२५—शिव का दूतत्व

(पत्र ४३/१ के बाएँ ओर) ; माप—४ ३/४″ × ४″

इस चित्र के बाएँ ओर मण्डप के नीचे कपड़े-गहने पहने हुए शुम्भ और निशुम्भ बैठे हैं। दाहिने ओर स्त्री-वेशधारी शिव उनसे देवी का सन्देश कह रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र ३९)

२२६—कात्यायिनी-महाअसुर-युद्ध

(पत्र ४४/२ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७ ३/४" × ३ ३/८"

शिव की बातों से क्रुद्ध होकर राक्षस युद्ध करने लगे। चित्र के बाएँ ओर सिंहवाहिनी देवी हाथ में त्रिशूल, धनुष, बाण और पाश लिये हुए तीर-धनुष से सज्जित एक घुड़सवार राक्षस से युद्ध कर रही हैं। उस राक्षस का अंग-रक्षक, जो घोड़े के बगल से चल रहा है, एक हाथ में चँवरी लिये और बगल में तलवार लटकाये है। दाहिने ओर एक ऊँटनीसवार डङ्के पर चोट दे रहा है। पृथ्वी पर एक कटा हुआ असुर पड़ा है।

दुर्गापाठ (चित्र ४०)

२२७—रक्तबीज-वध

(पत्र ४५/२ के दाहिने ओर) ; माप—४ १/२" × ३ ७/८"

रक्तबीज की रक्त-बूँदों से जब बहुत से असुर उत्पन्न होने लगे, तब चण्डिका ने चामुण्डा को आज्ञा दी कि तुम मेरे शस्त्राघात से उत्पन्न हुई रक्त की बूँदों को अपनी जिह्वा से पान कर जाओ।

इस चित्र में बाएँ ओर रक्तबीज की शीश-विहीन लाश पड़ी है, जिसके भीतर से एक दूसरा राक्षस निकलकर चामुण्डा से युद्ध कर रहा है। इनके एक हाथ में दैत्य का मस्तक, दूसरे में तलवार, तीसरे में खप्पर जिससे रक्त-पान कर रही हैं और चौथे में खेटक हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ४१)

२२८—शुम्भ-निशुम्भ का देवी से युद्ध

(पत्र ४६/२ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७ ७/८" × ३ ७/८"

इस चित्र के दो भाग हैं। बाएँ ओर के चित्र में एक पटनहियाँ एक्केनुमा छतरीदार रथ में, जिसमें दो घोड़े जुते हुए हैं, दो असुर—एक भीतर और एक बाहर—शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर बैठे हैं। दाहिने ओर के चित्र में गहने-कपड़े और मोर-चन्द्रिका धारण किये हुए पालथी मारकर ऐन्द्री देवी ऐरावत पर बैठी हैं। इनके ऊपरी दो हाथों में पुष्प तथा अन्य दो हाथों में से एक में अक्षमाला एवं दूसरे में गड़ुवा हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ (चित्र ४२)

२२९—युद्ध

(पत्र $\frac{४७}{२}$ के दाहिने ओर) ; माप—५$\frac{३}{८}$″ × ३$\frac{३}{४}$″

इस चित्र के दो भाग हैं। बाएँ भाग में दो असुर युद्ध कर रहे हैं। एक असुर बन्दूक का निशाना साधे हुए है। उसकी कटि में पलीते की एक थैली और दूसरी ओर बारूद की सिंही लटक रही है। दूसरा दैत्य ढाल-तलवार से लड़ रहा है। दाहिने ओर ढाल, तलवार और मुण्ड लिये हुए कौमारी देवी मयूर पर बैठी हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ४३)

२३०—निशुम्भ-वध

(पत्र $\frac{४८}{२}$ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७$\frac{३}{४}$″ × ३$\frac{७}{८}$″

इस चित्र में बाएँ ओर रथ में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित शुम्भासुर पालथी मारकर बैठा है। दाहिने ओर सिंहवाहिनी देवी ने अपनी शक्ति निशुम्भासुर की छाती में भोंक दी है।

दुर्गापाठ(चित्र ४४)

२३१—पलायन

(पत्र $\frac{४९}{२}$ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७$\frac{३}{४}$″ × ३$\frac{३}{८}$″

इस चित्र के दो भाग हैं। बाएँ ओर दो सिपाही, जो पगड़ी पहने और काँछ बाँधे हैं, अपनी-अपनी बन्दूकें नीची किये भागे जा रहे हैं। दूसरे खण्ड में वस्त्राभरणभूषिता वैष्णवी देवी गरुड़ पर उड़ती जा रही हैं। गरुड़ का रूप मनुष्य-सा है। वे पाजामा, जामा और पगड़ी पहने हुए हैं। पंख उनकी विशेषता है।

दुर्गापाठ (चित्र ४५)

२३२—शुम्भ का युद्ध-गमन

(पत्र $\frac{५०}{२}$ का पूरा पृष्ठ) ; माप—८″ × ४″

इस चित्र के दो भाग हैं। बाएँ ओर जिरह-बख़्तर और टोपी पहने हुए, एक हाथ में ढाल और दूसरे में पुष्प लिये हुए, शुम्भासुर हाथी पर खुले हौदे में बैठा है। हाथी के आगे-आगे एक सेवक हाथ पर बाज बैठाये हुए दौड़ा जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दाहिने ओर एक महिष पर नील वर्ण चतुर्भुजी वाराही देवी बठी हैं। उनके ऊपरी दाहिने हाथ में शंख, नीचे के दाहिने हाथ में खप्पर, नीचे के बाएँ हाथ में त्रिशूल और ऊपर के बाएँ हाथ में गदा है। उनके खाँगों पर पृथ्वी स्थित है।

दुर्गापाठ (चित्र ४६)

२३३—शुम्भ-देवी-युद्ध

(पत्र ५१ के दाहने ओर) ; माप—५ ३/४″ × ३ ७/८″

इस चित्र में भूमि पर खड़ा हुआ शुम्भासुर देवी से, जो उसपर बाण-वर्षण कर रही हैं, ढाल और शक्ति से युद्ध कर रहा है। उसका टूटा हुआ धनुष भूमि पर पड़ा है।

दुर्गापाठ (चित्र ४७)

२३४—शुम्भ और देवी का आकाश-युद्ध

(पत्र ५२ के दाहिने ओर) ; माप—४ ३/४″ × ४″

भूमि के युद्ध में हारकर शुम्भासुर आकाश में चला गया। देवी भी वहाँ आकाश में पहुँच गईं। इस चित्र में बाएँ ओर पंखदार शुम्भासुर इमारतों के ऊपर आकाश में स्थित है। देवी उसके कन्धे पर सवार हैं। दाहिने ओर दो देवता देवी की प्रार्थना कर रहे हैं। आकाश में सूर्य चमक रहा है।

दुर्गापाठ (चित्र ४८)

२३५—शुम्भासुर-वध

(पत्र ५३ के दाहिने ओर) ; माप—३ ३/४″ × ४″

इस चित्र में बाएँ ओर एक पर्वतखण्ड पर शुम्भासुर गिरा हुआ है। उसकी ढाल और तलवार अगल-बगल में पड़ी हैं। दाहिने ओर शूल द्वारा देवी उसका वध कर रही हैं।

दुर्गापाठ (चित्र ४९)

२३६—देवताओं द्वारा चण्डिका की वन्दना

(पत्र ५४ का पूरा पृष्ठ) ; माप—७ ३/४″ × ३ ७/८″

बाएँ ओर मण्डप के नीचे गद्दी के सहारे चण्डिका देवी बैठी हैं। उनके सामने, अपने दो हाथों में एक नारियल लिये हुए विष्णु, त्रिशूल लिये हुए शिव, पोथी लिये चतुर्मुख ब्रह्मा तथा अंकुशधारी चतुर्भुज इन्द्र, देवी की प्रार्थना कर रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्गापाठ चित्र (५०)

२३७––सुरथ और समाधि को देवी का वरदान

(पत्र २५ के दाहिने ओर) माप—३½″ × ४″

इस चित्र में बाएँ ओर एक वृक्ष के नीचे, गहने-कपड़े पहने सुरथ और समाधि घुटने टेककर पुष्प-माला और रोली-अक्षत से सामने खड़ी देवी की पूजा कर रहे हैं। देवी के तीन हाथों में प्याला, बोतल और गदा है और चौथे से वे राजा के मस्तक पर तिलक कर रही हैं। वृक्ष पर मयूर बैठा है।

रामचरितमानस चित्रावली (१)

२३८—श्री गणेशजी

(पृष्ठ १ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७″ × ६½″ ; माप बाहरी—१६¾″ × ११¾″

चित्र के बीच सिंहासन पर पद्मासन के ऊपर पीताम्बर, उपरना और मुकुट धारण किये हुए गणेशजी एक हाथ में परशु, दूसरे में गजदन्त, तीसरे में कमल एवं चौथे में मोदक लिये बैठे हैं। दोनों ओर एक-एक सखी चमर और मोरछल हिला रही हैं। फर्श पर गणेश-वाहन चूहा बैठा है। इस चित्र पर "वर्णानाम" से लेकर "वंदेवो" तक श्लोक (रामचरितमानस के) अंकित हैं।

चित्र के ऊपर ७¾″ × २″ में तुरञ्ज है तथा तीनों ओर २″-२″ इञ्च के भीतर छोटे-छोटे तुरञ्ज हैं। चित्र के चारों ओर हाशिए पर सोने की दोहरे लपेट की बेल है।

रामचरितमानस का यह अधूरा बालकाण्ड किताबी आकार में है। इसमें बालकाण्ड के आरम्भ से १४४ पन्ने तक हैं। इन पन्नों का क्रम कहीं न टूटा था ; किन्तु १९३५ ई० में, कला-भवन में, जो चित्रों की चोरी हुई, उसमें इसके भी दो पन्ने अर्थात् ३९ (३९ क, ख) तथा ४० (४० क, ख) चोरी चले गये। प्रथम पत्र का माप १६¾″ × ११¾″ है। शेष पत्रों का सामान्य आकार १६¾″ × १२¾″ है। १६, १६ (सोलह-सोलह) पेजों का जुज़ है। पत्र-संख्या पहले पत्र पर आरम्भ ही में दी गई है। आगे पोथियों की रीति पर पत्रों के विषम पृष्ठों पर सम संख्या दी गई है; अर्थात् दूसरे पत्र के दूसरे पृष्ठ पर, जो वर्तमान किताबों की पृष्ठ-संख्या के अनुसार चौथा पृष्ठ हुआ, "२" संख्या पड़ी है। दूसरे शब्दों में, जिस पृष्ठ पर जो संख्या आती है, वह वर्तमान गणना के अनुसार अपने से दूने पृष्ठ की बोधक है। सुविधार्थ इस सूची में पत्रों का निर्देश "क", "ख" द्वारा किया गया है ; अर्थात् "१ क" = पृष्ठ १, "१ ख" = पृष्ठ २, "२ क" = पृष्ठ ३, "२ ख" = पृष्ठ ४, इत्यादि।

प्रत्येक पृष्ठ पर हाशिया है। अधिकतर हाशियों पर फूलकारी वा बेलकारी है। हाशिए के बाद सामान्यतः ११″ × ७″ में रामायण-लिपि तथा चित्र हैं। इस माप में जहाँ हेरफेर है, वहाँ निर्देश कर दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (२)

२३९—सरस्वतीजी

(पृष्ठ १ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७१/४" × ५३/८"

इस चित्र में एक चबूतरे पर कमलासन पर वीणा लिये सरस्वती बैठी हैं। उनके दाहिने ओर विष्णु और महेश तथा बाएँ ओर ब्रह्मा और इन्द्र हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना कर रहे हैं। नीचे सरस्वती का वाहन हंस खड़ा है। बूटीदार हल्के पीले रंग की फर्श है। ऊपर की ओर "ध मयं नित्यं" से लेकर "मंजुल मातनोति" तक तुलसीकृत रामायण के श्लोक अङ्कित हैं।

पाठ-सहित चित्र के बाहर चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (३)

२४०—शेषशायी विष्णु

(पृष्ठ २ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७१/४" × ७१/८"

इस चित्र में शेष के ऊपर कमलासन पर एक तकिए पर शिर रखे हुए विष्णु शयन कर रहे हैं। लक्ष्मी उनका पैर दबा रही हैं। विष्णु की नाभि से निकले हुए कमल पर ब्रह्मा बैठे हैं। क्षीर-सागर में मछलियाँ तैर रही हैं। ऊपर बालकाण्ड के पहिले सोरठे 'जा सुमिरत सिधि होइ' से तीसरे सोरठे 'सदा क्षीरसागर सयन' तक अङ्कित है।

पाठ-सहित चित्र के बाहर चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (४)

२४१—कैलास-स्थित शिव

(पृष्ठ २ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—भीतरी—८५/८" × ७१/८"

इस चित्र में बीचोबीच एक पर्वत बनाया गया है, जिसमें हिम की धवलता दिखलाने के लिये रूपा से खण्ड बाँटे गये हैं। बीच में व्याघ्रचर्म पर पञ्चमुखी शिव अपने दो हाथों में कुठार और मृग लिये हुए बैठे हैं। उनके बाएँ ओर हाथ जोड़े हुए पार्वती बैठी हैं। शिव के दाएँ ओर ब्रह्मा और विष्णु तथा बाएँ ओर नारद हैं। शिव के ऊपर इन्द्रादि देवगण हाथ जोड़कर खड़े हैं। नीचे शिव के गण, शिव-वाहन नन्दी, गणेश और कार्त्तिकेय हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र के ऊपर बालकाण्ड का चौथा सोरठा तथा नीचे पाँचवाँ सोरठा अंकित हैं। पाठ-सहित चित्र के बाहर चारों ओर हाशिए पर दोहरे लपेट की बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (५)

२४२—गोसाईं तुलसीदासजी

(पृष्ठ ३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{१}{८}$″ × ५$\frac{३}{८}$″

इस चित्र में नदी के किनारे घाट पर अपनी कुटिया के सामने एक वृक्ष के पास गोस्वामी तुलसीदासजी बैठे हुए चौकी पर रखकर रामायण लिख रहे हैं। बाएँ ओर उनके दो शिष्य लँगोटियाँ लगाये बैठे हैं। नदी में दो घोड़दौड़ नावों को दो-दो मल्लाह खे रहे हैं। पानी में मछलियाँ तैर रही हैं।

चित्र के ऊपर चौपाई "बंदउ गुरुपद" से लेकर दोहा "भूरि निधान" तक रामायण का पाठ अङ्कित है।

हाशिया पृष्ठ २ ख की तरह का है। पृष्ठ ३ ख से लेकर पृष्ठ ७ क तक रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (६)

२४३—निषाद को वाल्मीकि का शाप

(पृष्ठ ७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९$\frac{५}{८}$″ × ७$\frac{१}{८}$″ ;

इस चित्र में एक नदी के दाहिने किनारे पर, जहाँ बहुत से वृक्ष लगे हुए हैं, वाल्मीकि मुनि नहाकर, एक शिष्य के हाथ से अँगोछा लेकर, अपना वदन पोंछने जा रहे हैं। बाएँ ओर एक बहेलिये ने क्रौञ्च को बाण से बेध दिया है। पृष्ठिका में बहुत से वृक्ष लगे हुए हैं तथा दाहिने ओर एक सफेद मकान बना है। आकाश में वीणा लिये हुए नारद उड़े जा रहे हैं।

पृष्ठ ७ क में "रघुपति गुन गाथा" से लेकर "मोपर रहहु दयाल" तक दोहे और चौपाई अङ्कित हैं। पृष्ठ ७ ख के सिरे पर "बंदौ मुनि पद कंज दोष रहित दूषण सहित" सोरठा अङ्कित है।

चम्पे के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (७)

२४४—चारों वेद

(पृष्ठ ८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९$\frac{३}{४}$″ × ७$\frac{१}{८}$″

इस चित्र में ऊपर की ओर वाम पार्श्व में रक्त वर्ण, सोने के गहने, पगड़ी और दुपट्टा धारण किये हुए मनुष्य-रूप में ऋग्वेद खड़ा है। दाहिने ओर श्वेत वर्ण, रुपहले कपड़े और गहने पहने हुए शुक्ल यजुर्वेद खड़ा है। नीचे बाएँ ओर कृष्ण वर्ण अथर्ववेद नीले रंग के वस्त्र धारण किये हुए और हाथों में तीर-धनुष लिये हुए खड़ा है। दाहिने ओर श्याम वर्ण सामवेद हाथ में वीणा लिये खड़ा है। इसके वस्त्र आसमानी हैं।

चित्र के ऊपर "वंदहु चारउ वेद" से लेकर "विमल जस" तक सोरठा अङ्कित है। चम्पे के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (८)

२४५—चारों वेद और ब्रह्मा

(पृष्ठ ८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{३}{४}$″ × ७$\frac{१}{१६}$″

इस चित्र के ऊपरी भाग में, ठीक बीच में, पद्मासन पर चतुर्मुख ब्रह्मा हाथों में अक्षमाला, वेद, स्रुवा और कमण्डलु लिये बैठे हैं। उनके दाहिने ओर एक स्त्री रुपहले कपड़े और गहने पहने हाथ जोड़कर खड़ी है। उनके बाएँ ओर एक अन्य स्त्री सुनहले गहने व कपड़े पहने खड़ी है। चित्र के निम्नभाग में दाहिने ओर चार बालक, जो चारों वेद हैं, नंगे शरीर बैठे हैं। बाएँ ओर वीणा लिये नारद बैठे हैं। चित्र के ऊपर "वंदहु" इत्यादि से लेकर "बारुणिय" तक सोरठा अङ्कित है। नीचे "विबुध विप्र" से लेकर "मनोरथ मारि" तक दोहा अङ्कित है।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ९ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (९)

२४६—पंचमुखी हनुमान्

(पृष्ठ ९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{३}{८}$″ × ६$\frac{३}{८}$″

इस चित्र में स्वर्ण-वर्ण हनुमान्, जिनके दश भुजाएँ हैं, लाल वस्त्र धारण किये हुए बैठे हैं। उनके चरणों के निकट एक पहलवान सोया हुआ है। हनुमान् के पाँचों मुखों में एक मुख अश्व का,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक व्याघ्र का, एक कपि का, एक गरुड़ का तथा एक वाराह का है। सब से ऊपर के दाहिने हाथ की मुट्ठी बँधी हुई है। उससे नीचे के हाथ में अङ्कुश ; उससे नीचे के हाथ में एक मनुष्य, उससे नीचे के हाथ में तलवार और सब से नीचे का हाथ अभया मुद्रा में है। सब से नीचे का बायाँ हाथ भी अभया-मुद्रा में है। उससे ऊपर के हाथ में त्रिशूल, उससे ऊपर के हाथ में नागपाश, उससे ऊपर के हाथ में पर्वत-खण्ड है तथा सब से ऊपर के हाथ की मुट्ठी बँधी हुई है।

चित्र के ऊपर "प्रगटेउ सोई" तथा "प्रनवौ प्रथम" से लेकर "बसे राम सर चाप धर" सोरठा तक अङ्कित है।

सोसन के फूल का हाशिया है। पृष्ठ १० क से पृष्ठ १६ क तक रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०)

२४७—तीर्थराज प्रयाग में मकर-स्नान

(पृष्ठ १६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२¾″ × ८¼″

इस चित्र में त्रिवेणी के संगम पर लोग स्नान कर रहे हैं। कुछ स्त्रियाँ जल भरकर जा रही हैं। कुछ घाटिये स्नानार्थियों को चन्दन इत्यादि लगा रहे हैं। कहीं क्षौर-कर्म हो रहा है, कहीं भंग छन रही है, इत्यादि अनेक दृश्य अङ्कित हैं। चित्र के मध्य में, एक घाट के सामने एक पुरुष हाथ जोड़कर पण्डे के सामने बैठा है। पण्डा हाथ उठाकर 'स्वस्ति' कह रहा है। इस मनुष्य के पीछे उसके बहुत से अनुचर खड़े हैं, जिससे ज्ञात होता है कि वह कोई बड़ा आदमी है।

चित्र के ऊपरी भाग में अक्षयवट बना हुआ है, जिसकी कुछ लोग पूजा कर रहे हैं। बहुत से लोग बैठे हैं। चित्र के बाएँ ओर ऊपर की तरफ विष्णु (वेणीमाधव) का मंदिर है, जिसमें स्त्रियाँ तथा पुरुष पूजा कर रहे हैं। उससे नीचे हाट लगी हुई है, जहाँ लोग लेन-देन कर रहे हैं। उसके नीचे एक मुनि-आश्रम है, जहाँ मुनि शिष्यवृन्द-सहित बैठे हैं और लोग दर्शन कर रहे हैं।

पृष्ठ १६ क पर 'पान किऐते" तथा "मिटे पाप परिताप हिये ते" से लेकर "सब मुनीस आश्रम निसि धाए" तक दोहा तथा चौपाइयाँ अंकित हैं।

बरधमुतान बेल का हाशिया है। पृष्ठ १७ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११)

२४८—भारद्वाज-संवाद

(पृष्ठ १७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९⅞″ × ७⅜″ ;

इस चित्र के बीच में आमने-सामने दो ऋषि बैठे आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। नीचे कुछ दूर हटकर दो शिष्य बैठे हैं। दाहिने ओर एक गाय का बछड़ा अपनी माँ का दूध पी रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ १७ क पर "जाज्ञवल्क मुनि परम विवेकी" से लेकर "संत चकोर करहिं जिमि पाना" तक दोहे और चौपाइयाँ अंकित हैं।

पृष्ठ १७ ख के ऊपर "अैसेउ संशय कीन्ह भवानी" से लेकर "मिटहिं विवाद" नामक दोहा तक अंकित है।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२)

२४९—अगस्त ऋषि के आश्रम में शम्भु तथा भवानी

(पृष्ठ १८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—$८\frac{३}{४}'' \times ७\frac{३}{८}''$

इस चित्र में बाएँ ओर अगस्त मुनि का आश्रम है। फाटक के बाहर अगस्त मुनि बैठे हैं। उनकी पत्नी आश्रम के भीतर हैं। आश्रम के पास दो बालक खेल रहे हैं। दाहिने ओर एक चौकी पर महादेव बैठे हैं, उनके वाम पार्श्व में जमीन पर पार्वती हैं। ऋषि धूप, दीप और फलों से उनकी पूजा कर रहे हैं। शिव प्रसन्न होकर नैवेद्य-वस्तुओं में से एक अनन्नास निकाल रहे हैं।

चित्र के ऊपर "एक बार त्रेता युग माहीं" से लेकर "कछु दिन इहाँ रहे गिरिनाथा" तक चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

लाल फूलकारी का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३)

२५०—सती-मोह

(पृष्ठ १८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—$९\frac{३}{४}'' \times ७\frac{१}{२}''$

इस चित्र के ऊपरी भाग में दाहिने ओर शिव-पार्वती चले जा रहे हैं। नीचे बाएँ ओर राम और लक्ष्मण वन में विचर रहे हैं।

जिस समय पार्वती के संग महादेव अगस्त मुनि के आश्रम से लौट रहे थे, उसी समय रामचन्द्र मारीच का वध करके लक्ष्मण सहित लौटे। राम को देखकर शिव की आँखों में जल भर आया। सती को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सर्वशक्तिमान् महादेव उन्हें क्यों प्रणाम करते हैं ? महादेव ने सती के मन की बात जानकर कहा—"राम अवतार हैं।" फिर भी पार्वती को विश्वास न हुआ।

—रामायण बालकाण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस चित्र के ऊपर "मुनि सन विदा मांगि त्रिपुरारी" से लेकर "दंडक वन विचरत अविनासी" तक चौपाई अङ्कित है।

गोमूत्रिका बेल का हाशिया है। पृष्ठ १९ क तथा १९ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४)

२५१—सती-मोह

(दूसरा दृश्य ; पृष्ठ २० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११½" × ७½"

इस चित्र के ऊपरी भाग में दाहिने ओर शिव बाघंबर पर बैठे हैं। सामने हाथ जोड़े पार्वती खड़ी हैं। चित्र के नीचे बाएँ ओर सीता का रूप धारण किये हुए पार्वती राम-लक्ष्मण के सामने खड़ी हैं। राम हाथ जोड़े हुए हैं।

शिव की बात पर पार्वती को विश्वास न हुआ, तब शिव ने उनसे कहा कि तुम्हीं जाकर उनकी परीक्षा ले लो। सती उनके सामने सीता के रूप में गईं। राम ने उन्हें पहिचानकर हाथ जोड़ा। सती लज्जित हो गईं।

पृष्ठ २० ख पर 'लछिमन देष सतीक्रम भेषा'' से लेकर ''नयन मुंदि बैठी मग माहीं'' तक दोहे और चौपाई अङ्कित हैं।

बादरूम का हाशिया है। पृष्ठ २० ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५)

२५२—सती-मोह (राम-माया-प्रदर्शन)

(पृष्ठ २१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२¾" × ८¼"

इस चित्र में सती का चारों ओर राम की पूजा देखने का चित्रण है। चित्र के ऊपरी ओर दाहिने कोने पर शिव बैठे हैं। बाएँ ओर सीता-सहित राम सिंहासन पर बैठे हैं। लक्ष्मण चमर डुला रहे हैं। ब्रह्मा, शिव-पार्वती, यम, वरुण, वायु इत्यादि देवता उनकी वंदना कर रहे हैं। चित्र के बीचो-बीच राम-सीता सिंहासन पर बैठे हैं और अपनी शक्तियों सहित देवगण उनकी प्रार्थना कर रहे हैं। बाएँ ओर पार्वती हाथ जोड़े बैठी हुई यह हाल देख रही हैं। चित्र के निम्नभाग में दाहिने ओर यही चित्र अङ्कित है। बाएँ ओर राम-लक्ष्मण वनवासियों के वेश में खड़े हैं। पार्वती उन्हीं की महिमा देख रही हैं।

गोमूत्रिका बेल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१६)

२५३--सती-मोह-भङ्ग

(पृष्ठ २१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ५″

इस चित्र में शङ्कर दाहिने ओर बैठे हैं। बाएँ ओर पार्वती हाथ जोड़कर खड़ी हैं। पार्वती ने आकर शिव से राम की महिमा कही। अपने तपोबल से यह जानकर कि पार्वती ने सीता का रूप धारण किया था, शिव ने संकल्प किया कि इस जन्म में पुनः वह सती से सम्पर्क नहीं रख सकते।

ऊपर "बहुरि बिलोके नयन उघारी" से लेकर "शिव संकल्प कीन मन माही" तक दोहे तथा चौपाई अङ्कित हैं।

बादरूम का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१७)

२५४--कैलास-प्रयाण

(पृ० २२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅜″ × ६¼″

इस चित्र में बाएँ ओर पृष्ठिका में कैलास बना हुआ है। दाहिने ओर बातचीत करते हुए शिव-पार्वती चले जा रहे हैं।

मार्ग में शिव की भक्ति की सराहना करते हुए आकाशवाणी हुई। संकोच के साथ पार्वती उनके प्रण के सम्बन्ध में पूँछने लगीं और जान गईं कि मुझे कपट का क्या दण्ड मिलनेवाला है।

चित्र के ऊपर "असि बिचारि शंकर मतिधीरा" से लेकर "कपट पटाई के परत" तक दोहे-चौपाई इत्यादि अङ्कित हैं।

पीले फूलकारी का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१८)

२५५--शिव-तपस्या

(पृष्ठ २२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅜″ × ६½″

इस चित्र में कैलास पर वट-वृक्ष के नीचे ध्यान-मग्न शिव तपस्या कर रहे हैं। सामने नंदी बैठा है। बाएँ ओर गुफा के अन्दर बैठी पार्वती सोच कर रही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र के ऊपर "हृदय सोचु समुझत निजु करनी" से लेकर "जुग सम दिव सिराहिं" तक दोहे तथा चौपाई अंकित हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१९)

२५६--सती-शिव-संवाद

(पृष्ठ २३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½" × ४½"

इस चित्र में कैलास पर बरगद के नीचे मृगचर्म पर शिव बैठे हुए हैं। उनके सामने चित्र में बाएँ ओर हाथ जोड़कर पार्वती बैठी हुई हैं। पार्वती के पीछे भैरव खड़े हैं और उनके पीछे एक कृष्ण वर्ण गण खड़ा है। शिव के पीछे चित्र में दाहिने ओर नन्दी बैठा है। आकाश-मार्ग से देवगण दक्ष-यज्ञ को जा रहे हैं।

सहस्रों वर्षों के पश्चात् शिव की समाधि टूटी। पार्वती ने जाकर प्रणाम किया। शिव ने उनसे कहा कि दक्ष प्रजापति ने एक यज्ञ किया है जिसमें सिवा मेरे सभी देवताओं को बुलाया है। सती ने देखा कि आकाश-मार्ग से सब देवतागण जा रहे हैं।

चित्र के ऊपर "नित नव सोच सती उर भारा" से लेकर "सनमुख शंकर आसन दीन्हाँ" तक दोहे-चौपाई अङ्कित हैं। पृष्ठ २३ ख पर "लगे कहन हर कथा रसाला" से लेकर "दिये मुख्य गन संग तब विदा कीन्ह त्रपुरारि" तक दोहे-चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है। पृष्ठ २३ ख पर रामायण का पाठ है। चित्र में आकाश-मार्ग से दक्ष-यज्ञ में जाते हुए देवगण दिखलाये गये हैं।

रामचरितमानस चित्रावली (२०)

२५७--सती-प्रयाण

(पृष्ठ २४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११¾" × ७½"

इस चित्र में तीन दृश्य हैं। सब से ऊपर शिव कैलास पर बैठे हैं। सामने नन्दी बैठा है। इसके नीचे दूसरा दृश्य है जिसमें गणों के साथ पार्वती दक्ष-यज्ञ को जा रही हैं। दो गण आगे और दो गण पीछे जा रहे हैं। इसके नीचे तीसरा दृश्य है। इसमें महल के सामने दक्ष बैठे हुए ब्राह्मणों और देवताओं के साथ यज्ञ कर रहे हैं। उनके सामने चित्र में बाएँ ओर स्त्रियाँ बैठी हैं।

सती ने शिव से अपने पिता के यहाँ जाने की आज्ञा माँगी। शिव ने बहुतेरा समझाया ; किन्तु उन्होंने एक न मानी। तब शिव ने अपने प्रमुख गणों के साथ उन्हें विदा किया।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

१५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (२१)

२५८—दक्ष-यज्ञ

(पृष्ठ २४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९½″ × ७½″

इस चित्र के ऊपरी भाग में दाहिने ओर दक्ष प्रजापति बैठे हैं। उनके सामने इन्द्र, वायु, वरुण इत्यादि देवता बैठे हैं। सामने बैठे हुए ब्राह्मण यज्ञ करा रहे हैं।

चित्र के निचले भाग में अपनी सखियों के सहित सती की माता अपनी पुत्री से गले मिल रही हैं।

पिता के घर में पार्वती की माता और बहिन को छोड़कर अन्य किसी ने भी उनका सत्कार नहीं किया।

चित्र के ऊपर "पिता भवन जब गई भवानी" से लेकर "भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता" तक चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (२२)

२५९—सती-अपमान

(पृष्ठ २५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¾″ × ७¾″

इस चित्र में दो भाग हैं। ऊपरी भाग में अपने पति के अपमान से क्रोधित सती का प्रबोध उनकी माता अपनी सखियों सहित कर रही हैं।

सती ने देखा कि यज्ञ में शिव को भाग नहीं मिलेगा। वह क्रोधित हो उठीं और उनकी माँ उनका प्रबोधन करने लगीं।

चित्र के ऊपर "दक्ष न कछु पूछी कुसलाता" से लेकर "सकल सबहि हठि हटकि तब बोली बचन सक्रोध" तक दोहा व चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (२३)

२६०—योगाग्नि

(पृष्ठ २५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ७¾″

इस चित्र में दाहिने ओर सती योगाग्नि से जल रही हैं। घबड़ाकर ब्राह्मण-समूह खड़ा हो गया है। दक्ष अपने शिर पर हाथ रखकर शोक कर रहे हैं। सती की माता अङ्गुली मुख में रखकर आश्चर्य्य प्रकट कर रही हैं। अन्य बहुत-सी स्त्रियाँ खड़ी होकर यह कृत्य देख रही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पति के अपमान से क्रोधित हो सती ने, अपने पति का गुण-गान करते हुए योगाग्नि से जलकर, अपने प्राण छोड़ दिये।

चित्र के ऊपर "सुनहु सभासद सकल मुनिंदा" से लेकर "भयउ सकल मष हाहाकारा" तक चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (२४)

२६१—यज्ञ-विध्वंस

(पृष्ठ २६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{१}{४}$″ × ७$\frac{३}{८}$″

इस चित्र में शिव के गण अनेक अस्त्रों से ब्राह्मण, मुनि और राजाओं को मार रहे हैं। किसी का गला घोंटा जा रहा है और किसी का गला काटा जा रहा है। स्त्रियाँ भय के मारे भागी जा रही हैं।

सती के मरने पर शम्भु के गणों ने आकर यज्ञ-विध्वंस कर डाला।

चित्र के ऊपर "सती मरन सुनि शंभु गन लगे करन मष षीस" से लेकर "ताते मैं संक्षेप वषाना" तक दोहे-चौपाई अङ्कित हैं।

सोसनके फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (२५)

२६२—पार्वती-जन्म

(पृष्ठ २६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{३}{८}$″ × ७$\frac{३}{८}$″

इस चित्र में हिमालय-पर्वत पर एक महल के अन्दर पार्वती की माता उन्हें दूध पिला रही हैं। मकान के दाहिने ओर राजा चौकी पर बैठे हैं। पीछे दो सेवक खड़े हैं। मकान के बाएँ ओर दो सेविकाएँ खड़ी हैं। पर्वत पर यत्र-तत्र अनेक मुनिगण तपस्या कर रहे हैं। पर्वत-खण्डों पर हिरन चौकड़ियाँ भर रहे हैं। कुछ हिरन बैठे हैं। पर्वत में सामने नीले, लाल तथा पीले रंग की टिकरियाँ बनाकर पहाड़ के गर्भ में रत्न-राशि का बोध कराया गया है।

शिव के पदों में लीन सती की यही अन्तिम इच्छा थी कि वह अगले जन्म में पुनः शिव की सङ्गिनी बनें, इसलिये इनका जन्म हिमाचल पर हुआ। सर्वत्र आनन्द होने लगा।

चित्र के ऊपर "सती मरत हर सन वर माँगा" से लेकर "प्रगटी सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति" तक दोहे-चौपाई अङ्कित हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका है, जिसमें बीच-बीच में तुरुज (फलक) बने हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (२६)

२६३—नारद द्वारा पार्वतीजी का भाग्य-विचार

(पृष्ठ २७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ३/८″ × ६ १/८″

इस चित्र के दाहिने ओर एक रुपहली चौकी पर हाथ में वीणा लिये हुए नारद बैठे हुए हैं। उनके सामने बाएँ ओर पार्वती के पिता अपनी पुत्री का हाथ नारद को दिखला रहे हैं। उनके पीछे वस्त्राभूषण पहिने हुए तीन सखियाँ खड़ी हैं।

पार्वती के जन्म का समाचार सुनकर नारद हिमाचल पर पधारे। वहाँ उनका बहुत सत्कार हुआ। राजा ने उनसे अपनी पुत्री के भाग्य के गुण और दोष हाथ देखकर बतलाने के लिये कहा। चित्र के सिरे पर "सरिता सब पुनीत जल बहई" से लेकर "कहउ सुता के दोष गुन मुनिवर हृदय विचार" तक दोहे और चौपाइयाँ अङ्कित हैं।

हाशिए पर आड़ी चौफुलिया बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (२७)

२६४—उपाय-जिज्ञासा

(पृष्ठ २७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—३ ३/८″ × ३ ७/८″

चित्र में दाहिने ओर नारद बैठे हैं और सामने खड़े पार्वती के माता-पिता उनसे उनके भाग्य की बातें पूँछ रहे हैं। बाएँ ओर पार्वती एक सखी की गोद में बैठी हैं और तीन सखियाँ पीछे खड़ी हैं।

नारद ने हाथ देखकर कहा—"तुम्हारी पुत्री सब गुणों से पूर्ण है और सब की पूज्य है। इसके स्मरणमात्र से सब कुछ सुलभ है; किन्तु इनका पति योगी अमङ्गल वेशवाला उदासीन शिव होगा। यह सुनकर पार्वती को तो आनन्द हुआ; पर उनके माता-पिता को अत्यन्त दुःख हुआ। चित्र के सिरे पर "कह मुनि बिहँसि" इत्यादि से लेकर "सषी उछंग बैठि पुनि जा" तक दोहा और चौपाई लिखे हैं।

पीले फूल का हाशिया है। पृष्ठ २८ क पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (२८)

२६५--परामर्श

(पृष्ठ २८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{1}{4}$" × ७$\frac{3}{8}$"

इस चित्र में, पर्वत के अंतराल में एक महल बना हुआ है। पर्वत के आगे दाहिने ओर पार्वती की माता मैना अपने पति से हाथ बढ़ाकर परामर्श कर रही हैं। मैना के पीछे खड़ी पार्वती इन दोनों की बातें ध्यान से सुन रही हैं। दो सखियाँ भी शान्तिपूर्वक आपस की बातें सुन रही हैं। एक सखी दूसरी सखी का हाथ दबा रही है, मानों उसको नारद की बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ है।

बादरूम का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (२९)

२६६--उपदेश

(पृष्ठ २९ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—५$\frac{1}{2}$" × ८"

दाहिने ओर रुपहले सिंहासन पर एक तकिए के सहारे पार्वती की माँ पार्वती को गोद में लेकर बैठी हैं। पीछे एक सखी खड़ी है। बाएँ ओर चौकी पर जामा, गहने व तिकोना मुकुट पहने हुए पार्वती के पिता दोजानूँ बैठे हुए हैं। पृष्ठिका में पर्वत के अन्तराल में आम के वृक्ष उगे हैं।

बादरूम का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (३०)

२६७--पार्वती का स्वप्न-वर्णन तथा तप के लिये प्रस्थान

(पृष्ठ २९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{3}{8}$" × ५$\frac{1}{2}$"

चित्र में दाहिने ओर राजा सिंहासन पर दोजानूँ बैठे हैं। उनके सामने मृगचर्म ओढ़े हुए एक तपस्वी खड़े हुए पार्वती को उपदेश दे रहे हैं। पाँच सखियाँ उत्सुकतापूर्वक हाथ बढ़ाकर बेदशिरा ऋषि की वाणी ध्यान से सुन रही हैं। चित्र के निचले भाग में पार्वती ऋषि के वचन सुनकर तप के लिये चली जा रही हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (३१)

२६८—ब्रह्मा की आकाशवाणी

(पृष्ठ ३० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{3}{8}$" × ६$\frac{1}{4}$"

वन के मध्य में, जहाँ चारों ओर आम के वृक्ष उगे हुए हैं, पालथी मारकर पार्वती तपस्या कर रही हैं। निराहार रहने के कारण उनका शरीर सूख गया है। आकाश में चतुर्मुखी ब्रह्मा लाल धोती, गहने और मुकुट पहने हुए अपने हाथों में अक्षमाला, वेद, कमण्डलु और श्रुवा लिये हुए स्थित हैं।

पृष्ठ ३० ख पर रामायण का पाठ है। पीले फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (३२)

२६९—राम-शंकर-संवाद

(पृष्ठ ३१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११$\frac{1}{4}$" × ७$\frac{1}{2}$

इस चित्र में पर्वत की घाटी में बाएँ ओर श्रीरामचन्द्र उपरना, पीताम्बर और मुकुट धारण किये हुए धनुष-बाण से सुसज्जित हैं। उनके सामने व्याघ्राम्बर पहिने हुए एवं सर्प और मुण्डमालधारी शिव हाथ जोड़े खड़े हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है, जिसमें बीच-बीच में तुरञ्ज (फलक) बने हैं।

रामचरितमानस चित्रावली (३३)

२७०—शिव के पास सप्तर्षि-आगमन

(पृष्ठ ३१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{1}{2}$" × ७$\frac{1}{2}$"

इस चित्र में दाहिने ओर व्याघ्राम्बर पर पालथी मारे हुए शिव बैठे हैं। पास में त्रिशूल गड़ा हुआ है और भङ्ग का पात्र पड़ा हुआ है। वे चित्र के बाएँ ओर खड़े हुए जटाजूटधारी उपरना और खड़ाऊँ पहिने हुए सप्तर्षियों की प्रार्थना ध्यान से सुन रहे हैं। पृष्ठिका में पर्वत और मैदान के दृश्य अङ्कित हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (३४)

२७१——पार्वती के पास सप्तर्षि-आगमन

(पृष्ठ ३२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ७½″

चित्र में दाहिने ओर कङ्कालमात्र पार्वती, जिनके वस्त्राभूषण ढीले पड़ गये हैं, बैठी हुई अपने सामने खड़े हुए और विभिन्न मुद्राओं में अपने हाथ उठाये हुए सप्तर्षियों से बातचीत कर रही हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ३२ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (३५)

२७२——पार्वतीजी का प्रत्यावर्तन

(पृष्ठ ३३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¾″ × ६½″

यह चित्र एक पर्वत से घिरी हुई उपत्यका का है। पृष्ठिका में बाएँ ओर एक महल बना हुआ है, जिसकी खिड़कियों पर परदे चढ़े हुए हैं। उसके सामने जमीन पर एक चौकी बिछी हुई है, जिस-पर गहने-कपड़ों से सुसज्जित पार्वती की माँ एक तकिये के सहारे दोजानूँ बैठी हुई हैं। पीछे दो सखियाँ खड़ी हैं, जिनमें से एक के हाथ में अँगोछा है। चित्र के दाहिने ओर पार्वती के पिता जामा, दुपट्टा, मुकुट और गहने पहिने अपनी कान्या का हाथ पकड़े हुए अपनी स्त्री की ओर ले जा रहे हैं।

चित्र की रेखाओं और रंगामेज़ी से प्रकट होता है कि इस चित्र का चित्रकार पहिले चित्रों के चित्रकार की अपेक्षा कहीं अधिक कारीगर था।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (३६)

२७३——देव-सभा

(पृष्ठ ३३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—३¾″ × ७½″

इस चित्र में देवताओं की सभा जुड़ी हुई है। ब्रह्मा बीच में बैठे हैं ; उनके चारों ओर अग्नि, वायु, इन्द्र और यम इत्यादि देवतागण हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे हैं। पृथ्वी पर नाना प्रकार के पुष्प खिले हुए हैं, जिनपर रंग-विरंग के पक्षी कलरव कर रहे हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (३७)

२७४––कामदेव-प्रेषण

(पृष्ठ ३४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७३/४″ × ७१/४″

चित्र में ऊपर की ओर वायु, यम, वरुण, इन्द्र, अग्नि इत्यादि देव खड़े हैं। नीचे की ओर बहुत से देवगण जामा, मुकुट, दुपट्टे और गहनों से सुसज्जित खड़े हैं। उनकी प्रार्थना से कामदेव प्रकट होकर बीचोबीच खड़ा है। वह पीताम्बर, मुकुट, दुपट्टा और गहने पहिने है। वनमाला पैरों तक लटक रही है। एक हाथ में तीर और दूसरे में मकरध्वज तथा धनुष हैं। देवगण प्रसन्न होकर हाथ उठाकर उसकी अभ्यर्थना कर रहे हैं। आकाश में लालिमा छाई है।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ३४ ख और पृष्ठ ३५ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (३८)

२७५––पुष्प-शर-सन्धान

(पृष्ठ ३५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१११/४″ × ७१/४″

इस चित्र में, दाहिने ओर ध्यानावस्थित शिव आँख मूँदे हुए व्याघ्रचर्म पर बैठे हैं। सामने मैदान में नाना पशु-पक्षी कलरव कर रहे हैं। कहीं मयूर नाच रहे हैं; हिरन चौकड़ियाँ भर रहे हैं; सिंह अपनी मस्तानी गति से घूम रहा है और सारस तथा चक्रवाक किलोल कर रहे हैं। चित्र के बाएँ ओर एक पुष्पकरिणी है, जिसमें कमल खिले हुए हैं। पृष्ठिका में पर्वत पर एक बरगद का वृक्ष है, जिस-पर बैठा हुआ कामदेव शिव की ओर अपने पुष्प-बाण को छोड़ना ही चाहता है। आकाश में लाली छाई हुई है।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (३९)

२७६––रति-विलाप

(पृष्ठ ३६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी––७१/४″ × ५१/४″

चित्र में दाहिने ओर मुण्डमालधारी शिव बाघंबर पर बैठे हैं। पास में उनके क्रोध से मरा हुआ कामदेव भूमि पर पड़ा हुआ है। उनके पास लहँगा, ओढ़नी और गहने पहिने हुई रति हाथ जोड़-कर विलाप कर रही है। पृष्ठिका में कैलास पर्वत है, जिसके अन्तराल में एक सुन्दर बरगद का वृक्ष है।

सोसन के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (४०)

२७७--शिव के पास देववृन्द का आगमन

(पृष्ठ ३६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ३/८″ × ५ ५/८″

चित्र में, दाहिने ओर शिव बाघंबर पर बैठे हुए हैं। उनके आसपास विष्णु, यम, इन्द्र, वरुण, ब्रह्मा, सप्तर्षि तथा अन्य देवगण बैठे उनकी प्रार्थना कर रहे हैं। शिव के चेहरे पर कुछ मुसकराहट भी है। पृष्ठिका में कैलास है। आकाश में लालिमा छाई है।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (४१)

२७८--हिमवान के पास सप्तर्षि-आगमन (पार्वती से संवाद)

(पृष्ठ ३७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ३/८″ × ४ १/८″

हिमालय के एक खण्ड का प्रदर्शन है। बाएँ ओर एक महल है, जिसके सामने कुछ स्त्रियाँ बैठी हुई पार्वती और सप्तर्षि का संवाद सुन रही हैं। चित्र के दाहिने ओर वस्त्राभूषण से सुसज्जित पार्वती खड़ी हुई नाना मुद्राओं से बातचीत करते हुए सप्तर्षियों की बातचीत सुन रही हैं। चित्र के ऊपर की ओर पर्वत के मध्य एक मैदान में चौकी पर हिमवन्त बैठे हुए हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (४२)

२७९--हिमवान के पास सप्तर्षि-आगमन (हिमवान से संवाद)

(पृष्ठ ३७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ १/२″ × ७ ३/८″

कैलास के सामने का मैदान चित्रित है, जिसमें नाना पशु-पक्षी कल-रव कर रहे हैं। दाहिने ओर दालान के आगे स्त्रियाँ बैठी हैं। ऊपर की ओर वाम पार्श्व में सप्तर्षि खड़े हैं। हिमवन्त उनमें सबसे आगेवाले ऋषि को लग्न-पत्रिका दे रहे हैं। उनके पीछे चौकी पर ब्राह्मण देवता लग्न-पत्रिका लेकर बैठे हैं। यही लग्न-पत्रिका राजा सप्तर्षियों को दे रहे हैं। आकाश में लालिमा छाई है।

सोसन के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (४३)

२८०—कैलास में बारात की तैयारी

(पृष्ठ ३८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७३/८″ × ७″

इस चित्र में दो दृश्य हैं। दाहिने ओर ऊपरी पार्श्व में सप्तर्षि ब्रह्मा को लग्न-पत्रिका लाकर दे रहे हैं। चित्र के निचले भाग में विष्णु, इन्द्र, वायु, यम, कुवेर, वरुण तथा अन्य बहुत से देवता बारात की तैयारी में बैठे हैं। बाएँ ओर ऊपर पृष्ठिका में चित्रित कैलास पर शिव एक चौकी पर बैठे हैं। एक गण उन्हें भाँग का प्याला दे रहा है और दूसरा अँगौछा लिये हुए उनके पीछे खड़ा है। शिव-वाहन नन्दी सजा हुआ चौकी के पास बैठा है।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ३८ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (४४)

२८१—शिव-बारात

(पृष्ठ ३९ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३५/८″ × ९″

हाशिए पर गोमूत्रिका है। पृष्ठ ३९ ख पर रामायण का पाठ है।
यह पन्ना सन् १९३५ ई० में, कला-भवन में जो चोरी हुई, उसमें चोरी चला गया।

रामचरितमानस चित्रावली (४५)

२८२—अगवानी

(पृष्ठ ४० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३५/८″ × ९१/४″

हाशिए पर सहरेसा है।
यह पन्ना भी सन् १९३५ ई० में, कला-भवन में जो चोरी हुई, उसमें चोरी चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (४६)

२८३—परछन

(पृष्ठ ४० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ६¾″

यह चित्र पृष्ठ ४० क के पुश्त पर बना था। उक्त पन्ना सन् १९३५ ई० की कला-भवन में हुई चोरी में चोरी चला गया।

रामचरितमानस चित्रावली (४७)

२८४—मैना-विषाद

(पृष्ठ ४१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ६¼″

कैलास में एक महल के सामने सिंहासन पर रानी मैना पार्वती को गोद में लिये बैठी हैं। उनके पीछे चार सखियाँ खड़ी होकर, हाथ उठाकर, पार्वती की विदाई के लिये दुःख प्रकट कर रही हैं। बाएँ ओर ८ सखियाँ, जिनमें से एक के हाथ में पानदान है, खड़ी हैं। आकाश के कुछ अंश में ललाई छाई है।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (४८)

२८५—मैना-सांत्वना

(पृष्ठ ४१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¾″ × ४½″

हिमालय का वही दृश्य है। बाएँ ओर मैना और पार्वती अपनी सखियों के साथ खड़ी हैं। सामने हिमाचल वीणा लिये हुए नारद मुनि और सप्तर्षियों के साथ खड़े हैं और मैना से बातचीत कर रहे हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ४२ क पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (४९)

२८६—जेवनार

(पृष्ठ ४२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३½" × ९½"

जेवनार का दृश्य अङ्कित है। महल के अहाते के भीतर जेवनार हो रही है। सबसे ऊपरी सिरे पर दालान के भीतर ढोलक, तानपूरा, डफ, मजीरा और तालियाँ बजाती हुई कुछ स्त्रियाँ प्रदर्शित की गई हैं और कुछ स्त्रियाँ खड़ी होकर गालियाँ गा रही हैं। मैदान में तीन पंक्तियाँ लगी हुई हैं, जिनमें ब्रह्मा, विष्णु, यम, अग्नि, वायु, नारद तथा सप्तर्षि और महादेव के गण भोजन कर रहे हैं। चित्र के दाहिने ओर परोसनेवाले मिष्ठान्न और पानी परोस रहे हैं। भूमि पर छोटे-बड़े पात्रों में नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ रखे हुए हैं। चित्र के बाएँ ओर खा चुकने के बाद का दृश्य है। एक व्यक्ति ब्रह्मा का हाथ धुला रहा है। कुछ देव और ऋषिगण पीछे खड़े हैं। इसके बाद हाथ धोकर देवता लाग, जिनके आगे विष्णु हैं, हिमाचल के हाथ से पान के बीड़े ले रहे हैं। हिमाचल के पीछे एक सेवक थाली में पान के बीड़े, गुलाबदान और इत्रदान लिये हुए खड़ा है। चित्र के दाहिने कोने में बाराती खा-पीकर वापस जा रहे हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (५०)

२८७—शिव का पाणिग्रहण करना

(पृष्ठ ४३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२½" × ९"

मैदान में विवाह हो रहा है। एक चँदवे के नीचे हिमाचल चौकी पर बैठकर कन्या-दान कर रहे हैं। दाहिने ओर ब्रह्मा, विष्णु, वरुण, यम, वायु, अग्नि, नवग्रह और देवगण बैठे हैं तथा शिव के गण खड़े हैं। बाएँ ओर भी देव और ऋषिगण बैठे हैं। पृष्ठिका में नगर चित्रित है। आकाश में देवगण बाजे बजा रहे और पुष्पवर्षा कर रहे हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (५१)

२८८—दायज

(पृष्ठ ४४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—६ ३/८″ × ७ ३/८″

चित्र में बीचोबीच शिव खड़े हैं। मैना उनके चरण छू रही हैं। हिमाचल प्रणाम कर रहे हैं। चारों ओर दहेज के सामान दिखलाये गये हैं। पलँग, सन्दूक, थालियाँ, हाथी, ऊँट, गाय, सजे हुए घोड़े, रथ, दास-दासियाँ आदि दहेज के सामान हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

इस चित्र से आगे अन्य चित्रकार के बनाये चित्र आरम्भ होते हैं।

रामचरितमानस चित्रावली (५२)

२८९—सिखावन

(पृष्ठ ४४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ३/८″ × ७ ३/८″

चित्र में बीचोबीच मैना पार्वती से भेंट रही हैं। आसपास दोनों ओर नारिवृन्द खड़ा है।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (५३)

२९०—विदाई

(पृष्ठ ४५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ७/८″ × ७ ३/८″

बारात के वापस जाने का दृश्य अङ्कित है। ऊपर दाहिने ओर पार्वती की माँ उनको विदा करने लाई हैं। नन्दी पर हाथ रखे हुए शिव हाथ बढ़ाकर पार्वती को बुला रहे हैं। पीछे हाथ जोड़े हुए सेवकों के सहित हिमाचल खड़े हैं। नीचे की ओर हिरन की गाड़ी पर चन्द्रमा और सप्ताश्व द्वारा सञ्चालित रथ पर सूर्य्य वापस जा रहे हैं। बाएँ ओर ऐरावत पर इन्द्राणी सहित इन्द्र, गरुड़ पर वैष्णवी सहित विष्णु, हंस पर ब्रह्माणी सहित ब्रह्मा, ऋषभ पर यम तथा अन्य देवगण भी वापस लौट रहे हैं। आकाश में फूल बरसाते हुए देवगण बाजे बजा रहे हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (५४)

२९१——हर-गिरिजा-विहार

(पृष्ठ ४५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ७/८″ × ७ ३/८″

पाँच दृश्य हैं। सबके ऊपर बाएँ ओर एक कमरे में शिव-पार्वती साथ लेटे हुए हैं। उसके नीचे अर्द्धनारीश्वर का चित्र है। उससे नीचे पुष्करिणी में शिव-पार्वती एक साथ जल-क्रीड़ा कर रहे हैं। दाहिने ओर सबसे ऊपर शिव-पार्वती गले में हाथ डाले घूम रहे हैं। उसके नीचे बरगद के वृक्ष के नीचे बाघम्बर पर वाम पार्श्व में स्थित पार्वती के साथ शिव बैठे हैं। सामने नन्दी बैठा है।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (५५)

२९२—षण्मुख-जन्म

(पृष्ठ ४६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ३/८″ × ७ ३/८″

चित्र में हिमालय का दृश्य है। पर्वत फूल और हरियाली से लदा हुआ है। बाएँ ओर ऊपरी भाग में महल के आँगन में पार्वती चौकी पर बैठी हुई हैं। सामने षण्मुख बालक कार्त्तिकेय झुनझुना, फिरकी, लट्टू और घोड़े इत्यादि खिलौनों से खेल रहे हैं। दाएँ ओर निचले भाग में शिव बाघम्बर पर बैठे हुए हैं। त्रिशूल गड़ा हुआ है और नन्दी बैठा हुआ है। आकाश में लालिमा छाई हुई है।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ४६ ख तथा ४७ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (५६)

२९३—उमा-शिव-संवाद

(पृष्ठ ४७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१० ३/८″ × ७ ३/८″

कैलास पर्वत पर एक वट-वृक्ष के नीचे, जिसमें से जटाएँ लटक रही हैं, शिव और पार्वती बाघम्बर पर बैठे हैं। महादेव के बाएँ ओर हाथ जोड़े हुए पार्वती दोजानूँ बैठी हैं। दाहिने ओर नन्दी बैठा है। नीचे एक नदी बह रही है, जिसमें कमल खिले हुए हैं। आकाश में लालिमा छाई हुई है।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (५७)

२९४—नारद की मार-विजय

(पृष्ठ ५२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२१/८″ × ८५/१६″

इस चित्र में दो दृश्य हैं :—

(१) पर्वत का दृश्य अंकित है। दाहिने ओर पर्वत से निकलकर एक नदी गिर रही है। इसमें मछलियाँ, कछुए और घड़ियाल तैरते हुए दिखलाये गये हैं। पर्वत पर बहुत से मोर केलि कर रहे हैं। एक शेर भी बैठा है। पर्वत की चोटी पर नारद तपस्या कर रहे हैं। पास में उनकी वीणा पड़ी है। मुनि की अप्रसन्नता से डरकर कामदेव उनके पैरों पर गिरा हुआ है।

(२) चित्र के बाएँ कोने में मकरध्वज काम अप्सराओं के साथ नारद का तप-भंग करने जा रहा है। अप्सराओं में से एक डफ, दूसरी तानपूरा और तीसरी मृदङ्ग बजा रही है। कुछ मार-कन्याएँ गलबहियाँ देकर अठखेलियाँ कर रही हैं। पर्वत पर बहुत से वृक्ष हैं

यह चित्र बेड़े बल है। हाशिया पर सहरेसा है। पृष्ठ ५२ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (५८)

२९५—नारद-गर्व

(पृष्ठ ५२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११३/८″ × ७१५/१६″

यह चित्र चार भागों में विभाजित है, जो एक दूसरे से पतली सोनहली पट्टी से अलग किये गये हैं। सबसे बीचवाले खण्ड में कैलास पर्वत पर बरगद-वृक्ष के नीचे बाघम्बर पर शिव-पार्वती बैठे हैं। सामने वीणा लिये हुए नारद हाथ जोड़कर शिव को अपनी मार-विजय की कथा सुना रहे हैं। नारद की बगल में नन्दी बैठा है। बाएँ ओर शिव के गण हाथों में गदा, खड्ग और पताका लिये हुए खड़े हैं। सबसे नीचे के खण्ड में क्षीर-समुद्र में शेषनाग पर कमलासन पर तकिए के सहारे विष्णु बैठे हैं। सामने लक्ष्मी बैठी हैं। बाएँ ओर किनारे पर नारद हाथ जोड़कर बैठे हैं। सबसे ऊपर के दो खण्डों में से बाएँ में नारद अपनी बहादुरी इन्द्र से तथा दाहिने में ब्रह्मा से कह रहे हैं। देवगण आश्चर्य से उनकी बातें सुन रहे हैं।

हाशिए पर गुलाबी फूल हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (५९)

२९६—माया-नगर

(पृष्ठ ५४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३$\frac{1}{8}$″ × ९″

नगर की शहरपनाह के भीतर बाजार और उसके बाद राजमहल चित्रित हैं। शहरपनाह के फाटक पर दो प्रहरी जामा, पाजामा और पगड़ी आदि पहने तलवार से लैस पहरा दे रहे हैं। भीतर दोनों पट्टी में सराफ तथा मिटाईवाले आदि की दूकानें लगी हुई हैं, जिनमें लोग खरीद-फ़रोख्त कर रहे हैं। ऐसे विलक्षण नगर की शोभा नारदजी घूम-घूमकर देख रहे हैं। बाजार के अन्त में राजमहल का फाटक है, जिसपर एक अफसर मोढे पर बैठा है। उसके सामने दो सिपाही खड़े हैं। महल के अहाते में शाहनशीन के नीचे दाहिने ओर राजा दोजानूँ होकर चौकी पर बैठे हैं। उनके सामने एक दूसरी चौकी पर बैठे हुए नारद राज-कन्या का हाथ देख रहे हैं। राजा के पीछे एक सेवक चमर लेकर खड़ा है। कुछ मुसाहिब जमीन पर बैठे हैं। चित्र में बाएँ ओर कुछ दासियाँ इत्रदान, पानदान और पंखा लिये हुए खड़ी हैं।

हाशिए पर आड़ी चौफुलिया बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (६०)

२९७—हरि-रूप-याचना

(पृष्ठ ५४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{3}{8}$″ × ७$\frac{1}{16}$″

महल के सामने एक हरे-भरे मैदान में, जिससे सटकर एक नदी बह रही है, नारद उत्सुकता-पूर्वक हाथ जोड़े हुए विष्णु से रूप-याचना कर रहे हैं।

अबीरी तथा लाल बूटे-बूटियों का हाशिया है।

पृष्ठ ५५ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (६१)

२९८—स्वयंवर

(पृष्ठ ५५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१४$\frac{1}{8}$″ × ९$\frac{1}{8}$″

एक बड़े लाल कारचोबी शामियाने के नीचे जमीन पर देवता, ऋषि तथा राजा लोग तरह-तरह की वेषभूषा में वृत्ताकार बैठे हैं। बाएँ ओर माया-नगर के राजा एक जड़ाऊ चौकी पर मसनद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के सहारे बैठे हैं। उनके पीछे एक सेवक खड़ा चमर डुला रहा है। सामने की पंक्ति में कपिमुखधारी नारद बीणा लिये हुए बैठे हैं। मण्डप के बीच में बाएँ ओर राजकन्या हाथ में जयमाल लिये, पीछे मुँह किये हुए, एक स्त्री से बातचीत कर रही है। कुछ दूर पर दाहिने ओर वही राजकन्या विष्णु के गले में जयमाल डाल रही है। लोग इस दृश्य को भिन्न-भिन्न भावों से देख रहे हैं। मण्डप के बाहर दाहिने ओर ऊपर सजे हुए सात घोड़े खड़े हैं। उनके नीचे सजे हुए पाँच हाथी खड़े हैं। उनके नीचे एक लाल रथ सफेद घोड़ों की जोड़ी से युक्त और उसके बगलमें नीला रथ नीले घोड़ों की जोड़ी से युक्त, पहले रथ की बगल में, खड़ा है। रथ के पीछे कपड़ा तथा पगड़ी, दुपट्टा, जामा आदि पहने दो व्यक्ति खड़े हैं। आगे नीचे की ओर बीचोबीच घोड़ों की जोड़ी कसे हुए एक लाल रथ पर विष्णु उक्त राजकन्या को लेकर दाहिने ओर जा रहे हैं। सारथी रथ हाँक रहा है। घोड़े भागे जा रहे हैं। चित्र में बाएँ ओर नीचे ९ व्यक्ति पगड़ी, दुपट्टा, जामा, पाजामा आदि पहने हुए खड़े हैं। पृष्ठिका में दाहिने ओर कोने में वन तथा नगर और बाएँ ओर कोने में वृक्षों के झुरमुट चित्रित हैं।

चित्र आड़ा है ; हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (६२)

२९९--मोह-भङ्ग

(पृष्ठ ५६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¼″ × ६⅝″

इस चित्र में एक महल के आगे एक हरे-भरे मैदान में, खड़े हुए नारद अपना रूप एक तालाब में देख रहे हैं। जिसमें खिले हुए पुष्पों पर बुलबुल मँडरा रही है। दाहिने ओर शिव के दो गण ब्राह्मण-वेश में हाथ जोड़कर खड़े हैं। आकाश में लाली छाई हुई है।

सोसन के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (६३)

३००--विष्णु को शाप

(पृष्ठ ५६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅝″ × ४¾″

चित्र में एक मैदान में दाहिने ओर विष्णु लक्ष्मी के साथ खड़े हैं। सामने क्रुद्ध नारद उनकी ओर तर्जनी दिखला रहे हैं। पृष्ठिका में हरे-भरे पेड़ हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ५७ क तथा पृष्ठ ५७ ख पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (६४)

३०१—उत्तानपाद का राज्याभिषेक

(पृष्ठ ५८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¾″ × ५½″

चित्र में राज्याभिषेक का दृश्य अङ्कित है। महल के सामने चबूतरे पर शाहनशीन खिंची हुई है। उसके नीचे चौकी पर तकिये के सहारे सस्त्रीक उत्तानपाद बैठे हुए हैं। स्वायंभुव मनु इनको राज-तिलक दे रहे हैं। उनके पीछे एक स्त्री थाली में मङ्गल-कलश और आरती लिये हुए खड़ी है। चित्र के बीचोबीच एक वेश्या नृत्य कर रही है। बहुत से मुसाहिब और दरबारी नाच देख रहे हैं। दाहिने ओर एक दालान में स्वायंभुव की पुत्री देवहूति अपने पति कर्दम मुनि के साथ बैठी हैं। जमीन पर कुछ सर-दार निशान लिये हुए खड़े हैं। महल की छत पर से दो स्त्रियाँ देख रही हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (६५)

३०२—स्वायंभुव मनु और शतरूपा को विष्णु का वरदान

(पृष्ठ ५९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ६½″

इस चित्र के निचले भाग में एक घाट-युक्त तालाब बना हुआ है, जिसके दाहिने ओर एक देवी का मन्दिर है। बाएँ ओर कुछ घर हैं। तालाब से सटे हुए मैदान में, चित्र के बाएँ ओर, हाथ जोड़े हुए स्वायंभुव मनु और शतरूपा खड़े हैं। विष्णु भगवान् उनके सामने वरदा-मुद्रा से खड़े हैं। पृष्ठिका में पहाड़ी तथा जङ्गल चित्रित हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (६६)

३०३—भानुप्रताप का राज्याभिषेक

(पृष्ठ ६१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—७¾″ × ७½″

चित्र में दाहिने ओर दालान से सटे एक चबूतरे पर, जिस पर कालीन बिछा हुआ है, छज्जे के नीचे जामा, पाजामा, गहने और मुकुट पहने भानुप्रताप दोजानूँ होकर एक चौकी पर बैठे हैं। उनके पीछे सेवकगण हाथ में मोरछल, चौरी, अँगोछा, पंखी इत्यादि लिये हुए खड़े हैं। बाएँ ओर सर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दारों की एक कतार फर्श पर बैठी है। जामा, पाजामा और आभूषण पहने तथा ढाल-तलवार और धनुष आदि शस्त्र लिये हुए कुछ और सैनिक हाथ जोड़े मंत्री धर्मरुचि की अध्यक्षता में खड़े हैं। पृष्ठिका में महल और पर्वत के दृश्य हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ६१ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (६७)

३०४—शूकर-आखेट

(पृष्ठ ६२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{3}{4}$" × ७$\frac{3}{4}$"

चित्र पहाड़ी रास्ते का है, जिसके दोनों ओर जङ्गल हैं। दाहिने ओर राजा भानुप्रताप एक नील वर्ण घोड़े पर सवार दौड़ते हुए एक वाराह पर बाण छोड़ रहे हैं। इस चित्र में राजा की उत्सुकता, घोड़े की दौड़ और वाराह के पोंछ उठाकर दौड़ने के दृश्य सुन्दरतापूर्वक दिखलाये गये हैं। पृष्ठिका में दूर पर नगर आदि की कुछ झलक दिखाकर राजा का घोर अरण्य में पहुँच जाना सूचित किया है।

रामचरितमानस चित्रावली (६८)

३०५—कपट-मुनि-आश्रम

(पृष्ठ ६२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{1}{4}$" × ६$\frac{1}{2}$"

चित्र वन-खण्ड का है, जहाँ वृक्षों पर पक्षिगण कल-रव कर रहे हैं। नीचे की ओर झाड़ियों से घिरा हुआ एक तालाब भी है। बाएँ ओर एक पर्णकुटी है, जिसके आगे एक नील वर्ण जटाजूटधारी तपस्वी कृष्णाजिन पर बैठकर तप कर रहे हैं। दाहिने ओर घोड़े पर सवार राजा भानुप्रताप मुनि से कुछ पूछ रहे हैं।

सोसन के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ६३ क तथा पृष्ठ ६३ ख पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (६९)

३०६—कपट-मुनि और भानुप्रताप का संलाप

(पृष्ठ ६४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¼″ × ६¾″

चित्र बन-खण्ड का है। पेड़ों पर पक्षी बसेरा ले रहे हैं। नीचे बाएँ ओर पुष्करिणी में कमल खिले हुए हैं। दाहिने ओर राजा भानुप्रताप का घोड़ा बैठा हुआ है। पर्णकुटी के सामने राजा और मुनि बातें कर रहे हैं। आकाश में लालिमा छाई हुई है।

सोसन के फूल का हाशिया है। पृष्ठ ६४ ख तथा ६५ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (७०)

३०७—कपट-मुनि और राक्षस का संवाद

(पृष्ठ ६५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅜″ × ४⅝″

इस चित्र में मुनि का आश्रम है। दाहिने ओर जमीन पर कपड़ा बिछाकर राजा सोये हुए हैं। पास में घोड़ा खड़ा है। बाएँ ओर आश्रम के बाहर कपट-मुनि राक्षस कालकेतु से बातचीत कर रहे हैं। वृक्षों पर चिड़ियाँ बसेरा ले रही हैं। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७१)

३०८—ब्रह्मभोज

(पृष्ठ ६६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅜″ × ७⅛″

इस चित्र में ब्राह्मण और ऋषियों की जेवनार दिखलाई गई है। ब्राह्मणों की तीन पंक्तियाँ हैं, जिनमें बच्चे, बूढ़े, लड़कियाँ सभी हैं। तिलक मुद्रा दिये हुए कुछ ब्राह्मण परोस रहे हैं। राजा स्वयं दौड़धूप कर रहे हैं। सबसे नीचे बर्तनों में खाद्य-सामग्रियाँ रखी हुई हैं, जिन्हें परोसनेवाले परोसने के लिये ले जा रहे हैं। पृष्ठिका में कनात से घिरी हुई पाकशाला है। पाकशाला में चूल्हों पर कड़ाहियाँ और बटुए चढ़े हुए हैं। एक आदमी रसोई बना रहा है। कनात के भीतर एक कोने में दो बड़े कण्डाल तथा अन्य जलपात्र रखे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (७२)

३०९—विप्र-शाप

(पृष्ठ ६७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८¼″ × ७¼″

इस चित्र में दाहिने ओर ब्राह्मणगण अपने कुटुम्बियों-सहित भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए हैं। कुछ स्त्रियाँ, पुरुष और बच्चे पत्तल छोड़-छोड़कर चले जा रहे हैं। बाएँ ओर ब्राह्मण-समुदाय के आगे राजा हाथ जोड़कर खड़ा है। कनात से घिरे रसोईघर में रसोई के बर्तन लुढ़ककर जमीन पर गिरे हुए हैं। ऊपर दाहिने ओर कोने में मकान, मीनार आदि चित्रित हैं।

बादरूम जाली का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७३)

३१०—रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण को वरदान

(पृष्ठ ६८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०⅞″ × ७″

इस चित्र में पहाड़ियों के तीन अंश बने हुए हैं। सबसे ऊपरवाले अंश में बीचोबीच दश शीश और बीस भुजाओंवाला रावण बैठा हुआ तपस्या कर रहा है। बाएँ ओर ब्रह्मा और शिव खड़े हुए उनको वरदान दे रहे हैं। शिव के कन्धे पर व्याघ्रचर्म है और धोती की जगह पर गजचर्म पहने हुए हैं। बीचवाले खण्ड में दाहिने ओर कुम्भकर्ण तप कर रहा है। वह जाँघिया, दुपट्टा और गहने पहने हुए है। सामने खड़े हुए ब्रह्मा उसको वर दे रहे हैं। सबसे नीचे बाएँ ओर मुनिवेषधारी विभीषण हाथ जोड़े बैठा है। सामने खड़े ब्रह्मा उसको वरदान दे रहे हैं। पृष्ठिका के निकट बादलों में हाथी इत्यादि के चेहरे बने हुए हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७४)

३११—रावण का दरबार

(पृष्ठ ७० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२½″ × ८⅞″

यह लङ्का का चित्र है। चारों ओर समुद्र से घिरे हुए एक द्वीप पर लङ्का नगरी बसी हुई है। शहरपनाह के मध्य में बहुत से गुम्बद बने हुए हैं, जिनपर तोपें रखी हुई हैं। बीच-बीच में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुत से फाटक बने हुए हैं। स्वर्ण का आभास कराने के लिये शहरपनाह, भवन आदि का रंग पीला दिया गया है। फाटकों पर राक्षस पहरा दे रहे हैं। किले के अन्दर, महल के सामने, रावण का दरबार लगा हुआ है। शाहनशीन के नीचे गहने-कपड़े पहने हुए और शस्त्रास्त्र से सुसज्जित रावण मन्दोदरी के साथ एक सोने के सिंहासन पर बैठा है। सामने जामा, पाजामा, मुकुट आदि पहने हुए शस्त्रास्त्र से सुसज्जित मेघनाद खड़ा है। चित्र के बाएँ ओर बहुत से राक्षसगण जमीन पर बैठे हैं और बहुत से शस्त्र लिये खड़े हैं। दाहिने ओर रावण के सिंहासन के पीछे चमर, मोरछल और पंखा लिये हुए कुछ राक्षस खड़े हैं। एक स्त्रियों का दल हाथ में मोरछल, पंखा, पानदान लिये खड़ा है। एक शाहनशीन के नीचे तकिया के सहारे कुम्भकर्ण सोया हुआ है। पृष्ठिका में एक मस्तूलवाले बहुत से जहाज, जो कम्पनी के समय के मालूम पड़ते हैं, झण्डियाँ उड़ाते हुए समुद्र में तैर रहे हैं।

गोमूत्रिका का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७५)

३१२—पृथ्वी-पुकार

(पृष्ठ ७१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०$\frac{७}{८}$″ × ७$\frac{१}{८}$″

इस चित्र में दाहिने ओर ऊपर की तरफ एक दालान के आगे ब्रह्मा, शिव और पार्वती बैठे हैं। जमीन पर चारों ओर देवता और देवियाँ, जिनमें बालाखिल्य ऋषि, नवग्रह, गोरूपिणी पृथ्वी, नारद, गणेश, सरस्वती, कार्तिकेय, इन्द्र, वायु, अग्नि तथा ऋषिगण भी हैं, हाथ जोड़कर ब्रह्मा की प्रार्थना कर रहे हैं।

गोमूत्रिका बेल का हाशिया है। बीच-बीच में तुरञ्ज (फलक) बने हुए हैं।

रामचरितमानस चित्रावली (७६)

३१३—अयोध्या

(पृष्ठ ७२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२$\frac{३}{४}$″ × ९$\frac{७}{८}$″

इस चित्र में नीचे की ओर सरजू नदी बह रही है। उसके तीर पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक घाट बने हुए हैं। नदी में एक बजड़ा पाल उड़ाता हुआ चला जा रहा है, जिसकी छत पर एक कम्पनी का अफसर कुर्सी पर बैठा है। माझी पतवार थामे है। एक सिपाही बन्दूक लिये खड़ा है। घाट से ऊपर चढ़कर शहरपनाह के फाटक के अन्दर घुसकर राज-महल का दृश्य है। महल के सामने खुले हुए मैदान में बाएँ ओर एक सुनहली चौकी पर जामा, पाजामा, पटका और मुकुट पहने हुए राजा दशरथ बैठे हैं, उनके पीछे कुछ सेवकगण हाथों में अँगोछा, मोरछल, पानी का गड़वा इत्यादि लिये हुए खड़े हैं। एक भाट राजा की विरुदावली गा रहा है। दाहिने ओर बहुत से राजा जमीन पर खड़े तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैठे हैं। इनमें से एक राजा दशरथ की कोर्निश बजा रहा है। दालान में कौशिल्या बैठी हैं। उनकी सखियाँ पीछे खड़ी हैं। महल के दूसरे मंजिल में तीनों रानियाँ अपनी सखियों सहित अपने कमरों के सामने सायबान में बैठी हैं। पीछे दूर तक महल आदि बने हुए हैं।

गोमूत्रिका का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७७)

३१४—वशिष्ठ-दशरथ-संलाप

(पृष्ठ ७३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९¼″ × ७¾″

इस चित्र में वशिष्ठ मुनि का आश्रम है। बाएँ ओर पर्ण-कुटी के सामने मृगछाला पर बैठे हुए वशिष्ठ मुनि, हाथ जोड़े हुए राजा दशरथ से बातें कर रहे हैं। दाहिने ओर दो सेवक हाथ जोड़कर खड़े हैं। नीचे के भाग में राजा की सेना का दृश्य है। आगे-आगे एक सेवक बहँगी लेकर चला जा रहा है। उसके पीछे ढाल, तलवार और बल्लम लिये हुए कुछ सिपाही हैं। उनके पीछे दो हाथी हैं और सबके पीछे तलवार इत्यादि लिये हुए कुछ पैदल और घुड़सवार सिपाही हैं। इन सबकी पोशाक जामा, पाजामा, पगड़ी और गहने हैं। सबके सिर पर दण्डाकार वैष्णव या त्रिपुण्ड्र या विन्दु के शैव तिलक हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (७८)

३१५—पायस-प्राप्ति

(पृष्ठ ७४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९½″ × ७¼″

चित्र में मण्डप के अन्दर यज्ञ हो रहा है। वशिष्ठ आहुति दे रहे हैं। बाएँ ओर राजा दशरथ खड़े हुए, अग्नि से प्रकट यज्ञ-पुरुष के हाथ से, चरु ग्रहण कर रहे हैं। मण्डप के आसपास ऋषि और ब्राह्मणगण बैठे हैं। मण्डप के बाहर दो व्यक्ति खड़े हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (७९)

३१६—पायस-प्रदान

(पृष्ठ ७४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८¾″ × ७¼″

चित्र के बीचोबीच राजा दशरथ अपनी तीनों रानियों को चरु-प्रदान कर रहे हैं। बाएँ ओर राजा के सेवक तथा दाहिने ओर सेविकाएँ खड़ी हैं। पीछे आसन पर बैठे हुए शृङ्गी ऋषि और वशिष्ठ बातचीत कर रहे हैं। प्रत्येक के दो-दो शिष्य उनके बगल में बैठे हैं। पृष्ठिका में पहाड़ हैं। आकाश में लालिमा छाई है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (८०)

३१७—अन्तःपुर

(पृष्ठ ७५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७⅜″ × ७⅛″

इस चित्र में अन्तःपुर के भिन्न-भिन्न खण्डों में रानियाँ सुखविलास कर रही हैं। पीछे बाएँ ओर के कमरे में अपनी सखी के गले में हाथ डाले एक रानी कौतूहल कर रही है ; उसी के ठीक सीध में दाएँ ओर के कमरे में एक रानी गर्भ के भार से थककर पलँग पर पड़ी हुई है। एक सखी पैर दबा रही है, दूसरी पंखा झल रही है और दो सिरहाने खड़ी हैं। बीच के भाग में दालान के सामने शाहनशीन के नीचे एक रानी तकिये के सहारे फर्श पर बैठी है। एक दासी शीशा दिखला रही है, दूसरी पैर दबा रही है और कुछ दासियाँ आसपास खड़ी हैं। सामने छत पर तानपूरा, डफ और मृदङ्ग के साथ स्त्रियाँ गान कर रही हैं। रनवास के दरवाजे पर दो सेवक और दो सेविकाएँ बैठी हैं। एक सेविका दरवाजे का पर्दा हटाकर बाहर सिपाही से कुछ कह रही है।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ ७५ ख पर फूलकारी हाशिया के बीच में रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (८१)

३१८—राम-जन्म

(पृ० ७६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११½″ × ८½″

अन्तःपुर का दृश्यः—चित्र के बाएँ ओर एक दालान में विष्णु शंख, चक्र, गदा, पद्म एवं पीत-वसन धारण किये हुए खड़े हैं। सामने हाथ जोड़े माता कौशिल्या खड़ी हैं। दाहिने ओर दालान के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामने एक ओर कुछ स्त्रियाँ हाथ जोड़कर बैठी हैं। दूसरे ओर कुछ स्त्रियाँ गाना-बजाना कर रही हैं। फाटक के ठीक ऊपर मुतक्के पर दौड़ती हुई एक स्त्री मानों राम-जन्म की कथा लोगों से कहने जा रही है। अन्तःपुर के फाटक पर बहुत से सिपाही शस्त्रास्त्र से सुसज्जित खड़े हुए आपस में बात-चीत कर रहे हैं। बाएँ ओर खड़े एक वृद्ध सिपाही के चेहरे की उत्सुकता का अच्छा प्रदर्शन है। आकाश-मार्ग में अपने विमानों पर स्थित देवगण फूल बरसा रहे हैं। अप्सराएँ नृत्य कर रही हैं।

हाशिए पर दोहरे लपेट की गोमूत्रिका वेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (८२)

३१९——शिशु-दर्शन

(पृष्ठ ७६ ख)

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी——१०३/४″ × ७१/४″

वही, अन्तःपुर का दृश्य है। बाएँ ओर नवजात शिशु को गोद में लिये हुए कौशिल्या पलँग पर बैठी हैं। कुछ सेविकाएँ पंखा इत्यादि कर रही हैं। कुछ रानियाँ भी नवजात शिशु को देखने के लिये आई हैं। बाहर बहुत सी स्त्रियाँ जमीन पर बैठी हैं और कुछ टहल रही हैं। सब के मुख पर उत्सुकता है। एक दौड़ती हुई स्त्री दूसरी स्त्री को बुला रही है, मानों यह कहने के लिये कि चलो बालक का दर्शन करें। अन्तःपुर के फाटक पर चोबदार खड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (८३)

३२०——पुत्र-जन्मोत्सव

(पृष्ठ ७७ क)

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी——८३/४″ × ७३/४″

महल के अन्दर दीवानखाने के सामने चबूतरे पर राजा दशरथ सोने के सिंहासन पर बैठे हैं। पीछे कुछ सेवक खड़े हैं। बगल में फव्वारा छूट रहा है। बाएँ ओर बहुत-सी प्रजा एकत्र है। कोई सलाम कर रहा है, कोई हाथ जोड़े हुए है और कोई-कोई नजराना दे रहे हैं। एक व्यक्ति नाच रहा है। नौबतखाने में नौबत झर रही है। महल के दरवाजों पर ब्राह्मणों और ऋषियों के साथ वशिष्ठ भीतर घुस रहे हैं। चित्र के दाहिने ओर ऊपर चबूतरे पर होकर वशिष्ठ राजा की ओर बढ़ रहे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (८४)

३२१--दान

(पृष्ठ ७७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—१०$\frac{१}{२}$″ × ७$\frac{३}{८}$″

महल के अहाते के अन्दर दाहिने ओर एक सायबानदार दालान के नीचे फर्श पर वशिष्ठ को हाथ जोड़े राजा दशरथ बैठे हैं। उनके पीछे बहुत से सेवक खड़े हैं। बाएँ ओर बहुत से ऋषि-मुनि खड़े हुए गाय इत्यादि का दान ले रहे हैं। दाहिने कोने पर ब्राह्मण लोग गाय ले-लेकर बाहर जा रहे हैं। महल के फाटक पर एक ब्राह्मण देवता गाय को हँकाये लिये जा रहे हैं। बहुत से सिपाही और विप्र महल के दरवाजे पर खड़े हैं। बहुत सी गायें दान के लिये खड़ी हैं। नौबतखाने में रोशनचौकी बज रही है। भीतर तथा बाहर काफी चहल-पहल मची हुई है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (८५)

३२२--आनन्द-बधाई

(पृष्ठ ७८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{३}{८}$″ × ७$\frac{१}{४}$″

महल के अन्दर दाहिने ओर एक दालान में खाट पर कौशिल्या राम को गोद में लिये हुए बैठी हैं। उनके आगे आरती लिये हुए, गलबहियाँ दिये तीन-तीन की कतार में सखियों का झुण्ड जा रहा है। दालान के बाहर बहुत सी सखियाँ शिर पर मंगल-कलश लिये खड़ी हैं। सामने एक कालीन पर हाथी, घोड़े आदि खिलौने तथा गुलाबपाश आदि रखे हुए हैं। सखियों में से किसी के हाथ में आरती है, किसी के शिर पर फूल की डाली है और कोई घण्टा बजा रही है। दो स्त्रियाँ कान पर हाथ रखकर एवं हाथ बढ़ाकर सोहर गा रही हैं। बाएँ ओर एक वेश्या नाच रही है और बहुत-सी स्त्रियाँ ढोलक-मजीरा और ताली बजा रही हैं। महल के दरवाजे पर स्त्रियों का बहुत बड़ा झुण्ड एकत्र होकर मङ्गल मना रहा है। बहुतों के शीश पर मङ्गल-कलश हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ फूलों की डालियाँ व मङ्गल-वस्तुएँ लिये हुए हैं। आनन्द के उद्वेग से बहुतों के शीश पर से साड़ी खसक गई है। दरवाजे के ऊपर स्त्रियाँ नौबत बजा रही हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (८६)

३२३—नगर-महोत्सव

(पृष्ठ ७८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०″ × ७¾″

नगर का दृश्य—ठीक बीचोबीच सड़क पर नौबत झर रही है। बहुत से लोग बैठे हुए भाँड़ों का तमाशा और कहँरवा नाच देख रहे हैं। कहीं घरों के भीतर स्त्रियाँ सोहर गा रही हैं। घर-घर में नौबत झर रही है। स्त्रियाँ अटारियों तथा बरामदे से तमाशा देख रही हैं। नदी के किनारे घाट पर भी बड़ी चहल-पहल है। स्त्रियाँ कूद-कूदकर नहा रही हैं। कहीं देव-मन्दिर में पूजा-अर्चना हो रही है। कहीं कहीं सरयू नदी में घोड़दौड़ नावों पर नाच हो रहा है। नगर के दूसरे भाग में नट का तमाशा हो रहा है। नगर खूब सजा हुआ है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (८७)

३२४—भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म

(पृष्ठ ७९ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०″ × ७¾″

महल के अन्दर तीन भिन्न-भिन्न दालानों में बैठी हुई रानियाँ अपने-अपने पुत्रों को दूध पिला रही हैं। बहुत-सी सखियाँ खिलौने लिये बालकों को रिझा रही हैं। सामने आँगन में बहुत सी स्त्रियाँ झुनझुने, चट्टे-पट्टे, गाड़ियाँ इत्यादि खिलौने लिये हुए खड़ी हैं। महल के दरवाजे पर एक आदमी, जो पीताम्बर, उपरना और पाग पहने है, बहुत से खिलौने एक स्त्री को भीतर ले जाने के लिये दे रहा है।

हाशिए पर अच्छे बादरूम में बँधा हुआ सहरेसा है।

रामचरितमानस चित्रावली (८८)

३२५—पारितोषिक

(पृष्ठ ८० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११½″ × ८½″

महल के अन्दर दाहिने ओर छत पर राजा खड़े हुए लोगों को पारितोषिक दे रहे हैं। उनके सामने चौकियों पर बहुत से जेवरात रखे हुए हैं और बहुत-सी पोशाक व पगड़ियाँ जमीन पर रखी हुई हैं। बाएँ ओर बहुत से नागरिक और सरदार प्रणाम करते हुए राजा की भेंट ग्रहण कर रहे हैं। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिपाही राजा की जय-जयकार मना रहे हैं। महल के बाहर घरों के ऊपर से रुपया-पैसा लुटाया जा रहा है। पृष्ठिका में एक तालाब है, उसके चारों ओर सुन्दर घाट बने हुए हैं। उसके पीछे पहाड़ी मैदान के बाद नगर चित्रित है।

हाशिए पर अंगूरी बेल (गोमूत्रिका) है।

रामचरितमानस चित्रावली (८९)

३२६—नामकरण

(पृष्ठ ८० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७$\frac{3}{8}$" × ६$\frac{5}{8}$"

महल के अन्दर एक दालान के सामने राजा दशरथ तथा अपने बालकों सहित रानियाँ बैठी हैं। ठीक सामने बाएँ ओर वशिष्ठ मुनि हवन करा रहे हैं। उनके पीछे बहुत से ब्राह्मण और ऋषिगण खड़े हैं। महल के दरवाजे पर दो प्रहरी ढाल-तलवार से सजे बैठे हैं। पृष्ठिका में, निकट में उपवन तथा दूर पर गृह बने हुए हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (९०)

३२७—बाल-केलि

(पृष्ठ ८१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{1}{2}$" × ७$\frac{1}{4}$"

तीन भिन्न-भिन्न दालानों में, राम सहित कौशिल्या, भरत सहित कैकेयी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के सहित सुमित्रा बैठी हुई हैं। पीछे सखियाँ चमर डुला रही हैं। कुछ सखियाँ हाथ में पानदान, इत्रदान इत्यादि लिये खड़ी हैं। आँगन में चार भाइयों की चार गाड़ियाँ पड़ी हुई हैं। दो सखियाँ हाथ में झुनझुना, लट्टू, चर्खी इत्यादि लिये हुए खड़ी है।

जालीदार फूलकारी का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (९१)

३२८—बाल-खिलावन

(पृष्ठ ८१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—(१) ७ १/४″ × ४ ३/४″; (२) ७ १/४″ × ५″

इस पृष्ठ पर दो अलग-अलग चित्र हैं। ऊपरवाले चित्र में, दालान में हिंडोला पड़ा हुआ है और कौशिल्या हिंडोला खींच रही हैं। पालने में पड़े हुए श्रीराम अँगूठा चूस रहे हैं। सखियाँ पानदान, छत्रदान इत्यादि लिये खड़ी हैं। दो सखियाँ पंखा झुला रही हैं। कुछ सखियाँ हाथ जोड़कर भूमि पर बैठी हैं।

सिरे पर "हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा" से "मातु झुलावे कहि प्रिय ललना" तक पाठ है। दूसरे चित्र में, महल में दालान के सामने आँगन में माता कौशिल्या राम को गोद में लिये खड़ी हैं। आस-पास बहुत-सी दासियाँ चर्खी, झुनझुना, लट्टू, चट्टा-पट्टा इत्यादि खिलौने लिये हुए राम को खेला रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ ८२ क पर बेलकारी हाशिया में रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (९२)

३२९—बाल-क्रीड़ा

(पृष्ठ ८२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११″ × ७ १/२″

महल के अन्दर खुले मैदान में कौशिल्या, कैकेयी और सुमित्रा रानी मोढ़ों पर बैठी हुई हैं। सभी के हाथ में लट्टू, चर्खी, झुनझुने इत्यादि हैं, जिनसे वे अपने-अपने पुत्रों को लुभा रही हैं। रानियों के पीछे दासियाँ खड़ी हैं। जमीन पर चारों बच्चे खिलौने खेलते हुए लड़ रहे हैं। किसी के हाथ में हाथी, किसी के हाथ में बैल है और कोई झुनझुना बजा रहा है। सामने जमीन पर खिलौने के बर्तन, शेर, ऊँट, झुनझुने इत्यादि पड़े हैं। एक दासी मुँह में अँगुली डालकर कौतुकपूर्वक बाल-लीला देख रही है। पृष्ठिका में विस्तृत राजप्रासाद बना हुआ है, जिसके बीच में बहुत बड़ा सरोवर है।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (९३)

३३०—पूजा

(पृष्ठ ८३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—(१) ३ १/४″ × ५ १/२″; (२) ७ १/४″ × ५ ३/४″

इस चित्र में दो खण्ड हैं। ऊपरवाले खण्ड में दाहिने ओर चौकी पर बैठी हुई माता कौशिल्या एक लोटे से स्नान कर रही हैं। सामने खड़ी हुई दासी लोटे में पानी भर रही है। बाएँ ओर बालक राम गद्दी पर सोये हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरे खण्ड में बाएँ ओर कौशिल्या देव-पूजन कर रही हैं। फर्श पर धूप, दीप, नैवेद्य, घण्टा, पुष्प इत्यादि पड़े हैं। बीच के दालान में बालक राम पलँगे पर सोये हैं। जमीन पर घोड़ा, हाथी, झुनझुने इत्यादि खिलौने रखे हैं। दाहिने ओर कौशिल्या हाथ में माला लिये रसोईघर के पास खड़ी हैं। एक स्त्री रसोई बना रही है। चूल्हों पर बटुए, कड़ाहियाँ चढ़ी हैं।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (९४)

३३१—मति-भ्रम

(पृष्ठ ८३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९½″ × ७¾″

चित्र में ऊपर दाहिने ओर पूजा-गृह में ठाकुरजी के लिये जमीन पर रखा हुआ नैवेद्य बालक राम भोजन कर रहे हैं। सामने मुँह में अँगुली दिये हुए आश्चर्य-चकित कौशिल्या खड़ी हैं। बाएँ ओर बालक राम पलँगे पर सोये हैं। सामने कौशिल्या खड़ी आश्चर्य से देख रही हैं। चित्र में नीचे बाएँ ओर रसोईघर है, जिसमें एक स्त्री रसोई पका रही है।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (९५)

३३२—विश्वरूप-दर्शन

(पृष्ठ ८४ क)

शैली--राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी--९⅓″ × ७¼″

चित्र में एक मैदान में पुष्प खिले हैं और उसके बीच में एक कमलों से भरी पुष्करिणी है। पुष्करिणी के पीछे दोनों ओर दो कुञ्ज हैं। आसमान में इन्द्रधनुष उदित है। उस मैदान के बीचोबीच सामने चतुर्भुज विश्वरूप भगवान् हाथों में चक्र, गदा, शंख और पद्म लिये हुए खड़े हैं। भगवान् का वर्ण नीला है। बालों की लटों और मस्तक पर ब्रह्मा, आँखों में सूर्य-चन्द्र, गालों में शंकर और ब्रह्मा, छाती पर और पेट में ब्रह्मा, शिव, वरुण इत्यादि देवता, जाघों में गणेश, हनुमान्, इन्द्र, शिव इत्यादि देवता तथा रानों के बीच में वाराहमूर्त्ति खड़ी है। हाथों में भी देवगण दिखलाये गये हैं। इसके साथ ही पहाड़, नदी, वृक्ष, मैदान आदि का भी समावेश है। इनके दोनों ओर दो स्त्रियाँ, एक हाथ जोड़े हुए तथा दूसरी आश्चर्य-चकित हो हाथों से आँख मूँदे हुए, खड़ी हैं।

हाशिए पर गुलाब के फूल और पक्षी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (९६)

३३३—पुनः शिशुरूप-धारण

(पृष्ठ ८४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८३/४" × ७१/४"

महल में दालान के आगे आँगन का दृश्य है। बीच में पलँगपोश और तकियों से सुसज्जित एक पलँग पड़ा है, जिस पर बालक राम हाथ जोड़े बैठे हुए हैं। सामने हाथ जोड़कर कौशिल्या विस्मय-पूर्ण नेत्रों से खड़ी हैं। दालान में एक झलुआ टँगा है, जिसमें एक झूमर लटक रहा है। दाहिने ओर फर्श पर छोटी चौकियों पर गुलाबपाश, फूलचंगेर रखे हुए हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (९७)

३३४—चूड़ाकर्म

(पृष्ठ ८५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०३/४" × ७१/४"

स्थान—महल का आँगन। दाहिने ओर वशिष्ठ हवन करा रहे हैं। चारों भाई राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न सामने बैठे हैं। बाएँ ओर तीनों रानियाँ और दशरथ हाथ जोड़कर बैठे हैं। जमीन पर थालों में भरी हुई पूजा की सामग्रियाँ रखी हुई हैं तथा दो गायें खड़ी हैं। वशिष्ठ मुनि के पीछे एक सेवक खड़ा है। पृष्ठिका में बाएँ ओर गद्दी-तकिया से सजी हुई एक दालान है। दाहिने ओर द्वार के बाहर बाग का दृश्य है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (९८)

३३५—अजिर-विहार और भोजन-अनुरोध

(प्रथम दृश्य ; पृष्ठ ८५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९१/४" × ७१/४"

स्थान—आँगन। बाएँ ओर चारों भाई अन्य बालकों के साथ खिलौने खेल रहे हैं। एक रानी उनको बुला रही हैं। वे भी घूमकर उनकी ओर देख रहे हैं। दालान में राजा भोजन कर रहे हैं। एक चौकी पर भोज्य पदार्थ थालियों और कटोरियों में सजे हुए हैं। आँगन में चौकियों पर पानदान, गुलाब-पाश, फल इत्यादि सजे हुए हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (९९)

३३६—अजिर-विहार और भोजन-अनुरोध

(दूसरा दृश्य ; पृष्ठ ८६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०३/४" × ७१/२"

स्थान—आँगन। बाएँ ओर बहुत से बालक खेल रहे हैं। कौशिल्या राम को पकड़ने के लिये दौड़ रही हैं ; पर वे भागे जा रहे हैं। जमीन पर बहुत-सी गाड़ियाँ, खिलौने, गुलाबपाश और पुष्पपात्र रखे हुए हैं। दालान में राजा भोजन कर रहे हैं।

तुरञ्ज का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१००)

३३७—अजिर-विहार और भोजन-अनुरोध

(तीसरा दृश्य ; पृष्ठ ८६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०३/४" × ७१/४"

स्थान—आँगन। बाएँ ओर माता कौशिल्या राम का हाथ पकड़कर ले जा रही हैं। उनके पीछे-पीछे और बालक हाथों में खिलौना लिये हुए आ रहे हैं। जमीन पर खिलौने पड़े हैं। दालान में राजा भोजन कर रहे हैं। महल का फाटक झंडियों से सजा है।

तुरञ्ज का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०१)

३३८—अजिर-विहार और भोजन-अनुरोध

(चौथा दृश्य ; पृष्ठ ८७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०३/४" × ७१/२"

स्थान—आँगन। आँगन में बहुत से बालक चकडोरी, झुनझुना, लट्टू, घोड़े, हाथी, शेर इत्यादि खिलौनों से खेल रहे हैं। दालान में राजा दशरथ राम को गोद में बैठाये हुए हैं। सामने भोजन की सामग्रियाँ रखी हुई हैं। दालान के बाहर रानी कौशिल्या खड़ी हैं और हाथ उठाकर मानों राजा को उलाहना दे रही हैं।

तुरञ्ज का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१०२)

३३९—अजिर-विहार और भोजन-अनुरोध

(पाँचवाँ दृश्य ; पृष्ठ ८७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०½″ × ७¾″

स्थान—आँगन। राजा दशरथ दालान में भोजन कर रहे हैं। बाहर कौशिल्या खड़ी हैं। राजा की गोद छोड़कर राम खिलौने लिये हुए बालक-मण्डली की ओर दौड़े जा रहे हैं। चित्र के बाएँ ओर बालक-मण्डली खेल रही है। सब के हाथ में कोई-न-कोई खिलौना है। एक बच्चा एक दूसरे की टाँग खींच रहा है।

तुरञ्ज का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०३)

३४०—उपनयन

(पृष्ठ ८८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९½″ × ७¼″

स्थान—महल के सामने का आँगन। दाहिने ओर वशिष्ठ मुनि हवन करा रहे हैं। उनके अगल-बगल ब्राह्मण और ऋषिगण बैठे हैं। सामने राजा दशरथ बैठे हैं। उनके पीछे दो सेवक खड़े हैं। चित्र के निचले भाग में दाहिने ओर कृष्णाजिन कंधे पर रखे हुए एवं हाथों में भिक्षापात्र लिये हुए चारों भाई खड़े हैं। तीन रानियाँ उनको भिक्षादान कर रही हैं। पीछे दालान में बहुत सी स्त्रियाँ बैठी हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०४)

३४१—विद्याध्ययन

(पृष्ठ ८८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०″ × ७½″

स्थान—घर का आँगन। दाहिने ओर जामा, पाजामा, पाग और गहने पहने हुए गुरु तकिये के सहारे बैठे हैं। उनके सामने कैंची पर एक किताब रखी हुई है। पास में एक कोड़ा पड़ा है। बाएँ ओर धोती, दुपट्टा और गहने पहने हुए चारों भाई हाथ में पुस्तक लिये हुए बैठे हैं। उनके पास में पट्टियाँ और बोरकने पड़े हुए हैं। और भी बहुत से विद्यार्थी वृत्ताकार बैठे पढ़-लिख रहे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१०५)

३४२—नृप-लीला

(पृष्ठ ८९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११″ × ७¾″

महल में मुतक्केदार चबूतरे पर श्रीरामचन्द्र एक सिंहासन पर धनुष-बाण लिये हुए बैठे हैं। धनुष-बाण से सुसज्जित अन्य तीनों भाई उनके पीछे खड़े हैं। सामने एक चोबदार सलाम कर रहा है और बहुत से आदमी, जिनमें कुछ जामा, पाजामा और पगड़ी पहने हुए हैं और कुछ घुटने तक धोती और टोपी पहने हुए हैं, राजा के पास फरियाद करने आये हुए हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ संख्या का क्रम पृष्ठ ८९ क से उलटा हो गया है; अर्थात् पृष्ठ-संख्या पत्र के पहले ही पृष्ठ पर दी गई है। यह चित्र किसी दूसरे चित्रकार का बनाया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०६)

३४३—मोहन-रूप

(पृष्ठ ९० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११¾″ × ७¾″

स्थान—राज्यवीथी। चित्र के बीचोबीच राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न धोती, बगलबन्दी और टोपी पहने हुए तथा धनुष-बाण से सुसज्जित होकर खड़े हैं। बहुत से पुरवासी, जिनमें बहुत-सी स्त्रियाँ भी हैं, उनको देख रहे हैं और पैरों पर गिर रहे हैं। मकानों की अटारियों और खिड़कियों में चढ़ी हुई स्त्रियाँ राम की शोभा निहारती हुई उनको प्रणाम कर रही हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०७)

३४४—मृगया

(पृष्ठ ९१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११⅝″ × ८″

चारों भाई घोड़ों पर चढ़े हुए मैदान में अन्य साथियों के साथ धनुष-बाण से शिकार खेल रहे हैं। सब घुड़सवारों के वस्त्र और पगड़ियाँ हरे रङ्ग की हैं। एक सवार के हाथ में बाज भी है, जो छूटकर चिड़ियों का शिकार कर रहा है। शिकारियों के बाण से घायल एक मृग गिर पड़ा है और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मृग, शूकर और लोमड़ियाँ भागे जा रहे हैं। खुले हुए पालतू चीते बनैले शूकरों का शिकार कर रहे हैं। आकाश में घबड़ाये हुए पक्षी उड़ रहे हैं। पृष्ठिका में पहाड़ियों के बीच एक जलाशय है।

पृष्ठ ९१ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०८)

३४५—आखेट-प्रदर्शन

(पृष्ठ ९२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१० १/२″ × ७ ३/४″

स्थान—महल का आँगन। दाहिने ओर सिंहासन पर राजा दशरथ अपने सेवकों से घिरे बैठे हैं। उनके सामने मरे हुए शिकारों को लिये हुए राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न खड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ ९२ क पर रामायण का पाठ है। इस चित्र का चित्रकार वही है, जो ८९ ख का है।

रामचरितमानस चित्रावली (१०९)

३४६—भोजन

(पृष्ठ ९३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१० १/२″ × ७ ३/४″

दालान में दाहिने ओर तीनों रानियाँ बैठी हैं। उनके सामने बाएँ ओर चारों भाई मुकटा और टोपी पहने हुए भोजन कर रहे हैं। प्रत्येक के सामने सोने की थाली तथा झारी रखी है। आँगन में पाँच अन्य बालक पास में चाँदी की थाली तथा झारी रखे भोजन कर रहे हैं। तीन स्त्रियाँ भोजन की सामग्री परोसने जा रही हैं। दालान के निकट दाहिने ओर आँगन में दो बड़े तसले रखे हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ ९३ क पर रामायण का पाठ है। इस चित्र का चित्रकार वही है, जो ८९ ख का है।

रामचरितमानस चित्रावली (११०)

३४७—पुराण-श्रवण

(पृष्ठ ९४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११ ३/४″ × ७ ३/४″

चित्र में दो खण्ड हैं। ऊपर बीच में महल के आगे छत पर सायबान के नीचे रामचन्द्र मुकुट, उपरना, पीताम्बर तथा आभूषण पहने बैठे हैं। उनके सामने उसी प्रकार के वस्त्र धारण किये गौर वर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई भाई बैठे उनकी बातें सुन रहे हैं। इनके पीछे दो बालक पगड़ी, दुपट्टा, मिरजई तथा धोती पहने सामने के कमरे के निकट बैठे हैं। दूसरे खण्ड में, छत पर बाएँ ओर जड़ाऊ सोने के सिंहासन पर गावतकिये के सहारे कथावाचक धोती तथा मालाएँ पहने पोथी लिये हुए दाहिने हाथ को ऊपर उठा-कर कथा कह रहे हैं। उनके सामने चारों भाई जमीन पर बैठकर कथा सुन रहे हैं। कथावाचक के पीछे एक बालक चमर लिये खड़ा है। चारों भाइयों के पीछे दो बालक पगड़ी-दुपट्टा पहने, दाहिना हाथ कुछ उठाये खड़े हैं। कथावाचक के दाहिने ओर सात व्यक्ति और बाएँ ओर छः व्यक्ति जामा, पगड़ी आदि पहने बैठे हुए कथा सुन रहे हैं। सिंहासन के आगे छोटी चौकी पर पोथी रखी है।

रामचरितमानस चित्रावली (१११)

३४८––अभिवादन

(पृष्ठ ९५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०$\frac{3}{4}$″ × ७$\frac{3}{4}$″

महल के आगे मुतक्केदार चबूतरे पर बाएँ ओर सिंहासन पर गावतकिये के सहारे जामा, मुकुट, आभूषण आदि पहने राजा दशरथ बैठे हैं। उनके चारों ओर सरदार तथा दरबारी लोग दरबारी पोशाक पहने बैठे हैं। उनके सामने रामचन्द्र हाथ जोड़े खड़े हैं। उनके पीछे भरत तथा लक्ष्मण दोनों हाथ जोड़े कोर्निश बजा रहे हैं और शत्रुघ्न दोनों हाथ जोड़े खड़े हैं। राजा के पीछे तीन व्यक्ति खड़े हैं, जिनमें से एक के हाथ में मोरछल है। दाहिने ओर ऊपरी द्वार के पास एक द्वारपाल खड़ा है। चबूतरे के नीचे सामने लाल फूलों की एक क्यारी है।

हाशिए पर बादरूम है। पृष्ठ ९५ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११२)

३४९––विश्वामित्र-आगमन

(पृष्ठ ९६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१०$\frac{5}{8}$″ × ७$\frac{1}{2}$″

महल के द्वार पर राजा दशरथ हाथ जोड़कर विश्वामित्र की अगवानी कर रहे हैं। उनके सामने दाहिने ओर पीताम्बर-उपरना धारण किये विश्वामित्र खड़े हैं। राजा के पीछे बाएँ ओर ब्राह्मण-समाज खड़ा है। बाएँ ओर कोने में दो सेवक खड़े हैं। महल के द्वार पर दोनों ओर दो द्वारपाल तलवार कसे खड़े हैं। द्वार के भीतर महल के आँगन और दालान आदि हैं।

हाशिए पर तुरञ्जदार गोमूत्रिका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (११३)

३५०——मुनि-पूजन

(पृष्ठ ९७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३½" × १०"

महल के दालान में बीच दर के सामने खम्भे के पास सिंहासन पर मुनि विश्वामित्र बैठे हैं। उनके सामने जमीन पर बैठे राजा दशरथ उनका पैर धो रहे हैं। राजा के दाहिने ओर से एक रानी पैर पर जल गिरा रही हैं। दूसरी रानी थाली में झारी तथा दीप आदि लिये राजा के पीछे खड़ी हैं। तीसरी रानी दाहिने बगल के दर से मोरछल लिये राजा की ओर जा रही हैं। इनके दाहिने दो चौकियों पर भोजन-सामग्री सजी हुई है। जमीन पर जल आदि के पात्र रखे हैं। ऋषि के पीछे बाएँ ओर के दर में चारों भाई क्रम से राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न हाथ जोड़े खड़े हैं। चबूतरे पर बाएँ ओर पाँच मुसाहब हाथ जोड़े खड़े हैं। दाहिने ओर आठ ब्राह्मण बैठे हैं। सामने चबूतरे की सीढ़ी के पास दो द्वारपाल खड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ ९७ क तथा ९८ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११४)

३५१——चरण-मेलन

(पृष्ठ ९८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३½" × ९½"

स्थान तथा दृश्य—पृष्ठ ९७ ख के चित्र के अनुसार। राजा दशरथ राम आदि चारों पुत्रों को ऋषि का चरण-मेलन करा रहे हैं। ऋषि उन लोगों को दोनों हाथों से आशीर्वाद दे रहे हैं। दाहिने दर में तीनों रानियाँ खड़ी हैं। आगेवाली रानी के दाहिने हाथ में अँगोछा है और सब से पीछेवाली रानी के हाथ में मोरछल है। ऋषि के पीछे दालान के बाएँ दर में मुसाहब, सामन्त आदि हाथ जोड़े खड़े हैं। चबूतरे पर दाहिने ओर विप्रवृन्द बैठा है। चबूतरे की सीढ़ी के नीचे दो द्वारपाल इधर-उधर खड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है। फूलों तथा शाखों पर पक्षी बैठे हुए हैं। पृष्ठ ९९ क पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (११५)

३५२--विश्वामित्र का दशरथ से राम-लक्ष्मण को माँगना

(पृष्ठ ९९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२½″ × ९¾″

स्थान तथा दृश्य—पृष्ठ ९८ ख के चित्र के अनुसार। राजा दशरथ हाथ जोड़े ऋषि के सामने जमीन पर बैठे हैं। उनकी बगल में वशिष्ठ मुनि बैठे हैं। इन लोगों के पीछे चारों राजकुमार हाथ जोड़े खड़े हैं। सामन्त, रानियाँ तथा विप्रवृन्द पृष्ठ ९८ ख के चित्र के अनुसार हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १०० क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११६)

३५३--दशरथ का लड़कों को सौंपना

(पृष्ठ १०० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१५″ × १०½″

स्थान तथा दृश्य—पृष्ठ ९९ ख के चित्र के अनुसार। विश्वामित्र के सामने जमीन पर राजा दशरथ हाथ जोड़े बैठे हैं। उनकी गोद में बाएँ ओर राम तथा दाहिने ओर लक्ष्मण हाथ जोड़े बैठे हैं। दाहिने दर में तीनों रानियाँ, पहली पंखा तथा अन्य दोनों मोरछल लिये, खड़ी हैं। उनके पीछे भरत तथा शत्रुघ्न हाथ जोड़े खड़े हैं। दालान में मुसाहब लोग, चबूतरे पर ब्राह्मण लोग और द्वारपाल आदि पिछले चित्र की भाँति हैं। दो अन्य व्यक्ति बाएँ ओर चबूतरे पर हाथ जोड़े खड़े हैं।

वेलदार हाशिया है। पृष्ठ १०१ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११७)

३५४--प्रस्थान

(पृष्ठ १०१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१५″ × १०¾″

नगर-वीथी का दृश्य अङ्कित है। ऊपर के दाहिने कोने से करीब-करीब नीचे बाएँ कोने तक के ऊपर के हिस्से में मकान आदि बने हुए हैं। मकानों के आगे चौड़ा मार्ग है, जिस पर विश्वामित्र के पीछे राम तथा लक्ष्मण धनुष, तर्कस आदि लिये हुए जा रहे हैं। मकानों के ऊपर से लोग इन लोगों को देख रहे हैं। सड़क के किनारे दूकानें हैं। कुछ दूकानदार बैठे तथा कुछ खड़े होकर देख रहे हैं। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राहगीर प्रणाम कर रहे हैं। एक स्त्री आँखों पर हाथ रखे है। सड़क पर पीछे की ओर एक बहँगीवाला जा रहा है। नगर-द्वार से एक स्त्री शिर पर दो कलश लिये बाहर आ रही है। द्वार पर एक द्वारपाल ढाल-तलवार लिये खड़ा है।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (११८)

३५५—ताड़का-वध

(पृष्ठ १०२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२½″ × ८½″

वन में पहाड़ी के निकट ताड़का गले में राम का बाण लगने से घायल होकर गिर रही है। बाएँ ओर विश्वामित्र के आगे लक्ष्मण खड़े हैं और राम धनुष की डोरी पर बाण चढ़ाकर ताड़का पर शर-सन्धान कर रहे हैं। पहाड़ी के पीछे दाहिने ओर जलाशय तथा फल लगे वृक्षों का कुंज है। पृष्ठिका में बाएँ ओर मैदान और वन हैं। वन के निकट पुष्करिणी है। पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं और कुछ उड़ रहे हैं। नीचे बाएँ ओर कोने में भी वृक्षों का झुरमुट है।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १०२ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (११९)

३५६—मूल-फल भोजन देना

(पृष्ठ १०३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११″ × ७½″

स्थान—विश्वामित्र का आश्रम। पर्णकुटी के सामने विश्वामित्र एक गावतकिये के सहारे बैठे हैं। उनके सामने बाएँ ओर राम तथा लक्ष्मण भोजन कर रहे हैं। दोनों के सामने पत्तों पर फल-फूल आदि रखे हुए हैं। विश्वामित्र अपने हाथ से कोई फल राम को दे रहे हैं, जिसे वे बाएँ हाथ से ले रहे हैं। कुटी के पीछे घना वन है। आगे पुष्करिणी है, जिसमें कमल खिले हैं, बगुले खड़े हैं तथा बत्तखें तैर रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १०३ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२०)

३५७—मख-रक्षा

(पृष्ठ १०४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८ वीं शती ; माप भीतरी—१४½″ × १०¾″

चित्र में बाएँ ओर केले के खम्भे, बन्दनवार, पताका आदि से सजा यज्ञ-मण्डप है। मण्डप के नीचे बीच में यज्ञ की वेदी बनी हुई है, जिसके निकट बैठे दो ब्राह्मण आहुति दे रहे हैं तथा चारों ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋषि-ब्राह्मण आदि बैठे मंत्रोच्चार आदि कर रहे हैं। एक ओर ब्रह्मा भी बैठे हैं। मण्डप के बाहर यज्ञ-शाला के आँगन में दाहिने ओर क्रम से इन्द्र, इन्द्राणी के साथ तथा चन्द्र, सूर्य और ब्रह्मा अपने-अपने बाहनों तथा रथों पर बैठे हैं। यज्ञशाला के बाहर पार्वती के साथ शिव नन्दी पर बैठे हैं। उनके बाएँ ओर दूर पर हरे घोड़े पर कुवेर और उनके बाएँ ओर महिष पर यम बैठे हैं। शिव के दाहिने ओर जमीन पर नारद तानपूरा लिये खड़े हैं। नारद के दाहिने ओर विश्वामित्र खड़े हैं। इनके सामने इसी ओर मुँह किये राम तथा लक्ष्मण आकाश में राक्षसों पर शर-सन्धान कर रहे हैं। विश्वामित्र के सामने ऋषि-कुमार खड़े हैं। यज्ञशाला के निकट सामने ऋषि, ब्राह्मण आदि खड़े हैं। आकाश में एक राक्षस जल रहा है। अन्य राक्षस उड़े जा रहे हैं, कुछ के अङ्ग-भङ्ग होकर इधर-उधर उड़ रहे हैं। दाहिने ओर विमानों में बैठे देवता लोग रामचन्द्र आदि पर पुष्प-वृष्टि कर रहे हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १०४ क पर रामायण का पाठ है।

———

रामचरितमानस चित्रावली (१२१)

३५८——अहल्योद्धार

(पृष्ठ १०५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३¼″ × ८¾″

हरे-भरे मैदान में दाहिने ओर राम तथा लक्ष्मण खड़े हैं। राम के सामने सफेद शिला पर हाथ में माला लिये अहल्या खड़ी है। इनके पीछे विश्वामित्र बाएँ हाथ में एक पोथी लिये खड़े हैं। विश्वामित्र के पीछे उनका शिष्य-समूह खड़ा है। चित्र के सामने बाएँ ओर पेड़ों के बीच में एक मन्दिर बना है। दाहिने ओर एक कुएँ पर एक स्त्री पानी भर रही है, दूसरी उसके पीछे शिर पर घड़ा लिये खड़ी है। पृष्ठिका में दोनों कोनों पर मकान आदि बने हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १०५ क पर रामायण का पाठ है।

———

रामचरितमानस चित्रावली (१२२)

३५९——गंगा-स्नान और दान

(पृष्ठ १०६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३¼″ × ८¾″

चित्र में सामने गंगा दाहिने ओर से बाएँ ओर बहती दिखलाई गई हैं। पीछे पक्के घाट बने हैं। उसके बाद हरा-भरा मैदान है। नदी में कुछ लोग नहा रहे हैं, कुछ लोग तैर रहे हैं और कुछ लोग अर्घ्य दे रहे हैं। घाट पर बैठे हुए लोग पूजा कर रहे हैं। मैदान में दाहिने ओर राम-लक्ष्मण खड़े हैं। उनके सामने विश्वामित्र दाहिने हाथ में पोथी तथा बाएँ हाथ में रुपयों से भरी रकाबी लिये खड़े हैं। उनके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकट कुछ ब्राह्मण हाथ उठाये, एक ब्राह्मण हाथ में लोटा लिये और एक दोनों हाथों में रुपयों से भरी रकाबियाँ लिये, खड़े हैं। एक व्यक्ति बाएँ ओर एक पेड़ पर जल चढ़ा रहा है। पृष्ठिका में शृगाल, हिरन आदि दौड़ रहे हैं। पीछे दोनों कोनों पर गृह, शिवालय आदि बने हैं।

हाशिए पर बादरूम है। पृष्ठ १०६ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२३)

३६०—अमराई में निवास

(पृष्ठ १०७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२ ५/८″ × ८ १/८″

सामने आम के बाग में व्याघ्रचर्म्म पर विश्वामित्र पीताम्बर आदि पहने बैठे हैं। उनके सामने राम तथा लक्ष्मण ढाल, तलवार, धनुष और तरकस कसे खड़े हैं। विश्वामित्र के पीछे शिष्यगण बैठा है। बाग में बाएँ ओर एक हौज बना है। बाग के बाहर पीछे बाएँ ओर एक कुँआँ है, जिस पर एक स्त्री खड़ी पानी भर रही है; दूसरी स्त्री शिर पर कलश लिये वापस जा रही है। पृष्ठिका में हरे मैदान के बीच तीन तम्बू लगे हैं। इनके पीछे ऊपर के बाएँ कोने में शहरपनाह के भीतर नगर बना है।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १०७ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२४)

३६१—जनक-आगमन

(पृष्ठ १०८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२ ३/८″ × ८ १/८″

हरे-भरे मैदान के बीच राजा जनक राजसी पोशाक धारण किये हुए हाथ जोड़े विश्वामित्र के सामने दोजानूँ बैठे हैं। हाथ में मोती की माला है। चित्र में दाहिने ओर विश्वामित्र दाहिने हाथ में पोथी लिये हुए व्याघ्रचर्म्म पर बैठे हुए हैं। उनके बाएँ ओर, चित्र में सामने, राम लक्ष्मण दोजानूँ बैठे हैं। विश्वामित्र तथा राम-लक्ष्मण के पीछे शिष्य-मण्डल पोथी-माला इत्यादि लिये दोजानूँ बैठा है। राजा जनक के पीछे सेवकगण खड़ा है। सामने सेना खड़ी है, जिसमें घुड़सवार, ऊँट, हाथी, पैदल आदि हैं। सामनेवाले ऊँटसवार के पास बन्दूक भी है। पृष्ठिका में घने पेड़ हैं, जिन पर पक्षी बैठे हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १०८ क पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१२५)

३६२—जनकपुर-दर्शन

(पृष्ठ ११० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३″ × ८३″

नगर के बीच चौड़ी हरी सड़क पर राम तथा लक्ष्मण धनुष-बाण आदि लिये खड़े हैं। इनके सामने कुछ नगर-निवासी हाथ में माला तथा अन्य वस्तुएँ लिये खड़े हैं। उनके पीछे स्त्रियाँ हाथों में माला लिये खड़ी हैं। एक स्त्री की गोद में बालक है। एक दूसरी स्त्री एक बालक का हाथ पकड़े हुए है। राम-लक्ष्मण के पीछे बहुत से नगर-निवासी खड़े हैं। उनके पीछे एक स्त्री रत्न आदि से भरा बहुत बड़ा थाल शिर पर लिये खड़ी है। एक दूसरी स्त्री वैसी ही एक थाली दाहिने हाथ की हथेली पर लिये खड़ी है। उसकी वाम गोद में एक बालक है। एक अन्य स्त्री दाहिने हाथ में केवल एक माला लिये खड़ी है। सड़क के दोनों ओर मकानों पर से स्त्री-पुरुष इन लोगों को देख रहे हैं। पीछे कुछ स्त्रियाँ अपने-अपने दरवाजों पर खड़ी हैं। एक स्त्री अपने दरवाजे की ओर दौड़ रही है।

हाशिए पर तुरञ्जदार गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १०९ क से पृष्ठ ११० क तक रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२६)

३६३—धनुषयज्ञ-दर्शन

(पृष्ठ १११ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३″ × ८५″

मकान के आँगन में ऊपर के कोने में बाएँ ओर धनुष रखा है। सामने राम तथा लक्ष्मण खड़े हैं। राम के दाहिने हाथ में फूलों का एक गजरा और लक्ष्मण के दाहिने हाथ में एक मोरछल भी है। राम के सामने, चित्र में बाएँ ओर, राजा जनक हाथों में एक गजरा लिये खड़े हैं। सामने तथा लक्ष्मण के पीछे ब्राह्मण, अनुचर आदि खड़े हैं। आँगन के चारों ओर हाशिए की ही तरह मेहराबदार दालान बनी है, जिनके प्रत्येक दर में एक दरवाजा है। चित्र में सब से नीचे सामने की ओर एक बड़ा लाल द्वार है और ऊपर आसमान है।

हाशिए पर गोल बादरूम है। पृष्ठ १११ क पर रामायण का पाठ है। अहल्योद्धार से यहाँ तक के चित्र एक ही कलम के हैं और बड़े रद्दी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१२७)

३६४—फुलवारी

(पृष्ठ ११३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१४ १/८" × १० ५/८"

दृश्य घनी फुलवारी का है, जिसमें नाना भाँति के वृक्ष, फूल आदि लगे हैं। चित्र के बीच में हौज़ तथा फव्वारे बने हैं। सामने बाएँ ओर फुलवारी के बीच में लक्ष्मण के दाहिने कंधे पर राम अपना दाहिना हाथ रखे खड़े हैं। दोनों ही के बाएँ हाथों में फूलों से भरे दोने हैं। दाहिने ओर सीता अपनी सखियों के साथ फूल तोड़ रही हैं। हौज़ के निकट, सखियों के मध्य में, सीता खड़ी हैं। ऊपर दाहिने कोने में एक मन्दिर है, जिसमें सोने के सिंहासन पर गिरिजा की बैठी मूर्ति है। पृष्ठिका में, बीच में, कमलों से युक्त पुष्करिणी है, जिसके तीन ओर सुनहले पक्के घाट, पुश्ता और बुर्ज बने हैं। चारों ओर घनी फुलवारी है, जिसमें यत्र-तत्र मोर आदि पक्षी तथा बन्दर हैं।

पृष्ठ ११२ क से लेकर पृष्ठ ११३ क तक रामायण का पाठ है। पृष्ठ ११२ से पृष्ठ-संख्या पूर्ववत् दी हुई है; अर्थात् जैसा कि इस चित्रावली की सूची के आरम्भ में लिखा गया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२८)

३६५—फुलवारी

(दूसरा दृश्य ; पृष्ठ ११४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७ ५/८" × ७ १/४"

इस चित्र में राम-लक्ष्मण फूल लेकर वापस जा रहे हैं। सीता अपनी सखियों के सहित गिरिजा के मन्दिर के निकट खड़ी हैं। शेष दृश्य पहले चित्र की भाँति है।

जंगला हाशिया। पृष्ठ ११४ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१२९)

३६६—गुरु-समीप-गमन

(पृष्ठ ११५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९ १/४" × ७ १/४"

फलों से आच्छादित अमराई में बाएँ ओर मृगचर्म पर विश्वामित्र बैठे हैं। उनके सामने फूलों से भरे दो दोनें रखे हैं और राम तथा लक्ष्मण हाथ जोड़े पलथी मारकर बैठे हैं। कुछ दूर पर चित्र में दाहिने ओर दो ऋषि ध्यान-मग्न हैं। वृक्षों पर बन्दर, मोर तथा अन्य जन्तु उछल-कूद कर रहे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१३०)

३६७—राम-लक्ष्मण का वार्तालाप

(पृष्ठ ११५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७¼″ × ६¾″

पुष्करिणी के निकट हरे-भरे मैदान में जमीन पर राम तथा लक्ष्मण आमने-सामने बैठे हैं। पृष्ठिका में ताड़ के पेड़, फूली झाड़ियाँ तथा हरियाली-युक्त विषम भूमि है। आकाश में पूर्ण चन्द्र तथा तारे उगे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३१)

३६८—प्रभात में राम-लक्ष्मण-संलाप

(पृष्ठ ११६ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ६½″

फलाच्छादित अमराई में बाएँ ओर गावतकिए के सहारे दाहिने हाथ में माला और बाएँ हाथ में कमल लिये सफेद बिस्तर पर राम बैठे हैं। उनके सामने लक्ष्मण बैठे उनका बायाँ पैर दाब रहे हैं। दाहिने ओर कुछ दूर पर मृगचर्म पर बैठे विश्वामित्र संध्या कर रहे हैं। आकाश में केसरिया रंग का सूर्य्य है। वृक्षों पर बन्दर तथा मोर आदि पक्षी बैठे हैं।

हाशिए पर फूलदार बादरूम है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३२)

३६९—गुरु-वन्दना

(पृष्ठ ११६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७½″ × ७½″

फलाच्छादित अमराई में बाएँ ओर मृगचर्म पर विश्वामित्र बैठे हैं। उनके सामने राम तथा लक्ष्मण हाथ जोड़े खड़े हैं और पाँच अन्य ऋषि बैठे हैं। दूर पर, दाहिने ओर पीछे मृगचर्म पर एक ऋषि ध्यानावस्थित हैं। वृक्षों पर बन्दर तथा मोर आदि पक्षी बैठे हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१३३)

३७०--मिथिलापुरवासियों का राम-दर्शन

(पृष्ठ ११७ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९¾″ × ८¼″

नगर के बाजार का दृश्य। इसमें सड़क के किनारे दालानों में दूकानें हैं। चित्र में नीचे बाएँ ओर विश्वामित्र तथा एक अन्य ऋषि राम-लक्ष्मण के साथ खड़े हैं। उनके सामने स्त्री-पुरुष-बालक हाथ जोड़े खड़े हैं। चित्र में सामने नीचे दोनों ओर विभिन्न पोशाक में बहुत से पुरुष खड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ ११७ ख तथा ११८ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३४)

३७१--धनुषयज्ञशाला में विश्वामित्र का स्वागत

(पृष्ठ ११८ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१४½″ × १०½″

चित्र में नीचे दाहिने ओर राम-लक्ष्मण तथा अन्य ऋषियों के साथ विश्वामित्र खड़े हैं। विश्वामित्र के सामने राजसी वस्त्र धारण किये राजा जनक झुककर विश्वामित्र का चरणस्पर्श कर रहे हैं। उनके पीछे चार सेनापति खड़े हैं।

महल के आँगन के बीच में विशाल धनुष रखा है। उसके चारों ओर सुन्दर-सुन्दर पोशाक पहिने और ढाल-तलवार आदि लिये राजा लोग पंक्ति से बैठे हैं। मण्डप के सामनेवाले दोनों कोने पर आसा लिये दो व्यक्ति खड़े हैं। पीछे के दाहिने कोने पर एक राजा खड़े हैं और बाएँ कोने पर कोई मुसाहब राजाओं की ओर मुख किये खड़े हैं। पीछे की ओर सजी हुई दोहरी दालान है। ऊपर बरामदे में स्त्रियाँ बैठी हैं।

बेलदार हाशिया है। पृष्ठ ११९ क तथा ११९ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३५)

३७२—धनुषयज्ञशाला में सीता का आगमन

(पृष्ठ १२० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१५″ × १०¾″

यज्ञशाला के चारों ओर राजा लोग ढाल-तलवार आदि लिये बैठे हैं। यज्ञमण्डप के किनारे, ऊपर कोने पर राजा जनक बैठे हैं। उनके पीछे एक सेवक चमर लिये खड़ा है और उनके सामने बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से राजा खड़े हैं। आगेवाला कोई युवक राजा अपना दाहिना हाथ उठाये है। ऊपर बाएँ कोने पर विश्वामित्र, एक अन्य ऋषि तथा राम-लक्ष्मण के साथ बैठे हैं। यज्ञमण्डप में ऊपर दाहिने कोने के पास कुछ युवराज लोग चित्र के दाहिने ओर मुँह किये खड़े हैं। उनके पीछे भी दो दूसरे युवराज खड़े हैं। यज्ञमण्डप में सामने की ओर हाथ में जयमाल लिये जानकी अपनी सखियों के साथ खड़ी हैं। पृष्ठिका में सजी हुई दोहरी दालान है, जिसके ऊपर बरामदे पर से स्त्रियाँ यज्ञशाला की ओर देख रही हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १२० ख तथा १२१ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३६)

३७३—निष्फल प्रयत्न

(पृष्ठ १२१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२ ५/८″ × ८ ५/८″

यज्ञशाला में बहुत से राजा लोग मिलकर धनुष उठाये हैं। बहुत से अन्य राजा ऊपर दाहिने कोने के पास खड़े जानकी आदि को निहार रहे हैं। इनके सामने दूसरे कोने के निकट जानकी अपनी सखियों के साथ माला लिये खड़ी हैं। ऊपर के बाएँ कोने के पास राम-लक्ष्मण ऋषियों के साथ बैठे हैं। उसी पंक्ति में दालान के निकट बहुत से देवता आदि बैठे हैं। दाहिने कोने में राजा जनक बैठे हैं। चित्र में नीचे दाहिने कोने के निकट कुछ राजा खड़े हैं। एक राजा बड़े गर्व से मण्डप की ओर चला जा रहा है। यज्ञशाला के पीछे सजी हुई एकहरी दालान है, जिसके ऊपर खिड़कियों में स्त्रियाँ खड़ी आपस में बातें कर रही हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १२२ क तथा १२२ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३७)

३७४—राम का धनुष तोड़ने के लिये उठना

(पृष्ठ १२३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२ ५/८″ × ८ ५/८″

महल के बाहर यज्ञशाला का दृश्य है। यज्ञशाला के चारों ओर दोहरी कतार में बहुत से राजा विविध वेशभूषा धारण किये हुए बैठे हैं। पीछे दालान के निकट की पंक्ति में बाएँ कोने में लक्ष्मण, विश्वामित्र आदि तथा अनेक देवता बैठे हैं। उसी पंक्ति में दाहिने कोने में राजा जनक बैठे हैं। यज्ञशाला के आँगन के बीच में विशाल धनुष रखा है। पीछे के बाएँ कोने से राम धनुष की ओर आ रहे हैं। धनुष के आगे दाहिने कोने में हाथ में जयमाल लिये जानकी अपनी सखियों के साथ खड़ी हैं। पीछे के दाहिने कोने में बहुत से राजा लोग खड़े हैं, जिनमें से एक अपना दोनों हाथ ऊपर उठाये राम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की ओर देख रहे हैं और एक अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर राम की ओर इशारा कर रहे हैं। पृष्ठिका में सजी हुई एकहरी दालान है, जिसके ऊपर खिड़कियों में बहुत-सी स्त्रियाँ खड़ी आपस में बातें कर रही तथा यज्ञशाला की ओर देख रही हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १२३ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३८)

३७५—धनुष-भञ्जन

(पृष्ठ १२४ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८ वीं शती ; माप भीतरी—१२″ × ८¾″

महल के बाहर यज्ञशाला का दृश्य है। यज्ञशाला के चारों ओर दोहरी कतार में विविध वेशभूषाधारी राजा लोग बैठे हैं, जिनमें बहुत से नीची दृष्टि किये हैं। पीछे, दालान के निकट की पंक्ति के बाएँ कोने में, लक्ष्मण, विश्वामित्र आदि तथा अनेक देवता बैठे हैं। उसी पंक्ति में दाहिने कोने में राजा जनक बैठे हैं। उनके सामने हाथ में माला लिये जानकी अपनी सखियों के साथ खड़ी हैं। यज्ञशाला के आँगन में, बीच में, चित्र के बाएँ ओर मुँह किये शिव-पिनाक की प्रत्यञ्चा खींचे राम खड़े हैं। पीछे के दाहिने कोने में स्त्रियों का एक झुण्ड विविध वाद्य-यंत्र बजाता हुआ खड़ा है, जिनमें से एक स्त्री राम के ऊपर फूल फेंक रही है। राम के सामने एक राजा अपना बायाँ हाथ, तथा पीछे के बाएँ कोने के निकट भी कुछ राजा लोग हाथ उठाकर खड़े हैं और बाजा बजाती हुई स्त्रियों पर दृष्टिपात कर रहे हैं। पृष्ठिका में सजी एकहरी दालान है, जिसके ऊपर खिड़कियों में खड़ी स्त्रियाँ यज्ञशाला की ओर देख रही हैं।

बेलदार हाशिया है। पृष्ठ १२४ ख तथा १२५ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१३९)

३७६—वरमाला

(पृष्ठ १२५ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१२⅝″ × ८½″

यज्ञशाला के चारों ओर दोहरी कतार में विविध वेशभूषा धारण किये हुए राजा लोग तथा सरदार आदि बैठे हैं। दालान के निकट की कतार में बाएँ ओर से लक्ष्मण, विश्वामित्र तथा अनेक देवता लोग बैठे हैं। यज्ञशाला के आँगन में बीच में राम खड़े हैं। उनके सामने जानकी हाथ में जयमाला लिये हुए राम को पहनाने के लिये झुकी हुई खड़ी हैं। जानकी के पीछे बहुत-सी स्त्रियाँ खड़ी हैं, जिनमें से एक के हाथ में मङ्गल-थाल है। आँगन के सामने के दाहिने कोने के पास शिव तथा अनेक राजाओं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ राजा जनक खड़े हैं। पीछे के दाहिने कोने के निकट कुछ राजा लोग खड़े स्त्रियों पर दृष्टिपात कर रहे हैं। पृष्ठिका में सजी दालान है, जिसके ऊपर की सजी हुई दालान में स्त्रियाँ खड़ी नीचे यज्ञशाला की ओर देख रही हैं और आपस में बातें कर रही हैं। आकाश में देवता लोग अपनी शक्तियों-सहित विमानों में बैठे हैं और राम-जानकी पर पुष्प-वृष्टि कर रहे हैं।

हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है। पृष्ठ १२६ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४०)

३७७—जल्पना

(पृष्ठ १२६ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३$\frac{3}{8}$" × ९"

यज्ञशाला के चारों ओर विविध वेशभूषा धारण किये तथा ढाल-तलवार आदि शस्त्रास्त्र लिये राजा लोग दोहरी कतार में बैठे हैं। दालान के निकटवाली कतार में बाएँ कोने से विश्वामित्र तथा देवता लोग बैठे हैं। उसी कतार में दाहिने ओर अपना दाहिना हाथ बढ़ाये राजा जनक दोजानूँ बैठे हैं। यज्ञशाला के आँगन में इधर-उधर धनुष के टुकड़े तथा फूल बिखरे पड़े हैं। बाएँ कोने से राम और लक्ष्मण यज्ञशाला की वेदी से बाहर जाते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। दाहिने कोने के निकट कुछ अनुचर हाथ में अशरफी का तोड़ा लिये खड़े हैं। कुछ स्त्रियाँ यज्ञशाला के निकट खड़ी हैं तथा अन्य स्त्रियाँ दालान के पीछेवाले कमरे के द्वार से दालान में होकर आ रही हैं। ऊपर से कुछ स्त्रियाँ खिड़कियों से यज्ञशाला देख रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १२७ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४१)

३७८—परशुराम-आगमन

(पृष्ठ १२७ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३$\frac{3}{8}$" × ९$\frac{3}{4}$"

यज्ञशाला में चारों ओर राजा लोग भिन्न-भिन्न मुद्रा में खड़े हैं। कुछ के चेहरे पर घबराहट, कुछ के चेहरे पर आदर, कुछ के चेहरे पर कुतूहल तथा कुछ के चेहरे पर व्यङ्ग प्रकट है। वेदी के सामने बाएँ कोने से परशुराम झपटे हुए आ रहे हैं। इनके सामने राजा जनक हाथ जोड़े खड़े हैं। जनक के पीछे एक राजा दण्डवत् कर रहे हैं। परशुराम से हटकर कुछ ऊपर की ओर विश्वामित्र राम के कन्धे पर अपना दाहिना हाथ रखे दो अन्य ऋषियों तथा देवताओं के साथ खड़े हैं। विश्वामित्र के पीछे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथ जोड़े ब्राह्मण खड़े हैं। पीछे सजी दालान है, जिसके ऊपर खिड़कियों से सहमी हुई स्त्रियाँ यज्ञशाला की ओर देख रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १२८ क, ख में तथा पृष्ठ १२९ क, ख में रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४२)

३७९—परशुराम-लक्ष्मण-संवाद

(पृष्ठ १३० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—$१३'' \times ९\frac{१}{२}''$

यज्ञशाला के चारों ओर राजा लोग खड़े हैं। दाहिने ओर बीच में परशुराम परशु आदि लिये खड़े हैं। सामने राम-लक्ष्मण, राजा जनक तथा विश्वामित्र, उनके पीछे बहुत से ऋषि तथा राजा लोग खड़े हैं। पीछे दाहिने ओर एक राजा अपने दोनों हाथों से मुँह ढाँके बकैयाँ पड़े परशुराम आदि को देख रहे हैं। पृष्ठिका में सजी दालान के भीतर कमरे के तीन दरवाजे हैं, जिनपर चिकें पड़ी हैं। ऊपर की दालान के बीच दर में अन्य स्त्रियों के बीच जानकी अपनी माँ के पास शिर नीचा किये खड़ी हैं। दूसरे दरों में भी स्त्रियाँ उदास होकर खड़ी यज्ञशाला की ओर देख रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १३० ख तथा पृष्ठ १३१ क, ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४३)

३८०—विष्णुचाप-कर्षण

(पृष्ठ १३२ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—$१३\frac{३}{४}'' \times ९\frac{३}{४}''$

यज्ञशाला में चारों ओर राजा लोग खड़े हैं। दाहिने ओर बीच में परशुराम हाथ जोड़े खड़े हैं। उनका परशु भूमि पर पड़ा है। उनके सामने राम विष्णुचाप पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर खींचे हुए हैं। उनके पीछे हाथ जोड़कर लक्ष्मण खड़े हैं। लक्ष्मण के पीछे राजा जनक, विश्वामित्र तथा बहुत से ऋषि-मुनि और राजा लोग हाथ जोड़े खड़े हैं। पृष्ठिका में सजी दालान के भीतर कमरों के दरवाजों पर चिकें पड़ी हैं। ऊपर दालान के बीच दर में जानकी अपनी माँ की गोद में बैठी हैं। उनके निकट दो अन्य स्त्रियाँ हैं। अन्य दरों में भी स्त्रियाँ हैं, जो आपस में बातें कर रही हैं और यज्ञशाला की ओर देख रही हैं। आकाश में देवता लोग विमानों पर बैठे राम आदि पर पुष्पवृष्टि कर रहे हैं और गन्धर्व लोग बाजे बजा रहे हैं। आँगन में ढेर-के-ढेर फूल बिछ गये हैं।

हाशिए पर दोहरा सहरेसा है। पृष्ठ १३२ ख पर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१४४)

३८१—पत्रिका-प्रेषण

(पृष्ठ १३३ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३¼″ × ८½″

उसी यज्ञशाला में पीछे की दालान के निकट दाहिने ओर राजा जनक बैठे पत्र लिखा रहे हैं। उनके सामने मंत्री बैठे पत्र लिख रहे हैं। पास में मसिपात्र रखा है और उनके पीछे एक पण्डितजी बैठे हैं। उसी पंक्ति में बाएँ ओर विश्वामित्र के आगे राम-लक्ष्मण बैठे हैं। बीच आँगन में कुछ लोग खड़े हैं, कुछ चल-फिर रहे हैं और कुछ नमस्कार आदि कर रहे हैं। दो सेवक पीले रङ्ग की पोशाक पहने, वगल में गदा दवाये और हाथों में लपेटा हुआ पत्र लिये खड़े हैं। सामने राजा लोग यज्ञशाला से बाएँ ओर जाते दिखलाई दे रहे हैं। पृष्ठिका में सजी हुई दालान के भीतर दरवाजों पर चिकें पड़ी हैं। ऊपर की दालान के प्रत्येक दर में स्त्रियाँ खड़ी आपस में बातें कर रही हैं और आँगन की ओर देख रही हैं।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १३३ ख तथा पृष्ठ १३४ क, ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४५)

३८२—कुंकुम-पत्रिका

(पृष्ठ १३५ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३¾″ × ८½″

राजा दशरथ अपने महल के आगे छत पर सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर बैठे पत्र पढ़ रहे हैं। सिंहासन पर रत्न-जटित छत्र लगा है। उनके पीछे एक सेवक चमर और दूसरा मोरछल लिये खड़ा है। उनके पीछे बहुत से सरदार खड़े हैं। राजा दशरथ की ओर मुँह किये उनके सिंहासन के एक ओर भरत तथा दूसरे ओर शत्रुघ्न खड़े हैं। भरत-शत्रुघ्न के पीछे कुछ दूर पर पीले रङ्ग की पोशाक धारण किये राजा जनक के दोनों पत्रवाहक हाथ जोड़े खड़े हैं। उनके पीछे एक प्रहरी आसा पर मुँह टेके खड़ा है। चित्र में पृष्ठिका के निकट दाहिने ओर चार सरदार अपनी-अपनी ढाल पर हाथ रखे बैठे हैं। सामने की ओर भी जँगलेदार मुतक्के से सटे पीठ किये कुछ सरदार, मुसाहब आदि बैठे हैं। सामने दाहिने ओर दरवाजे के ऊपर नौबत झर रही।

चम्पा के फूल का हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१४६)

३८३——शुभ-समाचार

(पृष्ठ १३५ ख)

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी——७३/४″ × ७१/२″

रनिवास के आँगन में दाहिने ओर राजा दशरथ बाएँ हाथ में राजा जनक का पत्र लिये खड़े हैं। उनके सामने तीनों रानियाँ शुभ-समाचार सुन रही हैं। रानियों के पीछे बहुत-सी दासियाँ आदि खड़ी हैं। राजा दशरथ के पास सामने की ओर भरत-शत्रुघ्न खड़े आपस में बातचीत कर रहे हैं। आँगन की पृष्ठिका में सजी दालान है, जिसके भीतर कमरे के दरवाजे पर चिक पड़ी हुई है। आँगन के अन्य तीन ओर ऊँची दीवालें हैं।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर तथा पृष्ठ १३६ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४७)

३८४——अन्तःपुर में उत्सव

(पृ० १३६ ख)

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी——१३१/२″ × ९३/४″

इस चित्र में दो दृश्य हैं। ऊपर अन्तःपुर में पीछे की ओर सजी हुई बड़ी दालान के एक दर में तीनों रानियाँ बैठी आभूषण आदि उपहार बाँट रही हैं। प्रत्येक रानी के पास वस्त्र, आभूषण आदि रखे हैं। दासियाँ खड़ी हैं। आँगन में बाएँ ओर नाना प्रकार के बाजे बजाती हुई स्त्रियों का एक गोल है, जिसके आगे एक नर्तकी नृत्य कर रही है। आँगन में इधर-उधर स्त्रियाँ उपहार आदि लिये जा रही हैं। महल के द्वार पर बहुत से ब्राह्मण तथा स्त्रियाँ एकत्र हैं। कुछ स्त्रियाँ मङ्गल-कलश आदि लिये द्वार से भीतर जा रही हैं। एक स्त्री भीतर से मालायें लाकर ब्राह्मणों को दे रही है। चित्र में बाएँ ओर एक ब्राह्मण देवता उपहार में प्राप्त गाय को हँकाये ले जा रहे हैं। गाय का बछड़ा पीछे-पीछे फुदकता जा रहा है।

छोटे-छोटे बादरूम तथा फूलकारी का हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४८)

३८५——बारात की तैयारी

(पृष्ठ १३७ क)

शैली——राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी——७३/४″ × ७१/४″

महल के आगे छत पर राजा दशरथ सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर चित्र के दाहिने ओर मुँह किये बैठे हुए हैं। ऊपर जड़ाऊ छत्र तना है। राजा दशरथ के पीछे बहुत से लोग खड़े हैं. जिनमें से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक के हाथ में मोरछल और एक दूसरे के हाथ में चमर है। राजा के दाहिने ओर सिंहासन के निकट उनकी ढाल तथा तलवार रखी है। उनके सिंहासन के दोनों ओर सरदार लोग पंक्ति में खड़े हैं। सिंहासन के सामने भरत-शत्रुघ्न हाथ जोड़े खड़े हैं। उनके पीछे बहुत से मुसाहब लोग भी हाथ जोड़े खड़े हैं। महल के दरवाजे पर दो पहरेदार दोनों ओर दरवाजा टेके खड़े हैं। बाएँ ओर सजे हुए रथ खड़े हैं और हाथी-घोड़े तथा नालकी सजाये जा रहे हैं।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर तथा पृष्ठ १३७ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१४९)

३८६--बारात की तैयारी

(पृष्ठ १३८ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३″ × ८¾″

महल के बाहर बारात की तैयारी है। बाएँ ओर दो चौकड़ियाँ सटी-सटी चित्र के दाहिने ओर रुख किये खड़ी हैं। उनके बगल में महल के निकट एक सजी हुई नालकी रखी है और कहार लोग पास में खड़े हैं। सामने क्रम से एक तामजाम तथा एक बहली तैयार लगी है। घुड़सवार खड़े हैं। दाहिने ओर महल के निकट बाजावाले हैं। उनके बाद एक आदमी निशान लिये खड़ा है। फिर क्रमशः सजा घोड़ा, एक अम्बारीदार हाथी, उसके पीछे दो बिना अम्बारी के सजे हाथी और एक नगाड़ा कसा हाथी है। सामने बीच में एक घुड़सवार घोड़ा कुदा रहा है। पृष्ठिका में प्रासाद की ऊँची दीवाल है और बीच में फाटक है, जिस पर दोनों ओर प्रहरी बैठे हैं। फाटक पर दो व्यक्ति खड़े हैं, जिनमें से एक के हाथ में बड़ा मढ़ा हुआ पंखा है।

फूलकारी हाशिया है। पृष्ठ १३८ ख पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५०)

३८७--बारात का प्रस्थान

(पृष्ठ १३९ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३″ × ९¾″

हरे-भरे मैदान के बीच में, चित्र में बाएँ ओर से दाहिने ओर, बारात के जाने का दृश्य है। बारात में हाथी, घोड़े, पालकी, नालकी, रथ, बहली, पैदल, ऊँट आदि सब कुछ हैं। चित्र में बाएँ ओर के निकट चार घोड़ों के एक सजे हुए रथ पर राजा दशरथ बैठे हैं। उनके रथ के दाहिने ओर सफेद घोड़े पर भरत और उनके रथ के बाएँ ओर नील-वर्ण घोड़े पर शत्रुघ्न, घोड़े कुदाते हुए जा रहे हैं। रथ के पीछे घुड़सवार, परिचारक आदि हैं। सामने बाएँ ओर कुछ लोग हाथी पर बैठे जा रहे हैं। बारात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में आगे-आगे हाथियों पर झंडे लिये हुए आदमी हैं। एक दूसरे हाथी पर नगाड़ा है और उसके पीछे बाजेवाले हैं। बहुत से बाराती पैदल जा रहे हैं। सामने दाँहिने ओर तथा पृष्ठिका में जङ्गल के पशु-पक्षी भाग रहे हैं।

चित्र बेड़े बल में है। हाशिए पर गोमूत्रिका बेल है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५१)

३८८—आतिथ्य-सम्भार

(पृष्ठ १३९ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९″ × ७३⁄४″

चित्र में नदी के किनारे कनातों से घिरे बहुत से तम्बू लगे हुए हैं, जिनमें बाराती लाग बैठे हैं। सामने के बड़े तम्बू के नीचे वशिष्ठ मुनि के साथ राजा दशरथ बैठे हैं। उनके सामने भरत-शत्रुघ्न तथा मुसाहब आदि बैठे हैं। पास में थालियाँ आदि रखी हैं। उन लोगों के पीछे परिचारकगण खड़े हैं। कनात के बाहर रोशनचौकी बैठी है। घोड़े तथा हाथी आदि खड़े है। एक आदमी एक घोड़े को नदी में पानी पिला रहा है। पीछे के एक शामियाने के नीचे कुछ लोग पत्तल पर भोजन कर रहे हैं। चित्र में बाएँ ओर नदी पर पुल बँधा है, जिसपर से दो व्यक्ति नदी पार कर रहे हैं।

चित्र के ऊपर रामायण का पाठ है। फूलकारी हाशिया है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५२)

३८९—अगवानी

(पृष्ठ १४० क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—७१⁄४″ × ६१⁄२″

चित्र में हरे-भरे मैदान में बाएँ ओर से बारात आ रही है, जिसमें आगे-आगे हाथी हैं, उनके पीछे नालकी आदि हैं। फिर चार सफेद घोड़ों के रथ पर राजा दशरथ हैं। उनके पार्श्व में सामने सफेद घोड़े पर भरत हैं। पृष्ठिका की ओर नील-वर्ण घोड़े पर शत्रुघ्न हैं। इधर-उधर घोड़ों पर तथा पैदल बहुत से बाराती, परिचारक, निशान और पंखावाले हैं। चित्र के दाहिने ओर सामने के कोने के पास राजा जनक अपने कुटुम्बियों तथा परिचारकों के साथ खड़े हैं। बहुत से आदमी शिर पर भिन्न-भिन्न वस्तुओं से भरे थाल लिये हैं। सामने कुछ लोग घोड़े पर भी हैं। चित्र के मध्य में दाहिने रुख एक ऊँचा सोने का जड़ाऊ सिंहासन रखा हुआ है, जिसपर जड़ाऊ छत्र है।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचरितमानस चित्रावली (१५३)

३९०—पुरस्कार-वितरण

(पृष्ठ १४० ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—९$\frac{3}{8}$" × ७$\frac{3}{8}$"

हरे-भरे मैदान के बीच बाएँ ओर से बारात आकर खड़ी है। बीच में सफेद चादर बिछी है, उसमें दाहिने रुख सोने का छत्रदार जड़ाऊ सिंहासन रखा है, जिसपर राजा दशरथ बैठकर पुरस्कार-वितरण कर रहे हैं। उसके सामने फर्श पर भिन्न-भिन्न वस्तुओं से भरे थाल रखे हैं। एक आदमी हाथ बढ़ाकर राजा दशरथ के हाथ से एक थाल ले रहा है। इधर-उधर बहुत से आदमी खड़े हैं। राजा दशरथ के पीछे कुछ परिचारक मोरछल, निशान आदि लिये खड़े हैं। उनके पीछे घोड़ों पर भरत तथा अन्य कुँवर लोग हैं। हाथी, घोड़े, ऊँट, रथ, बाजावाले आदि पृष्ठिका की ओर हैं। पृष्ठिका में बहुत से मुसाहब और परिचारकों के बीच शत्रुघ्न घोड़े पर हैं। दो अम्बारीदार हाथी एक दूसरे से सटे हुए बगल-बगल में बाएँ कोने में भी हैं।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५४)

३९१—जनवासा

(पृष्ठ १४१ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप—१०$\frac{1}{4}$" × ७$\frac{1}{4}$"

किसी मकान के बहुत बड़े फाटक के सामने कुछ व्यक्ति फर्श पर लाल कपड़ा बिछा रहे हैं, जिसपर राजा दशरथ बारातियों सहित खड़े हैं। सामने की ओर उनकी बगल में भरत-शत्रुघ्न तथा अन्य राजकुमार लोग खड़े हैं। पृष्ठिका में मकान की दीवाल के आगे बाजावाले खड़े बाजा बजा रहे हैं। सामने की ओर हाथी, घोड़े, ऊँट आदि पर सवार लोग सुस्ता रहे हैं। राजा दशरथ के सामने एक व्यक्ति खड़ा पंखा हाँक रहा है तथा दो व्यक्ति बारातियों की अगवानी कर रहे हैं।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५५)

३९२—सुर-वैभव

(पृष्ठ १४१ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{3}{8}$" × ७$\frac{1}{4}$"

एक सजे हुए दालान में सोने के छत्रदार जड़ाऊ सिंहासन पर राजा दशरथ बैठे हैं। दोनों ओर के खम्भों के निकट भरत तथा शत्रुघ्न बैठे हैं। इधर-उधर के दरों में बहुत से व्यक्ति हाथ जोड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खड़े हैं। दालान के आँगन में कुछ लोग सामने पत्तल पर भोजन कर रहे हैं, कुछ लोग बैठे सुस्ता रहे हैं और कुछ लोग खड़े हैं। सामने आँगन की दीवाल और प्रवेशद्वार है।

फूलकारी हाशिया है। चित्र के ऊपर तथा पृष्ठ १४२ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५६)

३९३—राम-लक्ष्मण का आगमन

(पृष्ठ १४२ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—१३$\frac{3}{4}$″ × ९$\frac{3}{4}$″

जनवासे के फाटक के बाहर चित्र में बाएँ ओर राजा दशरथ खड़े हैं। उनके बगल में सामने की ओर भरत तथा शत्रुघ्न खड़े हैं। राजा के पीछे वशिष्ठ मुनि तथा अन्य बहुत से बाराती और परिचारकगण मोरछल और निशान लिये खड़े हैं। भरत और शत्रुघ्न के पार्श्व में बहुत से अन्य राजकुमार खड़े हैं। दशरथ के सामने चित्र में दाहिने ओर विश्वामित्र, राम-लक्ष्मण तथा जनकपुरवासियों के साथ, खड़े हैं।

वेलदार हाशिया है। १४३ क पर रामायण का पाठ है।

रामचरितमानस चित्रावली (१५७)

३९४—प्रणमन

(पृष्ठ १४३ ख)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—११$\frac{3}{4}$″ × ८$\frac{1}{2}$″

चित्र में दो दृश्य हैं। जनवासे के फाटक के बाहर चित्र में बाएँ ओर राजा दशरथ के साथ आये हुए बाराती, अनुचर आदि हैं, जिनमें से दो के हाथ में मोरछल, एक के हाथ में निशान और एक के हाथ में पंखा है। उनके आगे राम-लक्ष्मण राजा दशरथ के चरण छू रहे हैं और राजा दशरथ झुककर उनके पीठ पर हाथ फेर रहे हैं। चित्र में दाहिने ओर जनकपुरवासी खड़े हैं। उनके आगे विश्वामित्र खड़े वशिष्ठ मुनि को हाथ जोड़ रहे हैं। वशिष्ठ मुनि भी उनके सामने हाथ जोड़े खड़े हैं। सामने दाहिने ओर राम तथा भरत और बाएँ ओर लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न आपस में गले-गले मिल रहे हैं। सामने के बाएँ कोने के निकट कुछ राजकुमार खड़े हैं और सामने के दाहिने कोने के निकट एक अनुचर के साथ एक राजा खड़े हैं। आकाश से विमानों पर बैठे देवता लोग पुष्प-वर्षा कर रहे हैं। भूमि पर फूल बिखरे पड़े हैं।

फूलकारी हाशिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३९५—अगवानी

(पृष्ठ १४४ क)

शैली—राजस्थानी ; १८वीं शती ; माप भीतरी—८$\frac{3}{4}$" × ७$\frac{1}{4}$"

सजी हुई दालान के बाहर आँगन में कारचोबी गद्दी-तकिए पर राजा दशरथ बैठे हैं। उनके बाएँ ओर वशिष्ठ मुनि बैठे हैं। दाहिने ओर विश्वामित्र अपने शिष्य के साथ बैठे हैं। राजा दशरथ के सामने भूमि पर चारो भाई हाथ जोड़े बैठे हैं, जिनके पीछे अन्य कुँवर लोग बैठे हैं। राजा दशरथ के पीछे उनके अनुचर खड़े हैं, जिनमें से एक के हाथ में चमर, दूसरे के हाथ में उपहार की वस्तुओं से भरी एक थाली और मोरछल है तथा तीसरे के हाथ में भी मोरछल है। दालान में मुसाहब, सरदार आदि बैठे हैं। आँगन में गद्दी के निकट भी कुछ मुसाहब बैठे हैं और एक व्यक्ति राजा दशरथ के हाथ से उपहार की थाली ले रहा है। सामने बाएँ कोने के निकट बहुत से व्यक्ति खड़े हैं। कुछ हटकर तीन-चार सरदार गद्दी की ओर मुख करके खड़े हैं। सामने के दाहिने कोने में कुछ लोग उपहार लेकर विदा हो रहे हैं। चित्र के ऊपर रामायण का पाठ है। फूलकारी हाशिया है।

पृष्ठ १४४ ख पर "प्रथम बरात लगन तै आई" से लेकर "उपमान कोउ कह दास तुलसी क" तक रामायण का पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—ईरान का युवक

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—७ १/२″ × ३ ३/४″

दाहिने रुख का डेढ़चश्मी चेहरा। शिर पर कलँगीदार सफेद लंबा टोप, दाहिने हाथ में असा तथा बाएँ हाथ में तीन पत्तियाँ फीरोज़ी दुपट्टा। गुलाली चोगा जिसपर सोने के वृक्ष और पक्षी बने हैं। सादी पृष्ठिका में सोने के पेड़-पाला।

———

२—ईरान का युवक

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—७ ३/८″ × ३ ३/४″

बाएँ रुख का डेढ़चश्मी चेहरा। शिर पर सतरंगे डोरिया का मुड़ासा, जिसपर कलँगी। काले किमख़्वाब का जामा। बाएँ पहुँचे पर लाल रंग की कमान लटकाये और दोनों हाथों से एक तीर लिये है। सारी पृष्ठिका पर सोने के पेड़-पालो।

———

३—मुला की शबीह

(स्याह कलम)

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—६ ७/८″ × ३ ७/१६″

मुला दाहिने रुख दोजानूँ बैठे हैं। लम्बी दाढ़ीवाला सवाचश्म चेहरा। सिर पर कुलाहदार मुडासा, जिसमें फूल का एक छड़ खोंसा है। हाथों में एक किताब, आगे कलम, दावात और बस्ता। आगे-पीछे पत्थर के ढोंके तथा पेड़-पालो।

———

४—मुला की शबीह

(स्याह कलम)

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—६ ३/४″ × ३ ७/८″

बाएँ रुख का डेढ़चश्मी चेहरा। सिर पर कुलाहदार मुडासा बाँधे, नीचा चोगा पहने तथा बाएँ कंधे पर दुपट्टा डाले और बाएँ हाथ में लम्बी छड़ी लिये खड़े हैं। चोगा में सोने के छः बटन दिखलाई दे रहे हैं। आगे पेड़-पालो। पृष्ठिका सादी।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—ईरान का एक युवक

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—५७/८" × ४३/८"

दाहिने रुख का डेढ़चश्मी गुलाबी चेहरा, खसखसी दाढ़ी। माथे में बिन्दी, शिर पर सुनहरी पगड़ी, नीला चोगा, उसके नीचे अन्य सफेद वस्त्र। गले में हलके फालसई रंग का दुपट्टा तथा चोगा के ऊपर पीली लुंगी। गले में मोती की माला। रोकने की मुद्रा में बायाँ हाथ आगे बढ़ा और दाहिना हाथ सिर पर रखा है। पृष्ठिका सादी।

६—ईरान का एक युवक और एक युवती

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—६५/१६" × ४१३/१६"

खड़ी युवती पीछे मुड़कर युवक की ओर देख रही है। युवक जमीन पर घुटने टेककर अपने दाहिने हाथ से युवती का दाहिना हाथ पकड़े है और बाएँ हाथ से एक सफेद प्याला उसकी ओर बढ़ाये हुए है। युवती सोने का मुकुट पहने है, जिसमें रत्न जड़े हैं और काले पर की कलँगी लगी है। मुकुट में सुनहरी छींट का सुनहरे झब्बे से युक्त लाल किमख़्वाब तथा लाल नीली डोरिया युक्त सफेद कपड़ा लगा है। मोती की लड़ी से मुकुट गले में बँधा है। दाहिने कान में रत्नों की लड़ी लटक रही है। युवती दाहिने रुख सवाचश्मी चेहरे से खड़ी है और पैर तक का लाल गरेवाँ का नीला चोगा पहने है। उसके ऊपर समूर लगा लाल अस्तर का सुनहरा कबा है। चोगा में सामने फूलदार सोने के छः बटन हैं। गले में बहुत लम्बा सुनहरे जड़ाऊ टिकरे का मोतियों का हार है। पैर में लाल पाजामा और सुनहरी कामदार जूती है। बाएँ हाथ को कबा के भीतर ही रखकर उसे गले तक उठाये है और दाहिने हाथ से बाईं ओर का दामन पकड़े है। बाईं आस्तीन युवक के हाथ के आगे से लटक रही है।

युवक सुनहरा मुडासा बाँधे है, उसपर सफेद पर की कलँगी है। सुनहरे गले का लाल चोगा पहने है। गले में लटका हुआ एक जड़ाऊ टिकरा है। चोगा में चार सुनहरे बटन हैं। कमर में सुनहरे जड़ाऊ टिकरे से युक्त कमरबन्द है और बाईं ओर सफेद किमख़्वाब का कमरबन्द लटक रहा है। पैर में सुनहरे मीनाकारी किमख़्वाब का पाजामा और काला जूता है।

युवक के पीछे एक चँगेरी में एक ऊँचे गले की मीनादार सुनहरी सुराही, एक लाल चीन की सुनहरे काम की नीचे गले की सुराही और एक तोड़ा रखा है। चँगेरी लाल रंग की तथा सुनहरी पच्चीकारी की हुई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७—विदेशी वृद्ध व्यक्ति

(स्याह कलम)

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—४½" × २⅞"

बाएँ रुख का डेढ़चश्मी चेहरा। शिर पर प्राचीन छज्जेदार टोप। घनी काली मूँछ तथा लम्बी अधपकी दाढ़ी। लम्बा चोगा, उसपर पेट तक की सदरी तथा दोनों कंधों पर फैला दुपट्टा ओढ़े और पैर में जूता पहने हुए। चोगे में दाहिने कंधे पर आगे जेब बना हुआ। पृष्ठिका सादी। यह चित्र पार्चमेंट पर बना है।

८—अधेड़ शराबी

(स्याह कलम)

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—६७⁄₁₆" × ३¾"

प्रसन्न चित्त, सिर पर लटपटी पगड़ी। लम्बी चोंचदार नाक। ओठ के नीचे तथा गले में हलकी दाढ़ी। तन पर खुले गले का लम्बा चोगा पहने दाहिने जानूँ बैठे हैं। उठे हुए बाएँ घुटने के पीछे दोनों हाथ आपस में बाँधे हैं। बाएँ पैर के पीछे से निकलकर पीठ पर से होता हुआ दुपट्टा दाहिने हाथ के भीतर से होकर आगे लटक रहा है। आगे एक टेढ़े मुँह की सुराहीदार तुमड़ी तथा एक कटोरा रखा है। सिर पर तीन फूल की एक डाल खोंसी है। दाहिने ओर एक चट्टान पर ठूँठे पेड़-पालो हैं।

९—एक रमणी की शबीह

(स्याह कलम)

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—५½" × ३½"

नंगा सिर, बाल खुले। सिर पर बीच में एक पर खोंसा हुआ। दहिने हाथ में प्याला तथा बाएँ में सुराही। तन पर लंबा चोगा और दुपट्टा। पृष्ठिका में पेड़-पालो, आसमान में बादल।

चित्र के पीछे फारसी में लेख।

१०—मर्त्तङ्ग घोड़ा

शैली—ईरानी ; १७वीं शती ; माप—३¼" × २"

घाड़ा बहुत ही दुर्बल हो गया है। हाड़-मात्र शेष रह गये हैं, फिर भी खड़ा है। ऊपर बैठी हुई चिड़िया उसे नोंच रही हैं।

उस्ताद रामप्रसाद ने प्राचीन चित्र से नकल किया। मूल चित्र का समय १७वीं शती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—बाज़ पक्षी

शैली—आरम्भिक मुग़ल ; १६वीं-१७वीं शती ; माप—५ ७/८″ × ३ १/२″

एक छोटी-सी टेकरी पर एक बाज़ बैठा है। पास का पेड़ "सूम" का मालूम पड़ता है। "सूम" भाँग की एक जाति है और हिंदूकुश पहाड़ के उत्तरी प्रांत में उत्पन्न होता है। यही वैदिक "सोम" है।

२—नमाजियों पर सारस

शैली—मुग़ल ; १६वीं-१७वीं शती ; माप—८″ × ४ ५/८″

एक मसजिद में बहुत से आदमी कतारें बाँधे बैठे हैं। मेम्बर पर हरा लबादा पहने मौलवी खड़ा है। मालूम होता है कि वह कुछ पढ़ रहा था। इतने में ही सारस का एक जोड़ा उन लोगों पर अचानक टूट पड़ा और चोंच मारने लगा, जिससे उन लोगों का ध्यान भंग हो गया। सब उन सारसों की ओर देख रहे हैं।

इस चित्र का संबंध अनवार सुहेली की एक कथा से जान पड़ता है। पुश्त पर कता है उसमें "अलकातिब असग़र उल्ला फ़क़ीहल मुज़निब" लिखा है और हाशिए पर लिखा है—"मीर अली"। इसका तात्पर्य यह जान पड़ता है कि यह सुलिपि मीरअली शैली की है। चित्र में भी चित्रकार का नाम लिखा हुआ है, पर वह पढ़ा नहीं गया। "अमल" के बाद 'रे', 'ऐन', 'मीम' और 'अलिफ़' ये अक्षर पढ़े जाते हैं।

(दाता--राजा श्री कृष्णदत्त दूबे, जौनपुर)

३—आखेट

(स्याह कलम)

शैली—मुग़ल ; १७वीं शती ; माप—७ १/१०″ × १२ ३/४″

हथिनी पर बैठकर जहाँगीर ने शेर का शिकार किया है। दूसरी हथिनी पर कोई सरदार उसके साथ है। शिकार में हाथी नहीं ले जाये जाते। घुड़सवार भी हैं। जहाँगीर के हाथ में बन्दूक है। वह घूमकर एक गजारोही सरदार की तरफ देख रहा है और वह सरदार उसे सलाम कर रहा है। नीचे खड़े दो प्यादे भी उसे सलाम कर रहे हैं। इन्हीं प्यादों के पास एक शेर पड़ा है। शिकार में यही शेर मारा गया है। प्यादों में से एक उँगली से बता रहा है कि इसका जोड़ा उस ओर है।

सिवाय काठियावाड़ के अब भारतवर्ष में सिंह कहीं नहीं होते। काठियावाड़ में अब भी बिना-केसर के इने-गिने सिंह बचे हैं। किन्तु १६ वीं और १७ वीं शती के आरंभ में वे हिन्दुस्तान में बहुता-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यत से पाये जाते थे, यहाँ तक कि उनके कारण यात्रा करना मुश्किल था। मुग़ल बादशाहों और उनके उमराओं को सिंह का आखेट बहुत रुचता था। यही कारण है कि बाघ के आखेट के चित्र शायद ही मिलते हैं।

इस चित्र में जहाँगीर ने एक सिंह का शिकार किया है। यह एक वास्तविक घटना थी; इतना ही नहीं, बल्कि इसका विवरण भी उसने आत्मचरित में किया है। उसी के शब्दों में—

"दे०—महीने की दसवीं तारीख को शिकारी ख़बर लाये कि बरी दोआब के रहीमाबाद परगने के पास एक सिंह है। मैंने इरादत खाँ और फिर दई खाँ को हुक्म दिया कि सिपाहियों को लेकर जंगल घेर लें। इसके बाद मैं हाथी पर सवार होकर वहाँ पहुँचा। पहले तो जंगल की सघनता से सिंह भलीभाँति दिखलाई न पड़ा, किन्तु जब मेरा हाथी बढ़ा तो वह सामने आ गया और एक ही गोली में मैंने उसका काम तमाम कर दिया। शाहज़ादगी के समय से आज तक मैंने जितने शेर मारे हैं उनमें कोई भी इससे बड़ा, शानदार और सुडौल न था। मैंने मुसव्विरों को हुक्म दिया कि उसकी हू-बहू तसवीर तैयार करें!"

जान पड़ता है कि चित्रकारों ने उसका ही चित्र नहीं बनाया, बल्कि उस वर्णन के ठीक उस समय के दृश्य को भी अंकित कर डाला है—जब टीके पर गोली खाकर वह सिंह लौट गया था और वायु आ जाने से अपना मुँह आप नोंच रहा था। इस चित्र में शिकार के समय की सजीवता और उत्तेजना एवं सफलता की प्रसन्नता बड़ी उत्तमता से दिखाई गई हैं। जितने आदमी या हथिनी इसमें अंकित हैं, सब शबीह हैं, काल्पनिक एक भी नहीं। इस चित्र की एक रंगीन प्रति (नं० ३१६) कलकत्ता म्यूज़ियम में है।

(मूलचन्द चित्रकार के प्राचीन संग्रह में था)

४—शबीह शेख फूल मजज़ूब

शैली—मुग़ल; १७वीं शती; चित्रकार बिशनदास, माप—१०$\frac{3}{4}$"×१४$\frac{3}{10}$"

अपनी गुम्बददार पक्की कुटी के आगे, जिसपर नीम का पेड़ छाया किये हुए है, नंगे बदन, सिर्फ एक पतली-सी लँगोटी लगाये साँवले रंग के फ़कीर साहब लोहे के किसी औजार से ज़मीन खोद रहे हैं। पीछे झुककर खड़ा हुआ एक लड़का दोनों हाथों में एक पात्र लिये हुए है। नीचे बहुतसे आदमी खड़े हैं, जो दर्शन करने आये हैं। एक आदमी प्याले में पानी भर-भरकर लोगों को पानी पिला रहा है। एक आदमी झाड़ू से वहाँ की जमीन झाड़ रहा है। एक भिश्ती मशक लिये खड़ा है। और भी बहुत से स्त्री-पुरुष हैं। कोई देख रहे हैं, कोई दिखा रहे हैं और कोई सलाम कर रहे हैं।

इस चित्र में एक जगह फारसी अक्षरों में लिखा है—'शेख फूल मजज़ूब (तल्लीन) कि दर आगरह मीं बाशद (जो सम्प्रति आगरा में रहते हैं) अमल बिशनदास (चित्रकार बिशनदास)।

बिशनदास जहाँगीर की ख़िदमत में था। उसने अकबर के दरबार में काम सीखा था; पर यह लेख उसका लिखा नहीं जान पड़ता। सम्भवतः यह जहाँगीर की हस्तलिपि है? चित्रकार अपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाम खुशखत नस्तालीक में लिखते थे और यह शिकस्ता है। इसकी लिखावट जहाँगीर की लिखावट से मिलती है। जहाँगीर अपने संग्रहीत चित्रों पर इस प्रकार के नोट लिख दिया करता था। यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है, और "जो आगरा में रहते हैं" का "हैं" बतला रहा है कि लेख चित्र के समय का ही है।

जान पड़ता है कि यह चित्र पहले बड़ा था, कुछ खराब हो जाने के कारण मरम्मत करने और फिर से जमाने से कुछ कट-छँट गया है। इस चित्र के पीछे एक कता है। उसी वक्त वह भी जमाया गया होगा। उस पर एक मोहर है। वह यों है—फर्जन्द खाँ बहादुर मुजफ्फर जंग अमीर उद्दौला दिलेर हिम्मत खां बहादुर सन् ११८५ हिजरी। ध्यान से देखने पर यह मालूम होता है कि उसके पहले वहाँ कोई दूसरी मोहर थी, जो रगड़कर मिटा दी गई है। तब उक्त मुहर लगाई गई है। विशनदास का स्थान भारतीय चित्रकारों में बहुत ऊँचा है। गुणज्ञ जहाँगीर भी इसकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा करता था। सन् १६१७ में जब उसने खान आलम नामक अपने एक मनसबदार को एलची बनाकर फारस के शाह अब्बास के दरबार में भेजा था तब शाह के चित्र लेने के लिये इन्हीं को उसके साथ भेजा था। इस सम्बन्ध में जहाँगीर ने अपनी जीवनस्मृति में लिखा है:—

"जब मैंने खान आलम को फारस भेजा तब उसके साथ विशनदास मुसव्वर को भी रवाना किया। यह शबीह लगाने में, इस ज़माने में, अपना सानी नहीं रखता। इसे मैंने शाह और उसके ख़ास-खास आदमियों की शबीह बना लाने के लिये भेजा। इसने वहाँ बहुत-सी शबीहें बनाई। मेरे (धर्म) भाई शाह की तो शबीह उसने ख़ास तौर पर बनाई और वह ऐसी ठीक उतरी कि जब मैंने उनके (शाह के) नौकरों को दिखाया तो उन्होंने कहा कि बहुत अच्छी बनी है। विशनदास को मैंने एक हाथी इनाम दिया।"

'अकबरी दरबार' के अनुसार शेखफूल नामक एक फकीर हुमायूँ के समय में थे। किन्तु यह शेखफूल वह नहीं हो सकते जैसा कि हम आगे देखेंगे। यह या तो उन शेखफूल की शिष्य-परम्परा में थे या उसी नाम के कोई दूसरे फकीर थे।

इन शबीहों में से एक बोस्टन म्यूज़ियम में है।

नोट—यह चित्र २९ चित्रों के एक अलबम में से है, जो संग्रहकर्ता (राय कृष्णदास) के वृद्धप्रपितामह राजा पटनीमल्ल के पुस्तकालय में था। उनके बाद जब उनके पौत्र अलग-अगल हुए तब वह अलबम जिनके हिस्से में पड़ा था उनके पौत्र राय बटुक प्रसाद (संग्रहकर्ता के एक बंधु) से यह अलबम प्राप्त हुआ है।

५—बादशाही हाथियों का हलका

(स्याह कलम)

शैली—मुग़ल ; १७वीं शती ; चित्रकार—होनहार ; माप —२५″ × ७$\frac{3}{10}$″

इसमें कुल हाथी हैं। कुछ हाथियों पर गदिया हैं और कुछ बिना गद्दी के हैं। ऊपर महावत बैठे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस चित्र में फारसी अक्षरों में एक जगह लिखा है—'हलकए फीलाने बादशाही और दूसरी जगह लिखा है—'नविश्तए होनहार मुसव्विर'। यह होनहार शाहजहाँ बादशाह का दरबारी चित्रकार था। इससे ये हाथी शाहजहाँ के मालूम होते हैं।

(काशी के मूलचन्द्र चित्रकार के पुश्तैनी संग्रह में से)

६—शाहजहाँ

शैली—मुग़ल ; १७वीं शती ; माप—५″×८″

मुग़ल-सम्राट् बाएँ हाथ में सोसन का फूल लिये खड़ा है। दहिना हाथ कमर में खोंसी हुई कटार के ऊपरी भाग पर है। गले में एक माला पन्ने और मोतियों की, तथा दूसरी मोतियों की है। तसवीर पूरी है, तन पर आबरवाँ का जामा और नीचे हिरौंजी गुलबदन का पाजामा है। तसवीर के नीचे फारसी में कुछ लिखा है, जो रस—रईस हो सकता है।

(दाता— राजा श्री कृष्णदत्त दूबे, जौनपुर)

७—कुमारी मरियम और शिशु ईसा

शैली—मुग़ल ; १७वीं शती का अंतिम भाग ; माप—१¾″×१½″

गहरी काही पृष्ठिका के आगे दाहिने बाजू पर शिशु ईसा को लिये हुए कुमारी मरियम अङ्कित हैं। उनका चेहरा दाहिने रुख डेढ़चश्म है। इस कुमारी के निर्विकार सस्मित मुख-मण्डल पर पवित्र वात्सल्य की ज्योति है। आँखें भाव-मग्न हैं। उनके बाल सुनहले हैं, जिसपर एक पट्टी बँधी है। तन पर पीला झोला है, जिसके नीचे की सफेद कुरती का गला भी दिखाया गया है। नील की मोटी ओढ़नी है, जिसकी नाखूनी सोनहली किनार है। यह ओढ़नी शिशु की पीठ और घुटनों को ढके है। शिशु ईसा के बाल गहुआरे और स्वर्णधूसर हैं। आँखों में दिव्य प्रकाश है। तन पर गुलाबी झँगुला है। दाहिने हाथ में बादामी रंग का कोई फल है। बाएँ हाथ की दो अँगुलियाँ उपदेश-मुद्रा में आगे बढ़ी हुई हैं। कुमारी का बायाँ हाथ शिशु के घुटने पर है। दोनों के मुख सुनहले ज्योतिमंडल से मंडित हैं।

८—दाराशिकोह का तुलादान

शैली—मुग़ल ; १७वीं शती (१६२७–२८ ई०) ; माप—४½″×६½″

दाराशिकोह का तुलादान हो रहा है। तराजू के एक पल्ले पर दाराशिकोह बैठा है और दूसरे पर थैलियाँ रखी हैं। बहुत से आदमी खड़े हैं। एक मनुष्य तौल पूरा हो जाने का संकेत कर रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्याहकलम का चित्र है। केवल शाहजादे के चित्र पर हल्का रंग दिया गया है।

महामना अकबर ने जिन भारतीय प्रथाओं को अपना लिया था, उनमें तुलादान भी था। वर्षगाँठ के अवसर पर, बादशाहों और शाहजादों का तुलादान हुआ करता था।

सर टामस रो ने, जिसे इङ्गलैण्ड के बादशाह जेम्स प्रथम ने अपना दूत बनाकर जहाँगीर के दरबार में भेजा था, उसका तुलादान देखा था। उसने उसका वर्णन यों किया है—

"एक बार बादशाह की सालगिरह थी, उस दिन उसका तुलादान हुआ था। उसमें मैं भी गया था। एक बहुत बड़े और सुन्दर बाग के बीचोबीच चबूतरे पर तुला खड़ी की गई थी। बाग में चौपड़दार रविशों से घिरे हुए फूलों के एवं सुन्दर वृक्षों के पारचे थे। रविशों के साथ-साथ उनके बीच से होती हुई नहर सभी ओर घूमी थी।

ऊँचे-ऊँचे गोड़ों के सहारे एक बड़ेरी टँगी हुई थी। उस सारे साज पर सोने का 'पत्तर' मढ़ा हुआ था। उस बड़ेरी से ठोस सोने की विशाल तुला लटकाई गई थी। उसके किनारों पर मानिक और पीरोजे (यहाँ सर टामस रो ने गलत लिखा है। मानिक के संग पन्ना जड़ने की चाल थी ; पीरोजा जैसे साधारण 'संग' का उपयोग केवल पच्चीकारी में होता था) जड़े हुए थे। तुला के पलरे सोने की मोटी और मजबूत साँकलों से लटक रहे थे। अधिक मजबूती के लिये उनमें रेशम की डोरियाँ भी लगा दी गई थीं। चारों ओर बहुमूल्य कालीन पर अमीर-उमरा बैठे थे।......आखिर बादशाह आया। अलभ्य रत्नों से उसका सर्वाङ्ग ढँका हुआ था। उसे देखते ही सब लोग खड़े हो गये। वह तुला के एक पलरे पर घुटना मोड़कर (दोजानूँ) बैठ गया। दूसरे पलरे पर पहले रुपयों के तोड़े चढ़ाये गये, इनसे वे छः बार तौले गये............तब वह रत्न, आभूषण और सोने से तौला गया। ये चीज़ें थैलियों में थीं। तदनन्तर जरीदार, रेशमी, रूईदार और सूती कपड़ों एवं मसालों (सर टामस का आशय कदाचित्, केसर, कस्तूरी आदि गन्धद्रव्यों से है) से उसकी तौल हुई और अन्ततः तरह-तरह के अन्य अन्न और घी से उसका तुलादान हुआ...............।"

इस चित्र का दृश्य उक्त वर्णन से बहुत मिलता है। तुला की बनावट और उसपर थैलियों का रखा जाना, उमरावों की भीड़-भाड़ आदि ज्यों-के-त्यों हैं। पलरों की मज़बूती के लिये लगी हुई लाल रेशम की डोरियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। इस चित्र में यद्यपि तुला पर बैठनेवाले शाहजादे का नाम नहीं दिया है, पर वह निस्सन्देह शाहजहाँ का बड़ा लड़का दाराशिकोह है, कारण—

१—उसकी सूरत दाराशिकोह की है, किसी दूसरे राजकुमार की नहीं।

२--बीच में खड़ा हुआ जो व्यक्ति इशारे से तुला को नियंत्रित कर रहा है, वह शाहजहाँ का परम हितेच्छु प्रधानमंत्री आसफ़ खाँ है, जो जहाँगीर के राजत्व के अन्तिम वर्ष (१६२७ ई०) में इस पद पर नियुक्त हुआ था। यह नूरजहाँ का भाई और शाहजहाँ की प्राणाधिक बेगम मुमताज महल का बाप, अतएव दाराशिकोह का नाना था।

३—इस चित्र में दो उमरावों के नाम दिये हैं--(क) वज़ीर खाँ, (ख) खवास खाँ। शाहजहाँ के समय में इन दोनों नामों के कई उमरा थे ; उनमें से यह कौन है--ठीक नहीं कहा जा सकता। हाँ; इतना ज्ञात हुआ है कि इस चित्रवाले वजीर खाँ वही हैं, जिनकी शबीह शाहजहाँ के दरबारवाले उस चित्र नं० ऐड १८८०१ में है ; जो लन्दन के बृटिश म्यूज़ियम में है ; क्योंकि दोनों में शबीह की पूरी समानता है।

दाराशिकोह का जन्म १६१५ ई० में हुआ था और इस चित्र में वह कोई १२-१३ वर्ष का जान पड़ता है। इस चित्र को देखने से यह मालूम होता है कि इसे चित्रकार ने घटनास्थल पर तुला के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय ही सपाटे से टीप लिया था। कितनों को सिर्फ "बुत" बाँधकर छोड़ दिया है, जैसा कि फोटोग्राफी की चलन के पहले होता था। अतएव वह बहुत महत्वपूर्ण है। दाराशिकोह के चित्र में जो काम हुआ है वह तैयारी का चित्र बनाते समय पीछे से किया गया है। अतएव यह महत्वपूर्ण चित्र लगभग १६२७-२८ ई० का बना होना चाहिये।

जिस पलरे पर दाराशिकोह बैठा है उसके अगल-बगल दो लड़के खड़े हैं। उनकी पगड़ियों में कलँगी लगी हैं। अतएव ये शाहज़ादे, सम्भवतः शुजा (जन्म १६१६ ई०) और औरङ्गजेब (जन्म १६१८ ई०) हैं। उनकी शबाहत से भी यही सिद्ध होता है। शुजा की नाक का सिरा कुछ भोंड़ा था। उसके जितने चित्र मिलते हैं, उन सब में यह आकृति-वैलक्षण्य पाया जाता है। इस चित्र में भी यही बात है। ये दोनों उस समय क्रमशः ११-१२ तथा ९-१० वर्ष के लगभग रहे होंगे। चित्र में भी यही अवस्था जान पड़ती है। शाहजहाँ का चौथा लड़का मुराद (जन्म १६२४ ई०) इस समय कोई तीन-चार वर्ष का, गोद का बच्चा रहा होगा और महल के बाहर भी न आता रहा होगा, क्योंकि मुगलों में पाँच वर्ष तक राजकुमारों को महल के भीतर ही रखने की प्रथा थी।

(मूलचंद चित्रकार के कुलगत संग्रह से)

९—शाहज़ादा मुराद तथा बलख-बुखारा के अधिपति नज़र मुहम्मद की मुलाकात

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—१३$\frac{5}{8}$" × ९$\frac{3}{8}$"

१६४४ ई० में शाहजहाँ ने बलख-बुखारा प्रदेश को, जो उस समय उज़बकों के हाथ में था, जीतने के लिये दो बार चढ़ाई कराई, किन्तु सफलता न हुई। १६४५ ई० में वह स्वयं काबुल गया और वहाँ से अलीमर्दन खाँ के निर्देश में शाहजादा मुराद को एक बड़ी सेना के साथ बलख-बुखारा भेजा। उस दल को पूरी सफलता मिली। पहले तो उस प्रदेश के तात्कालिक उज़बक-अधिपति नज़र मुहम्मद के लड़के मुराद की ओर हो गये, फिर स्वयं नज़र मुहम्मद ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

संभवतः यह चित्र उस अवसर का है, जब नज़र मुहम्मद शाहज़ादा मुराद के पास उपस्थित होता है—

चित्र की पृष्ठिका में ऊपर की ओर पहाड़ और वृक्षावली बहुत ही स्वाभाविक अङ्कित हैं। पर्वत की तराई में दाहिनी ओर एक बड़ा जलाशय है और बाईं ओर मुगल स्कन्धावार दिखलाया गया है। शाहज़ादे के खेमे पर झंडा फहरा रहा है। कहीं-कहीं आदमी, ऊँट और हाथी चलते-फिरते दिखाये गये हैं। इसके आगे कनात बनाकर चित्र का दूसरा अंश अंकित किया गया है। कनात में ऊपर एक बेल बनी है। उसके नीचे महराबदार दरों में दोनों ओर कोनियाँ तथा बीच में गुलाबी फूल के झाड़ बने हैं, जिन पर तितलियाँ मँडरा रही हैं। इसके आगे कटघरे में एक तख़्त पर गलीचा बिछा है, जिस पर दाईं-बाईं ओर किमख्वाब के दो गावतकिए धरे हैं। तख़्त के ऊपर तीन पाल वाले शामियाने का वितान है। शामियाने के हौद में काम बना हुआ है। तख्त पर बाईं ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुग़ल-पोशाक में खड़े एक सम्भ्रान्त व्यक्ति एक ईरान-देशीय सम्भ्रान्त व्यक्ति से भेंट रहे हैं। दोनों क्रमशः मुराद और नज़र मुहम्मद जान पड़ते हैं। मुराद को छोटी-छोटी मूँछें और ठुड्ढीदार काली दाढ़ी है, नज़र मुहम्मद को भूरे रंग की जरा-जरा सी दाढ़ी है। मुराद के पीछे तख़्त के नीचे ईरानी पगड़ी बाँधे एक व्यक्ति खड़े हैं। हाथ में सीधा तेग है। गलगुच्छा और लब रखाये हैं। यह अलीमर्दन खाँ हैं। इनके अन्य चित्रों से यह शबीह मिलती है। इनके पीछे कटघरे के बाहर एक युवक तथा घनी दाढ़ीवाला एक व्यक्ति क्रमशः ढाल तथा किमख्वाब की खोल चढ़ी तलवार लिये खड़े हैं। नज़र मुहम्मद के पीछे अर्थात् दाहिनी ओर तख़्त के नीचे एक व्यक्ति खड़े हैं, जिनकी वेशभूषा मुग़ल है। उनका दाहिना हाथ आगे बढ़ा हुआ है, जिससे नज़र मुहम्मद का परिचय कराना सूचित होता है। बायाँ हाथ ढाल पर है। अपनी शबाहत के कारण यह नवाब सादुल्ला खाँ जान पड़ते हैं। इनके बाद कटघरे के बाहर एक व्यक्ति हाथ बाँधे खड़ा है। इसका चेहरा डेढ़चश्म है, खसखसी दाढ़ी है। कटघरे के बाहर बिलकुल आगे दोनों ओर कतार बाँधे चार-चार व्यक्ति खड़े हैं, जिनमें से कुछ हाथ बाँधे हैं और कुछ अपने पेशकब्ज या तलवार पर हाथ रखे हैं। इन सभी व्यक्तियों के चेहरे घनी दाढ़ीवाले एकचश्मी हैं। केवल बाईं ओर जो व्यक्ति सब से आगे खड़ा है उसका चेहरा सवाचश्म है और उसपर जरा-सी ठुड्ढी है।

कटघरे के थोड़े नीचे चित्र के बीचोबीच चित्रकार का नाम "फतहचन्द" फारसी लिपि (शिकस्ता) में लिखा है, जो मुहम्मद भी पढ़ा जा सकता है।

चित्र के पीछे एक गुलदस्ता बना है।

१०—एक सुंदरी

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—$१\frac{१}{२}'' \times २\frac{३}{१०}''$

वस्त्राभूषणों से सुसज्जित, हाथ में पुष्प लिये एक रमणी खड़ी है। ओढ़नी और जामा इतना झीना है कि शिर के बाल और दोनों कुच साफ दिखलाई दे रहे हैं। चित्र कमर से नीचे तक का है।

इस चित्र पर फारसी में "नूरजहाँ" लिखा है। मुसलमान-सुन्दरियों के जो भी चित्र मिलते हैं, उनमें से अधिकांश पर यही लिखा रहता है ; किन्तु वस्तुतः उनमें से एक भी नूरजहाँ का चित्र नहीं। इस सम्बन्ध में मैनूची (Manucci) नामक इटली के यात्री ने—जो औरङ्गजेब के समय में यहाँ वर्षों रहा था और जिसका मुगल-घराने से विशेष सम्पर्क था—यों लिखा है:—"बलिहारी है पर्दे की! जिसके कारण बेगमों और शाहजादियों का देखना असम्भव है। यही कारण है कि मैंने उनके चित्र नहीं संग्रह किये, क्योंकि यदि कोई उनके चित्र बतला कर दे तो उन्हें स्वीकार न करना चाहिये, या तो वे नर्तकियों और वेश्याओं के चित्र हैं अथवा खयाली।"—(पर्सी ब्राउन पृ० १५७)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सच तो यह है कि नूरजहाँ केवल रूपवती ही नहीं थी, बल्कि उसका व्यक्तित्व भी महत्वपूर्ण था। जहाँगीर-काल की राजनीति में उसने भी भाग लिया था, अतएव अनेक चित्रकारों को उसे चित्रित करने की इच्छा होना एक स्वाभाविक बात है। अपनी इस अभिलाषा को उन्होंने अपनी कल्पना से पूरी किया है।

(दात्री—श्रीमती तुलसी देवी)

११—नृत्य

शैली—मुगल ; १७वीं–१८वीं शती ; माप—४$\frac{१}{१०}$″ × ५$\frac{१}{२}$″

दो सुन्दरियाँ परस्पर हाथ मिलाकर नृत्य कर रही हैं। दोनों कमान की तरह झुकी हुई हैं ; दोनों का एक-एक पैर ज़मीन पर तथा दूसरे उठे हुए हैं।

नोट—देखो नं० ४ (पृष्ठ १७४) का नोट

१२—एक सुन्दरी

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—५$\frac{१}{४}$″ × ८$\frac{३}{१०}$″

वस्त्राभूषणों से सुसज्जिता, अरुण कमल का एक सनाल पुष्प लिये एक सुन्दरी खड़ी है। दाहिने हाथ में नाल और बाएँ में पुष्प है।

पुश्त पर मश्की है।

नोट—देखो नं० ४ (पृष्ठ १७४) का नोट

१३—शबीह मियाँ मीर और मुल्लाशाह

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—३$\frac{५}{८}$″ × ४$\frac{५}{८}$″

दर्शक के दाहिने ओर शेख मुहम्मद मीर बैठे हैं। इन्हें अक्सर मियाँ मीर भी कहते हैं। ये १५५० ई० में सीस्तान में पैदा हुए थे। कादिरी पंथ के दरवेश थे ; लाहौर में आ बसे थे। वहाँ कोई ६० वर्ष तक उपदेश देते रहे। १६३५ ई० में इनका देहान्त हुआ। लाहौर प्रान्त के लोग अब तक इनकी क़ब्र की ज़्यारत करते हैं। दाराशिकोह ने इनकी जीवनी लिखी है।

मियाँ मीर के सामने दर्शक के बाएँ ओर मुल्लाशाह बैठे हैं। ये मीर साहब के शिष्य थे और दाराशिकोह के गुरु। इनका मूलस्थान बदख्शां था। ये सन् १६६० ई० के लगभग परमपद को प्राप्त हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठिका में सुनहला आकाश है। नं० ५२ में जिस पुस्तक की चर्चा की गई है, उसी का एक पृष्ठ इस चित्र के पृष्ठभाग पर भी जमाया गया है। इस चित्र की प्रतिकृतियाँ कई संग्रहों में हैं।

नोट—देखो नं० ४ (पृष्ठ १७४) का नोट

१४—मुग़ल-सम्राट् जहाँगीर

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—६ ३/१०" × १० १/८"

स्याह कलम। एकचश्मी तसवीर, दाहिने हाथ में सोसन का फूल लिये बादशाह खड़े हैं। कमर में पेशकब्ज है।

(दतिया में क्रीत)

१५—दरवेशों का दरबार

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—५ १/२" × ८ ३/१०"

स्याह कलम। इस चित्र में चार दरवेश अपने रंग में मस्त बैठे हैं। बाईं ओर का दाढ़ीवाला दरवेश अपनी कुटी के दरवाजे पर बैठा है। इस चित्र की मरम्मत करने में कुटी के दरवाजेवाला अंश कट गया है और उसकी बगल में बैठे हुए दो दरवेश भी गायब हो गये हैं।

असल में इस चित्र में छः दरवेश थे।

(मूलचन्द चित्रकार के संग्रह में से)

१६—मुहम्मद शुजा (१६१६-१६५९ ई०)

स्याह कलम; चित्रण-काल—१६४०–१६४५ ई० के लगभग

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—७ १/४" × ४ १/४"

दाहिनी एकचश्म शबीह। छोटी किन्तु खड़ी दाढ़ी ; नाक की नोक कुछ भोंड़ी ; शिर पर पगड़ी ; कान में एक दाना मोती। तन पर जामा तथा चूड़ीदार पाजामा ; पैर में जूती। कमर में दोहरा पटका बँधा है, जिसके ऊपरवाले पल्ले में सामने डेढ़ गाँठ लगी है। पटके में दाहिनी ओर कटार और दस्ताना खोंसा हुआ है। बाईं ओर तलवार लटक रही है, जिसकी मूँठ आगे एवं सिरे का हिस्सा पीछे दिखाई दे रहा है। शाहजादा दोनों हथेली आगे को ओर पसारे हुए है, जैसे दुआ माँग रहा हो।

ओंठ पर हलकी गुलाली दी हुई है और पृष्ठिका में चारों ओर हलकी सब्ज़ी तथा पैरों के नीचे कुछ गाढ़ी सब्ज़ी दी हुई है। आसमान में नीलिमा की आभा है। कलम बहुत बारीक और मुलायम है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुजा की नाक का सिरा कुछ भोंड़ा था। उसकी आकृति का यह वैलक्षण्य अन्य चित्रों में भी पाया जाता है। जैसे कला-भवन का दाराशिकोह के तुलादान का चित्र (सं० ८ पृष्ठ १७५), इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता की शुजा की शबीह (सं० १४०६१, ब्राउन ; प्लेट ६४), ब्रिटिश म्यूज़ियम, लंदन में शाहजहाँ के दरबार का स्याहकलम चित्र (सं० ऐड० १८८०१; कोर्ट पेंटर, प्लेट २०) और विक्टोरिया ऐण्ड एलबर्ट म्यूज़ियम, लंदन में शुजा आदि का घोड़े पर चढ़ा चित्र (सं० आई एम १३-१९२५, इवैन, प्लेट ४०)।

इस चित्र पर ईरानी लिपि में लिखा है—

"शबीह मुहम्मद शुजा

अमलराव चतरमन"

इसमें शुजा की अवस्था २५-३० वर्ष की लगती है, अतः उक्त चित्रणकाल स्थिर होता है।

इसके चित्रकार राव चतरमन (चतुरमणि) शाहजहाँ के दरबार में थे। इनका नाम कल्याणदास था, चतुरमणि इनकी पदवी थी। कुछ लोग इस पदवी को चित्रमणि समझते हैं; क्योंकि फ़ारसी लिखावट में यह 'चतरमन' लिखा जाता है, जिसके दोनों ही रूप हो सकते हैं। अधिक सम्भावित चतुरमणि ही है, क्योंकि चित्रकारों के लिये चतुर विशेषण का उपयोग अन्यत्र भी पाया जाता है, जैसे बिहारी के एक दोहे में—'चतुर चितेरे कूर' आया है। इनके स्याह कलम में जो रस और कोमलता तथा निरालापन है, वह किसी भी अन्य चित्रकार के स्याह कलम में नहीं पाया जाता। इस काम में ये अद्वितीय थे। जान पड़ता है कि इस कारण ये अधिकतर स्याह कलम चित्र तैयार करते थे, क्योंकि इनके बनाये जो भी विश्वसनीय चित्र अभी तक मिले हैं, वे (१—ब्रिटिश म्यूज़ियम मैनुस्क्रिप्ट्स, ऐड १८८०१, २—इण्डिया आफिस पुस्तकालय में जानसन कलेक्शन, वाल्यूम १ नं० ११) इसी प्रकार सुकुमार और भावमय रसीले स्याह कलम के हैं।

इन्होंने औरंगजेब के राजत्वकाल में भी काम किया था ; क्योंकि इनकी बनाई हुसेनपाशा की शबीह मिली है, जो १६६२ ई० में औरंगजेब की खिदमत में आया और बादशाह से इस्लामशाह की पदवी पाई। इस्लामशाह १६७२ ई० में बादशाह के लिये लड़ता हुआ मारा गया। अतः वर्तमान प्रमाणों के अनुसार चतुरमणि का कार्यकाल १६७२ ई० तक प्रमाणित होता है।

ऐतिहासिक विवरण—शाहजहाँ के चार लड़कों में से शुजा दूसरा था। इसका जन्म १६१६ ई० में हुआ था। यद्यपि यह बुद्धिमान्, बहादुर और कूटनीतिज्ञ भी था; किन्तु विलासिता ने इसकी सारी शक्तियों को चौपट कर दिया था। यह दिन-रात नृत्य, गीत और स्त्रियों के बीच में पड़ा रहता था। यह बड़ा शराबी था और ऐयाशी में बहुत धन उड़ाता था। इसके सिवाय इसे अपनी शक्तियों का इतना गर्व था कि अपने शत्रुओं को कुछ न समझता था तथा यथासमय प्रतिबन्ध करने में लापरवाही करता था।

शाहजहाँ की इच्छा थी कि उसके बाद दाराशिकोह गद्दी पर बैठे। अतएव उसने शुजा को बंगाल का, औरंगजेब को दक्खिन का और मुराद को गुजरात का सूबेदार बनाकर भेज दिया था और दारा को अपने ही पास आगरे में रख छोड़ा था। सारा काम-काज भी उसी को दे रखा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६५७ ई० में शाहजहाँ मरने-मरने हो गया। शुजा ने यह समाचार पाते ही अपने नाम का सिक्का चला दिया और अपने नाम के साथ बादशाही अलकाब लगा लिया एवं दिल्ली की ओर बढ़ा। दाराशिकोह ने तुरन्त राजा जयसिंह को इससे मोरचा लेने को भेजा। इन्होंने बनारस के पास सूर्योदय के पहले इस पर आक्रमण किया। उस समय वह नशे में चूर बेहोश पड़ा था। जान बचाना मुश्किल हुआ। सारा लाव-लश्कर छोड़कर भागा।

बंगाल जाकर इसने फिर तैयारी की और बनारस, जौनपुर तथा इलाहाबाद पर अधिकार भी कर लिया। परन्तु इधर औरंगजेब के हाथ में बादशाही आ चुकी थी। इसके सेना-नायक मीर जुमला ने (१६५९ ई० में) शुजा को मार भगाया। यह भागकर अराकान निकल गया। इसके बाद इतिहास में उसका कोई पता नहीं। किसी-किसी ने लिखा है कि अन्तिम बार वह पहाड़ों में लुकता-फिरता देखा गया था, उस समय इसके साथ केवल तीन वफादार नौकर और एक स्त्री रह गई थी।

१७--नील तथा रोझ का शिकार करते हुए औरंगजेब

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—१४½" × १०"

चित्र बेड़े बल है। पहाड़ी वन का दृश्य है।

चित्र में दाहिने ओर एक रोझ भाग रहा है और एक नील गोली खाने से मुँह से खून फेंकता हुआ गिर रहा है। चित्र में बाएँ ओर एक सुनहले कालीन पर औरंगजेब एकचश्म दाहिने रुख उँकरूँ बैठा हुआ है। चेहरा घनी दाढ़ीवाला है। पोशाक मूँगिया रंग की है। गले में मोतियों की मालाएँ और हाथ में मोती आदि की लड़ियाँ हैं। दोनों हाथों में एक बन्दूक है, जो सामने बैठे हुए व्यक्ति के सहारे रखी है। बादशाह बन्दूक चला रहा है। इसके कमर-पटके में दाहिने ओर लम्बी कटार खोंसी हुई है। बादशाह के पीछे घास पर एक नवयुवक मूँगिया पोशाक पहने दोजानूँ बैठा है। इसके जंघे के सहारे औरंगजेब के दाहिने ओर उसी तरह की एक दूसरी बन्दूक रखी है, जिसके कुन्दे पर उक्त युवक अपना दाहिना हाथ रखे है और बायाँ हाथ जमीन पर टेके है। औरंगजेब के आगे एक युवक बाएँ जानूँ बैठा है और अपने दाहिने हाथ पर बादशाह की बन्दूक को ठहराये है। एक दूसरा युवक हाथ में लम्बा छुरा लिये घायल नील की ओर उसे हलाल करने के लिये लपक रहा है। इन दोनों की भी पोशाक मूँगिया रंग की है। औरंगजेब आदि के पीछे चट्टान की आड़ में दो युवक अनुचर छिपे हैं और उनके पास ही, चट्टान के उस पार, एक साईस घोड़ा लिये खड़ा है। पृष्ठिका में चट्टान की श्रेणी के उस पार दूर पर शाही रिसाला और एक बैलगाड़ी खड़ी है। उसके पास एक जिंदा पकड़ा हुआ नील बैठा है और एक आदमी बैठा उसकी रखवाली कर रहा है। पास एक दूसरा नील खड़ा है, उसे दूसरा व्यक्ति गाड़ी की ओर हँका रहा है। चित्र में दाहिने ओर, पीछे चट्टानों की श्रेणी के मुहानों पर, एक घुड़सवार रास्ता रोके है।

पृष्ठिका में हरे-भरे पहाड़ी वन हैं, जिनमें नील तथा रोझ विचर रहे हैं। कत्थई रंग की चट्टानों की श्रेणी चित्र के बीच में बाएँ ओर से दाहिने ओर तक चली गई है। इसके निकट पेड़-पालो हैं, जिनमें ढाक प्रमुख हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहाड़ों के ऊपर नीला आसमान है। यह चित्र संभवतः निम्नलिखित जमाने का है:—

"उस (औरंगजेब) ने २५ नवम्बर (सन् १६५३ ई०) को दौलताबाद के किले में प्रवेश किया। उसने औरंगाबाद में अपने जीवन के आगामी चार वर्ष व्यतीत किये ; केवल गोलकुंडा और बीजापुर पर आक्रमण करने के लिये, और अंत में ५ फरवरी सन् १६५८ को दिल्ली का तख्त प्राप्त करने के लिये ही उसने उसे छोड़ा।......इस समय के औरंगजेब के जीवन के संस्मरण, जिन्हें उसने अपने पौत्र बीदर बख़्त को अपने बुढ़ापे में लिखा था, हमें उपलब्ध हैं :.........'मैं घोड़े पर सवार होकर दूर तक नीलगाय और दूसरे किस्म के जानवरों का शिकार करने जाता था।'

औरंगाबाद के आसपास शिकार बहुत मिलते थे।......लौहगढ़ और अम्बर की ओर तो नीलगायें बहुतायत से मिलती थीं......औरंगजेब को...नीलगाय के शिकार करने में बड़ी प्रसन्नता होती थी। एक संकीर्ण घाटी में हँकाकर एक नियत स्थान से नीलगाय का शिकार किया जाता था।"

—सरकार, औरंगजेब का इतिहास, भाग १, १९१२ का संस्करण, पृष्ठ १७१—७३।

इसी दृश्य का, इस चित्र से कई बातों में मिलता हुआ, दकनी कला का एक चित्र कई वर्ष पहले लंदन के मैग्ज़ कम्पनी के पास विक्रयार्थ मौजूद था। उस चित्र पर लिखा था--

"तसवीर आलमगीर......"। आगे ठीक पढ़ा नहीं गया।

चित्र के पीछे मुहम्मद मुराद का, जो शाहजहाँ-काल के एक प्रसिद्ध खुलिपिकार थे (देखिये बोस्टन कैटलॉग, भाग ६, पृष्ठ ६०), लिखा कृता है।

१८--तैमूर के दरबार में पराजित टर्की-नरेश

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—६३/४" × ९३/४"

तैमूर एक हाथ में बरछा लिये तथा कमर में पेशक़ब्ज खोंसे, कुर्सीनुमा सिंहासन पर बैठा है। शिर पर कुलाहदार मुड़ासा है। तीर-कमान, ढाल-तलवार और लम्बे-लम्बे भाले लिये बहुत से वीर पुरुष दरबार में अदब के साथ खड़े हैं। इनमें भिन्न-भिन्न देशों और जातियों के मनुष्य हैं। बादशाह के सामने टर्की-नरेश हथकड़ी पहने कैदी के रूप में खड़ा है। एक आदमी उसके विषय में बादशाह से कुछ कह रहा है।

१४०२ ई० में तैमूरलंग ने टर्की के क्रूर और निर्दय सम्राट् बायजीद को परास्त किया। जब वह बन्दी बनाकर तैमूर के सामने लाया गया, तब उसने तिरस्कार-मिश्रित वाक्यों से उसे ढाढ़स बँधाया। सुलतान बायजीद ने उसकी बातें सुनकर पश्चात्ताप के लक्षण व्यक्त किये और गर्दन झुका ली; उसी समय का यह चित्र है।

तैमूर ने बन्दी सुलतान के साथ कुछ समय तक बड़ी उदारता का व्यवहार किया; किन्तु जब उसने कई बार निकल भागने की व्यर्थ चेष्टा की तब तैमूर का वर्ताव बदल गया और सुलतान असीम मानहानि तथा यंत्रणा-भोगकर बन्दी होने के आठ महीने बाद मर गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस चित्र की एक प्रतिकृति ब्रिटिश म्यूज़ियम में है। महाराज अलवर के संग्रह में इसकी एक प्रति है जिसे शाह आलम के शासनकाल में मुहम्मद तालिब के लड़के आलिम ने तैयार किया था। रायबहादुर राधाकृष्ण जालान (पटना) के पास इसका एक चरबा है। बर्लिन में भी इसकी एक प्रतिकृति है।

चित्र के पुश्त पर मश्की है।

नोट--देखो नं० ४ (पृष्ठ १७४) का नोट

१९--नवाब सादुल्ला खाँ

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप--६½″ × ४½″

शाहजहाँ के वज़ीर नवाब सादुल्ला खाँ की यह दोजानूँ बैठी एकचश्मी शबीह निहायत बारीक कलम में बनी हुई है। इसके चित्रकार राव चतुरमणि जान पड़ते हैं। चित्र का बाहरी हाशिया उस्ताद रामप्रसाद का बनाया हुआ है। यह हरे रंग का है, जिस पर सोने से ईरानी शैली का शिकारगाह बना है।

२०--अतःपुर की एक घटना

शैली—मुगल ; १७वीं शती ; माप—७½″ × ५¾″

एक शाहीमहल में एक वयस्क पुरुष, जो संभवतः कोई बादशाह है, एक पैर पलँग पर से नीचे लटकाये और दूसरा पैर उस पैर पर रखे बड़े तकिए के सहारे बैठा है। उसी पलँग पर पायताने एक प्रौढ़ा स्त्री एक किशोरी को गोदी में लिये बैठी है। वह किशोरी उस प्रौढ़ा की गोद में बेहोश पड़ी है। कई स्त्रियाँ उसकी सेवा-सुश्रूषा कर रही हैं। सब से पीछे एक वृद्धा खड़ी है। सब बड़े ध्यान से उस किशोरी की ओर देख रही हैं; पर वह प्रौढ़ा जो उसे गोदी में लिये है उस पुरुष से हाथ का इशारा करती हुई कुछ कह रही है, शायद उपालंभ दे रही है। वह पुरुष अवाक् एवं आश्चर्य्यान्वित होकर उस किशोरी की ओर देख रहा है। उसके पीछे एक स्त्री खड़ी है। मालूम होता है-- यह चित्र किसी घटना के संबंध में है। इस चित्र में इमारत की लिखाई बहुत सच्ची है और रंग सब हलके हलके लगे हैं।

पुश्त पर का कता नष्ट हो गया है। चित्र के चौखटे में ऊपर और नीचे कता के चार-चार टुकड़े जमाये गये हैं। पुश्त पर, कता के नीचे, हाशिए पर फ़ारसी अक्षरों में लिखा है--

'तहरीर सियाह'

(जौनपुर से रामप्रसाद लाये थे)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२१--प्रभु ईसामसीह का जन्म

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; चित्रकार-फकीर उल्लाह ; माप—६१/२" × ५"

देवी मरियम शिशु ईसा को गोद में लिये हुए हैं। इधर-उधर दिव्य गायिकाएँ खड़ी हैं। एक के हाथ में खजूर की डाल है। एक रबाब पर गा रही है। चित्र पर "........फकीर उल्लाह" लिखा हुआ है।

फकीर उल्लाह पिछले मुगलकाल के एक चित्रकार थे। उन्हीं की यह कीर्त्ति जान पड़ती है। उनकी एक अन्य कृति श्री सीताराम शाह के संग्रह में है, उससे इसके चेहरे के कैंड़े आदि मिलते हैं और इस अनुमान को प्रमाणित करते हैं।

चित्र की पीठ पर एक मुहर है, जिसकी निम्नलिखित इबारत है--

"नसीर उद्दीन अलीखां बहादुर, १२१९"

२२—नृत्य

शैली--मुगल ; १८वीं शती ; माप--५३/४" × ४१/१०"

यह चित्र एक भरे हुए बदामें में है, जिसके चारों ओर बेल देकर चौकोर हरी जमीन छोड़ी गई है। फिर बेल और उसके बाद फूले चम्पे का हाशिया है।

चित्र में दो सुन्दरियाँ परस्पर हाथ मिलाकर नृत्य कर रही हैं। दोनों कमान की तरह झुकी हुई हैं। दोनों के सिर परस्पर मिले हुए से हैं तथा दोनों का एक-एक पैर जमीन पर और एक-एक अधर में हैं।

पुश्त पर कता है। लेखक का नाम लिखा है—'मीर अबूनस्र'।

२३—गुरु और शिष्य

शैली--मुगल ; १८वीं शती ; माप--४३/१०" × ७१/१०"

स्याह कलम। गुरु दाढ़ीवाले और वृद्ध हैं, शिष्य तरुण। सामने खड़े गुरु को शिष्य हाथ जोड़े है।

(गोस्वामी माधवलाल से प्राप्त)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२४—ढाल-तलवारधारी युवक

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—४½" × ६७/१०"

स्याह कलम। चेहरे पर हल्का रंग। मूँछ तथा खसखसी दाढ़ी। परतला, कमरबन्द और तलवार का म्यान रंगीन। ढाल काली जो बाईं ओर जाँघ पर लटक रही है।

(मूलचन्द के संग्रह से)

२५—कोई शाहज़ादा वा नवाब

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—८३/५" × ११४/५"

कोई शाहज़ादा तकिए के सहारे गद्दी पर दोजानूँ बैठा हुआ हुक्का पी रहा है। पीछे दो परिचारिकाएँ खड़ी हैं। सामने मृदङ्ग और तम्बूरा बजाकर कई स्त्रियाँ गा रही हैं। उनके पीछे ताज लगाये एक स्त्री खड़ी है। चित्र वेड़े बल है।

पुश्त पर कता है।

(देखो, चित्र नं० ४, पृष्ठ १७४)

२६—दो योगिनियाँ

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—४३/५" × ६१/१०"

एक योगिनी शिर के बाल खोले, भगवे वस्त्र की गाँती मारे, घुटनों तक गुदड़ी ओढ़े बैठी है। दूसरी योगिनी भगवे वस्त्र पहने पुरुषवेश में उसके सामने बैठी वीणा बजा रही है।

जो योगिनी जप कर रही है, उसे वीणा की झनकार ने मोहित कर लिया है। उसकी प्रसन्नता को चित्रकार ने बहुत अच्छी तरह व्यक्त किया है।

जिसके हाथ में वीणा है, वह भी एक योगिनी ही है; किन्तु उसने पुरुषवेश बना रखा है। उसकी उँगलियाँ अनायास वीणा पर दौड़ रही हैं, सम्भवतः वह कुछ गा भी रही है।

चित्र के पीछे कता है।

(देखो, चित्र नं० ४, पृष्ठ १७४)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२७—एक वृद्ध नव्वाब

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—५३/५" × ८१/१०"

सफेद दाढ़ी और मूँछवाले एक वृद्ध नव्वाब गावतकिए के सहारे बैठे हैं। छोटे-छोटे दो तकिए इधर-उधर पड़े हैं। सामने पान का डब्बा रखा है।

(दतिया में क्रीत)

२८—बीजापुर का कोई सुलतान

शैली—दकनी ; १८वीं शती ; माप—३३/१०" × ४१/१०"

यह किसी जवान सुलतान की तसवीर है। सिर पर कलँगी और गले में मोतियों की दो-लड़ी, लम्बी माला है। तसवीर कमर तक है, दोनों हाथों की कुहनियाँ नहीं दिखाई देतीं, किन्तु कलाइयाँ और हाथ दिखाई दे रहे हैं।

(दतिया में क्रीत)

२९—हीरागिरि जोगिन

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३४/५" × ५३/१०"

जंगल में एक वृक्ष के नीचे हीरागिरि जोगिन चीते की खाल पर बैठी है। पास में गठरी रखी है और आगे मोरछल। सिर के बाल खुले हुए हैं। उसके पास तीन जोगिनियाँ और बैठी हैं, एक बुढ़िया और दो तरुण। उनमें से एक जोगिन वीणा बजा रही है। सैरे (सीनरी) में यूरोपीय प्रभाव है।

इस चित्र की कई प्रतिकृतियाँ मिली हैं, उनमें से एक कलकत्ता के म्यूजियम में है; दूसरी श्री राय कृष्णजी (काशी) के पास है, एक अन्य प्रतिकृति कला-भवन में भी है।

इसके पीछे मीर अबूनस्र का लिखा हुआ क़ता है।

इस चित्र में हीरागिरि और उसके सामने बैठी हुई जोगिन के बीच में बहुत बारीक अक्षरों में लिखा है—"सुरति हीरागिरि की।" चित्र के पीछे १२०४ हिजरी की मुहर है, जो साफ नहीं पढ़ी जाती।

इस चित्र के पीछे फारसी में एक लेख है, उससे विदित होता है कि यह जोगिन शाहजहाँ के समय में थी और उसी समय के चित्रकार हालचन्द की यह कृति है।

(दाता—श्री सीताराम शाह)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३०—किसी मुसलमान व्यक्ति की शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—४ ३/१०" × ६ १/८"

छोटी मूँछ-दाढ़ीवाला एक आदमी तकिए के सहारे गद्दी पर दोज़ानूँ बैठा है। रंग साँवला है, चेहरा एक चश्मी। एक छोटा लाल तकिया एक तरफ पड़ा है। पास में तलवार रखी है। बाएँ हाथ में गुलाब का फूल है। तकिए और कमरबन्द के छोरों पर सुनहला काम है।

(दतिया में क्रीत)

३१—औरङ्गज़ेब

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—२ १/८" × ३ ३/१०"

झरोखे पर बड़े गावतकिए के सहारे बैठे हुए औरंगजेब की वृद्धावस्था का चित्र है। मुगल-सम्राट् औरंगजेब के दाढ़ी और मूछों के बाल बिलकुल सफेद हो गये हैं। चेहरा एकचश्मी है। चारों ओर ज्योतिर्मण्डल है। पीठ में कूबड़ निकला है। बायाँ हाथ सामने को बढ़ा हुआ है ; दाहिना उससे पीछे है। कुहनियाँ नहीं दिखाई देतीं। एक बड़ा पन्ना और उसके नीचे एक मोती छाती पर लटक रहा है। झरोखे का पर्दा लिपटा हुआ ऊपर को चढ़ा हुआ है।

(काशी में क्रीत)

३२—सम्भवतः शाहजहाँ बादशाह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३ ९/१०" × ६ ३/१०"

यह चित्र ऊपरवाले चित्र (संख्या ६) से बहुत मिलता है। गले में मोतियों की दो मालाएँ हैं। कपड़ों की रंगत में फर्क है और बाएँ हाथ में एक छोटी-सी कलँगी है। बाकी सब बातें वैसी ही हैं।

(दतिया में क्रीत)

३३—पीरज़ादा, फतहपुर सीकरी

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३ ७/१०" × ६ १/२"

इस चित्र पर यह नाम लिखा हुआ था। नवयुवक पीरज़ादा पगड़ी बाँधे हुए है। उसमें पीछे मोतियों की चार लड़ी झब्बे की तरह लटक रही है। कान में दो मोती और एक लाल पहने है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गले में भी मोतियों की माला है। कमरबन्द में भी रत्न और मोती लगे हैं। गेरुए जामे के ऊपर दुपट्टा ओढ़े है। किसी जलाशय के किनारे सब्जे पर खड़ा है।

यह नवयुवक सीकरी के सलीमशाह चीस्ती का वंशधर जान पड़ता है। सम्राट् अकबर के लड़के बचपन में ही मर जाया करते थे, किन्तु चीस्ती साहब के आशीर्वाद से उन्हें (१५६९ ई० में) जहाँगीर उत्पन्न हुआ। ये पहुँचे हुए फ़क़ीर थे और आगरा से बारह कोस पर एक पहाड़ी पर बसे सीकरी नामक ग्राम में रहते थे। शाहज़ादे का जन्म इन्हीं के स्थान पर हुआ था; अतः इन्हीं के नाम पर बादशाह ने उसका नाम "सलीम" रखा। बादशाह को इनपर ऐसी श्रद्धा हुई कि आगरा छोड़कर १५७१ ई० में उसी पहाड़ी को अपनी राजधानी बनाया। उस समय से १५७५ ई० तक इन्होंने वहाँ ऐसी ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाईं कि उनकी कारीगरी देखकर दाँतों तले अँगुली दबाना पड़ता है। इनमें हिन्दू और मुसलमान-कला का इतनी सुन्दरता से सम्मेलन किया गया है कि देखते ही बनता है। इन्हीं दिनों सम्राट् ने बड़ी तेज़ी और बहादुरी से गुजरात के बलवे का दमन किया और उसी उपलक्ष में अपनी नई राजधानी का नाम 'फतहपुर' रखा। १५८४ ई० में पानी की कमी के कारण उन्होंने वहाँ रहना छोड़ दिया।

अब भी वहाँ पीरज़ादों का घराना है और अब भी वे इमारतें अकबर की कलाप्रियता की याद दिला रही हैं।

(दतिया में क्रीत)

३४—शेख अब्दुल्ला

शैली—मुगल; १८वीं शती; माप—६१/२"×८३/४"

सुनहरी बूटीदार लाल पगड़ी, सफेद जामा और धारीदार ढीला पाजामा पहिने हैं। पैर में पञ्जाबी जूता है। रंग गोरा और छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ हैं। दाहिने हाथ में पटा है। बायाँ हाथ खाली है। लाल कमरबन्द में परतले के सहारे तलवार झूल रही है। कमर में कटार भी खोंसा हुआ है। इस चित्र पर शेख अब्दुल्ला लिखा हुआ था।

चित्र पर फारसी अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है, पर वह पढ़ा नहीं गया।

(माधवलाल गोस्वामी के संग्रह से)

३५—नवाब तर्बियत खाँ

शैली—मुगल; १८वीं शती; माप—५"×८१/२"

लम्बी मूँछ, सफेद दाढ़ी, जरकसी कमरबन्द में कटार, दाहिने हाथ में तलवार और बाएँ हाथ में गुलाब का फूल।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्बियत खाँ नाम नहीं, एक खिताब है, जो बादशाहों द्वारा उमरा लोगों को दिया जाता था। तर्बियत खाँ का ख़िताब १७वीं शती में चार उमराओं को दिया गया था। मालूम नहीं उनमें से ये कौन हैं।

(गोस्वामी माधवलाल के संग्रह से)

३६—एक अश्वारोही

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—७ ३/१०″ × ११ ३/८″

कुम्मैत घोड़े पर एक युवक सवार है। पोशाक लाल है। सिर्फ कमरबन्द हरा है। कपड़े सब जरकशी हैं। युवक का रंग साँवला है। कान में वाला पहने है, जिसमें दो बड़े-बड़े मोती और एक लाल है।। उस तरफ कमर में खञ्जर झूल रहा है, जिसकी मूठ का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। घोड़े के पीछे एक सेवक है, जो हाथ में एक मोरछल लिये है, उसके पास भी तलवार है। उसकी आकृति बहुत ही सुन्दर है।

(गोस्वामी माधवलाल के संग्रह से)

३७—एक बेगम

शैली—दिल्ली ; १८वीं शती ; माप—५ १/२″ × ८ १/८″

एक बेगम शिर पर पगड़ी बाँधे, जामा पहने, हाथ में एक फूल लिये, बड़े तकिए के सहारे गद्दी पर बैठी है। कान में वाला है, जिसमें बड़े-बड़े मोती हैं। गले में मोतियों की मालाएँ, हाथों में चूड़ियाँ और अँगुलियों में छल्ले हैं। पीठ पर शिर के बाल खुले हुए पड़े हैं। एक स्त्री पास में बैठी है और एक मोरछल लिये पीछे खड़ी है। सामने तीन स्त्रियाँ बैठी हैं, जो तँबूरा और पखावज बजा कर गा रही हैं।

पुश्त पर दो शेर इस प्रकार हैं—

"हरजा कि वहारस्त गुलो रैहाँ नस्त।
दर वहरे दराज……नैसाँ नस्त॥
जमैयतेअहले फज़्ल दर मुल्केदकिन।
दौलते हज़रते मुहम्मद ख़ानस्त॥"

खलील उल्ला : अले काति बुलसानी

हाशिए पर सिर्फ खलील लिखा है।

(दाता—राजा श्री कृष्णदत्त दूबे)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३८—ललित-रागिनी

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—५″ × ७¾″

रात्रि का समय है, जिसे चित्रकार ने आकाश में चन्द्र और तारे तथा सफेद दीवारों को फाखतई रंग की बनाकर दिखाया है। दरवाजे पर गुलदस्ते की नक्काशीवाली चिक पड़ी है। एक गौराङ्गी बाला पलँग पर सो रही है। दासी भी पैर दाबते-दाबते सो गई है। एक नवयुवक हाथ में पुष्पमाला लिये पैताने खड़ा हुआ उसकी ओर देख रहा है ; पर उसके ढंग से मालूम होता है कि लौट जाना चाहता है।

ललित-रागिनी का इस प्रकार वर्णन न तो संगीत-दर्पण में है और न 'देव' कवि ने ही किया है, किन्तु इस चित्र के पीछे यही नाम लिखा है।

(गोस्वामी माधवलाल जहानाबादी प्रयागवाले से प्राप्त)

३९—मधुपान

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; चित्रकार–निद्धामल ; माप—५″ × ७½″

एक बाग में मकान की छत पर तकिए के सहारे एक रमणी बैठी है। उसके सामने एक पुरुष एक हाथ में प्याला और दूसरे में बोतल लिये बैठा है। मालूम होता है, प्याला भरकर उस स्त्री को पिलाना चाहता है। उसका ध्यान प्याले की तरफ नहीं, रमणी की तरफ है। रमणी के पास हुक्का रखा है। सटक बाएँ हाथ में है। दाहिना हाथ पुरुष की ओर बढ़ा दिया है और मदमस्त निगाह से उसकी ओर देख रही है।

चित्र में, एक ओर फारसी में, स्वर्णाक्षरों में "अमल ए निद्धामल" लिखा है। इन्हींका बनाया एक चित्र श्री सीताराम शाह के संग्रह में है।

यह चित्र गोस्वामी माधवलाल इलाहाबादी के पारंपरीण संग्रह में का है।

४०—एक व्यक्ति की एकचश्मी शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३½″ × ४$\frac{1}{10}$″

स्याह कलम। बैठक दोजानूँ। दाहिने हाथ में गुलाब का फूल है और बायाँ हाथ कटार पर है।

(काशी के चित्रकार मूलचन्द के संग्रह से प्राप्त)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४१—एक पुरुष की एकचश्मी शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—५" × ५$\frac{१}{१०}$"

स्याह कलम। चेहरे पर हलका रंग। बैठक दोजानूँ। दाहिने हाथ में गुलाब का फूल। आगे पान-बीड़ी से भरा एक डब्बा तश्तरी में रखा है। उसके पास ही उस डब्बे का ढक्कन रखा है। इस पुरुष के कान में कोई आभूषण नहीं है, परन्तु जामे का बन्द बाएँ ओर को है, जिससे हिन्दूपन प्रकट होता है, किन्तु भिन्न-भिन्न प्रदेश में बन्द का नियम अलग-अलग था।

(काशी के चित्रकार मूलचन्द के संग्रह से प्राप्त)

— —

४२—एक मुसलमान की एकचश्मी शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—४$\frac{१}{५}$" × ४$\frac{४}{५}$"

स्याह कलम। बैठक दोजानूँ। हाथ और चेहरे पर हल्का रंग। खसखसी दाढ़ी। दाहिने हाथ में गुलाब का फूल।

———

४३—एक हिन्दू युवक की शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३$\frac{१}{५}$" × ४$\frac{१}{५}$"

स्याह कलम। दोजानूँ बैठक। कान में आभूषण।

विशेष—हिन्दू और मुसलमान के चित्र में यह भेद पाया जाता है कि हिन्दू के कान में कुण्डल या कोई और आभूषण अवश्य होता है। मुसलमान के कान में, सिवा उन व्यक्तियों के जो ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी के अनुयायी थे, आभूषण नहीं होते। प्राचीन चित्रों में यही बात देखी जाती है।

———

४४—एक मुसलमान व्यक्ति की एकचश्मी शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—४$\frac{४}{५}$" × ५$\frac{१}{२}$"

स्याह कलम। पालथी की बैठक। हाथ में तसबीह लिये।

(काशी के मूलचन्द चित्रकार के पूर्वजों के संग्रह से प्राप्त)

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४५—एक मुसलमान व्यक्ति की एकचश्मी शबीह

(स्याह कलम)

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३ १/५″ × ४ ७/१०″

बैठक दोजानूँ, हाथ में नरगिस के फूल का छड़। स्याह दाढ़ी।
सिर्फ हाथ और चेहरे पर हलका रंग दिया हुआ है।
(काशी के मूलचन्द चित्रकार के पुश्तैनी संग्रह से प्राप्त)

४६—अज्ञात शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—१० ३/४″ × ७ १/२″

पैर तक सफेद लम्बा जामा, सुनहला कमरबंद, पगड़ी, सुनहला गोशवारा और सिरपेंच तथा ढाल-तलवार लगाये हुए कोई नवाब या उमराव।

४७—यवन सुन्दरी

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—८ १/४″ × ५ १/५″

वस्त्राभूषणों से सज्जिता अरुण कमल का एक सनाल पुष्प लिये एक सुन्दरी खड़ी है। दाहिने हाथ में नाल और बाएँ हाथ में पुष्प है। पहरावा मुगल रमणियों का ; अर्थात् झीना पैरहन, किमख्वाब का पाजामा, हलकी ओढ़नी और पैर में कामदार जूती है।

पुश्त पर अलंकृत मश्की।

४८—किसी बादशाह की एकचश्मी शबीह

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—३ १/५″ × ७ १/२″

बादशाह और बादशाही खानदान के खास व्यक्तियों के चित्रों में मुख-मण्डल के चारों ओर प्रभा-मण्डल का घेरा बनाया जाता था, वैसा ही इस चित्र में भी है। यह चित्र सम्भवतः औरंगजेब के बाद के किसी मुगल-सम्राट् का है। दाहिने हाथ में सेफ है, जो कन्धे पर रखा है। बाएँ हाथ में काली चँवरी है। तन पर सफेद बूटीदार जामा है।

बाएँ हाशिए पर फारसी में लिखा है—'आला हज़रत'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४९—रूपमती

शैली—मुगल ; १८वीं शती ; माप—९¾"×५½"

किसी जलाशय के तट पर मुसलमानी परिच्छद में एक सुन्दरी बैठी हुई तम्बूरा छेड़ रही है। पास ही फूला हुआ एक वृक्ष है। खुला हुआ स्थान है।

"नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका" में मुं० देवीप्रसाद ने "बाज बहादुर और रूपमती" पर एक लेख लिखा था। उसमें रूपमती का जो चित्र दिया गया था, वह इसी प्रकार का था।

—(सं० १९७९ का अठवाँ लेख)

अकबर के राज्य के प्रारंभिक काल में मालवा एक स्वतंत्र सल्तनत थी और उसकी राजधानी सारंगपुर थी, जो इस समय ग्वालियर राज्य का एक छोटा-सा गाँव है, काली सिन्ध के किनारे बसा है। जिस वर्ष (१५५६ ई० में) अकबर सिंहासन पर बैठा था उसी वर्ष मालवे के अन्तिम सुलतान बाज बहादुर ने भी अपने बाप को मार कर गद्दी पाई थी। उस समय रूपमती सारंगपुर की वेश्या थी। वह ऐसी रूपवती थी कि उस ज़माने में 'पद्मिनी' समझी जाती थी।—(बदायूनी इत्यादि)। दोनों (बाज बहादुर और रूपमती) में प्रेम हो गया। गाने-बजाने में भी रूपमती अति कुशल थी और हिन्दी-कविता भी करती थी। उधर बाज बहादुर भी कवि और गायक था। दोनों अपने गीतों में अपने नाम के साथ दूसरे का नाम भी लाते थे। बाज बहादुर के यहाँ ४०० कलावन्त आश्रय पाते थे। वे भी अपने गानों में दोनों का नाम लाते थे।

इन गानों में के बचे-खुचे दो-चार "पद्य-राग-कल्पद्रुम" में मिलते हैं। "नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका" के उक्त लेख में भी इनकी कुछ कविताएँ दी हैं। उस समय के जितने भी इतिहासों में इनके उल्लेख हैं, उनमें इनकी कविता की चर्चा अवश्य है।

राज्यारोहण के कुछ दिनों बाद बाज बहादुर ने गौडवाने की प्रसिद्ध रानी दुर्गावती पर चढ़ाई की; किन्तु उससे ऐसा हारा कि बड़ी कठिनता से मालवा पहुँच पाया। वहाँ पछतावा भुलाने के लिये ऐश में डूब गया। आठो पहर रूपमती के साथ बीतने लगे।

इन दोनों के चित्र कई प्रकार के मिलते हैं। उक्त लेख में इनके तीन चित्र छपे हैं—एक तो अकेली रूपमती का इसी तरह का है, जिसका उल्लेख ऊपर हुआ है। अन्य दो के देखने से जान पड़ता है कि ये कभी वनों और बागों में विहार करते थे और कभी जङ्गलों और पहाड़ों में शिकार खेलने भी जाते थे। रूपमती में कोमलता ही नहीं, उग्रता भी थी। जब कभी शिकार खेलते हुए जङ्गली भीलों या गोड़ों से मुठभेड़ हो जाती थी तो वह बाज बहादुर से आगे घोड़ा बढ़ाकर तीर चलाती थी, जो बैरियों के शरीर बेधकर निकल जाते थे। बाज बहादुर और रूपमती का एक चित्र "माडर्न रिव्यू" में प्रकाशित हुआ था; उसमें ये रात को मशाल की रोशनी से एक घाटी पार करते हुए दिखाये गये हैं। वह चित्र भी शिकार से ही सम्बन्ध रखता है।

निदान ये विलास के दिन बहुत दिनों तक न चल पाये। बाज बहादुर की गफलत के समाचार पाकर १५६१ ई० में अकबर ने अहमद खाँ कोका को मालवा जीतने के लिये भेजा। कोका जब राजधानी से एक कोस पर रह गया तब बाज बहादुर की आँखें खुलीं और वह औरतों में से उठकर लड़ने निकला; पर बेतुकेपन से कुछ देर लड़कर भाग खड़ा हुआ। अहमद खाँ ने उसके राज्य के साथ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथ उसका पातुरखाना भी पाया। परन्तु रूपमती उसके हाथ न आई। नाम को तो वह वेश्या थी, परन्तु वास्तव में सच्ची सती थी।

"अकबरनामा" में लिखा है कि कोका ने रूपमती के ढूँढ़ने के लिये आदमी भेजा; जब उसके कान में यह भनक पड़ी तब वफ़ादारी के खून में जोश आ गया। उसने बाज बहादुर की दोस्ती में मर्दों की तरह हलाहल का प्याला पी लिया और बाज बहादुर की लज्जा अपने संग छिपाये लेती गई। अन्य ऐतिहासिकों ने भी इस वृत्तान्त को कुछ हेर-फेर से दिया है और रूपमती की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

इसके उपरांत कोका विलासिता में दूसरा बाज बहादुर बन गया। यहाँ तक कि मालवा-विजय के कुछ दिन बाद अकबर को सारंगपुर की ओर कूच करना पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने पीर-मुहम्मद खाँ को मालवा सुपुर्द कर दिया; किन्तु उससे बाज बहादुर ने फिर मालवा ले लिया।

१५६४ ई० में अकबर के आदेश से अब्दुल्ला खाँ उजबक मालवा गया। बाज बहादुर इस बार बिना लड़े ही भाग गया। कुछ दिन वह इधर-उधर भटकता रहा, अन्त में अकबर ने माफी का फरमान भेजकर उसे बुला लिया और दो हजारी का मनसब देकर अपनी सेवा में रखा।

अकबर ने बाज बहादुर के गाने की भी क़दर की थी। "आईने अकबरी" में लिखा है कि उसके बराबर गानेवाले कम हैं। "अकबरनामा" में लिखा है कि रूपमती की याद में वह सदैव हिन्दी-शेर कहकर अपना दिल हलका किया करता है। निदान इसी तरह अकबर की छत्रच्छाया में रहकर उसने अपने दिन बिता दिये। १५९४ ई० के लगभग उसकी मृत्यु हो गई।

रूपमती के इस चित्र का मूल अवश्य वास्तविक शबीह रही होगी; किन्तु उसकी प्रसिद्धि के कारण उसके चित्रों की एक के बाद एक इतनी नकलें बनीं कि उसकी बैठक और भाव के सिवा उसके मूल चित्र की और कोई बात उनमें नहीं रह गई।

(लखनऊ के भोलानाथ से क्रीत)

५०—विरहिणी बाला

शैली—मुगल; १८वीं-१९वीं शती; माप—$5\frac{3}{10}$" × $9\frac{3}{5}$"

दालान में, तकिए के सहारे, एक रूपवती रमणी बैठी है। रमणी ऐश्वर्य्यवती है, पर है बड़ी उदास। उसके समीप कई परिचारिकाएँ और सहेलियाँ हैं। सब उदास खड़ी हैं। पास ही एक झूला पड़ा है, पर उसकी डोरियाँ तिरछी तनी हुई हैं। ज्ञात होता है, पटरी एक ओर टँगी है। समय वर्षा ऋतु का है, खासकर सावन का महीना। काली घटा छाई हुई है। बिजली चमक रही है।

इस चित्र के पीछे बहुत खुशख़त मश्क़ी और उसे अलंकृत करने के लिये बहुत अच्छी नक़शी है।

(देखो, चित्र नं० ४ का नोट, पृष्ठ १७४)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५१—विरहिणी बाला

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—६ ३/५″ × ९ १/१०″

नं० ५० के समान ही यह भी विरहिणी का चित्र है। इसमें समय कार्तिक वा अगहन मास का है।

पुश्त पर कता है और उसका लेखक, प्रसिद्ध फकीर मीरअली हैं।

(देखो, चित्र नं० ४ का नोट, पृष्ठ १७४)

५२—विरहिणी बाला

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप— ६ ३/५″ × ९ १/२″

नं० ५० में जैसी विरहिणी का वर्णन किया गया है, वैसी ही यह भी है। इसमें ऋतु शरद् है। चन्द्रमा और श्वेत बादल के टुकड़े दिखाये गये हैं।

इसकी पुश्त पर फारसी की एक किताब का (अन्तिम) पृष्ठ जमाया है। उसका लेखक और सम्भवतः रचयिता भी, बुखारे के प्रसिद्ध खुशख़त मीरअली हैं। (इसका लिपिकाल सन् ९४१ हिजरी है)।

मालूम होता है कि प्रणेता ने इस पुस्तक में चित्रकला का, जो कि मुसलमान-धर्म के विरुद्ध है, समर्थन किया है।

(देखो, चित्र नं० ४ का नोट, पृष्ठ १७४)

५३—चौसर का खेल

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—५ २/५″ × ७ १/१०″

कोई राजा और रानी चौसर खेल रहे हैं। दोनों गद्दी-तकिए लगाकर आमने-सामने बैठे हैं। दोना के पीछे दासियाँ हैं। पृष्ठिका में इमारत और वृक्ष हैं।

चित्र नं० ५२ में जिस पुस्तक की चर्चा की गई है, उसी का एक पृष्ठ इस चित्र के पुश्त पर भी जमाया गया है।

(देखा, चित्र नं० ४ का नोट, पृष्ठ १७४)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५४—विरहिणी बाला

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—६″ × ९$\frac{१}{६}$″

संख्या ५० में वर्णित विरहिणी के समान ही यह भी है। इसमें एक जलाशय में नाव पड़ी है। ऋतु वर्षा ही है ; कदाचित् भादों का महीना। चित्र सं० ५२ में जिस पुस्तक का ज़िक्र किया गया है, उसी का एक पृष्ठ इसके पीछे भी जमाया गया है।

(देखो, चित्र नं० ४ का नोट, पृष्ठ १७४)

५५—शाह इब्राहीम अदहम

शैली—मुगल ; १८वीं १९वीं शती ; माप—४$\frac{९}{१०}$″ × ७$\frac{१}{२}$″

जङ्गल में शाह साहब बैठे हैं। एक हरी धोती के सिवा बदन पर और कोई कपड़ा नहीं है। शिर पर लम्बे बाल, छोटी-छोटी मूँछें, भरी हुई पर छोटी स्याह दाढ़ी, रंग गोरा है तथा उम्र से जवानी मालूम पड़ती है। आँखें मूँदे ध्यानावस्था में हैं। सामने परियाँ खड़ी हैं और कुछ खाद्य पदार्थ, जल और फूल आदि लिये हैं।

लाल परी के हाथ में जो चीनी का कमण्डलु है, उसपर फारसी अक्षरों में चित्रकार का नाम लिखा है। अमल तो साफ पढ़ा जाता है, पर आगे क्या है, सो अभी तक समझ में नहीं आया।

अदहम के पुत्र इब्राहीम बलख के बादशाह थे। वैराग्य होने पर बादशाहत छोड़कर फकीर हो गये थे। इनकी गणना उस समय के बड़े-बड़े महात्माओं में हो गई थी।

शाह इब्राहीम के विषय में यह बात प्रसिद्ध है कि परियाँ इनके लिये खाने-पीने की चीजें दे जाया करतीं थीं ; सो यह बात इनके चित्रों में दिखलाई गई है।

इनके बारे में यह बात भी प्रसिद्ध है कि ये फ़कीरी हालत में सिर्फ तीन चीजें घर से लेकर चले थे—एक दरी, एक तकिया और एक कटोरा। आगे चलकर एक आदमी को घास पर लेटा देखकर दरी फेंक दी। इसी तरह एक आदमी को हाथ का तकिया और दूसरे आदमी को चुल्लू से पानी पीते देखकर कटोरा फेंक दिया था।

किसी-किसी चित्र में दूर पर एक और तपस्वी बना रहता है, जिसके पास कोई नहीं होता। इसके विषय में यह कथा है कि एक घसियारा था, जिसको परियाँ खाना नहीं देती थीं। एक दिन उसने उनसे पूँछा कि ऐसा क्यों ? उत्तर मिला कि वह तो बादशाहत छोड़कर आये हैं, तुमने क्या छोड़ा है जो उनकी बराबरी चाहते हो।

(दाता—श्री सीताराम साह)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५६—औरङ्गजेब

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—$४\frac{३}{८}'' \times ७''$

यह चित्र उस समय का है, जब औरङ्गजेब शाहजादा था और उसे रेख भीन रही थी। तसवीर पूरी है। ढाल-तलवार बाँधे है, कमर में पेशकब्ज खोंसे है। शिर पर कलँगी है और मुखमण्डल के आस-पास तेज का घेरा है, जैसा कि शाही खानदानवालों के चित्रों में हुआ करता है। हलके पीले रङ्ग का जामा है।

किशोरावस्था में ही इसने असामान्य साहस और कार्य्य-कुशलता का परिचय दिया था, अतएव १७ वर्ष की अवस्था में इसे शाहजहाँ ने दक्षिण का सूबेदार बनाकर भेज दिया था। संभवतः यह उसी उम्र का चित्र है।

(दतिया में क्रीत)

५७—आलमगीर सानी

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—$१\frac{३}{८}'' \times १\frac{९}{१०}''$

यही नाम चित्र के पुश्त पर लिखा था। गले में मोतियों की दोलड़ी माला पहने है। दाढ़ी-मूँछों के बाल सफेद हैं। सिरपेंच में एक पन्ना और दो मोती हैं। काही रङ्ग का जामा है, जिसमें लाल बनी है। मुख-मण्डल पर तेज का घेरा है। चित्र कमर से ऊपर तक का बदामा में है।

यह दिल्ली का तेरहवाँ मुगल-बादशाह था।

१७५४ ई० में ग़ाज़ीउद्दीन (चतुर्थ) नाम के अत्याचारी राजकर्त्ता ने बारहवें मुग़ल-सम्राट् अहमद शाह को अन्धा करके, सातवें मुगल-सम्राट् जहाँदार शाह के एक लड़के को ६८ वर्ष की अवस्था में तख्त पर बैठाया। और आलमगीरसानी उसका नाम रखा। पाँच वर्ष बाद ग़ाज़ीउद्दीन ने उसे भी कत्ल करा दिया।

(दतिया में क्रीत)

५८—हज़रत सुलैमान और बिलकीस

शैली—दिल्ली ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—$८\frac{३}{१०}'' \times १२''$

इस चित्र पर लिखा है—'शबीह हज़रत सलैमान पैगंबर अलैहिस्सलाम व शबीह बिलकीस दुख़्तरे बादशाहे किश्मीर।'

एक जलाशय के किनारे एक अमराई है। उस अमराई के ऊपर हज़रत सुलैमान की सवारी जा रही है। वे और बिलकीस तामजान पर सवार हैं। चार देव तामजान को उठाये हैं। कई परियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोरछल और फूल-मालाएँ लिये साथ-साथ जा रही हैं और कई अनेक वस्तुएँ लिये आकाश में उड़ रही हैं। आकाश में श्वेत मेघ-खण्ड दिखाई देते हैं। हजरत सुलैमान और विलकीस परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं।

आम के वृक्षों पर इधर-उधर कुछ पक्षी दिखाई दे रहे हैं। जलाशय के किनारे सारस विचर रहे हैं। कुछ जलचर-पक्षी जल में क्रीड़ा कर रहे हैं। कुछ खरगोश और भिन्न प्रकार के मृग पानी पीने चले आ रहे हैं।

इस चित्र का संबंध किसी मुसलमानी धर्म-कथा वा उपकथा से है।

इस चित्र में रंगों का मेल और सारे दृश्य की सजावट बहुत सुन्दर है।

(दाता—राजा श्री कृष्णदत्त दुबे)

५९—आखेट करते हुए आसफुद्दौला

शैली—दिल्ली (मुगल); १८वीं शती ; माप—१३३⁄४" × १९५⁄८"

नवयुवक नव्वाब नीले सब्जे घोड़े पर सवार है। घोड़े के चारों पैर और पेट मेंहदी से रँगे हुए हैं। नव्वाब के पीछे बहुत से घुड़सवार हैं। इनमें बहुत से बन्दूकें, कोई-कोई तीर-कमान और कुछ सिर्फ भाला लिये हैं। सब से पीछे एक कोतल हाथी है। नव्वाब के घोड़े से कुछ दूर आगे दो शिकारी कुत्ते दौड़ते जा रहे हैं और उनके आगे कई हिरन। नव्वाब ने एक काले हिरन पर तीर छोड़ा है, जो उसके गले में लगकर दूसरी तरफ निकल गया है। यह शिकार एक हरे-भरे मैदान में खेला जा रहा है। इस मैदान के बाएँ ओर अमराई है और इन सब के पीछे गोमती नदी है। नदी में नावें चल रही हैं और उस पार किनारे पर एक सजा सजाया हाथी चला जा रहा है, जिस पर एक बड़ा झंडा फहरा रहा है। आगे-पीछे बहुत से आदमी चल रहे हैं, जो बल्लम और पताकाएँ लिये हैं। पीछे एक ऊँट है और उसके पीछे एक चौडोल है, जिसमें कोई जनानी सवारी जान पड़ती है। हाथी से बहुत आगे कई मँझोलियाँ हैं। आगे बहुत बड़ा बाग दिखाई देता है। पृष्ठिका में हरी-हरी टेकरियों पर बहुत से मकान बने हुए हैं।

इस चित्र के पीछे फारसी में लिखा है—"शबीह नवाब आसफुद्दौला बहादुर ब नौबत साहब ज़ादगी।" अर्थात् आसफुद्दौला का कुमारावस्था का चित्र। आसफुद्दौला अवध के चौथे नवाब वज़ीर थे। इनका जन्म १७४८ में हुआ था। इस चित्र में इनकी अवस्था १८-२० की जान पड़ती है, अतएव यह १७६५ ई० के आसपास का बना जान पड़ता है। इसकी अंकन-शैली और रंगों की रुचि (चुनाव) निधामल से बहुत मिलती है। यही इसके चित्रकार जान पड़ते हैं, अतः उनका समय, १८वीं शती ठहरती है।

आसफुद्दौला १७७५ ई० में गद्दी पर बैठा था। यह बड़ा औला-दौला और दाता था। इसने अपने राज्य की रक्षा के लिये, बनारस और जौनपुर अंग्रेजों को दे डाला था और उन्हें ४६८००००) वार्षिक भी देता था। इसके समय तक राजधानी फैजाबाद में थी, जिसे हटाकर यह लखनऊ ले गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखनऊ उस समय एक गाँव था, फिर तो इसने इसकी बड़ी उन्नति की। वहाँ अच्छे-अच्छे व्यापारियों और धनिकों को बसाया और सुन्दर इमारतें बनवाईं। उनमें से इमामबाड़ा हिन्दुस्तान की खास इमारतों में है। यह अवध का सब से समृद्धिशाली शासक था। इसने १७९७ ई० तक राज्य किया।

(दाता—राजा कृष्णदत्त दुबे, जौनपुर)

६०—अबलखा पक्षी

शैली—मुगल ; १८वीं-१९वीं शती ; माप—$११\frac{३}{१०}'' \times १४\frac{३}{५}''$

एक पीले फूलवाले वृक्ष की डाल पर अबलखा बैठा है। यह मैना की किस्म का पक्षी है, पर इसकी चोंच मैना की चोंच से बड़ी है।

पुश्त पर कता है। उसके नीचे हाशिए पर फारसी अक्षरों में लिखा है—'बारीक क़लम'

(मूलचन्द चित्रकार के संग्रह में से)

६१—सद्यःस्नाता

शैली—मुगल ; १९वीं शती ; माप—$३\frac{१}{२}'' \times ५\frac{७}{१०}''$

एक छोटी-सी चौकी पर खड़ी हुई एक तरुणी दोनों हाथों से अपना बाल पकड़कर पीछे की ओर निचोड़ रही है। लहँगे के सिवा और कोई वस्त्र उसके शरीर पर नहीं है। हाथ, कण्ठ और कान में आभूषण पहने है। इस चित्र का भाव पद्माकर के इस कवित्त से बहुत कुछ मिलता है।

चौक में चौकी जराइ जरी
तेहि पै खरी बाल बगारत सौंधे।
छोर धरी हरी कंचुकी न्हान को
अंगन ते जगे जोति के कौंधे॥
छाई उरोजन की छवि यौं
पदमाकर देखत ही चकचौंधे।
भाजि गई लरिकाई मनों
लरिकै करिकै द्वय दुन्दुभि औंधे॥

(लखनऊ से क्रीत)

६२—मसखरा वा अफीमची

शैली—मुगल ; २०वीं शती ; माप—$२\frac{९}{१०}'' \times ५\frac{३}{१०}''$

सिर गंजा। एक आँख मीचे। टेढ़ा मुँह। नङ्गा बदन। उसके बाएँ हाथ पर बुलबुल। सामने फलों की टोकरी रखी हुई है।

उस्ताद रामप्रसाद ने पुराने चित्र से नकल किया। मूलचित्र का समय १८वीं-१९वीं शती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—गोपी कृष्ण

शैली—पहाड़ी मिश्रित राजस्थानी; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—९¾″ × ६¾″

यह चित्र बिहारी के निम्नलिखित दोहे पर है—

भौंहनि त्रासनि मुख नटति, आँखनि सों लपटाति।
ऐंचि छुरावति कर इंची, आगें आवति जाति॥

२—मालवीयजी महाराज का चित्र

शैली—कंपनी; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—३½″ × २¾″

यह चित्र मालवीय जी महाराज के सन् १९०९ के एक फोटो पर अवलम्बित है। चित्र हाथी दाँत पर है।

३—उस्ताद रामप्रसाद की अपनी छवि

शैली—कंपनी; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद (स्वयं); माप—१४¾″ × १०″

चित्र वदामा में है।

४—उमर खैय्याम का चित्र

शैली—ठाकुर; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—१२″ × ६¾″

अरुण याचक (रुबाई सं० २ पर अवलंबित)

वाम कनक-कर ने ऊषा के जब पहला प्रकाश डाला
सुना स्वप्न में मैंने सहसा गूँज उठी यों मधुशाला—
'उठो, उठो, ओ मेरे बच्चो, पात्र भरो, न विलंब करो,
सूख न जावे जीवन-हाला, रह जावे ख़ाली प्याला।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—उमर खैय्याम का चित्र

शैली—ठाकुर; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—१२¾″ × ७″

अंधकार धौरहरा (रुबाई सं० २४ पर अवलंबित)

सुनो आज के लिए लोग जो सजते हैं कितने ही साज,
बाँधे हैं टकटकी तथा जो आने वाले कल पर आज,
अंधकार की अटल-लाट से उन्हें मुअज्जन देता बाँग—
'मूढ़ो, यहाँ, वहाँ, न कहीं भी होगा सिद्ध तुम्हारा काज।'

६—उमर खैय्याम का चित्र

शैली—ठाकुर; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—१२½″ × ७¾″

अनंत प्रवाह (रुबाई सं० २९ पर अवलंबित)

यहाँ 'कहाँ से, क्यों ?' न जानकर परवश आना पड़ता है,
वाहित विवश वारि-सा निज को नित्य बहाना पड़ता है।
'कहाँ चले?' फिर कुछ न जानकर, इच्छा हो कि अनिच्छा हो,
परपट पर सरपट समीर-सा हमको जाना पड़ता है।

७—उमर खैय्याम का चित्र

शैली—ठाकुर; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—१२½″ × ७½″

फानूस खयाल (रुबाई संख्या ४६ पर अवलंबित)

भीतर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे इधर-उधर,
नहीं और कुछ, यह माया की छाया का है कौतुक भर।
है 'फ़ानूस-ख़याल' एक यह, दिनकर जिसका दीपक है,
चारों ओर रूपाकारों से काट रहे हैं हम चक्कर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८—उमर खैय्याम का चित्र

शैली—ठाकुर; चित्रकार—उस्ताद रामप्रसाद; माप—१४″ × ९″

अंगूरी समाधि (रुबाई सं० ६७-६८पर अवलंबित)

हाँ, मेरे बुझते-जीवन को द्राक्षा-रस से दीप्त करो,
और उसी से मृत शरीर को धोकर उसकी धूलि हरो।
द्राक्षा-दल का कफ़न बना कर उसमें मुझे लपेटो फिर,
और किसी उद्यान-पार्श्व में गर्त बना कर गाड़ धरो। ६७।

गड़ी-पड़ी मिट्टी भी मेरी आसव-सौरभ का वह जाल,
फैला दे सब ओर सदा को बृहद्वायु-मंडल में डाल।
जिससे जाता हुआ उधर से कोई मोमिन बच न सके,
फँस जावे उसके फंदे में अकस्मात खिंच कर तत्काल। ६८।

९—जड़ भरत

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री सुरेन्द्रनाथ कर; माप—९¾″ × ७½″

पेंसिल ड्राइङ्ग

१०—वीणावादिनी

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री सुरेन्द्रनाथ कर; माप—९½″ × ७¾″

(श्वेत छटा)

रात्रि के समय छत पर एक बड़ी पत्थर की चौकी पर गाव तकीए के सहारे दो जानू बैठी चिन्तातुर युवती अपने खुले बाल को दोनों हाथों से सम्हाल रही है। जंघे पर वीणा रखी है। पास में दूसरी छोटी चौकी पर पानदान आदि रखे हैं। नीचे जूतियाँ पड़ी हैं। युवती के वस्त्र अस्त-व्यस्त हैं। संपूर्ण चित्र पर श्वेत छटा है जिससे चाँदनी रात्रि का आभास होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११—चरखा

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री अब्दुर्रहमान चुगताई; माप—२३″ × १६″

बैठी हुई तीन महिलाओं के बीच एक चरखा रखा है।

१२—यात्रा की सीमा

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री राम किंकर बैज; माप—१३¼″ × ८¼″

एक पेड़ के नीचे, जिसके पत्ते पीले पड़ गये हैं और झड़ रहे हैं, एक वृद्ध दंपति खड़ा है। यात्री वेष है। हाथ में बेंत, बाँस का छाता है। आगे भूमि का छोर है। संध्या हो रही है; मानो वे इस चिंता में निमग्न हैं कि आगे कहाँ?

१३—यशोदा-कृष्ण

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री शारदाचरण उकील; माप—११¾″ × ६¼″

यशोदाजी की गोद में बालक कृष्ण हैं। सामने बछड़े खड़े हैं।

१४—सावित्री-सत्यवान

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री ए० पी० बनर्जी; माप—१०¼″ × ७½″

जंगल में एक वृक्ष के नीचे सावित्री की गोद में सिर रखे सत्यवान लेटे हैं। सावित्री उनकी ओर चिंतित होकर देख रही है।

चित्र बेड़े बल हैं।

१५—पालकी में बहुरिया

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री ए० पी० बनर्जी; माप—९″ × ५½″

सूनसान वन-खण्ड में चार कहार एक पालकी लिए तेजी से चले जा रहे हैं। गोधूलि वेला है। ज्ञात होता है कि अंधकार होने के पहले निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच जाना चाहते हैं। उनकी द्रुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गति से पालकी का कारचोबी ओहार सामने से सरक कर दूसरी ओर लटक गया है। पालकी में गुलाली रंग की ओढ़नी ओढ़े सिर नीचा किए बहुरिया (नवविवाहिता स्त्री) बैठी है।

१६—चीनी सम्राट

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री ए० पी० बनर्जी; माप—९$\frac{१३}{१६}$ × ७"

१७—विधवा

शैली—ठाकुर; चित्रकार—श्री दुर्गाशंकर भट्टाचार्य; माप—१०$\frac{५}{८}$" × ६$\frac{११}{१६}$"

दोनों हाथ जोड़कर उन्हें अपने बाएँ कंधे पर रखे दीवाल के पास भाव निमग्न विधवा उकरूँ बैठी है। बाल खुले हैं। माथे पर सफेद चंदन का गोल तिलक है।

१—सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत का खर्रा

बहुत बारीक कागद पर बड़े बारीक अक्षरों में लिखा हुआ है। इस खर्रे की रक्षा के लिए इसके नीचे कागद तथा कपड़ा चपका दिया गया है, जिससे अब यह मोटा हो गया है। इस खर्रे के लेख अंश की लम्बाई ८१ फीट ९ इंच तथा चौड़ाई ३$\frac{१}{२}$ इञ्च है। अधिकांश हिस्से में दोनों तरफ का हाशिया फट गया है; परन्तु जिस हिस्से में दोनों तरफ हाशिया है, उसकी चौड़ाई ४$\frac{१}{२}$" है; और जिस हिस्से में केवल एक ही ओर हाशिया है, उसकी चौड़ाई केवल ४ इंच है। भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न आकार के २९ बहुरंगे चित्र हैं। लेख काली स्याही से बहुत महीन अक्षरों में लिखा हुआ है। लेख की ज़मीन सादी है, जो सोने के बेल, बूटे, जाली इत्यादि तथा बड़े-छोटे चित्रों से अलंकृत है। इस अलंकरण के ऊपर लिपि है। यह कश्मीर की कला है।

लेखक—काश्मीरी पंडित भट्ट सदासुख। लिपिकाल—१८४० से १८४६ तक।

२—तैमूरनामा

सुन्दर नस्तालीक अक्षरों में लिखा हुआ। पहला और दूसरा पृष्ठ अलंकृत है और प्रति पृष्ठ पर किश्ती तथा तुरंज बने हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बनाम खुदाये कि फिकर"—पहली लाइन
"आली ओइब्न नक्शा फरुख्त निहाश बाखिर खइयत आखिरफा खैर बाद"—-
अंतिम लाइन

लिपि—काल—९०२२ (१०२२ ?) हिजरी। पन्नो का नाप—११$\frac{1}{2}$" × ७$\frac{3}{4}$"। कुल १३८ पन्ने। जिल्द के पुठ्ठों पर चमड़े के कटाव की नकाशी है, जिसमें कुछ जानवर भी बने है। नकाशी के नीचे की जमीन फीरोज़ी है।

३—बनारस का नकशा

माप— २८$\frac{1}{2}$" × १९" ;

जेम्स प्रेंसिप का बनाया। सन् १८२२ ई०।

४—तिब्बती चित्रपट

देव नगर में महायान बौद्ध देवता। नीचे सोनहली लिपि में ध्यान आदि।

५—नेपाली चित्रपट

रौगनी रंग से बना। पीले, लाल, नीले तथा हरे मुँह वाले नीलवर्ण देवता, रक्त-वर्णा शक्ति से संगम करते हुए। चारों ओर आवरण देवता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

इस सूची में भारत-कला-भवन में संगृहीत विभिन्न शैलियों के ४८४ चित्र तथा ५ स्फुट वस्तुएँ विवृत हैं। आरंभ के १६८ पृष्ठों में पहाड़ी, काश्मीरी, बसौली, और राजस्थानी शैलियों के ३९५ चित्र एक वर्ग में दिए गए हैं। दूसरा वर्ग १० ईरानी चित्रों का है जो पृष्ठ १६९–१७१ पर है। तीसरे वर्ग में मुगल और दिल्ली कलम के ६२ चित्र पृष्ठ १७२–२०० पर दिए गए हैं। चौथा वर्ग कंपनी और ठाकुर शैली के १७ चित्रों का है जो पृ० २०१–२०५ तक है। अंत में स्फुट वस्तुओं की सूची दी हुई है।

इस अनुक्रमणिका में उपर्युक्त शैलियों के समस्त चित्रों के अतिरिक्त चित्रों के वर्णन में आए हुए उन मुख्य-मुख्य नामों का भी समावेश है जो भारतीय चित्रकला वा पुराण-इतिहास से संबद्ध हैं। चित्रों के शीर्षक मोटे टाइप में हैं और उनके निर्देश में पहले शैली का आद्यक्षर, तदनंतर उस वर्ग की क्रम-संख्या तथा अंत में (अल्पविराम के उपरांत) पृष्ठ-संख्या दी गई है। अन्य नाम पतले टाइप में हैं और उनमें केवल पृष्ठ-संख्या दी गई है।

चित्र-दाताओं की नामावली अनुक्रमणिका के अंत में है।

अंदुआमल्ल कपूर और अष्टभुजा दुर्गा प ४७,२२

अंतःपुर की एक घटना मु २०,१८४

अंतःपुर की हेमंतचर्य्या प २९,१५

अकबर १७३,१७६,१८९,१९४

अकबरनामा १९५

अकबरी दरबार १७४

अधेड़ शराबी ई ८,१७१

अनवार सुहेली १७२

अनिरुद्ध २६

अन्यमनस्का प ८४,२३

अफीमची–दे॰ 'मसखरा'

अबलखा पक्षी मु ६०,२००

अब्दुर्रहमान चुगताई २०४

अब्दुल्ला खाँ उजबक १९५

अलस छबि प १७,८

अली मर्दन खाँ १७७,१७८

अष्टभुजा दुर्गा २२,२३

अहमद खाँ कोका १९४

अहमद शाह १९८

आईने अकबरी १९५

आखेट (जहाँगीर का) मु ३, १७२

आया पानी प ६१, २९

आलमगीर—दे॰ 'औरंगजेब'

आलमगीर सानी मु ५७, १९८

आलिम (चित्रकार) १८४

आषाढ़—दे॰ 'मेघदर्शन'

आषाढ़ मास रा १५५,७८

आसफ खाँ १७६

आसफ उद्दौला (आखेट करते हुए) दि (मु) ५९, १९९

इंद्र ६, १३

इस्लाम शाह— दे॰ 'हुसेन पाशा'

ईरान का एक युवक ई ५, १७०

ईरान का एक युवक और एक युवती ई ६, १७०

ईरान का युवक ई १, १६९। ई २, १६९

ईसामसीह का जन्म मु २१,१८५

उत्कंठिता प २६,१४

उत्का नायिका प १९,१०। प ३८,१९। रा १५७,७९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उद्दीपन रा १८४,८९
उमर खैयाम ठा ४,२०१ । ठा ५,२०२ ठा ६,२०२
ठा ७,२०२ । ठा ८,२०३

एक अश्वारोही मु ३६,१९०
एक देवी का २,१
एक पहाड़ी राजा प ३५,१८
एक बेगम दि ३७,१९०
एक योगिनी रा १८७,९०
ऐरावत ६

औरंगजेब ९,१७७,१८१,१८२
औरंगजेब मु ३१,१८८ । मु ५६,१९८

कबीर ८२
कल्कि अवतार का ६,३
कल्पवृक्ष ३
कल्याणदास चित्रकार –दे० 'राव चतरमन'
कामदेव ८९
कामधेनु ३
कार्तिकेय १३
कालिदास २०
कासीराम ७८,७९
कुमारी मरियम और शिशु ईसा मु ७,१७५
कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण प ४३,२१
कृष्ण–दे० 'श्रीकृष्ण'
कृष्ण और गोपियों का घाट पर मिलन (वंशी-चोरी)
प ६०,२९
कृष्ण-राधा-मिलन रा १५६,७९
केशव (कवि) ११,१६,२१,८४
कोई शाहजादा वा नवाब मु २५,१८६
क्रीड़ामृग रा १५९,८०

खंडिता नायिका प २०,११
खवास खाँ १७६
खुमानसिंह (चरखारी-नरेश) ८

गणेश १३,२३,२५
गणेशजी प ४१,२०
गणेश-पार्वती रा-१७३,८६
गाजी उद्दीन (चतुर्थ) १९८
गीत-गोविंद चित्रावली का एक पृष्ठ प ५९,२८
गुरु और शिष्य मु २३,१८५
गुरु गोविंदसिंह ६
गुलाम मुहम्मद का मदरसा प ६३,३०
गो-चारण प १४,७
गो-दोहन ब ११,५ । प ६४,३०
गोपी कृष्ण रा १३८,७० । प मिश्रित रा १,२०१
गोवर्द्धन-धारण प १३,६
गोस्वामी तुलसीदास रा १७९,८७
ग्वालदास साव (काशी के) रा १६८,८४

चंद्रमुखी और चकोर प १८,८
चकडोरी का खेल प ३६,१८
चतरमन (चतुरमणि) चित्रकार–दे० 'राव चतरमन'
चरखा ठा ११,२०४
चिंतातुरा प ६२,३०
चीनी सम्राट् ठा १६,२०५
चेतू (चित्रकार) ३१
चैत मास रा १५४,७८
चौपड़ का खेल रा १८३,८९
चौसर का खेल मु ५३,१९६

जड़भरत ठा ९,२०३
जयकीर्ति शाह, राजा–९
जयसिंह, राजा–१८२
जहाँगीर मु १४,१८०
जहाँगीर १७६,१८९
जहाँदार शाह १९८
जेम्स प्रथम १७६
जेम्स प्रेंसिप २०६

टामस रो, सर–१७६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाह्याभाई शिवराम ७६

ढाल-तलवार-धारी युवक मु २४,१८६

तर्बियत खाँ (नवाब) मु ३५,१८६
तिब्बती चित्रपट २०६
तेजसिंह (सिक्ख राजा) २३
तैमूर के दरबार में पराजित टर्की-नरेश मु १८, १८३
तैमूरनामा २०५

दकनी कलम ७६
दत्त—दे० 'देवदत्त'
दरवेशों का दरबार मु १५, १८०
दाराशिकोह ९,१७९,१८१
दाराशिकोह का तुलादान मु ८,१७५
दालचंद चित्रकार १८७
दुर्गापाठ चित्रसंग्रह प ८०-१७३, ३७-६९
दुर्गापाठ चित्रावली रा १८८-२३७, ९०-१०५
दुर्गावती (रानी) १९४
दुर्गाशंकर भट्टाचार्य २०५
देव ७०,७६,१७१
देवदत्त 'दत्त' ८
देवीप्रसाद मुंसिफ १९४
दो योगिनियाँ मु २६, १८६
दो स्त्रियाँ (गुककली रागिनी) रा १४८, ७५

नजर मुहम्मद (बलख-बुखारा के अधिपति) १७७
नमाजियों पर सारस मु २, १७२
नयन-मिलन प ५८, २७
नरसी मेहता और उनकी कुमारी कन्या रा १६६,८२
नागरीप्रचारिणी पत्रिका १९४
नानक शाह तथा गुरु गोविंदसिंह ब १२, ६
नाभा जी ८२
नामदेव ८२
निद्धामल चित्रकार १९१, १९९
निशाभिसारिका प २७, १४

नील तथा रोझ का शिकार करते हुए औरंगजेब मु १७, १८२
नूरजहाँ की खयाली तसवीर रा १८२, ८८
नूरजहाँ १७६,१७८
नृत्य मु ११,१७९ । मु २२, १८५
नेपाली चित्रपट २०६

पंजाबी हलवाई प ६६, ३१
पद्माकर २००
पद्मावत (जायसी-कृत) १७
पद्मावती तथा हीरामन तोता प ३४, १७
पर्सी ब्राउन १७८
पार्वती २३, २५
पार्वती का त्रास प ५७, २७
पालकी में बहुरिया ठा १५, २०४
पीरजादा फतहपुर सीकरी मु ३३, १८८
पीर मुहम्मद खाँ १९५
पुराना मजनूँ ६, ७
पृथ्वीशाह ९
प्रच्छिन्न विप्रलब्धा प ४४, २१
प्रतीक्षा—दे० 'उत्का नायिका'
प्रवत्स्यत्पतिका प २१, ११ । रा १५८, ८०
प्रेम-परिरंभ—दे० 'विनोद'

फकीर उल्लाह चित्रकार १८५
फतहचंद चित्रकार १७८
फागुन मास रा १५३, ७७

बटुक भैरव १२
बदनाम शाह १०
बनर्जी, ए० पी०—२०४, २०५
बनारस का नकशा २०६
बलख-बुखारा १७७
बलदेव २६
बलि २
बाज पक्षी मु १,१७२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाज बहादुर १९४
बादशाही हाथियों का हलका मु ५, १७४
बालकराम १०.
बाला त्रिपुरसुंदरी—दे० 'श्रीविद्या'
बिहारी २४, २८, २९, २०१
बीजापुर का कोई सुलतान मु २८,१८७
बीदरबख्त १८३
ब्रह्मा ३,१३

भक्तमाल ८२
भट्ट सदासुख २०५
भवानीसिंह बहादुर, महाराज –३१

मंदराचल ३
मजनू मुसव्वर ६
मतिराम ८९
मत्स्यावतार का ४,२
मधुपान मु ३९,१९१
मरियम १८५
मर्त्तंग घोड़ा ई १०,१७१
मलिक मुहम्मद जायसी १७
मसखरा वा अफीमची मु ६२,२००
महताब खाँ ७२
महेश ३,१३
माघ (कवि) २७
मानिनी नायिका–दे० 'सिखावन'
मार्कंडेय की रक्षा रा १६५,८२
मालवीय जी महाराज का चित्र कं २,२०१
मियाँ मीर और मुल्लाशाह मु १३,१७९
मीर अबू नस्र (लेखक) १८५,१८७
मीर जुमला १८२
मुमताज महल १७६
मुराद तथा नजर मुहम्मद की मुलाकात मु ६,१७७
मुसलमान महिलाएँ और एक मँझोली का ३,१
मुहम्मद (चित्रकार) ? १७८
मुहम्मद तालिब १८४
मुहम्मद मुराद (सुलिपिकार) १८३
मुहम्मद शाह ? रा १७०,८५
मुहम्मद शुजा मु १६,१८०
मूलचंद चित्रकार ८०,८६,९०,१७५,१७७,१८०,१८६, १९१,१९३,२००
मृग-मोहन–दे०'लीला-हाव'
मेघ-दर्शन (आषाढ़) प ४०,१९
मेघवधू –दे० 'एक देवी'
मैनूची १७८
मोलाराम ७-११
मोहिनी छवि प २२,१२

यवन सुंदरी मु ४७,१८३
यशोदा-कृष्ण ठा १३,२०४
यात्रा की सीमा ठा १२,२०४

राग
राग सारंग रा १४४,७३
श्री राग रा १४१,७१
हिंडोल राग रा १८५,८९
रागिनी
इमन–दे०'वीणा-वादिनी'
एक रागिनी (संभवतः सारंग) रा १४९,७५
कोई रागिनी रा १४६,७४
गुनकली –दे० 'दो स्त्रियाँ'
नट रागिनी रा १५०,७६
पटमंजरी रागिनी रा १४२,७२
बंगाली रागिनी रा १३९,७०
बरारी रागिनी रा १५१,७६
बिहागड़ा रागिनी रा १४०,७१
मधुमाधवी रागिनी रा १४३,७३
रामकली रागिनी रा १४७,७५
ललित रागिनी मु ३८,१९१
राग-रत्नाकर ७०
राग-सागर ७२
राधा ७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राधा-कृष्ण प का ३,१
राधा-कृष्ण ८९
राम ७,८१
राम और हनूमान् द्वारा अयोध्या की सैर रा १७७, ८७
रामकिंकर बैज २०४
रामचरितमानस चित्रावली रा २३८ – ३९५, १०५–१६८
राम पंचायतन रा १७५,८६
रामप्रसाद (उस्ताद) की अपनी छवि कं ३, २०१
रामप्रसाद (उस्ताद) १७१, १८४, २००–२०३
राम-रावण-युद्ध का ८, ४
राम-वनगमन प ५४, २५
राम-सुग्रीव-मिलन प ५, ७
राव चतरमन (चतुरमणि) चित्रकार १८१, १८४
रावण ४, २७
रुक्मिणी-हरण चित्रावली प ६७-७९, ३१-३७
रुक्मीवध प ५६, २६
रूपचंद (एक पहाड़ी राजा) १८
रूपम् १, १०
रूपमती मु ४९, १९४
रोचना २६

लक्ष्मण ७, २५, ८१
लीला-हाव (मृग-मोहन) प ४२, २२

वंशी-चोरी—दे० 'कृष्ण और गोपियों का घाट पर मिलन'
वजीर खाँ १९६
वट-सावित्री-पूजा रा १६३, ८१
वर-प्राप्ति प ५३, २५
वसंतोत्सव प ३३, १६
वाणासुर २५
वामन-अवतार का ५, २
वायजीद, सम्राट—मु १८,१८३
वार्तालाप करती हुई दो स्त्रियाँ रा १६२, ८१
वासंती प ४६, २२
वासुकी नाग ३
वासुदेव प ५५, २५
विदेशी वृद्ध व्यक्ति ई ७, १७१
विधवा ठा १७, २०५
विनोद (प्रेम- परिरंभ) प ४२, २०
विरह-ताप प ३९, १९
विरह-पाती प ५०, २३
विरहिणी बाला मु ५०, १९५ । मु ५१, १९६ । मु ५२, १९६ । मु ५४, १९७
विशनदास चित्रकार १७३
विष्णु २, ३, १३
विष्णु भगवान् रा १७२, ८५
विस्रब्धनवोढ़ा नायिका प ३२, १६
वीणा-वादिनी रा १५२, ७७ । ठा १०, २०३
वीरसिंह बुँदेला रा १६७, ८३
वृद्ध नवाब मु २७, १८७
वृसंगदेव—दे० 'वीरसिंह बुँदेला'
वैस्रवण नैपाली ६५, ३१
वैष्णवी-पूजा रा १७६, ८७

शतरंज का खेल प ३०, १५
शबीह
अज्ञात पुरुष रा १६९, ८४
अज्ञात रा १८०, ८८ । मु० ४६, १९३
एक पुरुष की एकचश्मी शबीह मु ४१, १९२
एक मुसलमान की एकचश्मी शबीह मु ४२, १९२ । मु० ४४, १९२ । मु ४५, १९३
एक रमणी की शबीह ई ९, १७१
एक व्यक्ति की एकचश्मी शबीह मु ४०, १९१
एक हिंदू युवक की शबीह मु ४३; १९३
किसी बादशाह की एकचश्मी शबीह मु ४८, १९३
किसी मुसलमान व्यक्ति की शबीह मु ३०, १८८
पूजा करते हुए एक व्यक्ति की शबीह प ३७, १८
मानसिंह की शबीह रा १८१, ८८
मुल्ला की शबीह ई ३, १६९ । ई ४, १६९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शाी की शबीह रा १६१, ८०
शारदाचरण उकील २०४
शाह इब्राहीम अदहम मु ५५, १९७
शाहजहाँ मु ६, १७५ । मु ३२, १८८
शाहजहाँ १७६, १७७, १८१,१८४,१८७
शाहजादी रा १६०, ८०
शिव २५, २७, ८२
शिव-परिवार प ४९, २३
शिव-पार्वती ब १०, ५ । प २४, १३ । प १७४, ८६
शिव-पार्वती का राजस ध्यान प २३,१२
शुक्राचार्य २
शुक्लाभिसारिका प १६,७
शुजा १७७
शृंगार प ३१,१५ । रा १४५,७४
शेख-अब्दुल्ला मु ३४,१८९
श्यामदास ९
श्रीकृष्ण ५,६,७,१८,२६,२८,३०,७४,८१,८९
श्रीनाथजी रा १७८,८७
श्रीमद्भागवत का खर्रा २०५
श्रीविद्या या बाला त्रिपुरसुंदरी प २५,१३

षडानन २३,२५

संगीत कलाधर ७६
संगीत दर्पण ७०,१९१
संन्यासी रा १७१,८५
सद्यःस्नाता प ५२,२४
समुद्र-मंथन का ७,३
सलीमशाह चिस्ती १८९
सादुल्ला खाँ १७८
सादुल्ला खाँ, नवाब—मु १६,१८४
सावित्री-सत्यवान ठा १४,२०४
सिखावन (मानिनी नायिका) प ५१,२४
सीता ७,२५
सीता का मार्गश्रम रा १६४,८१
सुंदरी मु १०,१७८ । मु १२,१७९
सुग्रीव ७
सुरेंद्रनाथ कर २०३
सुलैमाँशिकोह ९

हजरत सुलैमान और बिलकीस दि ५८,१९८
हनुमान ७
हयग्रीव २
हरदास ९
हस्तिदल ९
हीरागिरि जोगिन मु २९,१८७
हीरासिंह प २८, १४
हुसेन पाशा (इस्लामशाह) १८१
हेतुलक्षिता—दे० 'नयन-मिलन'
होनहार मुसव्विर १७५

चित्र-दाता

कृष्णदास, राय—ब १२, प १६, प १७, प ४८, प ५१, प ५८, प ६१, प ६२, रा १३९, प १७४
गांगुली, ओ० सी०—प १८, प ३८
गुराँदित्ता खन्ना प ४७
गोविंददास शाह रा १६४
तुलसीदेवी मु १०
मेहता, एन० सी०—प ५९, प० ६०
मैथिलीशरण गुप्त प ६४
विचित्रशाह, कुँवर—प १३, प २०, प २१, प २३, प ४३, प ४६
श्रीकृष्णदत्त दूबे, राजा—मु २, मु ६, दि ३७, दि ५८, दि (मु) ५९
सीताराम शाह मु २९, मु ५५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh